राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 215

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, रविवार, 12 जनवरी 2020

www.jagran.com

पृष्ठ 16

गावस्कर बोले, क्लास रूम में वापस लौटें छात्र

>> 14

सरोकार

दूसरों की मदद को एंबुलेंस बन जाती है इनकी कार

जयपुर : राजस्थान के जयपुर निवासी कर अधिकारी संदीप गुप्ता अपनी लग्जरी

कार को जरूरत पड़ने पर एंबुलेंस बनाकर अब तक बहुतों को अस्पताल पहुंचा चुके हैं। संदीप सड़क हादसों में घायल लोगों के लिए गाड़ी को एंबुलेंस बनाने में बिल्कुल संकोच नहीं करते। (पेज-15)

मुददा

क्रोध में कैंपस

स्थापित ताकतों को चुनौती का नतीजा

जेएनयू मामले पर विशेष पेज-7

विश्वास News

इंदिरा गांधी के दबाव में सीताराम येचुरी के इस्तीफे का दावा गलत ?

विश्वास न्यूज की पड़ताल • पेज 15

न्यूज गैलरी

राज-नीति ▶ पृष्ठ 3

सीएए पर विपक्ष के झूठ के कारण फैली अराजकता : शाह

अहमदाबाद : गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि सीएए पर राहुल एंड कंपनी व अन्य विपक्षी पार्टियां झूठ फैलाकर लोगों को गुमराह कर रही हैं जिससे अराजकता का माहौल पैदा हुआ। शाह ने कहा, कानून में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है जो देश के मुस्लिमों की नागरिकता छीनता हो।

नेशनल न्यूज ▶ पृष्ठ 6

केरल में गिराए गए दो अवैध लक्जरी अपार्टमेंट

कोच्चि, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर शनिवार को केरल में मरादू नगरपालिका के तहत दो अवैध लक्जरी अपार्टमेंट्स 'होली फेथ एच2ओ' और 'अल्फा सरीन' को ढहा दिया गया। इन्हें तटीय विनियमन जोन (सीआरजेड) के मानकों का उल्लंघन कर बनाया गया था।

बिजनेस ▶ पृष्ठ 12

पूर्वी भारत से उगेगा समृद्धि का सूरज : धर्मेंद्र प्रधान

कोलकाता : पेट्रोलियम मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने शनिवार को कोलकाता में मिशन पूर्वोदय का शुभारंभ किया। प्रधान ने मिशन पूर्वोदय को वह योजना बताया, जिसके दम पर भारत पांच लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बन सकता है।

अंतरराष्ट्रीय ▶ पृष्ठ 13

ताइवान में जीती साई इंग-वेन चीन को लगा जोर का झटका

ताइपे : चीन को कड़ा संदेश देते हुए ताइवान की जनता ने राष्ट्रपति साई इंग-वेन को भारी बहुमत से फिर सत्ता सौंपी है। शनिवार को आए चुनाव परिणाम में इस द्वीपीय देश में पहली महिला राष्ट्रपति को दोबारा सत्ता हासिल हुई है।

आदेश मिला तो गुलाम कश्मीर वापस ले लेंगे : सेना प्रमुख

सीधी बात ▶ पाक से लगी सीमा पर तैनात किए जाएंगे छह अपाचे हेलीकॉप्टर, चीन की चुनौती को देखते हुए पूर्वी सीमा पर तैनाती बढ़ाई

संविधान के दिशा-निर्देशों पर चलने की बात कर सियासी विवादों से दूरी का दिया संदेश

संजय मिश्र, नई दिल्ली

संसद चाहे तो पाक के कब्जे वाले गुलाम कश्मीर को वापस लेने के लिए भारतीय सेना तैयार है। आदेश मिला तो सेना कदम बढ़ा देगी। नवनियुक्त सेना प्रमुख जनरल मनोज मुकुंद नरवाने ने शनिवार को यह बात कही। सेना प्रमुख ने चीन से लगी उत्तरी और पूर्वी सीमा की चुनौती को ज्यादा बड़ी बताते हुए क्षेत्र में नए सिरे से संतुलन की जरूरत भी जताई। उन्होंने पाक से लगी सीमा पर छह अपाचे हेलीकॉप्टर तैनात करने और चीन व पाक पर नजर रखने वाली मजबूत रणनीतिक पोस्ट सियाचिन को किसी सूरत में ढीला नहीं छोड़ने की बात भी कही। सियाचिन क्षेत्र में पाक-चीन की सेनाओं में साठगांठ की आशंका रहती है। दोहरे जंग की चुनौती से निपटने की रणनीति पर भी सेना काम कर रही है। सेना प्रमुख ने सियासी मसलों से दूर रहने का भी सांदेश दिया।

जनरल नरवाने ने सेना दिवस से पूर्व सालाना प्रेस कांफ्रेंस में पाक और चीन समेत तमाम सैन्य रणनीतिक मुद्दों पर राय रखी। विदेश मंत्री एस जयशंकर के गुलाम कश्मीर को वापस लेने संबंधी बयान पर कहा, 'संसद का प्रस्ताव है कि जम्मू-कश्मीर का पूरा क्षेत्र हमारा है, जिसमें गुलाम कश्मीर भी शामिल है। अगर संसद चाहती है कि उस इलाके पर भी हमारा नियंत्रण हो और हमें यह आदेश मिलता है तो उसके मुताबिक कार्रवाई की जाएगी।' मालूम हो कि पीवी नरसिंह राव सरकार के दौरान फरवरी, 1994 में संसद ने संकल्प प्रस्ताव पारित कर गुलाम कश्मीर को जम्मू-कश्मीर का क्षेत्र बताते हुए भारत का हिस्सा करार दिया था। सेना प्रमुख का यह सख्त बयान पाकिस्तान का खौफ और बढ़ाएगा।

नई दिल्ली में वार्षिक प्रेसवार्ता के दौरान थल सेना अध्यक्ष मनोज मुकुंद नरवाने। प्रेट्र

सीडीएस का गठन अच्छा कदम

सेना प्रमुख ने कहा कि सीडीएस के गठन से तीनों सेनाओं के बीच समन्वय से भविष्य में किसी जंग के लिए बेहतर तैयारी होगी। वैसे भी भविष्य के युद्ध हाईटेक टेक्नोलॉजी आधारित होंगे और इस दिशा में ट्रेनिंग पर जोर दिया जाएगा। सेना में अफसरों की कमी के सवाल पर उनका कहना था कि हमारा जोर संख्या पर नहीं गुणवत्ता पर है। इसीलिए भर्ती के मानदंड को हम नीचे नहीं करते क्योंकि पांच काबिल अफसर सौ लोगों के बराबर का काम कर सकते हैं।

चीन सीमा पर एडवांस्ड हथियार प्रणाली से साध रहे संतुलन

जनरल नरवाने ने कहा, अभी तक पश्चिमी और उत्तरी सीमा (पाकिस्तान) बड़ी चुनौती थी मगर अब हम चीन से लगी पूर्वी सीमा पर सैन्य तैनाती को बढ़ा रहे हैं। इसमें एडवांस्ड हथियार प्रणाली समेत सैन्य तैनाती में नए सिरे से संतुलन बनाया जा रहा है। अग्रिम मोर्चों तक सड़क बनाने का काम भी हो रहा है। हालांकि उन्होंने भारत-चीन के बीच शीर्ष नेतृत्व की वार्ताओं से सीमा पर तनाव के मसले सुलझा लिए जाने की बात पर संतोष भी जताया।

राजनीति से रहेंगे दूर

देश के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) बने पूर्व सेना प्रमुख जनरल बिपिन रावत के सियासी मसलों से जुड़े बयानों से मचे विवाद की पृष्ठभूमि के मद्देनजर नरवाने ने सर्तकता बरतते हुए साफ कर दिया कि सेना न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के संविधान की प्रस्तावना के मूल संदेश के शपथ के अनुरूप अपना काम करेगी। उन्होंने कहा, 'हम जनता के लिए जनता की सेना हैं।' सीएए के खिलाफ हिंसक विरोध प्रदर्शन को लेकर जनरल रावत के बयानों से सियासी हंगामा मचा था। विपक्षी पार्टियों ने भी उन्हें घेरा था। सेना के अग्रिम मोर्चों पर महिला सैन्यकर्मियों की भर्ती के सवाल पर जनरल नरवाने ने कहा कि इसकी शुरुआत हो गई है और 100 महिला सैन्य कर्मियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

बैट दस्ते ने काटा पोर्टर का सिर, सेनाध्यक्ष बोले-सैन्य तरीके से निपटेंगे

पुंछ : पुंछ जिले में नियंत्रण रेखा पर पाकिस्तान की बॉर्डर एक्शन टीम (बैट) ने शुक्रवार को भारतीय क्षेत्र में घुसकर सेना के साथ काम करने वाले एक पोर्टर का सिर काट दिया और उसके शव को क्षत-विक्षत कर दिया। यह पहला मौका है जब बैट ने किसी नागरिक के साथ ऐसी बर्बरता की है। इस हमले में दो पोर्टरों की मौत हुई थी और तीन घायल हो गए थे। इस संबंध में सेनाध्यक्ष नरवाने ने कहा, पेशेवर सेनाएं कभी भी बर्बर कृत्यों का सहारा नहीं लेती हैं। हम इस स्थिति से सैन्य तरीके से निपटेंगे। इस बीच, पुलिस ने सिर काटने का मामला दर्ज कर लिया है। (पेज-6)

डीएसपी के वाहन से पकड़े गए आतंकी

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

▶ गिरफ्तार किए गए दो आतंकियों में 10 लाख का इनामी नवीद भी शामिल

दक्षिण कश्मीर के कुलगाम जिले में शनिवार को जम्मू-श्रीनगर हाईवे पर मीरबाजार में पुलिस ने वीरता पुरस्कार जीत चुके एक डिप्टी सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस (डीएसपी) को हिरासत में लेते हुए उसके साथ कार में सवार तीन आतंकियों को भी गिरफ्तार कर लिया। कार से पांच ग्रेनेड भी मिले हैं। पकड़े गए आतंकियों में 10 लाख का इनामी हिजबुल का ऑपरेशनल डिवीजनल कमांडर नवीद मुश्ताक उर्फ नवीद बाबू और उसका अंगरक्षक आसिफ भी शामिल है। तीसरा आतंकी लश्कर का आरिफ बताया जा रहा है और वह वाहन चला रहा था।

पुलिस अधिकारी को हिरासत में लेने के बाद जब उसके घर की तलाशी ली गई तो वहां से तीन ग्रेनेड, एक पिस्तौल और एक असाल्ट राइफल मिली है। फिलहाल, इन चारों से पूछताछ जारी है। सूत्रों के अनुसार, आरोपित डीएसपी का नाम देवेंद्र सिंह है और वह एंटी हाइजैकिंग विंग में तैनात है। संबंधित सूत्रों ने कहा कि यह पता लगाया जा रहा है कि उक्त अधिकारी आतंकियों के लिए काम कर रहा था या फिर वह उनका सरेंडर करा रहा था, क्योंकि वह पहले भी कई बार गुपचुप तरीके से नामी आतंकियों को आत्मसमर्पण करा चुका है। उक्त अधिकारी जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद के सफाए में अहम भूमिका निभाने वाले राज्य पुलिस विशेष अभियान दल (एसओजी) के शुरुआती अधिकारियों में से एक है। उसने कई नामी आतंकियों को मार गिराने में अहम भूमिका निभाई है। वर्ष 2017 में उसे वीरता पुरस्कार भी मिला है। संसद हमले के साजिशकर्ता अफजल को पकड़ने में भी उसकी उल्लेखनीय भूमिका रही है।

आतंकी से मिले होने की मिली थी जानकारी : सूत्रों की मानें तो दक्षिण कश्मीर में तैनात एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी को अपने तंत्र से पता चला था कि पुलिस विभाग का कोई अधिकारी दक्षिण कश्मीर में आतंकियों के साथ लगातार संपर्क में है। वह इन आतंकियों को दक्षिण कश्मीर में किसी जगह ले जाने वाला है। ऐसे में आतंकियों के साथ पुलिस अधिकारी को रंगे हाथ पकड़ने के लिए एक अभियान चलाया। डीएसपी शनिवार को जब आतंकियों को लेकर एक कार में कुलगाम में हाईवे पर गुजरने लगा तो पुलिस दल ने मीरबाजार में उनका वाहन रोक लिया। आतंकी कमांडर नवीद मुश्ताक अपने साथियों संग पकड़ा गया। उनके साथ मौजूद पुलिस अधिकारी को भी हिरासत में लिया गया। इसके बाद इन सभी को अनंतनाग में ले जाया गया।

11 लोगों की हत्या में शामिल है नवीद बाबू : आतंकी नवीद बाबू मई 2017 में आतंकी बना था। दक्षिण कश्मीर में जिला शोपियां निवासी नवीद का पूरा नाम नवीद मुश्ताक है और उसे बाबर आजम के नाम से भी जाना जाता है। करीब दो माह पहले ही उसे हिजबुल ने दक्षिण कश्मीर का ऑपरेशनल डिवीजनल कमांडर बनाया था।

जेपी नड्डा होंगे भाजपा अध्यक्ष

नई दिल्ली : भाजपा के मौजूदा कार्यकारी अध्यक्ष जेपी नड्डा के हाथ में ही अब पार्टी की औपचारिक कमान सौंपने की तैयारी शुरू हो गई है। पटना में जन्मे नड्डा को इसी महीने 19 या 20 तारीख को विधिवत भाजपा का अध्यक्ष चुन लिया जाएगा। वह अगले तीन साल तक दुनिया के सबसे बड़े दल के अध्यक्ष होंगे। अमित शाह का अध्यक्ष के रूप में कार्यकाल पिछले साल जनवरी में ही पूरा हो गया था, चुनाव के चलते उनसे जिम्मेदारी संभालने को कहा गया था। (पेज-4)

निर्भया के दो दोषियों की क्यूरेटिव याचिका पर 14 को सुनवाई

नई दिल्ली : सुप्रीम कोर्ट निर्भया सामूहिक दुष्कर्म मामले के दो दोषियों की क्यूरेटिव याचिकाओं पर 14 जनवरी को सुनवाई करेगी। विनय और मुकेश की तरफ से ये याचिकाएं गुरुवार को दायर की गई थीं। दो दोषियों अक्षय व पवन ने याचिका नहीं दायर की है। दिल्ली की कोर्ट से चारों दोषियों को 22 जनवरी को फांसी पर लटकाने के लिए डेथ वारंट जारी हो चुका है। (पेज-6)

ईरान ने कुबूला, गलती से मार गिराया यूक्रेनी विमान

- पहले करता रहा इन्कार, अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ने पर लिया यू-टर्न
- ईरानी सेना ने कहा, दुश्मन विमान की आशंका में हुई गलती, मांगी माफी
- यूक्रेन ने की मुआवजे की मांग तो कनाडा बोला, जवाबदेही तय की जाए

ईरान में बुधवार को मिसाइल हमले में मार गिराए गए यूक्रेनी विमान का मलबा (फाइल फोटो)। एपी

तेहरान, एजेंसियां : ईरान ने आखिर मान लिया कि उसने गलती से यूक्रेन के यात्री विमान को मार गिराया था। इसमें सवार सभी 176 लोगों की मौत हो गई थी। ईरान पहले यही कहता रहा कि तकनीकी खामी के चलते विमान हादसा हुआ था, लेकिन अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ने पर यू-टर्न लेने को बाध्य हुआ। ईरान की सेना ने शनिवार को बयान में कहा कि दुश्मन का विमान होने की आशंका में यह गलती हुई। इसके लिए माफी मांगी जाती है। इस घटना पर अब तक चुप्पी साधे रहे ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने कहा कि सशस्त्र बल खामियों को दूर करें, ताकि दोबारा ऐसी गलती ना होने पाए। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने ईरान से विमान को मार गिराने के दोषियों को सजा और मुआवजा देने की मांग की है। जबकि कनाडा के प्रधानमंत्री ट्रूडू जस्टिन ने कहा कि जवाबदेही तय होनी चाहिए। इस बीच यूक्रेन और फ्रांस में यह सहमति बन गई है कि विमान के ब्लैक बॉक्स की कूट भाषा को समझने में फ्रांसीसी विशेषज्ञ मदद करेंगे।

बुधवार को तेहरान एयरपोर्ट से कीव के लिए उड़ान भरने के बाद यूक्रेन इंटरनेशनल का बोइंग 737-800 विमान मिसाइल का निशाना बन गया था। इसमें सवार 82 ईरानी और 63 कनाडाई नागरिकों समेत 176 लोगों की मौत हुई थी। यह घटना इराक में दो अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर ईरान के मिसाइल हमले के कुछ समय बाद हुई थी। ईरान ने शीर्ष कमांडर कासिम सुलेमानी की मौत का बदला लेने के लिए अमेरिकी ठिकानों को निशाना बनाया था।

ईरान इस विनाशकारी गलती के लिए खेद जताता है। हम यह वादा करते हैं कि इस घटना के लिए जो जिम्मेदार हैं, उन पर मुकदमा चलाया जाएगा। मेरी संवेदनाएं पीड़ित परिवारों के साथ हैं।

– हसन रूहानी, राष्ट्रपति, ईरान

इस कारण लेना पड़ा यू-टर्न

विशेषज्ञों का कहना है कि अंतरराष्ट्रीय जांच की बढ़ती मांग पर ईरान सच स्वीकार करने को विवश हुआ। क्योंकि ईरान के लिए मिसाइल हमले के साक्ष्यों को छुपाना मुश्किल हो गया था। तेहरान को मुल्क के अंदर बढ़ते गुस्से और विदेश में बढ़ती आलोचना के कारण भी यू-टर्न लेना पड़ा।

ईरान के राष्ट्रपति हसन रूहानी ने बताया कि सेना की जांच में पाया गया कि मानवीय गलती से मिसाइलें दागी गई थीं। उस समय अमेरिका के संभावित हमले को लेकर अलर्ट था। विमान सेना के संवेदनशील इलाके के समीप आ गया था। विदेश मंत्री मुहम्मद जावेद जरीफ ने कहा, अमेरिकी दुस्साहस के कारण यह भयंकर भूल हुई। ईरान की रिवोल्यूशनरी गार्ड के जनरल अमीर अली हाजीजादेह ने कहा कि उनकी यूनिट दुर्घटनावश यूक्रेनी विमान को मार गिराने की जिम्मेदारी लेती है।

ईरानियों ने भी उठाए सवाल पेज>>13

सीएए पर बात करनी है तो दिल्ली आएं ममता : मोदी

जागरण संवाददाता, कोलकाता

▶ कोलकाता के दो दिवसीय दौरे पर पहुंचे पीएम से मिलीं बंगाल की सीएम

▶ मुलाकात के बाद सीएए-एनआरसी के विरोध में दिए जा रहे धरने में हुईं शामिल

दो दिवसीय दौरे पर शनिवार को कोलकाता पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने राजभवन में मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) व राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) जैसे मुद्दों पर उनसे फिर से विचार करने तथा इन्हें वापस लेने का अनुरोध किया। ममता ने यह भी दोहराया कि बंगाल में सीएए-एनआरसी को लागू नहीं होने देंगे। इस पर मोदी ने दो टूक कहा कि वह अभी किसी अन्य कार्यक्रम में शामिल होने यहां आए हैं। आपको यदि इस पर बात करनी है तो दिल्ली आइए। उन्होंने ममता को दिल्ली आने का न्योता भी दिया। मोदी से मिलने के बाद ममता वहां पहुंची, जहां तृणमूल कांग्रेस समर्थक छात्र सीएए-एनआरसी के विरोध में धरना दे रहे थे। उधर, मोदी से मुलाकात पर ममता बनर्जी को वामदल और कांग्रेस ने घेरा भी।

मोदी से मुलाकात के बाद राजभवन के बाहर निकलकर पत्रकारों से बातचीत में ममता बोलीं, मैंने पीएम से कहा कि यद्यपि आप हमारे अतिथि हैं, लेकिन सीएए-एनपीआर-एनआरसी के खिलाफ पूरे देश में आंदोलन चल रहा है। जनता में भय है। इसलिए मैं चाहूंगी कि किसी भी नागरिक के ऊपर अत्याचार न हो। सीएए-एनआरसीपर फिर से सरकार को मंथन करना चाहिए। हम चाहते हैं कि इसे वापस लिया जाय। मोदी ने दिल्ली आकर बात करने की बात कही है।

मोदी से मिलना मेरी संवैधानिक मजबूरी : ममता : मोदी से मुलाकात के बाद ममता सीएए के खिलाफ रानी रासमणि रोड पर आयोजित पार्टी की छात्र इकाई तृणमूल छात्र परिषद के धरने में शामिल हुईं। यहां उन्होंने कहा, सीएए-एनआरसी मुद्दे पर पीएम से बात करने वाली मैं पहली सीएम हूं। उन्होंने मोदी से मुलाकात पर सफाई देते हुए कहा, मुलाकात करना संवैधानिक मजबूरी है। इस दौरान उन्होंने भाजपा के साथ वाममोर्चा और कांग्रेस पर भी जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि हम बंगाल में धर्म, जाति, पंथ के आधार पर कभी भी भेदभाव नहीं होने देंगे।

सीएए व एनआरसी जैसे मुद्दों पर फिर से विचार करें। इन्हें वापस लें। बंगाल में इनको लागू नहीं होने देंगे।

– ममता बनर्जी, मुख्यमंत्री, बंगाल

मैं अभी किसी अन्य कार्यक्रम में शामिल होने यहां आया हूं। आपको यदि इस (सीएए-एनआरसी) पर बात करनी है तो दिल्ली आइए।

– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

कोलकाता में राजभवन में पीएम से भेंट करतीं ममता बनर्जी। एएनआइ

राजभवन नहीं, बेलूर मठ में रुके प्रधानमंत्री

कोलकाता : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बंगाल प्रवास के पहले दिन रामकृष्ण मिशन के मुख्यालय बेलूर मठ में रात्रि विश्राम किया। बेलूर मठ में रात बिताने वाले वे देश के पहले प्रधानमंत्री बन गए हैं। इंदिरा गांधी समेत देश के कई पूर्व प्रधानमंत्री बेलूर मठ का दौरा कर चुके हैं, लेकिन उनमें से किसी ने भी वहां रात्रि विश्राम नहीं किया। (पेज-5)

वामपंथी छात्रों ने मुख्यमंत्री के सामने किया प्रदर्शन : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कोलकाता दौरे को लेकर जारी वामपंथी छात्रों का विरोध शाम होते-होते मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ तब्दील हो गया। धर्मतला में ममता की मौजूदगी में वामपंथी संगठनों से जुड़े छात्रों ने उनका विरोध किया। उन्होंने बैरिकेड तोड़ दिए। एसएफआइ समर्थकों के विरोध को देखते हुए ममता बनर्जी ने उन्हें शांत कराने की कोशिश की, मगर वह नहीं माने।

वाममोर्चा ने कहा, सबके सामने आया ममता का असली चेहरा पेज>>5

उपलब्धि

युद्धपोत पर स्वदेशी लड़ाकू विमान की अरेस्टेड लैंडिंग कराने वाला छठा देश बना भारत, आइएनएस विक्रमादित्य पर लैंडिंग करने वाला तेजस पहला स्वदेशी विमान

नौसेना के विमानवाहक पोत पर तेजस की नई उड़ान

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

देश में ही बने हल्के लड़ाकू विमान तेजस ने विमानवाहक पोत आइएनएस विक्रमादित्य पर सफल लैंडिंग कर भारतीय नौसेना की एक और ऐतिहासिक उपलब्धि की दिशा में अहम कदम बढ़ा दिया है। इसके साथ ही तेजस नौसेना के विमानवाहक पोत पर उतरने वाला पहला स्वदेशी लड़ाकू विमान बन गया है। नौसेना के हवाई बेड़े के साथ उसकी युद्धक क्षमता में इजाफे के लिहाज से तेजस की यह नई कामयाबी बेहद महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

नौसेना और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने इस कामयाबी का ऐलान करते हुए कहा, शनिवार सुबह 10 बजकर दो मिनट पर तेजस की सफल लैंडिंग हुई। नौसेना के लिए खास तौर पर बनाए गए तेजस कोआइएनएस विक्रमादित्य पर पहली बार लैंडिंग कोमोडोर जयदीप मावलंकर ने कराई। डीआरडीओ की मदद से बने तेजस को एयरक्राफ्ट अरेस्टर वायर की मदद से विक्रमादित्य पर उतारा गया। नौसेना सूत्रों के अनुसार तेजस की इस सफल लैंडिंग के बाद अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, रूस और चीन के बाद भारत विमानवाहक पोत पर स्वदेश निर्मित लड़ाकू विमान की अरेस्टेड लैंडिंग कराने वाला छठा देश बन गया है। आइएनएस विक्रमादित्य पर तेजस ने जब कामयाब लैंडिग की तो उस समय यह पोत अरब सागर में तैनात था। नौसेना के मुताबिक परीक्षण और प्रयोग के कई दौर के बाद तेजस की पहली लैंडिंग कराई गई है।

रक्षा मंत्री ने दी बधाई : रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने इस कामयाबी पर नौसेना को बधाई देते हुए कहा कि स्वदेश निर्मित तेजस की आइएनएस विक्रमादित्य पर पहली लैंडिंग बेहद खुशी की बात है। साथ ही यह सफल लैंडिंग भारतीय लड़ाकू विमान विकास कार्यक्रम के इतिहास में एक बेहतरीन लम्हा है। इस सफल परीक्षण के बाद अब नौसेना के लिए ट्विन इंजन वाले फाइटर विमान के देश में ही निर्माण को बढ़ावा मिलेगा। बता दें कि जो विमान विक्रमादित्य पर उतरा है उसे खासतौर पर नौसेना के लिए ही विकसित किया गया है। इससे पहले, तेजस लड़ाकू विमान भारतीय नौसेना में शामिल हो चुका है।

विमानवाहक पोत आइएनएस विक्रमादित्य पर लैंडिंग करता तेजस। सौजन्य से- पीआरओ डिफेंस

कैसे होती है अरेस्टेड लैंडिंग

विमानवाहक पोत पर बने रनवे की लंबाई तय होती है। ऐसे में लड़ाकू विमान को अरेस्टेड लैंडिंग करना होती है। इसके लिए विमानों के पीछे के हिस्से में स्टील वायर से जोड़कर हुक लगाया जाता है। लैंडिंग के दौरान पायलट को हुक पोत में लगे स्टील के मजबूत केबल्स में फंसाना होता है। जैसे ही विमान डेक पर उतरता है, हुक तारों में पकड़कर उसे रोक लेता है।

13.20 मीटर लंबा, 4.40 मीटर चौड़ा है विमान, डैने 8.2 मीटर के हैं

2222 किमी प्रति घंटे की गति, 3000 किमी तक भर सकता है उड़ान

9500 किलो लोडेड क्षमता, हथियारों से लैस होने के बाद वजन 13,500 किलो

3000 लीटर है ईंधन क्षमता, 800 लीटर के पांच टैंक बाहर से जोड़े जा सकते हैं

54 हजार फीट की ऊंचाई तक उड़ान भरने में सक्षम है सिंगल पायलट वाला यह विमान

नकाबपोश उपद्रवियों का नेतृत्व कर रही थीं आईशी घोष : पुलिस

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- वामपंथी छात्र संगठनों के सातों विद्यार्थियों की नकाब वाली तस्वीरें भी मिलीं
- यूनाइटेड अगेंस्ट लेफ्ट नाम से बनाए गए वाट्सएप ग्रुप में शामिल 37 विद्यार्थियों की हुई पहचान

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में पांच जनवरी को हुई हिंसा मामले में दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने शुक्रवार को वामपंथी छात्र संगठनों से जुड़े जिन सात विद्यार्थियों की तस्वीरें जारी की थीं, उन सभी की नकाब वाली तस्वीरें भी मिली हैं। पुलिस का कहना है कि पहले इन्होंने बिना नकाब पहने नए सेमेस्टर के लिए ऑन लाइन पंजीकरण करने वाले छात्रों पर हमला किया था। विवाद बढ़ जाने पर नकाब पहनकर उपद्रव शुरू किया ताकि पहचान न हो सके। इन उपद्रवियों का नेतृत्व जेएनयू छात्रसंघ अध्यक्ष आईशी घोष कर रही थीं। तीन व चार जनवरी को भी प्रशासनिक ब्लॉक स्थित सर्वर रूम में तोड़फोड़ करने, जेएनयू कर्मियों व सुरक्षा गार्डों से मारपीट के मामले में दर्ज एफआइआर में भी आईशी को नामजद किया गया है। जिन नौ लोगों की तस्वीरें शुक्रवार को जारी हुई थीं, पुलिस ने उन्हें नोटिस जारी कर पूछताछ के लिए बुलाया है।

क्राइम ब्रांच ने जिन दो अन्य नकाबपोश छात्रों की पहचान की है, उनमें योगेंद्र भारद्वाज शामिल हैं जो यूनाइटेट अगेंस्ट लेफ्ट नामक वाट्सएप ग्रुप का एडमिन था। पुलिस के मुताबिक, वामपंथी छात्र संगठनों से जुड़े लोगों ने जब ऑनलाइन पंजीकरण करने वाले छात्रों से मारपीट शुरू की तो विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) समर्थक योगेंद्र ने यूनाइटेड अगेंस्ट लेफ्ट नाम से ग्रुप बनाया और लिंक शेयर किया था। (पेज-5 भी देखें)

67.12 फीसद मतदान हुआ था 2015 विधानसभा चुनाव में, लेकिन लोकसभा चुनाव में 60.21 फीसद मतदान हुआ था। मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए चुनाव आयोग प्रयास कर रहा है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 12 जनवरी 2020

चुनावी हलचल

30 विस क्षेत्रों में चलेगा विशेष मतदाता जागरूता अभियान

नई दिल्ली : दिल्ली के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) डॉ. रणबीर सिंह ने शनिवार को पूर्वी दिल्ली से विशेष मतदाता जागरूकता अभियान की शुरुआत की। इस दौरान पूर्वी दिल्ली के निर्वाचन अधिकारी अरुण कुमार मिश्रा भी मौजूद थे। यह जागरूकता अभियान मंडावली व लक्ष्मी नगर स्थित मॉल में चलाया गया। इस तरह के विशेष अभियान 30 विधानसभा क्षेत्रों में चलाया जाएगा ताकि इस बार अधिक लोग मताधिकार का इस्तेमाल कर सकें और वोट फीसद बढ़ सके। चुनाव आयोग ने सीईओ कार्यालय को उन क्षेत्रों व इलाकों की पहचान कर विशेष जागरूकता अभियान चलाने का निर्देश दिया है, जहां लोकसभा चुनाव में मतदान कम हुआ था। इस क्रम में सीईओ कार्यालय ने 30 ऐसे विधानसभा क्षेत्रों की पहचान की है। इन क्षेत्रों के सार्वजनिक स्थलों पर बड़े स्तर पर जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। पूर्वी दिल्ली में आयोजित जागरूकता अभियान के दौरान नुक्कड़ नाटक के जरिये लोगों को मतदान करने का संदेश दिया गया। ईवीएम व वीपीपैट से संबंधित जानकारी भी दी गई। इसके अलावा लोगों को सी-विजिल एप का इस्तेमाल करने की सलाह दी गई। इस एप के माध्यम से लोग वीडियो बनाकर चुनाव आचार संहिता के उल्लंघन की शिकायत कर सकते हैं। साथ ही दिव्यांग मतदाताओं को पीडब्ल्यूडी (पर्सन विद डिसेबिलिटी) एप का इस्तेमाल करने की सलाह दी गई। यह दिव्यांग मतदाताओं के लिए मददगार साबित होगा। (जासं)

आप ने की सीईओ कार्यालय में बैनर फाड़ने की शिकायत

नई दिल्ली : आप ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) कार्यालय में राजेंद्र नगर विधानसभा क्षेत्र में विपक्षी पार्टी द्वारा बैनर व पोस्टर फाड़ने की शिकायत की है। पार्टी की लीगल टीम के सदस्य मो. इरशाद ने शनिवार को बताया कि क्षेत्र में पार्टी के संदेश वाले बोर्ड व वॉल पैनल पांच जगह लगाए गए थे। इनको लगाने की नियमानुसार अनुमति भी ली गई थी। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा के इशारे पर स्थानीय निकाय के अधिकारियों ने पोस्टर को फाड़ कर हटा दिया। विपक्षी पार्टी की तरफ से राजनीतिक द्वेष में आप के बैनर व पोस्टरों को हटाया जा रहा है। उन्होंने चुनाव आयोग से तुरंत भाजपा और स्थानीय निकाय के जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। (जासं)

इस बार संक्रांति पर उड़ेगी सियासी पतंग

संतोष कुमार सिंह, नई दिल्ली

दिल्ली विधानसभा चुनाव की घोषणा के साथ ही गहमागहमी शुरू हो गई है। 14 जनवरी से विधानसभा चुनाव की अधिसूचना जारी होगी और उसी दिन से उम्मीदवार नामांकन पत्र दाखिल कर सकेंगे। राजनीतिक पार्टियां चुनाव प्रचार में तेजी लाने के साथ ही एक-दूसरे पर तीखे हमले भी कर रही हैं। इसका असर इस बार लोहड़ी व मकर संक्रांति के त्योहार पर भी दिखेगा। नेता त्योहार के बहाने मतदाताओं तक पहुंचकर अपनी बात रखने की तैयारी कर रहे हैं। भाजपा भी दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों में कार्यक्रम आयोजित करेगी, जिसमें स्थानीय नेताओं के साथ ही प्रदेश के नेता भी शामिल होंगे।

लोहड़ी व मकर संक्रांति का त्योहार भी नेताओं को मतदाताओं के बीच पहुंचने का अच्छा अवसर है। उत्तर भारत विशेषकर पंजाबी समाज में यह त्योहार विशेष महत्व रखता है। इसे ध्यान में रखकर भाजपा ने सिख व पंजाबी बहुल जनकपुरी, हरिनगर, तिलक नगर, राजौरी गार्डन, मादीपुर, अशोक विहार, तिमारपुर, करोलबाग, राजेंद्र नगर, मोती नगर, शाहदरा सहित 25 विधानसभा क्षेत्रों में लोहड़ी मनाने का फैसला किया है। इन विधानसभा क्षेत्रों में 12 व 13 जनवरी को शाम के समय लोहड़ी जलाई जाएगी। वहां पर भाजपा के झंडे लगाए जाएंगे और वीडियो रथ के जरिये लोगों को नरेंद्र मोदी सरकार की उपलब्धियों की जानकारी दी जाएगी। इन कार्यक्रमों में दिल्ली भाजपा के प्रभारी श्याम जाजू, अध्यक्ष मनोज तिवारी, चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक तरुण चुघ सहित अन्य नेता शामिल होंगे।

इसी तरह से पूर्वांचल के लोगों को साधने के लिए मकर संक्रांति पर कार्यक्रम आयोजित करने की तैयारी की जा रही है। पिछले वर्षों में पार्टी बड़े स्तर पर कार्यक्रम आयोजित करती थी, लेकिन इस बार विधानसभा स्तर पर कार्यक्रम होंगे। बुराड़ी, किराड़ी, शालीमार बाग, जनकपुरी, पालम, संगम विहार, पटपड़गंज व लक्ष्मीनगर में मकर संक्रांति का कार्यक्रम आयोजित करने का फैसला किया गया है। इसके साथ ही कई स्थानों पर सामूहिक रूप से पतंगबाजी की भी व्यवस्था की जा रही है।

नेताओं को मतदाताओं के बीच पहुंचने का लोहड़ी व संक्रांति अच्छा अवसर

लोहड़ी को लेकर कार्यकर्ताओं में उत्साह है। कार्यकर्ता लोगों के बीच पहुंचकर त्योहार की खुशी बांटने की तैयारी कर रहे हैं। अलग-अलग स्थानों पर दो दिन कार्यक्रम आयोजित होंगे जिसमें वरिष्ठ नेता भी शामिल होंगे।

-कुलदीप सिंह, संयोजक, प्रदेश भाजपा सिख प्रकोष्ठ

भाजपा अलग-अलग हिस्सों में कार्यक्रम करेगी आयोजित

मकर संक्रांति के अवसर पर आठ विधानसभा क्षेत्रों में कार्यक्रम आयोजित होंगे। प्रत्येक स्थान पर छोटी सभा होगी। उसके बाद सहभोज का आयोजन होगा। प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी भी इन कार्यक्रमों में शामिल होंगे। इसकी तैयारी चल रही है।

-मनीष सिंह, अध्यक्ष, प्रदेश भाजपा पूर्वांचल मोर्चा

भाजपा में उम्मीदवार चुनने को लेकर शुरू हुआ मंथन

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

टिकट दावेदारों की सूची तैयार करने के लिए शनिवार को दिल्ली विधानसभा चुनाव समिति की बैठक प्रदेश कार्यालय में हुई। प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में उम्मीदवारों को लेकर गत दिनों रायशुमारी कराई गई थी। क्षेत्र के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से उम्मीदवारों को लेकर उनकी पसंद लिखित रूप में ली गई थी। लगभग दो घंटे तक चली बैठक में कार्यकर्ताओं के सुझाव पर चर्चा हुई।

विधानसभा चुनाव समिति का गठन शुक्रवार को किया गया था। इसमें दिल्ली के सभी सांसदों के साथ ही केंद्रीय पदाधिकारी व अन्य नेता शामिल हैं। समिति की पहली बैठक में चुनाव प्रभारी प्रकाश जावडेकर ने कहा कि भाजपा संगठन के आधार पर चलती है। बूथ कार्यकर्ता संगठन की इकाई हैं। इनका समर्पण और ताकत ही भाजपा की जीत तय करती है। भाजपा में कार्यकर्ताओं की आवाज सुनी जाती है और उनकी सलाह से कोई फैसला होता है। 70 विधानसभा क्षेत्रों में लगभग साढ़े तीन हजार कार्यकर्ताओं से उम्मीदवारों को लेकर सुझाव लिए गए हैं। अब उन नामों पर विस्तार से चर्चा करने के बाद उम्मीदवार का नाम फाइनल किया जाएगा।

बैठक में केंद्रीय राज्यमंत्री व चुनाव सह प्रभारी हरदीप सिंह पुरी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व प्रदेश प्रभारी श्याम जाजू, प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी, राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अनिल जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दुष्यंत गौतम, राष्ट्रीय मंत्री व चुनाव प्रबंधन समिति संयोजक तरुण चुघ, केंद्रीय मंत्री व सांसद डॉ. हर्षवर्धन, राज्यसभा सदस्य विजय गोयल आदि मौजूद रहे।

सब्सिडी का विरोध क्यों कर रही भाजपा : सिसोदिया

आरोप ▸ चुनिंदा उद्योगपतियों को लाभ पहुंचाने की है मंशा

जनता को बिकाऊ कहना चाहते हैं भाजपा नेता, जबकि वह हमेशा मालिक होती है

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा है कि आखिर भाजपा के लोग सब्सिडी का विरोध क्यों कर रहे हैं। जनता को बिजली, पानी और महिलाओं को बस में फ्री यात्रा का भाजपा विरोध कर रही है। इससे ऐसा लगता है कि भाजपा नेता जनता को बिकाऊ कहना चाहते हैं, जबकि जनता हमेशा मालिक होती है और सरकारें उनकी नौकर। नौकर का फर्ज है कि वह अपने मालिक की सेवा करे। जनता टैक्स देती है और सरकार का काम होता है कि वह जनता को टैक्स के बदले सुविधा दे।

शनिवार को पार्टी मुख्यालय में सिसोदिया ने कहा कि भाजपा के कई बड़े नेताओं ने बयान दिए हैं। इनमें उन्होंने साफ तौर पर कहा है कि अगर दिल्ली में भाजपा की सरकार बनी, तो दिल्ली की जनता को मिलने वाली मुफ्त बिजली, पानी, महिलाओं की यात्रा और बुजुर्गों की तीर्थयात्रा जैसी सभी योजनाओं को बंद कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि भाजपा के नेताओं ने कहा है कि वे दिल्ली की जनता को मिलने वाली सभी मुख्य योजनाओं के खिलाफ हैं। भाजपा के नेताओं के बयान से यह प्रतीत हो रहा है कि वे दिल्ली की जनता को बिकाऊ कहना चाह रहे हैं। मैं भाजपा के तमाम लोगों से कहना चाहता हूं कि जनता बिकाऊ नहीं, बल्कि मालिक होती है। उपमुख्यमंत्री सिसोदिया ने कहा कि कुछ दिन पहले भाजपा के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी ने कहा था कि वह आप द्वारा दी जा रही मुफ्त सुविधाओं से पांच गुना अधिक मुफ्त सुविधाएं देंगे। तिवारी के इस बयान पर तुरंत प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा के केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावडेकर ने उनके बयान का खंडन किया। जावडेकर ने सार्वजनिक तौर पर बयान जारी करते हुए कहा था कि हम कोई भी सुविधा मुफ्त नहीं देंगे, बल्कि जो मुफ्त सुविधाएं चल रही हैं, उनको बंद किया जाएगा।

भाजपा के इस कदम से यह साबित होता है कि भाजपा कुछ चुनिंदा उद्योगपतियों को लाभ पहुंचाने की मंशा से दिल्ली की जनता की जेब पर डाका डालना चाहती है। दिल्ली की जनता मालिक है। इसलिए भाजपा के नेताओं को ठीक से पेश आना पड़ेगा। उन्होंने दिल्ली की जनता का आह्वान किया कि वह भाजपा के इन नेताओं की बातें ध्यान से सुन लें और तय कर लें कि आने वाले चुनाव में भाजपा को जाने वाला एक-एक वोट महंगी बिजली, महंगे पानी, महंगी बस यात्रा और महंगी पढ़ाई को जाएगा। दिल्ली की जनता भाजपा के लोगों से सावधान रहे।

केजरीवाल ने भी भाजपा पर साधा निशाना

राज्य ब्यूरो,नई दिल्ली : आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने भाजपा को आड़े हाथों लिया है। केजरीवाल ने शनिवार को एक ट्वीट कर कहा है कि भाजपा दिल्लीवासियों को फ्री बिजली, पानी, शिक्षा, दवा और महिलाओं के लिए बस में सफर जैसी सुविधाओं का विरोध कर रही है। उन्होंने भ्रष्टाचार का पैसा बचाकर दिल्ली के लोगों को ये सुविधाएं दी हैं। भाजपा बताए कि क्या जनता का पैसा चोरी करना ठीक है या चोरी बंद करके उस पैसे से जनता को फ्री सुविधाएं देना ठीक है।

'लगे रहो केजरीवाल' का ऑडियो-वीडियो लांच

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

आप ने शनिवार को दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए अपना थीम सांग 'लगे रहो केजरीवाल' का ऑडियो-वीडियो लांच कर दिया। इस गीत को आप के वरिष्ठ नेता व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया व सांसद संजय सिंह ने लांच किया। इस गीत के जरिये दिल्ली के निवासियों की भावनाओं को प्रदर्शित किया गया है। साथ ही केजरीवाल सरकार के पांच साल के कार्यकाल में किए गए कार्यों को बताने की कोशिश की गई है। इस दौरान सिसोदिया ने कहा कि यह गाना न सिर्फ दिल्ली के लोगों की आवाज है, बल्कि यह अगले पांच साल के लिए दिल्ली का थीम सांग भी बनने जा रहा है। हिंदी फिल्म जगत के मशहूर गीतकार और गायक विशाल डडलानी ने इस गीत को तैयार किया है। इसे डडलानी ने ही कंपोज भी किया है और गाया भी है।

पार्टी मुख्यालय में थीम सांग लांच करते हुए सिसोदिया ने कहा कि वह जहां भी गए, जिस भी नुक्कड़ और मीटिंग में गए सभी ने यही कहा कि अरविंद केजरीवाल ने बहुत काम किया है, लगे रहो...। दिल्ली की जनता के बीच से यह नारा निकल कर आया है कि 'अच्छे बीते पांच साल, लगे रहो केजरीवाल'। दिल्ली के लोगों ने प्रेम, विश्वास और उम्मीद से बोला है कि लगे रहो केजरीवाल। पूरी दिल्ली के लोगों और युवाओं ने नारे को बार-बार दोहराया। वही नारा आज आप अधिकारिक सांग बन गया है। हर तरफ यही गीत जनता गुनगुना रही है। उन्होंने कहा कि यह गाना दिल्ली के लोगों का भारी समर्थन और आशीर्वाद है। उन्होंने कहा कि अगले 30 दिन तक यह वीडियो और ऑडियो दिल्ली की जनता में गूंजेगा। इस गाने को वेबसाइट 'लगे रहो केजरीवाल डॉट कॉम' से भी डाउनलोड किया जा सकता है या वहां जाकर सुन सकते हैं। साइट पर ऑडियो और वीडियो वर्जन उपलब्ध है। इस गाने पर परफार्मेंस करने के लिए 20 टीमें तैयार की गई हैं। अभी सैकड़ों टीमें और बनाई जाएंगी, जो सड़कों, नुक्कड़, बाजार और सभाओं में इस गाने पर परफार्मेंस करेंगी। बता दें कि इससे पहले 2015 में पांच साल केजरीवाल गाना लागू किया गया था, जो हिट रहा था।

आम आदमी पार्टी कार्यालय में विधानसभा चुनाव को लेकर थीम सांग लांच करते (बाएं से) पंकज गुप्ता, उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, राज्यसभा सदस्य संजय सिंह और आतिशी। जागरण

आप का दावा, चुनाव प्रचार में उतरेंगे 1.3 लाख वॉलंटियर

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : पिछली बार से अधिक सीटें जीतने का लक्ष्य लेकर चुनाव मैदान में उतरी आप इस बार भी पूरी तैयारी के साथ चुनाव में उतर चुकी है। पार्टी ने चुनाव प्रचार के लिए मेगा अभियान शुरू करने की रणनीति बनाई है। इसके तहत 1.3 लाख वॉलंटियर लगाए जाएंगे। प्रत्याशियों की घोषणा के साथ ही यह अभियान शुरू हो जाएगा। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, आप ने चुनाव प्रचार के लिए जो रणनीति बनाई है, उसके तहत मेट्रो, बस और प्रमुख स्थानों पर पार्टी का प्रचार अभियान चलेगा। दिल्ली के 1.3 लाख वॉलंटियर मोर्चा संभालेंगे। मतदान के दिन चुनाव प्रबंधन के लिए भी हर बूथ पर 10 वॉलंटियर काम करेंगे। इन्हें समझाया गया है कि प्रचार अभियान में आप सरकार की उपलब्धियों को लोगों को बताना है। लोगों से पूछा जाएगा कि क्या उन्हें 200 यूनिट बिजली मुफ्त मिल रही है? क्या महीने में 20 हजार लीटर पानी मुफ्त मिल रहा है? बस स्टैंड पर महिलाओं से पूछा जाएगा कि मुफ्त बस यात्रा का लाभ मिल रहा है? बुजुर्गों से बात की जाएगी कि मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा का लाभ मिला है, यदि नहीं मिला तो उसके क्या कारण रहे?

आप व कांग्रेस में पर्दे के पीछे हुआ गठबंधन : विजय गोयल

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

भाजपा का कहना है कि नगर निगम और उसके बाद लोकसभा चुनाव में अपनी दुर्गति को देखकर आम आदमी पार्टी (आप) और कांग्रेस पर्दे के पीछे गठबंधन करने में लगी हुई हैं। राज्यसभा सदस्य और पूर्व केंद्रीय राज्यमंत्री विजय गोयल ने कहा कि दोनों पार्टियों ने भ्रष्टाचार, हिंसा और मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए आपस में गठजोड़ कर लिया है। वह प्रदेश भाजपा कार्यालय में आयोजित प्रेसवार्ता को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव में भी दोनों पार्टियां गठबंधन करना चाहती थीं। अब विस चुनाव में भी पर्दे के पीछे यह कवायद चल रही है। कांग्रेस के प्रभारी पीसी चाको कह चुके हैं कि चुनाव के बाद उनकी पार्टी आप को समर्थन देगी। चुनावी लाभ के लिए नागरिकता संशोधन कानून (सीएए), राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) और जेएनयू मामले को लेकर दोनों पार्टियों के नेताओं ने लोगों को भड़काकर हिंसा कराने की साजिश रची थी। जामिया में कांग्रेस के आसिफ मोहम्मद खान व आप के अमानतुल्लाह खान ने और सीलमपुर में आप के हाजी इशराक व कांग्रेस के मतीन अहमद ने लोगों को हिंसा के लिए भड़काया था। उन्होंने कहा कि 2013 में कांग्रेस पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाकर आप सत्ता में आई थी। 375 पेज का आरोप पत्र दिखाते हुए अरविंद केजरीवाल कांग्रेस नेताओं को जेल भेजने और बच्चों की कसम खाकर कांग्रेस से गठबंधन नहीं करने की बात करते थे। चुनाव के बाद आप ने कांग्रेस के साथ मिलकर सरकार बना ली थी।

आप से किए चार सवाल

- कांग्रेस के 15 साल के भ्रष्टाचार पर क्या रुख है, जिन्हें आरोपित बताकर जेल भेजने की बात करते थे उनके खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं की?
- 1984 के सिख विरोधी दंगे के लिए गांधी परिवार से माफी मांगने को कहेंगे?
- क्या कांग्रेस को समर्थन नहीं देने को लेकर आप मुखिया एक बार फिर से बच्चों की कसम खाएंगे?
- राष्ट्रविरोधी नारे लगाने के आरोपित कन्हैया कुमार पर मुकदमा चलाने की अनुमति क्यों नहीं दी?

विजय गोयल। जागरण

राजधानी के ताज को सजा रहे हैं हरियाणा के 'हीरे'

महेश कुमार वैद्य, रेवाड़ी

राजधानी के महासमर का शंखनाद होने के साथ ही हरियाणा की गलियों में भी सियासी गोटियां बिछने लगी हैं। दरअसल, हरियाणा और दिल्ली का साथ ही चोली और दामन का है। दिल्ली की मौजूदा सरकार के ताज में ही हरियाणा के दस हीरे (विधायक) सजे हुए हैं। खास बात यह है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का बचपन भी भिवानी के सिवानी कस्बे की गलियों में गुजरा है। दिल्ली की सियासत में ऐसे कई नेता हैं, जो हरियाणा छोड़कर गए तो वहां के लोगों ने उन्हें सर आंखों पर बैठा लिया। चुनाव की घोषणा के बाद एक बार फिर से हरियाणा की यह जिज्ञासा है कि इस बार किस पार्टी से किस हरियाणवी चेहरे को चुनावी मैदान में उतारा जाएगा। पिछली बार कांग्रेस व भाजपा ने भी लगभग 10 ऐसे उम्मीदवार उतारे थे, जिनका खुद का या पूर्वजों का हरित प्रदेश से नाता रहा था।

रेवाड़ी की हैं पालम की विधायक : पालम से आम आदमी पार्टी की विधायक भावना गौड़ रेवाड़ी जिले के गांव कनुका की हैं। लगभग चार महीने पहले गौड़ कनुका आई थीं। मंगतराम गौड़ की बेटी ने रोहतक से बीएड की शिक्षा ग्रहण की थी।

झज्जर से हैं तीन विधायक : सबसे अधिक तीन विधायक इस समय झज्जर जिले से हैं। झज्जर के गांव छारा ने दो-दो विधायक दिए थे। मंगोलपुरी से राखी बिड़ला व सुरेंद्र कमांडो दोनों का पैतृक गांव छारा है। इसके अलावा मुंडका से विधायक सुखबीर दलाल का पैतृक गांव झज्जर जिले का मातन है। वर्ष 2015 में कांग्रेस की टिकट पर चुनाव हारे मुकेश शर्मा का पैतृक गांव देवरखाना भी झज्जर में ही है। कांग्रेस के योगानंद शास्त्री भी अपने जमाने में दिल्ली की राजनीति के दिग्गज रहे हैं। इनका पैतृक गांव भदानी भी झज्जर जिले में है।

कैथल, सोनीपत व जींद ने भी दिए विधायक : दिल्ली को कैथल, सोनीपत व जींद ने भी विधायक दिए हैं। वर्ष 2015 में रिठाला से जीते महेंद्र गोयल के पिता पोलूराम गोयल कैथल जिले के गांव सांगरी गुलियाना के मूल निवासी थे। सुल्तानपुर माजरा के विधायक संदीप कुमार का पैतृक गांव सरगथल सोनीपत जिले में है। इसी क्रम में शाहदरा के विधायक रामनिवास गोयल जींद जिले के सफीदों मंडी के गांव अहर से आकर दिल्ली वाले बने हैं।

इनके दिल में भी है हरियाणा : आदर्श नगर से विधायक पवन कुमार शर्मा का पैतृक गांव बास हिसार जिले में है। ग्रेटर कैलाश से विधायक सौरव भारद्वाज गुरुग्राम की नामचीन बहुराष्ट्रीय कंपनी में साफ्टवेयर इंजीनियर थे। सोमनाथ भारती के पूर्वज करनाल में रहते थे। अनिल वाजपेयी की बहन रोहतक में रहती हैं। करतार सिंह तंवर ने हरियाणा से ही सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा किया था। इनकी ननिहाल भी हरियाणा से है।

इन्होंने भी बढ़ाया हरियाणा का गौरव : भाजपा की दिल्ली की राजनीति के बड़े चेहरे रहे प्रो. जगदीश मुखी ने भी हरियाणा का गौरव बढ़ाया। हालांकि आप की बुलंदियों के बीच इनकी चुनावी राजनीति को झटका लगा, परंतु सोहना निवासी प्रो. मुखी ने हरियाणा से गहरा लगाव रखा। बवाना से कांग्रेस की टिकट पर कई बार जीते-हारे सुरेंद्र सिंह की बहन शकुंतला भगवाड़िया रेवाड़ी के बावल से चार बार चुनाव जीतीं तथा हरियाणा में कई विभागों की मंत्री रही हैं। उनके समधी चौ. प्रेम सिंह का भी दिल्ली की राजनीति में अहम स्थान था। गुरुग्राम के घाटा के सतनपाल ने भी पिछली बार कांग्रेस की टिकट पर चुनाव लड़ा था।

दिल्ली तीन तरफ से हरियाणा से घिरी है। व्यापारिक व अन्य कई कारणों से हरियाणा के हजारों लोग अब दिल्ली के हो चुके हैं। आप ने हमेशा हरियाणा के लोगों को अहमियत दी है। हरियाणा के लोगों ने भी केजरीवाल का हमेशा साथ दिया है। इस बार विधानसभा चुनाव में भी हरियाणा की अहम भूमिका रहेगी।

-नवीन जयहिंद, प्रदेश संयोजक, आप, हरियाणा

नेशनल कैपिटल

गौतमबुद्धनगर में पुलिस कमिश्नर प्रणाली पर लग सकती है मुहर

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

आइपीएस संवर्ग के अधिकारी चालीस से अधिक वर्षों से उप्र में पुलिस कमिश्नर प्रणाली लागू कराने की जो जंग लड़ रहे थे, वह आखिरकार निर्णायक मोड़ पर पहुंच गई है। कानून-व्यवस्था के मोर्च पर अब पुलिस के पास भी प्रशासनिक अधिकारियों की तरह बड़े अधिकार होंगे। लखनऊ व गौतमबुद्धनगर में पुलिस कमिश्नर प्रणाली लागू किए जाने का प्रस्ताव तैयार कर शासन को सौंप दिया गया है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को वरिष्ठ अधिकारियों के साथ खास बैठक कर इसे लागू किए जाने को लेकर गहन विचार विमर्श भी किया। सोमवार को प्रस्तावित कैबिनेट बैठक में पुलिस कमिश्नर प्रणाली को मंजूरी दिए जाने की चर्चा है। इससे पहले पुलिस कमिश्नर को दिए जाने वाले अधिकारों को लेकर गहन मंथन चल रहा है। इस कसरत के चलते ही लखनऊ व गौतमबुद्धनगर में अब तक एसएसपी की तैनाती नहीं की गई है।

डीजीपी मुख्यालय ने पुलिस कमिश्नर प्रणाली लागू किए जाने को लेकर जो प्रस्ताव तैयार किया है, उसमें लखनऊ में एडीजी स्तर के अधिकारी को पुलिस आयुक्त बनाने की सिफारिश की गई है। पुलिस आयुक्त के नीचे आइजी स्तर के दो अधिकारियों को संयुक्त पुलिस आयुक्त, एसपी स्तर के नौ अधिकारियों को पुलिस उपायुक्त, एएसपी स्तर के नौ अधिकारियों को अपर पुलिस उपायुक्त व सीओ स्तर के 26 अधिकारियों को सहायक पुलिस आयुक्त के पदों पर तैनाती दिए जाने का प्रस्ताव है। ऐसे ही गौतमबुद्धनगर में आइजी अथवा उससे वरिष्ठ अधिकारी को पुलिस आयुक्त, उनके अधीन डीआइजी स्तर के दो अधिकारियों को अपर पुलिस आयुक्त, एसपी स्तर के छह अधिकारियों को पुलिस उपायुक्त, एएसपी स्तर के नौ अधिकारियों को अपर पुलिस उपायुक्त व सीओ स्तर के 15 अधिकारियों को सहायक पुलिस आयुक्त बनाए जाने का प्रस्ताव है।

डीजीपी ने शासन को सौंपा प्रस्ताव, लखनऊ में लागू हो सकती है नई प्रणाली

सियासत

कोर कमेटी ने की विस्तार से चर्चा, 20 सीटों पर सर्वे करेंगी पांच टीमें, दुष्यंत ने कहा, भाजपा के साथ चुनावी समझौते को प्राथमिकता

दिल्ली चुनाव में उतरने को जजपा तैयार

विजेंद्र बंसल, नई दिल्ली

हरियाणा सरकार में भाजपा की साझीदार जननायक जनता पार्टी (जजपा) दिल्ली विधानसभा चुनाव में उतरने का मन बना चुकी है। वह चाहती है कि दिल्ली में भाजपा से गठबंधन हो जाए। इसके लिए उसे मोदी-शाह की तरफ से बुलावे का इंतजार है। अगर ऐसा नहीं हुआ तो जजपा अकेले भी ताल ठोक सकती है।

दिल्ली के चाणक्यपुरी स्थित हरियाणा स्टेट गेस्ट हाउस में बैठक की अध्यक्षता करते हुए हरियाणा के उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि पार्टी की प्राथमिकता होगी कि भाजपा के साथ चुनावी समझौता हो जाए। बताते हैं कि कोर टीम ने निर्णय लिया कि अगले दो दिन में पार्टी की पांच टीमें हरियाणा से लगती दिल्ली की 20 सीटों पर जमीनी स्तर का सर्वे करेंगी। इसके बाद पार्टी निर्णय लेगी।

भाजपा पांच सीट पर समझौता भी करेगी तो 20 का फायदा होगा : बैठक में नेताओं ने अपनी मजबूती और दिल्ली में भाजपा की कमजोरी पर भी चर्चा की। स्पष्ट राय थी कि यदि भाजपा दिल्ली में पांच सीटों पर जजपा के साथ समझौता करती है तो उसे 20 सीटों पर सीधा फायदा मिलेगा।

दो दिन में देंगी पांचों टीम अपनी रिपोर्ट : इस बैठक में पार्टी नेता दिग्विजय सिंह, डॉ. केसी बांगड़, अनंतराम तंवर, चौधरी हर्ष कुमार, ठाकुर राजाराम, राजेंद्र लतानी सहित रविंद्र सांगवान की पांच टीमें गठित की गई हैं। ये टीम अगले दो दिन में हरियाणा से लगती दिल्ली की 20 से 25 सीटों पर जमीनी स्तर की सर्वे रिपोर्ट देंगी। इन टीमों पर करीब 20 सीटों पर मजबूत प्रत्याशी खड़े करने की जिम्मेदारी होगी। इसलिए इनसे पहले ही दौर में भाजपा, कांग्रेस, आप सहित पूर्व सीएम साहिब सिंह वर्मा, शीला दीक्षित के उन मजबूत समर्थक कार्यकर्ताओं के नाम के पैनल भी मांगे गए हैं जो टिकट से वंचित रह सकते हैं। कुछ वरिष्ठ नेताओं को दिल्ली चुनाव के लिए घोषणापत्र बनाने का जिम्मा भी दिया गया है।

दिल्ली में जजपा हरियाणा के उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के नाम और काम पर चुनाव लड़ेगी। हरियाणा से लगते दिल्ली के क्षेत्रों में दुष्यंत न सिर्फ युवाओं के प्रेरणादायक युवा नेता हैं, बल्कि बुजुर्गों की आस हैं। दिल्ली के लोग भी उनमें हरियाणा की तरह संभावनाएं देख रहे हैं।

-दिग्विजय सिंह चौटाला, इनसो अध्यक्ष

एक दिन पहले मतदान केंद्र पर पहुंचने का किया विरोध

जासं, नई दिल्ली : दिल्ली विधानसभा चुनाव में मतदान प्रक्रिया समय से शुरू करने के लिए दिल्ली निर्वाचन अधिकारी कार्यालय द्वारा कर्मियों को एक दिन पहले मतदान केंद्र पर भेजने के फैसले का शिक्षकों ने विरोध जताया है। शिक्षक न्याय मंच के दिल्ली अध्यक्ष प्रदीप डागर ने निर्वाचन अधिकारी कार्यलय को पत्र लिखकर इस फैसले का विरोध किया है। उन्होंने लिखा कि हजारों शिक्षक एकल परिवार से आते हैं। ऐसे में अगर एक दिन पहले मतदान केंद्र पर पहुंचाया जाएगा तो पति-पत्नी दोनों की चुनाव ड्यूटी होने पर बच्चे घर पर रात भर अकेले रह जाएंगे। इससे बच्चों की सुरक्षा पर गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है। शिक्षक नगर निगम मंच के निगम इकाई के अध्यक्ष कुलदीप सिंह खत्री ने भी इस फैसले का विरोध किया है। हालांकि मुख्य निर्वाचन अधिकारी का कहना है कि चुनाव ड्यूटी के दौरान अगर किसी कर्मचारी की कोई समस्या है तो उसको छूट दी जाएगी।

पुस्तक मेला में आठवे दिन उमड़ी पुस्तक प्रेमियों की भीड़

जासं, नई दिल्ली : विश्व पुस्तक मेला शनिवार को पाठकों से गुलजार रहा। पुस्तक प्रेमियों के साथ साथ लेखक-साहित्यकारों का जमावड़ा रहा। नौ दिनों तक चलने वाले इस पुस्तक मेले के आठवें दिन करीब 60 हजार पुस्तक प्रेमी मेले में पहुंचे। ऑनलाइन बुक स्टोर के स्टॉल (हॉल नं. 12ए) पर किताब प्रीत मीत से के कवर पेज का अनावरण किया गया। अनुभव शर्मा द्वारा संपादित इस किताब में देशभर के 31 रचनाकारों की रचनाएं शामिल की गई हैं। कवर पेज के अनावरण के बाद इसी पुस्तक से काव्यपाठ किया गया। इसी तरह डॉ. राकेश कुमार योगी की पत्रकारिता और राजनीति पर आधारित पुस्तक का विमोचन किया गया। सामयिक प्रकाशन के स्टॉल (हॉल नं. 12ए) पर लेखक आलोक मेहता की लेखनी पर परिचर्चा आयोजित की गई। परिचर्चा में महेश दर्पण ने आलोक मेहता से कई मुद्दों पर सवाल-जवाब किए।

हाई कोर्ट ने तीन अधिवक्ताओं पर लगाया एक लाख जुर्माना

जासं, गाजियाबाद : इलाहाबाद हाई कोर्ट ने गाजियाबाद में तैनात जज के खिलाफ याचिका दायर करने वाले तीन अधिवक्ताओं पर एक लाख का जुर्माना लगाया है। कोर्ट ने टिप्पणी की कि अधिवक्ताओं ने मुकदमे में फैसले के खिलाफ कानूनी प्रक्रिया का पालन नहीं किया, जबकि हाई कोर्ट में जज की न्याय प्रक्रिया के खिलाफ जाकर उन्होंने शिकायत की। कोर्ट ने कहा कि किसी भी फैसले के खिलाफ उचित फोरम के तहत अपील करनी चाहिए। प्राप्त जानकारी के मुताबिक, पिछले दिनों ने तीन अधिवक्ताओं ने एक जज द्वारा निर्धारित किए गए कई मुकदमों के फैसलों के खिलाफ हाई कोर्ट में शिकायती याचिका दायर की थी। हाई कोर्ट ने याचिका पर सुनवाई करते हुए उसे खारिज कर दिया। कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि अधिवक्ता फैसले के खिलाफ याचिका दाखिल करने के बजाय अदालत पर अनावश्यक दबाव बना रहे हैं।

11 साल से घटाकर पांच वर्ष कर दिया गया है निवास की शर्त को नागरिकता संशोधन कानून में। इस विशेष शर्त के आधार पर पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के अल्पसंख्यक नागरिकता के लिए आवेदन कर सकते हैं।

'सीएए पर विपक्ष के झूठ से फैली अराजकता'

शाह बोले ▸ मुद्दों के अभाव में अफवाह फैला रहे हैं विपक्षी दल

कहा- विरोध करने वाले कोई ऐसा प्रावधान दिखाएं जो देश के मुस्लिमों की नागरिकता छीनता हो

शत्रुघ्न शर्मा, अहमदाबाद

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को आरोप लगाया कि नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) पर राहुल एंड कंपनी और अन्य विपक्षी पार्टियां झूठ फैलाकर लोगों को गुमराह कर रही हैं जिसकी वजह से देश में अराजकता का माहौल पैदा हुआ।

गुजरात पुलिस की कई परियोजनाओं के उद्घाटन अवसर पर अमित शाह ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी, बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और वामदलों को चुनौती दी कि वे सीएए में कोई ऐसा प्रावधान दिखाएं जो देश के मुस्लिमों की नागरिकता छीनता हो। नरेंद्र मोदी सरकार में सुरक्षा को प्राथमिकता बताते हुए गृह मंत्री ने कहा कि जब भारत ने सर्जिकल स्ट्राइक्स और एयर स्टाइक्स कीं तो यह अमेरिका और इजरायल के बाद ऐसा करने वाला तीसरा देश बन गया। उन्होंने कहा, 'विपक्ष के पास कोई और मुद्दा नहीं है इसलिए वह सीएए पर गलत जानकारी और झूठ फैला रहा है। इससे पूरे देश में अराजकता का माहौल बना है। उत्पीड़न के शिकार अल्पसंख्यक भारत में खुद को बचाने के लिए आए हैं। पूर्ववर्ती सरकारों ने यह सोचकर इन लोगों को किसी तरह की सुविधा नहीं दी कि इससे अन्य लोग नाखुश हो जाएंगे। मैं भाजपा कार्यकर्ताओं से अनुरोध करता हूं कि वे हर घर में जाएं और सीएए के खिलाफ फैलाए जा रहे झूठ को बेनकाब करें। चूंकि वर्तमान राजनीति में मोदी जी का कोई विकल्प नहीं है इसलिए विपक्ष झूठ का सहारा ले रहा है। हमारे पास लोगों को सच बताने की शक्ति है। हमारा अभियान पूरा हो जाएगा तो लोग सीएए की अहमियत समझ जाएंगे।' शाह ने दावा किया कि अनुच्छेद 370 हटने के बाद से कश्मीर में कोई हिंसा नहीं हुई है और न ही इस वजह से वहां किसी व्यक्ति की मौत हुई है। गुजरात के गृह विभाग की सराहना करते हुए गृह मंत्री ने कहा कि तकनीक के इस्तेमाल से कानून-व्यवस्था का पालन कराना सरल हो जाता है।

गांधीनगर में शनिवार को गुजरात पुलिस के 'विश्वास' (वीडियो इंटिग्रेशन एंड स्टेट वाइड एडवांस सेक्योरिटी) और 'साइबर अश्वस्त' (अश्योर्ड अस्सिटेंस सर्विस हेल्पलाइन फॉर विक्टिम्स एट शॉर्टेस्ट टाइम्स) प्रोजेक्ट के उद्घाटन अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को स्मृति चिह्न भेंट करते मुख्यमंत्री विजय रूपाणी (बाएं)। एएनआइ

रूपाणी ने गांधी-पटेल से की मोदी-शाह की तुलना

इस मौके पर गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपाणी ने नरेंद्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी की तुलना महात्मा गांधी और सरदार पटेल से करते हुए कहा कि दोनों ने देश को मजबूत राष्ट्र बनाने के लिए एक के बाद एक बड़े फैसले लिए हैं। उन्होंने कहा कि देश को स्वाधीनता दिलाने के लिए गुजरात के दो महान पुत्रों महात्मा गांधी और सरदार पटेल ने स्वाधीनता आंदोलन चलाया और देश को आजादी दिलाई। जबकि प्रधानमंत्री मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री शाह के रूप में गुजरात के इन दोनों पुत्रों ने भी देश और दुनिया में गुजरात का नाम रोशन किया है।

सीएए के खिलाफ केरल सरकार का विज्ञापन गलत : राज्यपाल

- संसद से पास कानून के खिलाफ सरकारी विज्ञापन हैरान करने वाला
- शुक्रवार को तीन राष्ट्रीय अखबारों के मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित हुए विज्ञापन

तिरुअनंतपुरम, प्रेट्र : केरल के राज्यपाल आरिफ मुहम्मद खान ने नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के खिलाफ राज्य की माकपा नीत एलडीएफ सरकार के विज्ञापनों को पूरी तरह से अवांछनीय बताया है। राज्यपाल ने कहा है कि राजनीतिक प्रचार के लिए सरकारी पैसे से विज्ञापन निकलवाना गलत है।

राज्य सरकार प्रायोजित ये विज्ञापन शुक्रवार को तीन राष्ट्रीय अखबारों में मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित हुए थे। इन विज्ञापनों में कहा गया है कि राज्य सरकार संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिए आगे बढ़कर प्रयास कर रही है और राज्य विधानसभा देश की पहली विधानसभा है जिसने सीएए के खिलाफ सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया है।

दिल्ली में आरिफ मुहम्मद खान ने टीवी चैनलों से बातचीत में कहा कि संसद द्वारा पास कानून के खिलाफ सरकारी पैसे से विज्ञापन देना, हैरान करने वाला है। अगर यह विज्ञापन किसी राजनीतिक दल की तरफ से दिया गया होता तो कोई समस्या नहीं थी।

विज्ञापनों में केरल सरकार ने कहा है कि लोगों के डर को दूर करने के लिए राज्य सरकार ने साहसिक पहल की है और राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर के काम को रोक दिया है, जिससे आखिरकार राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) का रास्ता बनता।

बता दें कि पी. विजयन सरकार ने भाजपा के राजनीतिक हत्याओं के आरोपों पर सात अगस्त, 2017 को भी राष्ट्रीय अखबारों में विज्ञापन दिया था। जिसमें दावा किया गया था कि केरल में अपराध की दर कम है।

आरिफ मुहम्मद खान। फाइल

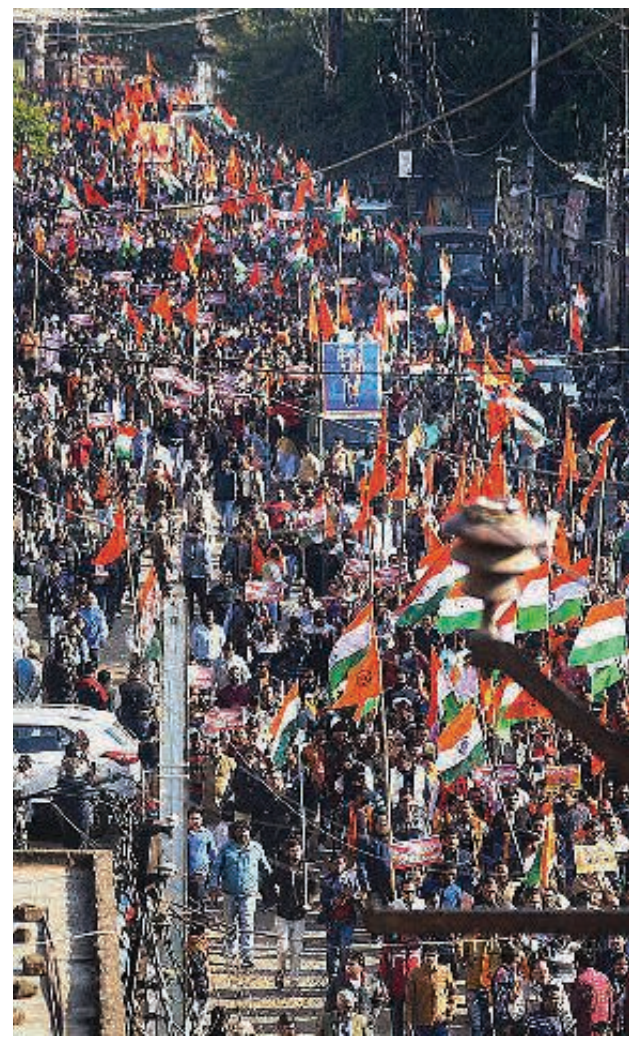

सीएए को मिला जनता का साथ

मध्य प्रदेश के ग्वालियर में शनिवार को जनजागरण मंच की ओर से नागरिकता संशोधन कानून के समर्थन में रैली निकाली गई। इस दौरान लोगों का बड़ा हुजूम देखने को मिला। विनोद पाल

महाराष्ट्र में नहीं लागू होगा सीएए : थोराट

नासिक, एएनआइ : महाराष्ट्र के राजस्व मंत्री बालासाहब थोराट ने शनिवार को कहा कि उनके राज्य में नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) लागू नहीं किया जाएगा। गौरतलब है कि एक दिन पहले ही केंद्रीय गृह मंत्रालय ने इसे लेकर अधिसूचना जारी किया था, जिसके मुताबिक देश भर में 10 जनवरी से नागरिकता संशोधन कानून लागू हो गया है। राज्य के राजस्व मंत्री थोराट ने यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'सीएए के खिलाफ देश भर में प्रदर्शन हो रहे हैं। कांग्रेस ने प्रदर्शनकारियों को पूरा समर्थन दिया है, क्योंकि यह कानून संविधान के खिलाफ है। इस वजह से सीएए को महाराष्ट्र में लागू नहीं किया जाएगा।'

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में हिंसा पर उन्होंने कहा कि यह बहुत ही हैरान करने वाला है कि जिन लोगों पर हमले हुए, उन्हीं के खिलाफ पुलिस ने केस दर्ज किए हैं। कांग्रेस इसके खिलाफ है और इसकी निंदा करती है।

थोराट ने कहा कि महाराष्ट्र सरकार किसानों के कर्ज माफ करना चाहती है, क्योंकि राज्य में सबसे ज्यादा किसान आत्महत्या कर रहे हैं। महाराष्ट्र सूखा प्रभावित राज्य है और किसान कर्ज में डूबे हुए हैं। राज्य की गठबंधन सरकार ने किसानों के कर्ज माफ करने का वादा किया है।

'नागरिकता संशोधन कानून वापस ले सरकार'

- कांग्रेस अध्यक्ष ने सरकार पर देश को धर्म के आधार पर बांटने का लगाया आरोप
- कार्यसमिति बैठक में सीएए, एनआरसी व एनपीआर के खिलाफ प्रस्ताव पारित

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कांग्रेस ने देश भर में हो रहे आंदोलनों का हवाला देते हुए नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के सियासी विरोध के तेवर और कड़े कर दिए हैं। कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में सीएए को वापस लेने की मांग कर विरोध की सियासत पर डटे रहने का साफ संदेश दे दिया गया। पार्टी ने राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) प्रक्रिया को भी रोकने की मांग की है। साथ ही भाजपा सरकार पर क्रूर बहुमत के सहारे विभाजनकारी और भेदभावकारी एजेंडा थोपने का आरोप लगाया है।

कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने कहा है कि सीएए के जरिए सरकार देश को धर्म के आधार पर बांटना चाहती है। राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) को एनपीआर के रूप में लाने की सरकार की योजना को उन्होंने भाजपा की इसी रणनीति का हिस्सा भी करार दिया। सोनिया गांधी की अध्यक्षता में कांग्रेस कार्यसमिति की शनिवार को यह बैठक सीएए-एनआरसी के खिलाफ देशव्यापी विरोध के मद्देनजर पार्टी की आगे की सियासी रणनीति तय करने के लिए बुलाई गई थी। इस बैठक में सीएए पर सवाल उठाने के प्रस्ताव के अलावा सीएए-एनआरसी के विरोध की आवाज को कुचलने की सरकार की कोशिशों के साथ जम्मू-कश्मीर से सभी तरह की पाबंदी हटाने और बिगड़ती आर्थिक स्थिति को संभालने में सरकार की नाकामी से जुड़े प्रस्ताव पारित किए गए।

सोनिया ने बैठक में कहा कि हजारों छात्र-छात्राओं, युवाओं और महिलाओं को इस बात का अहसास हो चुका है कि सीएए देश के लिए कितना हानिकारक है। इसीलिए इस सर्दी में भी बेहद साहस दिखाते हुए पुलिस की बर्बरता के बावजूद वे सड़कों पर उतर हैं। सोनिया ने कहा कि कांग्रेस मांग करती है कि एक समग्र उच्चाधिकार प्राप्त आयोग का गठन किया जाए जो सीएए विरोधी प्रदर्शनों से जुड़ी घटनाओं की जांच करे, ताकि इससे पीड़ित लोगों को न्याय मिल सके। एनपीआर प्रकिया 2020 पर किसी तरह की दुविधा में नहीं रहने को लेकर कांग्रेस नेताओं को सचेत करते हुए उन्होंने कहा कि इसकी शक्ल में एनआरसी को लाने का प्रयास है।

कार्यसमिति ने कहा है कि जेएनयू, दिल्ली विश्वविद्यालय, जामिया, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, एएमयू, इलाहाबाद विश्वविद्यालय समेत देश के तमाम शिक्षण संस्थाओं में सीएए के खिलाफ जबरदस्त विरोध प्रदर्शन हुए हैं। इसीलिए कांग्रेस भी छात्रों के संविधान बचाने की इस लड़ाई के प्रति अपना एकजुटता का इजहार करती है।

नई दिल्ली में शनिवार को कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक के दौरान (बाएं से) पार्टी के वरिष्ठ नेता केसी वेणुगोपाल, पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, पार्टी की कार्यकारी अध्यक्ष सोनिया गांधी। प्रेट्र

कोई भी ताकत सीएए का कार्यान्वयन नहीं रोक सकती

नई दिल्ली, प्रेट्र : भाजपा ने शनिवार को कहा कि धरती पर कोई भी ताकत सीएए का कार्यान्वयन नहीं रोक सकती। पार्टी ने कांग्रेस पर इस कानून और राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर की प्रक्रिया पर दोहरा चरित्र अपनाने का आरोप लगाया।

भाजपा प्रवक्ता जीवीएल नरसिम्हा राव ने कहा, 'सीएए पहले ही प्रभावी हो चुका है और धरती पर कोई भी ताकत इसके कार्यान्वयन को नहीं रोक सकती। अपने सभी प्रयासों में भाजपा सीएए और एनपीआर पर कांग्रेस के दोहरे चरित्र को उजागर कर रही है।' उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने राजस्थान विधानसभा चुनाव के घोषणा पत्र में हिंदू शरणार्थियों के लिए नागरिकता का वादा किया था। राव ने कहा, 'राजस्थान और गुजरात में हिंदू शरणार्थियों के लिए नागरिकता को 2005 और 2006 में दो मौकों पर मनमोहन सिंह सरकार ने बढ़ाया था।' उन्होंने कहा कि मनमोहन सिंह ने पाकिस्तान और बांग्लादेश से धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए नागरिकता की मांग की थी।

देश में घुसपैठियों की वकालत कर रही कांग्रेस : आदित्यनाथ

- सीएए के समर्थन में सभा को संबोधित किया उप्र के सीएम ने
- कहा- आपातकाल लगाकर कांग्रेस ने किया था संविधान का चीरहरण

नईदुनिया, ग्वालियर

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को मध्य प्रदेश के ग्वालियर में कहा कि कांग्रेस को आज भी शरणार्थियों और घुसपैठियों में अंतर महसूस नहीं होता है। देश के अंदर लगातार घुसपैठ से आतंकवाद, अलगाववाद, नक्सलवाद को पनपाने वालों की वकालत कांग्रेस और सहयोगी दल कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आपातकाल लगाकर जिस कांग्रेस ने संविधान का चीरहरण किया था, जिन लोगों ने खुद संविधान का गला घोंटा था, लोकतंत्र को रौंदकर एक परिवार के हाथ गिरवी रखने का काम किया था, वही आज संविधान बचाने की बात कर रहे हैं।

ग्वालियर में जनजागरण मंच की ओर से नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के समर्थन में सभा एवं रैली का आयोजन किया था। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के नेता और उनकी पार्टी के सहयोगी दल कहते हैं कि वे अपने राज्यों में सीएए लागू नहीं होने देंगे। क्या ऐसा कह कर संविधान को चुनौती नहीं दी जा रही है? क्या कांग्रेस एक बार फिर देश के संविधान का गला घोंटने का काम नहीं कर रही है? योगी की सभा के बाद शहर में सीएए पर जागरूकता रैली निकाली गई। इसमें करीब दस हजार लोग शामिल हुए।

कांग्रेस समेत विपक्ष फैला रहा देश में अराजकता : योगी ने कहा कि सीएए की आड़ में कांग्रेस समेत विपक्ष ने देश में आगजनी, तोड़फोड़ और अराजकता का वातावरण पैदा करने का कार्य किया है।

इसलिए देश की जनता के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करने के लिए हम सबको जनता के बीच आकर वस्तुस्थिति से अवगत कराना पड़ा है।

जेनएयू में झूठ का लिया सहारा

योगी ने कहा कि जेएनयू में भी झूठ का सहारा लिया गया। चार दिन पहले वातावरण विषाक्त करने का प्रयास किया गया था। अब दिल्ली पुलिस की रिपोर्ट से साफ हो गया कि जो लोग खुद पर हमला करना बता रहे थे, वही वामपंथी संगठनों के पदाधिकारी लाठी-डंडे लेकर हमला करते दिखाई दे रहे हैं।

मप्र में कांग्रेस के दो विधायकों ने सीएए के विरोध पर उठाए सवाल

नईदुनिया, भोपालः सीएए को लेकर मध्य प्रदेश के दो कांग्रेस विधायकों ने बड़े बयान दिए हैं। मंदसौर जिले के सुवासरा से विधायक हरदीपसिंह डंग ने कहा कि पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि देशों के दुखी लोगों को अगर भारत में सुविधाएं मिलती हैं तो इसमें बुराई क्या है। उधर, वरिष्ठ कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह के छोटे भाई और विधायक लक्ष्मण सिंह ने ट्वीट कर सीएए का विरोध करने वालों को सलाह दी है कि इस पर राजनीति बंद करो।

रविवार को सीतामऊ में विधायक डंग ने कहा कि पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि देशों के दुखी लोगों को अगर भारत में सुविधाएं मिलती हैं तो इसमें बुराई क्या है। विधायक के इस जवाब पर जब सवाल उठाया गया कि इसका अर्थ यह हुआ आप सीएए का समर्थन करते हैं, तो डंग बोले कि सीएए और एनआरसी को अलग-अलग देखने की जरूरत है। एक सवाल के जवाब में डंग ने कहा कि पहले भी पूर्व केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया व मैंने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने का समर्थन किया था। अब सीएए और एनआरसी को जोड़कर क्यों देखा जा रहा है? सीएए व एनआरसी दोनों अलग-अलग मुद्दे हैं। लोगों को इनकी पूरी जानकारी नहीं होने से भ्रांति फैल रही है।

रस्सी को ज्यादा खींचने से वह टूट जाती है: सीएए को लेकर लक्ष्मण सिंह ने ट्वीट कर विरोध करने वालों को सलाह देते हुए कहा है कि नागरिकता संशोधन कानून की राजनीति बंद करो। राजगढ़ जिले के चांचौड़ा से विधायक लक्ष्मण सिंह ने सीएए को लेकर कहा है कि मुसलमान कह रहे हैं कि हमारे रोजगार की व्यवस्था करो। रस्सी को ज्यादा खींचने से वह टूट जाती है।

सीएए के समर्थन में कई राज्यों में निकली रैलियां

- मध्य प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में सड़क पर उतरे लोग
- एबीवीपी ने दिल्ली विश्वविद्यालय में निकाला मार्च

जेएनएन, नई दिल्ली

नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) की अधिसूचना जारी होने के बाद इसके समर्थन में आवाज और तेज हो गई है। शनिवार को दिल्ली, मध्यप्रदेश, पंजाब और उत्तराखंड समेत कई राज्यों में इसके समर्थन में रैलियां निकाली गईं और सभाएं हुईं।

राजधानी दिल्ली में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) और दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूसू) ने इसके समर्थन में मार्च निकाला। दिल्ली विश्वविद्यालय की ऑर्ट्स फैकल्टी में लॉ सेंटर से शुरू हुआ मार्च रामजस कॉलेज से होते हुए किरोड़ीमल, हंसराज, दौलतराम से होते हुए स्वामी विवेदानंद की प्रतिमा पर खत्म हुआ। उत्तर प्रदेश में भाजपा के दिग्गज नेताओं ने जगह-जगह पदयात्राएं निकालीं। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने मैनपुरी में कहा कि हम मेले लगाकर नागरिकता देंगे, दम है तो रोक लेना। उत्तराखंड में भाजपा और उसके सहयोगी संगठनों ने रैली, हस्ताक्षर अभियान, सभा व बैठक कर लोगों को जागरूक किया। ऊधमसिंहनगर के जसपुर में सौ फीट का तिरंगा लेकर रैली निकाली गई। देहरादून में मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने कहा कि सीएए देशहित में है और विपक्षी दल इस मामले में युवाओं को गुमराह करने की साजिश कर रहे हैं। मध्यप्रदेश के मंदसौर, खंडवा और हरदा में रैलियां निकाली गईं, जिनमें हजारों लोग शामिल हुए। मंदसौर में धारा-144 के उल्लंघन को लेकर सांसद सुधीर गुप्ता, विधायक यशपालसिंह सिसौदिया सहित लगभग 40 लोगों पर केस दर्ज किया गया है। खंडवा में 25 लोगों पर नामजद और 300 से अधिक अज्ञात लोगों पर प्रकरण दर्ज किया गया है।

रीवा में भाजपा महिला मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजया राहटकर ने प्रबुद्ध महिला सम्मेलन को संबोधित किया। हरियाणा में भाजपा कार्यकर्ताओं ने सिरसा, फतेहाबाद, चरखी दादरी, भिवानी समेत विभिन्न जिलों में लोगों को सीएए की जानकारी दी। पंजाब के बठिंडा में केंद्रीय संसदीय मामलों के मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कोई प्रदेश सरकार इसे लागू करने से मना नहीं कर सकती। राज्यों को इसे लागू करना ही होगा। विपक्ष का दुष्प्रचार रोकने के लिए ही भाजपा कार्यकर्ता सड़कों पर उतरे हैं।

उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में शनिवार को नागरिकता संशोधन कानून के समर्थन में निकली रैली में हिस्सा लेते मुस्लिम समुदाय के लोग। एएनआइ

राहुल और ओवैसी के बहकावे में न आएं मुसलमान : गिरिराज

जासं, संबलपुर : सीएए पर भ्रम और भय की स्थिति से लोगों को उबारने की कोशिश में जुटी भाजपा के केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि भारत में रहने वाले मुसलमानों को इस कानून से डरने की कोई जरूरत नहीं है। देश में सक्रिय टुकड़े-टुकड़े गैंग इस कानून को लेकर भ्रम और भय पैदा कर रहे हैं। राहुल गांधी और असदुद्दीन ओवैसी जैसे नेता इस कानून पर राजनीति कर रहे हैं और पाकिस्तान की भाषा बोल रहे हैं।

यहां सीएए के समर्थन में आयोजित जनसभा में गिरिराज सिंह ने कहा कि पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश में लाखों की संख्या में भारतवंशी हैं और अत्याचार का शिकार हो रहे हैं। ऐसे भारतवंशियों को अपने देश में वापस लाने के लिए नागरिकता संशोधन कानून लाया गया है। इस कानून से भारत में रहने वाले मुसलमानों को कोई नुकसान नहीं है।

बड़ा लक्ष्य

वंदे भारत की तरह सभी ट्रेनों के डिब्बे होंगे सुविधाजनक और सुरक्षित, चार कारखानों में इस वर्ष बनेंगे 8,000 कोच, अगले साल 10,000 का लक्ष्य

अब रेल डिब्बों को भी 'स्मार्ट' बनाने की तैयारी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

यात्री डिब्बों के उत्पादन में विश्व रिकार्ड बनाने के बाद भारतीय रेलवे ने अब डिब्बों को स्मार्ट बनाने की दिशा में काम शुरू किया है। इसके तहत डिब्बों को सुविधाजनक, आरामदेह और सुरक्षित बनाने के लिए सेंसर लगाए जाएंगे। इसके लिए स्मार्ट कोच परियोजना प्रारंभ की गई है, जिसका मकसद यात्रियों को विश्वस्तरीय अनुभव प्रदान करना है। इसके परिणाम लोगों को इसी वर्ष से दिखाई देने लगेंगे।

यात्री डिब्बों के उत्पादन, संवर्द्धन और आधुनिकीकरण में रेलवे के 2,000 से ज्यादा अधिकारी तथा तीन लाख से ज्यादा कर्मचारी लगे हुए हैं। इनका मकसद आइओटी, सेंसर, स्काडा, नेटवर्किंग, एनालिटिक्स, एलर्ट इत्यादि तकनीकों के माध्यम से यात्री डिब्बों को सुविधा संपन्न और तीव्रगामी बनाना है।

दरअसल, स्मार्ट कोच की अवधारणा के पीछे 'वंदे भारत' की कामयाबी है। इसने पहली बार रेलवे के इंजीनियरों को इस बात का एहसास कराया कि वे भी विश्वस्तरीय ट्रेन और कोच बना सकते हैं। वंदे भारत के कोच बनाने में पहली बार विश्व स्तर की तकनीक, कलपुर्जों और साजो-सामान का उपयोग किया गया।

इसके लिए आवश्यकतानुसार देश-विदेश के निजी क्षेत्र की कंपनियों की भी मदद ली गई। इससे रेलवे के इंजीनियरों को इस बात का भरोसा हो गया कि यदि उन्हें अपने हिसाब से काम करने की छूट मिले, तो वे कोई भी करिश्मा कर सकते हैं।

वंदे भारत से प्राप्त इन्हीं अनुभवों का उपयोग अब तमाम अन्य ट्रेनों के लिए स्मार्ट कोच बनाने में किया जाएगा। ये कोच चेन्नई की इंटीग्रल कोच फैक्ट्री (आइसीएफ) के अलावा कपूरथला की रेलवे कोच फैक्ट्री (आरसीएफ) तथा रायबरेली की मॉडर्न कोच फैक्ट्री (एमसीएफ) में बनाए जाएंगे, जहां कोच निर्माण सुविधाओं का विस्तार और आधुनिकीकरण किया गया है।

यह पहला मौका है जब रेलवे की कोच उत्पादन इकाइयों ने उत्पादन के मामले में विश्व रिकार्ड बनाया है। आइसीएफ ने 2018-19 के दौरान 3,000 कोच बनाकर चीन की सबसे बड़ी कोच फैक्ट्री को पीछे छोड़ दिया, जो हर साल तकरीबन 2,600 कोच बनाती है। अब आइसीएफ का लक्ष्य चालू वित्तीय वर्ष अर्थात 2019-20 में 4,238 कोच बनाने का है।

दूसरी ओर आरसीएफ ने 2019-20 के दौरान अक्टूबर से पहले ही 1000 कोच बनाकर नया रिकार्ड कायम किया है। आरसीएफ ने वित्तीय वर्ष के अंत तक 1600 से अधिक कोच बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

सबसे बड़ा चमत्कार रायबरेली की मॉडर्न कोच फैक्ट्री (एमसीएफ) ने किया है। इसने कोच निर्माण में अत्याधुनिक रोबोटिक्स प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए वर्ष 2018-19 में 1,425 कोच बनाकर पिछले वर्ष के मुकाबले दोगुना से अधिक उत्पादन कर दिखाया था। दिसंबर में उसने 220 कोच बनाकर चालू वित्त वर्ष 2019-20 के लिए निर्धारित 2,158 कोच उत्पादन के लक्ष्य को आसानी से प्राप्त करने के संकेत दिए हैं।

इनके अलावा अब बंगाल की हल्दिया फैक्ट्री में भी कोच निर्माण होने लगा है। चालू वित्तीय वर्ष के दौरान हल्दिया को 30 कोच बनाने का लक्ष्य दिया गया है। ये चारों कोच फैक्ट्रियां 2019-20 के दौरान कुल मिलाकर 8,026 कोच बनाएंगी। पांच वर्ष पहले तक देश में किसी भी साल 4,000 से ज्यादा कोच नहीं बनते थे। जबकि 2020-21 में रेलवे का इरादा 10 हजार से ज्यादा कोच बनाने का है।

प्रतीकात्मक

3000 कोच बनाया आइसीएफ ने 2018-19 के दौरान। इस मामले में उसने चीनी फैक्ट्री को भी पछाड़ दिया

4,238 कोच बनाने का लक्ष्य अब आइसीएफ की तरफ से चालू वित्तीय वर्ष यानी 2019-20 में रखा गया है

कह के रहेंगे माधव जोशी

18 जनवरी से दो फरवरी 2020 तक राष्ट्रपति भवन में चेंज ऑफ गार्ड समारोह का आयोजन नहीं किया जाएगा। गणतंत्र दिवस परेड के रिहर्सल की वजह से यह फैसला किया गया है। राष्ट्रपति भवन प्रांगण में सैन्य परंपरा के तहत शनिवार और रविवार को राष्ट्रपति के गार्ड की अदला-बदली होती है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 12 जनवरी 2020

न्यूज गैलरी

ढींडसा पिता-पुत्र शिरोमणि अकाली दल से निलंबित

चंडीगढ़ : शिरोमणि अकाली दल ने बगावत करने वाले राज्यसभा सदस्य सुखदेव सिंह ढींडसा और उनके विधायक पुत्र परमिंदर सिंह ढींडसा को निलंबित कर दिया है। शिअद अध्यक्ष सुखबीर बादल की अध्यक्षता में चंडीगढ़ में हुई कोर कमेटी की बैठक में दोनों को चार्जशीट देकर जवाब मांगे जाने का फैसला लिया गया है। उल्लेखनीय है कि ढींडसा पिता-पुत्र ने पार्टी में तानाशाही का आरोप लगाते हुए सुखबीर बादल की कार्यप्रणाली को कठघरे में खड़ा किया था। पार्टी प्रवक्ता डॉ. दलजीत सिंह चीमा के अनुसार कोर कमेटी दोनों नेताओं को चार्जशीट देकर जवाब देने के लिए दो सप्ताह का समय देगी। उसके बाद आगे की कार्रवाई पर फैसला लिया जाएगा। कोर कमेटी की बैठक में संगरूर के पर्यवेक्षक और पूर्व मंत्री सिकंदर सिंह मलूका ने बताया कि ढींडसा पिता-पुत्र की पार्टी विरोधी गतिविधियों के कारण संगरूर में पार्टी की जिला इकाई ने एकमत से दोनों को पार्टी से निष्कासित किए जाने की सिफारिश की है। (राब्यू)

नगरीय निकाय में भाजपा की हार के बाद छाए भूपेश बघेल

रायपुर : छत्तीसगढ़ के नगरीय निकाय में भाजपा का सूपड़ा साफ करने के बाद अब मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का कद राष्ट्रीय राजनीति में बढ़ गया है। प्रदेश के सभी दस नगर निगम में कांग्रेस का महापौर बनने के बाद राष्ट्रीय नेताओं ने ट्वीट करके भूपेश बघेल को बधाई दी। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह, पूर्व मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया साहित अन्य नेताओं ने ट्वीट करके छत्तीसगढ़ की जीत को राष्ट्रीय फलक पर पहुंचाने का काम किया। दरअसल, देशभर में मोदी लहर के बीच छत्तीसगढ़ कांग्रेस के लिए संजीवनी का काम कर रही है। लोकसभा चुनाव हो या फिर नगरीय निकाय चुनाव, छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने बेहतर प्रदर्शन किया है। मोदी लहर में जब उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश में सिर्फ एक सांसद की जीत हुई, जबकि छत्तीसगढ़ से दो सांसद लोकसभा पहुंचे। (नईदुनिया)

'गुरबाणी प्रसारण के एकाधिकार पर सुखबीर को तलब करें'

चंडीगढ़ : पंजाब प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष सुनील जाखड़ ने श्री हरिमंदिर साहब से गुरबाणी प्रसारण पर एक टीवी चैनल के एकाधिकार को गुरु साहिबान के सिद्धांतों के उलट बताया है। उन्होंने पीटीसी चैनल की तरफ से श्री दरबार साहिब से जारी होने वाले पवित्र हुक्मनामे को फेसबुक पर शेयर करने की भी निंदा की है। जाखड़ ने श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार से सुखबीर बादल को गुरु मर्यादा का अपमान करने के आरोप में श्री अकाल तख्त साहिब पर तलब करने व कार्रवाई की मांग की है। जाखड़ ने कहा कि सुखबीर पार्टी के अध्यक्ष हैं और चैनल के मालिक भी हैं। एसजीपीसी का अध्यक्ष भी वही मनोनीत करते हैं। ऐसे में आपसी हितों के टकराव में सुखबीर से यह उम्मीद करना बेमानी है कि वह पंथक पार्टी के अध्यक्ष के तौर पर अपनी जिम्मेदारी निभा सकें। इसलिए जरूरी है कि श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार इस मुद्दे पर दखल दें और गुरबाणी तक सब की पहुंच बनाने के लिए कार्रवाई करें। (राब्यू)

'शराब उप-दुकानों में गन्ने का रस, दूध, मक्खन मिलेगा'

भोपाल : मध्य प्रदेश में शराब की उप-दुकान खोलने के फैसले पर सियासत और गर्मा गई है। शनिवार को पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मुख्यमंत्री कमलनाथ पर पलटवार करते हुए कहा कि महात्मा गांधी के 150 वें जयंती वर्ष में मध्य प्रदेश को नशे में ना डुबोएं। मुख्यमंत्री कमलनाथ को पत्र का जवाब देने के लिए धन्यवाद देने के साथ ही शिवराज ने कहा, 'उनका जवाब दुर्भाग्यपूर्ण है। मैंने एक जिम्मेदार नागरिक के तौर पर नई शराब नीति का विरोध किया। मुख्यमंत्री से जानना चाहता हूं कि शराब की उप-दुकानों में क्या गन्ने का रस, दूध, पनीर, मक्खन बिकेगा?' (नईदुनिया)

जेपी नड्डा होंगे भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष

मिलेगी कमान ▶ 20 जनवरी को ताजपोशी संभव, अभी कार्यकारी अध्यक्ष की निभा रहे भूमिका

अगले तीन साल तक दुनिया के सबसे बड़े राजनीतिक दल के अध्यक्ष होंगे

नीलू रंजन, नई दिल्ली

भाजपा के मौजूदा कार्यकारी अध्यक्ष जेपी नड्डा के हाथ में ही अब पार्टी की औपचारिक कमान सौंपने की तैयारी शुरू हो गई है। पटना में जन्मे नड्डा को इसी महीने 19 या 20 तारीख को विधिवत भाजपा का अध्यक्ष चुन लिया जाएगा। इसके बाद वह अगले तीन साल तक दुनिया के सबसे बड़े राजनीतिक दल के अध्यक्ष होंगे।

अमित शाह का अध्यक्ष के रूप में कार्यकाल पिछले साल जनवरी में ही पूरा हो गया था, लेकिन लोकसभा चुनावों को देखते हुए उन्हें जिम्मेदारी संभालने को कहा गया था। मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में स्वास्थ्य मंत्री के रूप में 50 करोड़ गरीबों के लिए पांच लाख रुपये सालाना तक मुफ्त इलाज की आयुष्मान भारत और बच्चों के टीकाकरण के लिए इंद्रधनुष जैसी महत्वाकांक्षी योजनाओं को सफलतापूर्वक लागू करने वाले जेपी नड्डा को इस बार मंत्रिमंडल में जगह नहीं मिली तभी साफ हो गया था कि उन्हें भाजपा संगठन की कमान सौंपी जाएगी। अमित शाह के गृह मंत्री बनने के बाद जेपी नड्डा को कार्यकारी अध्यक्ष के

जेपी नड्डा। फाइल

रूप में पार्टी की जिम्मेदारी भी सौंप दी गई। इसके बाद पार्टी संविधान के अनुसार पार्टी अध्यक्ष की चुनाव प्रक्रिया शुरू हुई जो 20 जनवरी को पूरी हो जाएगी।

दरअसल, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव के लिए पार्टी के आधे से अधिक राज्यों के अध्यक्षों का चुनाव होना जरूरी है। इसके बाद राज्यों में राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव के लिए जिला व संसदीय स्तर पर प्रतिनिधियों का चयन किया जाता है। बताया जा रहा है कि 18 जनवरी तक आधे से अधिक राज्यों के पार्टी अध्यक्षों का चुनाव हो जाएगा और जिला या संसदीय प्रतिनिधियों का भी चयन कर लिया जाएगा। वैसे तो पार्टी ने राष्ट्रीय अध्यक्ष चुनाव के लिए 19 या 20 जनवरी में से एक तारीख तय की है, लेकिन चुनाव की प्रक्रिया 20 जनवरी को होने की संभावना ज्यादा है।

जेपी आंदोलन से रखा था छात्र राजनीति में कदम

▶ 1993 में विधानसभा का चुनाव लड़ने के बाद भाजपा विधायक दल के नेता बने थे

जागरण संवाददाता, बिलासपुर : देश का छोटा सा पहाड़ी राज्य हिमाचल प्रदेश राजनीतिक दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि मूल रूप से हिमाचल प्रदेश के रहने वाले जेपी नड्डा अब विश्व के सबसे बड़े राजनीतिक दल भाजपा की कमान संभालेंगे। नड्डा ने जेपी आंदोलन से छात्र राजनीति में कदम रखा था। उन्हें अत्यंत मृदुभाषी और संयम रखने वाला नेता माना जाता है।

बिलासपुर जिले के मूल निवासी जगत प्रकाश नड्डा 1993 में विधानसभा का चुनाव लड़ने के बाद भाजपा विधायक दल के नेता बने थे। 1998 में विधानसभा चुनाव जीतने के बाद नड्डा ने मुख्यमंत्री बनने से इन्कार कर दिया था और प्रेम कुमार धूमल के नाम का प्रस्ताव किया था। 2009 में मंत्री पद छोड़कर नड्डा संगठन की राह हो लिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जेपी नड्डा की संगठनात्मक दक्षता से परिचित थे। इसी कारण मोदी सरकार में 2014 के दौरान कैबिनेट मंत्री रहने के साथ वह पार्टी महासचिव भी रहे। भाजपा संसदीय बोर्ड का सचिव पद भी नड्डा के पास रहा। पिछले साल लोकसभा चुनाव के बाद उन्हें भाजपा का कार्यकारी अध्यक्ष बनाया गया था। जेपी नड्डा 1977 से 1979 तक रांची में रहे हैं। उनके पिता एनएल नड्डा रांची विश्वविद्यालय के कुलपति और पटना विश्वविद्यालय के प्रोफेसर थे।

नड्डा के राजनीति सफर की शुरुआत साल 1975 में जेपी आंदोलन से हुई थी। देश के सबसे बड़े आंदोलनों में गिने जाने वाले इस आंदोलन में नड्डा ने भी भाग लिया था। इसके बाद वह बिहार भाजपा की छात्र शाखा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) में शामिल हो गए थे। पटना विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद नड्डा ने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में एलएलबी की पढ़ाई की। 1983 में पहली बार हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के छात्र संघ चुनाव (एससीए) में वह विद्यार्थी परिषद के अध्यक्ष चुने गए। इसके बाद प्रदेश की राजनीति में वह आगे बढ़ते गए और अब भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी जा रही है।

शाह रखेंगे दूसरे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्किल्स की आधारशिला

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ आइआइटी और आइआइएम की तर्ज पर कौशल विकास के लिए खोले जाएंगे तीन इंस्टीट्यूट

▶ मुंबई और अहमदाबाद के बाद कानपुर में तीसरा संस्थान खोलने की तैयारी

आइआइएम और आइआइटी की तर्ज पर युवाओं के कौशल विकास के लिए प्रस्तावित दूसरा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्किल्स अहमदाबाद में खोला जाएगा। अगले बुधवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह इसकी आधारशिला रखेंगे। इससे पहले कौशल विकास मंत्री महेंद्रनाथ पांडेय ने मुंबई में पहले इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्किल्स की आधारशिला रखी थी। जल्द ही कानपुर में ऐसे तीसरे इंस्टीट्यूट को स्थापित करने की तैयारियां शुरू हो गई हैं।

कौशल विकास मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के अनुसार अगले एक-डेढ़ साल के भीतर तीनों संस्थान बनकर तैयार हो जाएंगे। कोशिश है कि इनमें 2021-22 से कौशल विकास के प्रशिक्षण का काम शुरू हो जाए। सरकार की मूल योजना देशभर में उच्च स्तर के छह संस्थान खोलने की है।

कौशल विकास मंत्रालय के अनुसार, आइआइएम और आइआइटी की तर्ज पर कौशल विकास के लिए बनने वाले उच्च स्तरीय संस्थानों को पीपीपी मॉडल पर बनाया जा रहा है। इसका उद्देश्य उद्योग जगत की अत्याधुनिक जरूरतों के अनुसार विश्वस्तरीय प्रशिक्षित युवाओं को तैयार करना है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि फिलहाल आइटीआइ जैसी संस्थाएं युवाओं के कौशल विकास का प्रशिक्षण देती हैं। लेकिन, उच्च गुणवत्ता के कौशल विकास के लिए ये अपर्याप्त हैं, जबकि उच्च प्रशिक्षित कामगारों की मांग बढ़ती जा रही है।

अमित शाह। फाइल

जाहिर है इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्किल्स भविष्य में इस कमी को पूरी कर सकेगा। इनमें ऑटोमेशन, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, मशीन लर्निंग, साइबर टेक्नोलॉजी और ऊर्जा संरक्षण के विशेष पाठ्यक्रम शामिल किए जा रहे हैं। मौजूदा समय में ही विभिन्न उद्योगों में इन विषयों में प्रशिक्षित युवाओं की मांग बहुत ज्यादा है। आने वाले समय में इसकी मांग और बढ़ेगी।

वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि इन संस्थानों में सीधे 12वीं पढ़ने के बाद नामांकन की सुविधा होगी। इसके साथ ही आइटीआइ के प्रशिक्षित छात्रों को भी यहां अपने कौशल को और अधिक विकसित करने का अवसर प्रदान किया जाएगा। इसके लिए आइटीआइ के पाठ्यक्रम में जरूरी बदलाव करने पर काम चल रहा है।

बंगाल के राज्यपाल के तौर पर धनखड़ सबसे उपयुक्त : स्वामी

जागरण संवाददाता, कोलकाता : भाजपा नेता और राज्यसभा सदस्य डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी ने शनिवार को राज्यपाल जगदीप धनखड़ की जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि बंगाल के संवैधानिक प्रमुख के तौर पर वह सबसे उपयुक्त व्यक्ति हैं।

स्वामी ने यह बात विराट हिंदुस्तान संगम के बंगाल चैप्टर द्वारा कोलकाता में आयोजित कार्यक्रम में कही। राज्यपाल जगदीप धनखड़ इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। स्वामी ने कहा कि राज्यपाल धनखड़ बहुत ही सुलझे इंसान व संविधान के जानकार हैं। मुझे लगता है कि बंगाल के राज्यपाल के तौर पर वे सबसे उपयुक्त व्यक्ति हैं। गौरतलब है कि पिछले साल जब से धनखड़ ने राज्यपाल पद की शपथ ली है, उसके बाद से बंगाल सरकार के साथ उनका लगातार टकराव जारी है। धनखड़ बराबर ममता सरकार की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते रहे हैं। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी सहित राज्य के अन्य मंत्रियों की ओर से भी राज्यपाल पर लगातार हमला जारी है। इस बीच वह मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से बातचीत की पहल भी कर रहे हैं।

पीएम से मिल सोरेन ने उठाई ट्राइबल विवि की मांग

राज्य ब्यूरो, रांची

झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से नई दिल्ली स्थित उनके आवास पर मुलाकात की। इस बार मुख्यमंत्री बनने के बाद प्रधानमंत्री के साथ अपनी पहली मुलाकात में उन्होंने राज्य के विकास में केंद्र से सहयोग की अपेक्षा जताई और झारखंड में ट्राइबल यूनिवर्सिटी की स्थापना का अनुरोध किया।

प्रधानमंत्री से मिलने के बाद हेमंत सोरेन ने पत्रकारों से कहा कि उन्होंने राज्य के विकास में केंद्र से सहयोग की अपेक्षा जताई है। प्रधानमंत्री ने भी समन्वय पर जोर देते हुए भरपूर सहयोग का आश्वासन दिया है। ट्राइबल यूनिवर्सिटी पर भी पीएम ने सकारात्मक रूप से विचार करने का आश्वासन दिया है।

हेमंत ने कहा कि वह राज्य की आर्थिक स्थिति की समीक्षा करने के बाद दोबारा प्रधानमंत्री से मिलेंगे और राज्य को केंद्र से मिलने वाले अनुदान आदि पर चर्चा करेंगे। इससे पहले प्रधानमंत्री ने झारखंड के मुख्यमंत्री बनने की शुभकामनाएं दीं, तो हेमंत ने प्रधानमंत्री को शॉल ओढ़ाकर तथा प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया।

झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शनिवार को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की और इस दौरान सोरेन ने उन्हें शाल और प्रतीक चिह्न भेंट किए। मुख्यमंत्री बनने के बाद सोरेन पहली बार दिल्ली आए थे। प्रेट्र

ट्राइबल यूनिवर्सिटी के बहरागोड़ा और गुमला में खोलने पर है विवाद : झारखंड की पिछली सरकार भी राज्य में ट्राइबल यूनिवर्सिटी खोलने पर विचार कर रही थी। राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू ने पिछले वर्ष 17 अगस्त को आयोजित बैठक में बहरागोड़ा में इसके खोलने की स्वीकृति यह कहते हुए दी थी कि बहरागोड़ा ओडिशा और बंगाल से भी नजदीक है। इससे इन राज्यों के भी छात्र यहां पढ़ने आ सकते हैं। बाकायदा यूनिवर्सिटी के लिए कोल्हान विश्वविद्यालय को जमीन चिह्नित करने का भी निर्देश दिया था। इससे पहले सरकार गुमला में इस विश्वविद्यालय की स्थापना करना चाह रही थी। केंद्र से ट्राइबल यूनिवर्सिटी की स्वीकृति मिलने पर राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रूसा) के तहत इसके लिए अनुदान भी मिल सकता है।

▶ झारखंड के सीएम ने राज्य से जुड़े मुद्दों पर प्रधानमंत्री से की चर्चा

खुल सकती है इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय की शाखा

वैसे तो मुख्यमंत्री ने नए ट्राइबल यूनिवर्सिटी की स्थापना की मांग की है, लेकिन कहा जा रहा है कि केंद्र की पूर्व में राज्य सरकार से जो विमर्श हुआ है, उसके अनुसार मध्य प्रदेश के अमरकंटक स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय की शाखा भी झारखंड में खुल सकती है।

बाबूलाल के रुख को लेकर झाविमो में बेचैनी

राज्य ब्यूरो, रांची : झारखंड विकास मोर्चा (झाविमो) के भाजपा में विलय की बात पर बाबूलाल मरांडी के रुख को लेकर की पार्टी में बेचैनी है। बेचैनी इसलिए, क्योंकि बाबूलाल अबतक भाजपा के विरुद्ध बयानबाजी करते रहे हैं, लेकिन इस बार उन्होंने चुप्पी साध ली है।

पार्टी के शेष दो विधायकों प्रदीप यादव और बंधु तिर्की में भी बाबूलाल के इस स्टैंड को लेकर नाराजगी है। पूछने पर प्रदीप यादव ने दो टूक कहा कि बाबूलाल की बातें बाबूलाल ही जानें। अलबत्ता, पार्टी विलय की दिशा में है, लेकिन मैं वहीं हूं जहां था और विलय दो तिहाई विधायकों की रजामंदी से ही संभव है। मांडर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से विधायक बंधु तिर्की के सुर भी इस मसले पर बाबूलाल के खिलाफ है। विलय की बात पर बंधु ने स्पष्ट कहा कि कहीं न कहीं आग है, तब ही तो धुआं उठ रहा है। उन्होंने कहा कि विलय की बात को लेकर पार्टी असमंजस में है। उन्हें भरोसा है कि भाजपा ने पार्टी का जितना अहित किया है, बाबूलाल भाजपा में नहीं जाएंगे। अगर जाते हैं, तो यह अच्छा नहीं होगा। इस मामले में झाविमो सुप्रीमो को अपना स्टैंड साफ करना चाहिए।

रघुवर ने दिल्ली आवास छोड़ा नहीं लेकिन हट गई उनकी नेम प्लेट

राज्य ब्यूरो, रांची

मुख्यमंत्री बदलते ही सरकारी अमला नए हाकिम की सेवा में इस कदर जुट जाता है कि कई बार हड़बड़ी में गड़बड़ी हो जाती है। पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास को दिल्ली में मथुरा रोड स्थित मिले आवास के मामले में कुछ ऐसा ही हुआ है। यह आवास अभी भी रघुवर दास के नाम पर आवंटित है, लेकिन नए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के दिल्ली दौरे को देखते हुए इस आवास को न सिर्फ दुरुस्त कर दिया गया, बल्कि पुराने मुख्यमंत्री की नेम प्लेट तक हटा दी गई। मुख्यमंत्री के शिड्यूल में भी यह जारी किया गया कि था कि वे मथुरा रोड स्थित आवास में ही रुकेंगे। वह तो गनीमत रही कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन उस आवास में न जाकर झारखंड भवन में रुके। इस पूरे प्रकरण पर झारखंड सरकार के दिल्ली में बैठे अफसरों की लापरवाही उजागर हुई है।

रघुवर दास ने रांची के कांके रोड स्थित मुख्यमंत्री आवास चुनाव में हार के कुछ दिनों बाद ही छोड़ दिया था, लेकिन दिल्ली मथुरा रोड स्थित आवास उन्होंने अभी तक

रघुवर दास। फाइल

सरेंडर नहीं किया है। नियमानुसार वे एक माह तक इस आवास को अपने पास रख सकते हैं और यह अवधि 28 जनवरी को समाप्त होगी। यदि भारत सरकार चाहे तो इस अवधि में विस्तार भी कर सकती है। बताया जा रहा है कि रघुवर ने तीन माह के एक्सटेंशन के लिए आवेदन भी दिया है, जिस पर भारत सरकार की कमेटी विचार कर रही है। तकनीकी रूप से रघुवर जब मथुरा रोड स्थित आवास सरेंडर करेंगे, तभी नए मुख्यमंत्री को आवास एलॉट होगा। यह भी संभव है कि सरकार उन्हें कोई और आवास आवंटित कर दे। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन अब तक दो बार दिल्ली गए हैं, लेकिन वे मथुरा रोड स्थित आवास में अब तक रुके नहीं हैं।

कश्मीर में पीएसए हटते ही 26 लोगों की रिहाई शुरू

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

कश्मीर बार एसोसिएशन के पूर्व चेयरमैन नजीर अहमद रोंगा समेत 26 लोगों से जन सुरक्षा अधिनियम यानी पीएसए हटने के बाद इनकी रिहाई शुरू हो गई है। इन सभी से शुक्रवार को पीएसए हटाने का फैसला हुआ था। ये सभी जम्मू-कश्मीर समेत देश के अन्य राज्यों की जेलों में कैद थे। इनमें से दस लोग, जो श्रीनगर में कैद थे, को शुक्रवार को ही रिहा कर दिया गया था। अन्य में कुछ को शनिवार को छोड़ दिया गया। वहीं, बचे हुए लोगों अगले दो दिन में छोड़ दिया जाएगा।

रोंगा को उदारवादी हुर्रियत कांफ्रेंस के चेयरमैन मीरवाइज मौलवी उमर का भी करीबी माना जाता है। अलबत्ता, पीएसए के तहत बंदी बनाकर रखे गए नेशनल कांफ्रेंस के अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. फारूक अब्दुल्ला की रिहाई पर कोई फैसला नहीं लिया गया है। पांच अगस्त 2019 को जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम को लागू किए जाने के मद्देनजर घाटी में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रशासन ने लगभग पांच हजार लोगों को हिरासत में लिया था। इन लोगों को आवश्यक कानूनी

बदलते हालात

▶ रिहा होने वालों में कश्मीर बार एसोसिएशन के पूर्व चेयरमैन नजीर अहमद रोंगा भी शामिल

औपचारिकताओं को पूरा करते हुए रिहा किया जा रहा है। पीएसए से मुक्त होने वाले इन 26 लोगों में से कई विभिन्न राजनीतिक दलों से संबंध रखते हैं। इनके अलावा कुछ पर वनों की अवैध कटाई में लिप्त होने का भी आरोप था। जिन 26 लोगों को पीएसए से मुक्त किया गया है, उनमें सिर्फ एक नजीर अहमद रोंगा ही श्रीनगर के रहने वाले हैं। उत्तरी कश्मीर में जिला बारामुला के रहने वाले 11 लोगों अब्दुल सलाम राथर, तनवीर अहमद बट, मोहम्मद उमर डार, मुदस्सर अहमद तांत्रे, मोहम्मद इमरान डार, मुजफ्फर अहमद डार, शब्बीर अहमद लोन, फैयाज अहमद नायकू, शहनवाज अहमद डार और जहूर अहमद मीर शामिल हैं। दक्षिण कश्मीर में जिला पुलवामा के सात लोगों रौफ अहमद डार, रमीज अहमद हज्जाम, शौकत अहमद शाह, शब्बीर अहमद वानी, उमर गुल, आदिल अहमद लोन और रफीक अहमद बट को पीएसए से रिहाई मिली है।

जल्द बनेगा नया राजनीतिक संगठन

राज्य ब्यूरो, जम्मू : जम्मू-कश्मीर की सियासत में हलचल पैदा करने वाले पीडीपी से निष्कासित पूर्व वित्त मंत्री सईद अल्ताफ बुखारी ने शनिवार को दावा किया कि जल्द ही एक नया राजनीतिक संगठन सबके सामने होगा। बुखारी ने कहा कि पीडीपी, नेशनल कांफ्रेंस और कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेताओं के साथ मेरी बातचीत हुई है। कोई किसी का विकल्प नहीं हो सकता। इसलिए तीसरे मोर्चे में जाने का सवाल ही नहीं। अगर हुआ तो एक नया राजनीतिक संगठन होगा। इसमें पीडीपी के एक दर्जन से ज्यादा पूर्व विधायकों और वरिष्ठ नेताओं के अलावा कांग्रेस व नेशनल कांफ्रेंस के चेहरे भी होंगे। उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 370 के लिए अब हंगामा करने की जरूरत नहीं है, यह वापस नहीं आने वाला, इसलिए हमें आगे बढ़ना चाहिए। अल्ताफ बुखारी को गत वर्ष ही पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने पार्टी विरोधी गतिविधियों के आरोप में संगठन से निष्कासित कर दिया था। वह बीते तीन माह से जम्मू-कश्मीर में मुख्यधारा की सियासी गतिविधियों को बहाल करने के लिए लगातार सक्रिय हैं। गत दिनों उन्होंने पीडीपी के छह पूर्व विधायकों और एक पूर्व एमएलसी के साथ उपराज्यपाल जीसी मुर्मू से मुलाकात की थी। उन्होंने जम्मू-कश्मीर के हालात का जायजा लेने आए विभिन्न देशों के राजनयिकों के साथ भी मुलाकात की थी। इस मुलाकात में भी उनके साथ पीडीपी के कई पूर्व विधायक थे।

दक्षिण कश्मीर में ही अनंतनाग जिले के मोहम्मद आरिफ लोन, इश्फाक अहमद गनई, मुदस्सर मकबूल तेली समेत तीन लोगों को और जिला कुलगाम के शब्बीर अहमद बट, नवाज अहमद हारु और सद्दाम हुसैन हारु समेत तीन लोगों पर लगा पीएसए हटाया गया है। जिला शोपियां के जावेद अहमद कलास को भी पीएसए से रिहा करने का फैसला लिया गया है।

विवाद के आसार

केंद्रीय खाद्य व आपूर्ति मंत्री पासवान ने पंजाब के सीएम कैप्टन अमरिंदर को लिखा पत्र, पिछले साल भी केंद्र ने दी थी चेतावनी लेकिन आढ़तियों ने किया था विरोध

किसानों को सीधी अदायगी का मुद्दा फिर गरमाएगा

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़

अप्रैल में शुरू होने वाली गेहूं की खरीद के दौरान किसानों को उनकी फसल की सीधी अदायगी का मुद्दा फिर से गर्मा सकता है। केंद्र सरकार ने पंजाब सरकार को एक बार फिर से ताकीद किया है कि इस साल अगर उसने किसानों की फसल की अदायगी सीधी न की तो प्रशासनिक चार्ज नहीं दिए जाएंगे। कुल मिलाकर गेहूं व धान के लिए केंद्र से मिलने वाली कैश क्रेडिट लिमिट (सीसीएल) का मामला लटकेगा। केंद्र ने पिछले साल भी राज्य सरकार को यह चेतावनी दी थी, लेकिन आढ़तियों के विरोध के कारण एक सीजन की मोहलत दे दी गई थी जो अप्रैल में पूरी हो जाएगी।

केंद्र सरकार ने सभी खरीद एजेंसियों को यह भी निर्देश दिए हैं कि हर किसान का खाता नंबर उसे भेजा जाए ताकि पता चल सके कि किसान ने कितनी फसल बेची थी। उसके खाते में उतनी पेमेंट गई या नहीं। यही नहीं, आढ़तियों को दिए जाने वाला कमीशन, लेबर को दी जाने वाली पेमेंट का भी इसी तरह से अलग-अलग हिसाब दिया जाए। केंद्रीय खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री राम बिलास पासवान ने मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह को पत्र लिखकर 2020-21 के सीजन में सीधी अदायगी को यकीनी बनाने को कहा है। उन्होंने कहा कि इससे ज्यादा और छूट अब नहीं दी जा सकती।

उधर, केंद्र सरकार के इस पत्र के बाद पंजाब के खाद्य एवं आपूर्ति विभाग ने किसानों को सीधी अदायगी का सिस्टम बनाना शुरू कर दिया है। पिछले सीजन के दौरान जारी पत्र का आढ़तियों ने विरोध किया था। लंबी मशक्कत के बाद आढ़ती इस बात पर राजी हो गए थे कि किसानों को उनकी फसल की पूरी अदायगी चेक के जरिए कर देंगे। खरीद एजेंसियों ने 33 फीसद किसानों को सीधी अदायगी भी की जिसकी राशि लगभग 9600 करोड़ रुपये बनती है। शेष राशि आढ़तियों के जरिये ही दी गई।

केंद्र से अब छूट की उम्मीद नहीं : पंजाब में लगभग 16.5 लाख किसान हैं जिनकी फसल मंडियों में बिकने के लिए आती है। फूड एंड सप्लाई विभाग के एक सीनियर अधिकारी ने कहा कि केंद्र से अब छूट की उम्मीद नहीं है।

आढ़तियों व किसानों के रिश्ते प्रभावित होंगे

दूसरी तरफ आढ़ती इस बात का विरोध कर रहे हैं। आढ़ती एसोसिएशन के प्रधान विजय कालरा ने कहा कि केंद्र सरकार के इस फैसले से आढ़तियों और किसानों के बीच सालों से बने रिश्ते प्रभावित होंगे। उन्होंने कहा कि इसके लिए मंडी बोर्ड के एक्ट में भी संशोधन करना होगा।

किसान संगठन भी पक्ष में नहीं

किसानों के कुछ संगठन भी सीधी अदायगी के पक्ष में नहीं हैं। भारतीय किसान यूनियन राजेवाल के प्रधान बलबीर सिंह राजेवाल का कहना है कि ऐसा करने से सालों से बना हुआ सिस्टम हिलेगा।

फिर से रविंद्र रैना बनेंगे जम्मू-कश्मीर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष

राब्यू, जम्मू : जम्मू-कश्मीर में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पद के लिए लंबे समय से चल रही जद्दोजेहद पर 15 जनवरी को विराम लग जाएगा। 15 जनवरी को प्रदेश भाजपा को अध्यक्ष मिल जाएगा। माना जा रहा है कि प्रदेश भाजपा के वर्तमान अध्यक्ष रविंद्र रैना ही अगले तीन वर्ष के लिए भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष चुने जाएंगे। इसके लिए आरएसएस और भाजपा के कई नेताओं ने अपनी सहमति दे दी है। पार्टी सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार गत दिनों नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष जेपी नड्डा और पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री बीएल संतोष ने बैठक कर जम्मू कश्मीर में पार्टी के नए प्रदेश अध्यक्ष को लेकर लंबी चर्चा की है। चर्चा में रविंद्र रैना के नाम पर ही सबसे ज्यादा मंथन हुआ है, ऐसे में रैना का अगले तीन वर्ष के लिए फिर से अध्यक्ष चुना जाना तय माना रहा है।

हिमाचल के विधायक विनोद बोले, नहीं हुआ जातिगत भेदभाव

जागरण संवाददाता, मंडी

▶ डीएसपी मुख्यालय मंडी कर्ण गुलेरिया ने दर्ज किए विनोद कुमार के बयान

नाचन के विधायक विनोद कुमार ने मंडी पुलिस को साफ कह दिया है कि उन्हें और सामाजिक न्याय एवं सहकारिता मंत्री डॉ. राजीव सैजल को किसी मंदिर में प्रवेश करने से नहीं रोका गया है। विनोद कुमार ने कहा कि न तो दोनों को किसी ने रोका और न उनके साथ कोई जातिगत भेदभाव हुआ है।

एससीएसटी आरक्षण की अवधि बढ़ाने के लिए हिमाचल प्रदेश विधानसभा का सात जनवरी को एक दिवसीय विशेष सत्र बुलाया गया था। चर्चा का जवाब देते हुए डॉ. राजीव सैजल ने कहा था कि मंडी जिले के नाचन हलके के दौरे के दौरान वहां के विधायक विनोद कुमार व उन्हें एक मंदिर में प्रवेश करने से रोका गया था। हालांकि डॉ. राजीव सैजल ने मंदिर का नाम नहीं बताया था। विधानसभा में दिए बयान के बाद मामला तूल पकड़ गया था। कई नेताओं व संगठनों के पदाधिकारियों ने भेदभाव को लेकर कड़ी निंदा की थी। नाचन हलके के पूर्व भाजपा मंडल अध्यक्ष रविंद्र राणा ने भी डॉ. सैजल के आरोपों को सिरे से नकार दिया था। दलित पिछड़ा एवं अल्पसंख्यक मोर्चा के संयोजक चमन राही व वाल्मीकि समाज सुधार समिति के संस्थापक चंद्रवीर कागरा ने शुक्रवार को पुलिस अधीक्षक मंडी गुरदेव शर्मा को शिकायत पत्र सौंप आरोपितों के खिलाफ अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत केस दर्ज करने की मांग की थी। इसके बाद हरकत में आई पुलिस ने

2012 के बाद से अभी तक देश के अलग-अलग हिस्सों में 381 बार इंटरनेट बंद करने का फैसला किया। सॉफ्टवेयर फ्रीडम लॉ सेंटर्स ट्रैकर की रिपोर्ट में यह दावा किया गया है। अकेले 2019 में 106 बार ऐसा किया गया।

स्वामी विवेकानंद ने यहां की जीवन के लक्ष्य की खोज

देश-विदेश में करोड़ों लोगों के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद का स्मारक तमिलनाडु के कन्याकुमारी में स्थित है। यह स्मारक उस शिला पर बना है, जिस पर बैठकर स्वामी विवेकानंद ने अपने ज्ञान को और गहरा किया था। आज ये शिला आध्यात्मिक खोज में आने वाले लोगों के साथ पर्यटकों को भी आकर्षित कर रही है। जिस तरह हर धर्म, हर वर्ग का व्यक्ति आध्यात्म की गंगा में आकर एकाकार हो जाता है, इसी प्रकार यहां बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर और अरब सागर मिलते हैं। पूर्व में इस शिला का नाम श्रीपदा पराई था। तमिल में पराई का अर्थ शिला से होता है। यही पर स्वामी विवेकानंद का स्मारक (रॉक मेमोरियल) बनाया गया। स्थापना के स्वर्ण जयंती वर्ष मना रहे इस स्मारक पर एक नजर:

विवेकानंद आए थे यहां

स्वामी विवेकानंद को शिकागो में 1893 में होने वाले विश्व धर्म सम्मेलन में हिस्सा लेना था। इससे पहले वे 24 दिसंबर 1892 में कन्याकुमारी आए और 25 से 27 दिसंबर तक इस शिला पर बैठकर ध्यान में डूबे रहे। यहीं उन्हें नए सूत्र मिले जिन्हें पकड़कर वे संसार से विदा होने के बाद भी बहुत से लोगों के ज्ञान चक्षु खोल रहे हैं।

बनने में लगे 6 साल

इस रॉक मेमोरियल का उद्घाटन 2 सितंबर 1970 को देश के तत्कालीन राष्ट्रपति वीवी गिरी ने किया था। इसे रामकृष्ठ मठ और वेलूर मिशन के अध्यक्ष स्वामी वीरेश्वरानंद ने राष्ट्र को अर्पण किया था। इसके निर्माण में करीब 6 साल का वक्त लगा था।

स्वामी विवेकानंद के जन्मदिन (12 जनवरी) पर विशेष

कन्याकुमारी स्थित विवेकानंद स्मारक • फाइल फोटो

इस तरह बना स्मारक

विवेकानंद के ज्ञान की भांति ही यह स्मारक भी अद्भुत है। इससे भी रोचक है इसके निर्माण की कहानी। यह स्मारक एकता का प्रतीक है। इसके निर्माण में देश के सभी राज्यों का किसी न किसी भांति योगदान रहा है। यह स्मारक आकार ले पाया क्योंकि देश के आम आदमी ने इसके लिए एक-एक रुपये का योगदान लिया गया। जिससे हर कोई इससे आत्मीयता महसूस कर सके। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 09 नवंबर 2014 को विज्ञान भवन में एकनाथजी जन्मशती पर्व समारोह के दौरान यह बात कही थी।

ये है विवेकानंद स्मारक में

विवेकानंद स्मारक का वास्तुशिल्प अजंता और एलोरा गुफाओं से लिया गया है। साथ ही कई भारतीय भवन निर्माण पद्धतियों का भी समावेश मिलता है। यहां करीब 70 फुट ऊंचा गुंबद है। मुख्य भूमि से करीब आधे किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस स्मारक को दो शिलाओं पर स्थित है। यहां पर श्रीपद मंडप को दक्षिण भारतीय पद्धति से बनाया गया है। यह शिला की निचली ऊंचाई पर स्थित है। वहीं विवेकानंद मंडप शिला के पठार पर स्थित है। इसमें शिला मंडप और ध्यान मंडप है। ध्यान कक्ष की दीवारों पर स्वामीजी के जीवन से जुड़ी प्रमुख बातों को दर्शाया गया है। भवन के अंदर स्वामी विवेकानंद की कांस्य की मूर्ति है।

इस तरह से पहुंचें

यह कन्याकुमारी के वेवाथुराई में स्थित है। दक्षिण भारत के अलग-अलग शहरों से आपको कन्याकुमारी के लिए बसें आसानी से उपलब्ध हो जाएंगी। वहीं आप रेल से भी यहां पहुंच सकते हैं। कन्याकुमारी रेल मार्ग से भी जुड़ा है। यहां सबसे नजदीकी एयरपोर्ट त्रिवेंद्रम है।

ऐसे एकत्रित हुई राशि

इस स्मारक के लिए देश के लोगों से एक-एक रुपया एकत्रित किया गया। देशभर से 85 लाख रुपये एकत्रित किए गए। साथ ही देश के 323 सांसदों ने पहली बार दलगत राजनीति से ऊपर उठकर विवेकानंद स्मारक के लिए योगदान किया। साथ ही राज्यों से एक-एक लाख और केंद्र सरकार ने 15 लाख रुपये का योगदान किया।

ऐसे मिली इजाजत

1962 में स्वामी विवेकानंद की जन्म शताब्दी वर्ष पर तमिलनाडु सरकार से विवेकानंद स्मारक बनाने के लिए कमेटी द्वारा इजाजत मांगी गई। सितंबर 1964 में कमेटी को इसकी इजाजत मिली।

एकनाथ रानाडे ने ठानी मुहिम

यह स्मारक बनाने में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक और सरकार्यवाह का पद संभाल चुके एकनाथजी रानाडे का सर्वाधिक योगदान रहा। वे विवेकानंद रॉक मेमोरियल कमेटी के आयोजक सचिव रहे।

विवेकानंद केंद्र

देश में एक हजार पांच स्थानों पर विवेकानंद केंद्र कार्यरत हैं। इनकी स्थापना 2 सितंबर 1970 के बाद की गई थी। 2015 में कन्याकुमारी के विवेकानंद केंद्र को गांधी शांति पुरस्कार से भी नवाजा जा चुका है।

इतिहास के अहम पक्षों को किया गया नजरंदाज : मोदी

बोले पीएम ▶ इतिहास का विवरण सत्ता व सिंहासन तक सीमित रहा

कोलकाता की चार ऐतिहासिक इमारतों को राष्ट्र को किया समर्पित

जागरण संवाददाता, कोलकाता

दो दिवसीय दौरे पर शनिवार शाम कोलकाता पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि इतिहास के अहम पक्षों को नजरंदाज किया गया है। कोलकाता की चार ऐतिहासिक इमारतों करेंसी बिल्डिंग, बेल्वेडियर हाउस, मेटकॉफ हाउस और विक्टोरिया मेमोरियल हॉल को राष्ट्र को समर्पित करने के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में पीएम मोदी ने कहा- 'यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि अंग्रेजी शासन के दौरान और स्वतंत्रता के बाद देश का जो इतिहास लिखा गया, उसमें कुछ अहम पक्षों को नजरंदाज किया गया। इतिहास का विवरण सत्ता और सिंहासन तक सीमित रह गया।

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के अभिलेख का हवाला देते हुए उन्होंने कहा-'गुरुदेव ने 1903 के अपने अभिलेख में जो लिखा, मैं उसका जिक्र बंगाल की धरती पर करना चाहूंगा। भारत का इतिहास वह नहीं है, जो हम परीक्षाओं के लिए पढ़ते और याद करते हैं। कुछ लोग बाहर से आए पिता-पुत्र की हत्या करते रहे, भाई-भाई को मारता रहा, सिंहासन के लिए संघर्ष होता रहा, यह भारत का इतिहास नहीं है। ऐसा इसलिए, क्योंकि इतिहास में इस बात का जिक्र ही नहीं कि तब भारत के लोग क्या कर रहे थे। क्या उनका कोई अस्तित्व ही नहीं था? उन्होंने आगे कहा कि गुरुदेव ने अपने अभिलेख में आंधी और तूफान का महत्वपूर्ण उदाहरण दिया था। चाहे जितना भी तूफान आए, अहम यह होता है कि संकट के समय वहां के लोगों ने तूफान का सामना कैसे किया? गुरुदेव ने इस बात का अहसास दिलाया कि तब के इतिहासकारों ने तूफान को घर के अंदर बैठकर देखा, जिससे तूफान की असली विभीषिका नहीं देख पाए।

ममता के मंत्री ने की अगवानी : राष्ट्र को समर्पित की गई चारों इमारतों की मरम्मत व साज-सज्जा केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय ने की है। पीएम मोदी वायुसेना के विशेष विमान से कोलकाता एयरपोर्ट पहुंचे, जहां राज्यपाल जगदीप धनखड़ के साथ राज्य के शहरी विकास मंत्री व कोलकाता के मेयर फिरहाद हकीम ने उनकी अगवानी की किया। इस सबके बीच सुबह से ही महानगर में जगह-जगह वाममोर्चा और कांग्रेस के कार्यकर्ता मोदी के आगमन का विरोध कर रहे थे। 'गो बैक' के नारे और काले झंडे के साथ विरोध शाम तक जारी रहा।

लाइट एंड साउंड सिस्टम का अनावरण : पीएम ने कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट की 150वीं वर्षगांठ समारोह के एक भाग के रूप में रवींद्र सेतु (हावड़ा ब्रिज) की सिंक्रोनाइज्ड लाइट एंड साउंड सिस्टम के साथ डायनामिक आर्किटेक्चरल इल्यूमिनेशन का अनावरण किया। इस दौरान पीएम के साथ मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी मंच पर उपस्थित थीं। इसके बाद पीएम बेलूर मठ के लिए रवाना हो गए।

राजभवन नहीं, बेलूर मठ में रुके प्रधानमंत्री

जागरण संवाददाता, कोलकाता

दो दिवसीय दौरे पर शनिवार शाम कोलकाता पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राजभवन के बजाय रामकृष्ण मिशन के मुख्यालय बेलूर मठ में रुके। बेलूर मठ में रात्रि विश्राम करने वाले वे देश के पहले प्रधानमंत्री हैं। पीएम मोदी इससे पहले केदारनाथ की गुफा में भी रात व्यतीत कर चुके हैं। गौरतलब है कि इंदिरा गांधी समेत देश के कई पूर्व प्रधानमंत्री बेलूर मठ का दौरा कर चुके हैं, लेकिन उनमें से किसी ने भी यहां रात्रि विश्राम नहीं किया।

पीएम मोदी का पहले राजभवन में रात्रि विश्राम का कार्यक्रम निर्धारित था, लेकिन आखिरी वक्त में इसे बदलकर बेलूर मठ कर दिया गया। इसकी मुख्य वजह रविवार को विवेकानंद जयंती बताई जा रही है। सूत्रों के मुताबिक पीएम मोदी रविवार प्रातः चार बजे बेलूर मठ में होने वाली आरती में शामिल होंगे। बेलूर मठ में स्थित विवेकानंद मंदिर में ध्यान भी लगाएंगे। विवेकानंद जयंती पर मठ में होने वाली प्रार्थना सभा में भी शामिल होंगे। प्रातः 8.45 बजे युवा दिवस के मौके पर मठ से ही देश के युवाओं को संबोधित करेंगे। इसके बाद वे बेलूर मठ से दिन के अन्य निर्धारित कार्यक्रमों के लिए रूख करेंगे।

रामकृष्ण मिशन के एक वरिष्ठ पदाधिकारी ने बताया कि प्रधानमंत्री की सुरक्षा का जिम्मा संभालने वाले स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप (एसपीजी) के प्रभारी की ओर से हमें सूचित किया गया था कि प्रधानमंत्री मठ में रात व्यतीत सकते हैं। इसके बाद रामकृष्ण मिशन प्रबंधन की ओर से बेलूर मठ स्थित इंटरनेशनल गेस्ट हाउस में उनके ठहरने की व्यवस्था की गई। एसपीजी ने शनिवार शाम से ही समूचे बेलूर मठ परिसर को अपने नियंत्रण में ले लिया था। मोदी मिलेनियम पार्क में एक कार्यक्रम में शिरकत करने के बाद नौसेना के विशेष बोट से रात करीब नौ बजे मठ पहुंचे। यहां रामकृष्ण मिशन के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने उनका स्वागत किया। पीएम मोदी ने रामकृष्ण परमहंस, शारदा देवी और स्वामी विवेकानंद को श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद रामकृष्ण मिशन के अध्यक्ष स्वामी स्मरणानंद से मिले।

बंगाल में हावड़ा के बेलूर स्थित रामकृष्ण मिशन व मठ के मुख्यालय में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार रात नौ बजे पहुंचे। इसके बाद मिशन व मठ के अध्यक्ष स्वामी स्मरणानंदजी महाराज और संन्यासियों से बातचीत करते प्रधानमंत्री मोदी। शुभम ज्योति

भोजन में परोसी गई खीर-पूड़ी व मिठाई : सूत्रों के मुताबिक पीएम मोदी को बेलूर मठ पहुंचने पर पहले प्रसाद दिया गया। रात के भोजन में मठ के भोग के साथ ही उन्हें खीर-पूड़ी व मिठाइयां परोसी गई। सुबह उनके लिए नाश्ते में गुजराती पकवानों की व्यवस्था की गई है।

रामकृष्ण मिशन से मोदी का पुराना नाता : रामकृष्ण मिशन से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पुराना नाता है। 1966 में किशोरावस्था में मोदी ने स्वामी विवेकानंद की सीख से प्रभावित होकर गुजरात के राजकोट स्थित मिशन शाखा में जाकर संन्यासी बनने की इच्छा प्रकट की थी। वहां के तत्कालीन प्रमुख स्वामी आत्मास्थानंद जी महाराज, जो बाद में रामकृष्ण मिशन के 15वें अध्यक्ष बने, ने उन्हें संन्यासी नहीं बनने की सलाह देते हुए लोगों के बीच जाकर काम करने को कहा था। इसके बाद मोदी नियमित रूप से स्वामी आत्मास्थानंद जी महाराज से मिलते और उनका आध्यात्मिक मार्गदर्शन लेते रहे। गुजरात का मुख्यमंत्री बनने के बाद मोदी जब भी कोलकाता दौरे पर आते थे, रामकृष्ण मिशन जरूर थे। 2013 में बेलूर मठ के दौरे के समय उन्होंने आत्मास्थानंद जी महाराज से मुलाकात कर उनसे आशीर्वाद लिया था। 2017 में उनके निधन पर मोदी ने इसे व्यक्तिगत क्षति बताया था।

पीएम मोदी ने कोलकाता पहुंचने से पहले ट्वीट कर खुशी जाहिर की थी। उन्होंने कहा-'मैं काफी उत्साहित और आनंदित हूं कि आज और कल का दिन मैं बंगाल में बिताऊंगा। स्वामी विवेकानंद की जयंती के पावन अवसर पर मुझे रामकृष्ण मिशन जाने का सौभाग्य प्राप्त होगा। बेलूर मठ हमेशा ही एक विशेष जगह है।'

सबके सामने आया ममता का असली चेहरा : वाममोर्चा

▶ प्रथम पृष्ठ का शेष

मोदी के साथ ममता की मुलाकात पर तंज कसते हुए वाममोर्चा विधायक दल के नेता सुजन चक्रवर्ती ने कहा कि मुलाकात ने ममता का असली चेहरा सामने ला दिया है। यदि सही मायने में मुलाकात राज्य के फंड के संदर्भ में थी तो फिर उनके साथ कोई कागजात और अधिकारी क्यों नहीं थे? ममता नाटक कर रही हैं।

कांग्रेस बोली, उजाले में विरोध, अंधियारे में दोस्ती : लोस में कांग्रेस संसदीय दल के नेता अधीर रंजन चौधरी ने मोदी-ममता मुलाकात को लेकर कहा कि ममता विरोध का दिखावा कर रही हैं। उन्होंने सवाल किया कि आखिर यह कैसा विरोध है, जब दिन के उजाले में विरोध और रात के अंधियारे में मुलाकात कर सबकुछ निर्धारित किया जाता है।

'हेरिटेज टूरिज्म का बड़ा केंद्र बनेगा भारत'

जागरण संवाददाता, कोलकाता

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोलकाता दौरे पर कहा कि भारत की कला, संस्कृति और विरासत को 21वीं सदी के अनुसार संरक्षित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान अब बंगाल से शुरू हो रहा है। केंद्र सरकार का ये प्रयास है कि भारत के सांस्कृतिक सामर्थ्य को दुनिया के सामने नए रंग-रूप में रखें ताकि भारत दुनिया में हेरिटेज टूरिज्म का बड़ा सेंटर बनकर उभरे।

पीएम ने कहा कि ये भी तय किया गया है कि देश के पांच प्रतिष्ठित संग्रहालयों को अंतरराष्ट्रीय मानक का बनाया जाएगा। इसकी शुरुआत विश्व के सबसे पुराने म्यूजियम में से एक भारतीय संग्रहालय कोलकाता से की जा रही है। पीएम ने कहा कि यह समय बंगाल की धरती की पवित्र महक को नमन करने का है। आसमान में भले ही एक चांद चमकता हो, लेकिन बंगाल ने दुनिया को सुभाष चंद्र, ईश्वर चंद्र, शरत चंद्र, केशव चंद्र, विपिन चंद्र जैसे अनेक चंद्र दिए हैं। मोदी ने कहा कि युवावस्था में भी बंगाल की भूमि मुझे यहां खींच लाई थी। बंगाल की धरती पर पैदा हुए सपूतों ने भारत के सांस्कृतिक महत्व को हमेशा समझा और महत्व दिया। सभी महापुरुषों ने पूरी दुनिया को बताया कि भारत असल में क्या है और उसकी असली ताकत हमारी संस्कृति है, अतीत का हमारा ज्ञान-विज्ञान है।

हमेशा याद रखनी है स्वामी विवेकानंद जी की बात : प्रधानमंत्री ने कहा कि हम सभी को स्वामी विवेकानंद जी की वो बात हमेशा याद रखनी है, जो उन्होंने मिशिगन यूनिवर्सिटी में कुछ लोगों से संवाद के दौरान कही थी। स्वामी विवेकानंद ने उन्हें कहा था कि अभी वर्तमान सदी भले ही आपकी है, लेकिन 21वीं सदी भारत की होगी।

भारत को मिला संतों का आर्शीवाद : पीएम ने कहा कि भारत को आदि शंकराचार्य, थिरुनावुक्कारासार जैसे कवि-संतों का आशीर्वाद मिला। अंदाल, अक्का महादेवी, भगवान बशवेश्वर, गुरु नानक देव जी द्वारा दिखाया गया मार्ग अब भी हमें प्रेरणा देता है। राजनीतिक और सैन्य शक्ति तो अस्थायी होती है, लेकिन कला और संस्कृति के जरिये जो जनभावनाएं अभिव्यक्त होती हैं, वो स्थायी होती हैं और इसलिए अपने समृद्ध इतिहास को अपनी धरोहर को संजोकर रखना, उनका संवर्धन करना भारत के लिए हर भारतवासी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

बिप्लवी भारत नाम से बने म्यूजियम : पीएम ने कहा कि विक्टोरिया की दो गैलरी लंबे समय से बंद हैं, जिसे खोलने के लिए लंबे समय से प्रयास हो रहे हैं। तीसरी गैलरी में बंगाल के क्रांतिकारी को जगह दी जानी चाहिए। बिप्लवी भारत नाम से म्यूजियम बने, जिसमें नेताजी सुभाषचंद्र बोस, अरबिंदो घोष, रास बिहारी बोस, खुदीराम बोस, देशबंधु, बाघा जतिन, बिनय, बादल, दिनेश, ऐसे हरेक महान सेनानी को यहां जगह मिलनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जब आजाद हिंद सरकार के 75 वर्ष पूरे हुए तो लाल किले में ध्वजारोहण का सौभाग्य मुझे खुद मिला। नेताजी से जुड़ी फाइलों को सार्वजनिक करने की मांग भी बरसों से हो रही थी, जो अब पूरी हो चुकी है। बंगाल में भारत सरकार की टकसाल के म्यूजियम को कॉलेज एंड कामर्स के रूप में विकसित किया जाएगा।

जब भारत की आजादी के 75 वर्ष होंगे...

प्रधानमंत्री ने कहा कि अभी हम सभी ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी की 200वीं जयंती मना रहे हैं। इसी तरह 2022 में जब भारत की आजादी के 75 वर्ष होंगे, तब एक और सुखद संयोग बन रहा है। 2022 में महान समाज सुधारक और शिक्षाविद राजा राममोहन राय की 250वीं जयंती आने वाली है। नए दशक में बंगाल के अन्य सपूतों को भी उचित सम्मान मिलना चाहिए।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी की बातें आज भी प्रासंगिक

पीएम ने कहा कि देश की संस्कृति की रक्षा करने को लेकर श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने कहा था कि हमें तकलीफ इस बात की नहीं है कि पश्चिमी ज्ञान के दरवाजे हमारे लिए खुले हैं। यह ज्ञान हम पर भारतीय संस्कृति के साथ समझौता करते हुए थोपा गया। उन्होंने कहा कि डॉ. मुखर्जी की बातें आज भी प्रासंगिक हैं। भारतीय संस्कृति के मूल्यों पर आंच न आए, इसका हमें ध्यान रखना होगा।

अधिवक्ता को श्रेय नहीं दिया तो 'छपाक' पर रोक लगा देंगे : कोर्ट

जासं, नई दिल्ली : हाई कोर्ट ने दीपिका पादुकोण अभिनीत फिल्म 'छपाक' के निर्माता और निर्देशक को आदेश दिया है कि वे तेजाब पीड़िता लक्ष्मी अग्रवाल की अधिवक्ता अपर्णा भट्ट को श्रेय दें, अन्यथा फिल्म पर रोक लगा दी जाएगी। अपर्णा ने ही पटियाला हाउस अदालत में लक्ष्मी का केस लड़ा था।

अपर्णा भट्ट का दावा है कि फिल्म निर्माताओं ने उनकी मदद ली, लेकिन उन्हें फिल्म में श्रेय नहीं दिया। इसके चलते उन्होंने पटियाला हाउस अदालत में केस दायर किया था। गुरुवार को पटियाला हाउस कोर्ट से अपर्णा के हक में फैसला आया, लेकिन शुक्रवार को फिल्म निर्माण कंपनी ने हाई कोर्ट में इसे चुनौती दे दी थी। अब शनिवार को हाई कोर्ट ने सुनवाई की।

आतंकी वामपंथी छात्रों ने किया जेएनयू पर हमला : राम माधव

वडोदरा, प्रेट्र : भाजपा महासचिव राम माधव ने शनिवार को कहा कि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में हिंसा के पीछे कुछ आतंकी वामपंथी छात्रों का हाथ है, जो दशकों से वहां हजारों छात्रों की पढ़ाई और शोध बाधित कर रहे हैं। उन्होंने पांच जनवरी को जेएनयू में हुई हिंसा को वामपंथियों और उनके समर्थकों की साजिश करार दिया।

राम माधव ने कहा कि दशकों से हजारों छात्रों को वामपंथी छात्रों के आतंक की वजह से जेएनयू में प्रताड़ना का सामना करना पड़ रहा है। जो हिंसा अभी दिखी है, वह इसी का नतीजा है। कुछ गिने-चुने आतंकवादी वामपंथी छात्र हमेशा उन हजारों छात्रों के अधिकारों को बाधित करते हैं, जो जेएनयू में पढ़ते हैं और शोध करते हैं। गौरतलब है कि रॉड और डंडों से लैस नकाबपोश लोगों ने पांच जनवरी की रात को छात्रों और अध्यापकों पर हमला किया और सार्वजनिक संपत्ति की तोड़फोड़ की। इस घटना में कई लोग घायल हो गए। वामपंथी छात्र संगठन और आरएसएस से संबद्ध अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) हिंसा के लिए एक दूसरे को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं।

जम्मू-कश्मीर की स्थिति को लेकर पूछे गए सवाल के जवाब में राम माधव ने कहा कि केंद्र शासित प्रदेश में स्थिति सामान्य हो रही है। काफी हद तक इंटरनेट सेवा बहाल कर दी गई है और हिरासत में लिए गए नेताओं को रिहा किया जा रहा है। उन्होंने दावा किया कि अब 20 से 25 नेता ही हिरासत में हैं और उन्हें चरणबद्ध तरीके से रिहा किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर में लोग सामान्य जीवन जी रहे हैं।

कुछ ही मिनटों में ग्रुप से जुड़े 150 छात्र

▶ प्रथम पृष्ठ का शेष

कुछ ही मिनट के अंदर उक्त ग्रुप में करीब 150 छात्र जुड़ गए। ग्रुप में विश्वविद्यालय से बाहर के कुछ कांग्रेस समर्थक और मुस्लिम युवक भी जुड़े थे। क्राइम ब्रांच ने अभी तक इस वाट्सएप ग्रुप में शामिल 37 विद्यार्थियों की पहचान की है। हालांकि इनके उपद्रव में शामिल होने के सुबूत अभी नहीं मिले हैं। इस बीच, एबीवीपी नेताओं ने कहा है कि योगेंद्र भारद्वाज मारपीट में शामिल नहीं हो सकता है।

दिल्ली पुलिस प्रवक्ता एडिशनल पुलिस कमिश्नर मंदीप सिंह रंधावा का कहना है कि पांच जनवरी को हुई हिंसा मामले में वसंतकुंज उत्तरी थाना पुलिस ने स्वतः संज्ञान लेते हुए जो एफआइआर दर्ज की है, उसी में एबीवीपी की सात, वामपंथी छात्र संगठनों की तीन और जेएनयू प्रशासन की ओर से दी गई एक शिकायत को शामिल कर लिया गया है।

खोज जारी

दिग्गज उद्योगपति महिंद्रा ने भारत में विंटेज वाहनों की बदहाली को लेकर ट्विटर पर छेड़ी नई बहस, महिंद्रा को खोजे नहीं मिल रही इस मशहूर गाने में इस्तेमाल की गई जीप

'मेरे सपनों की रानी...' वाली जीप की तलाश में आनंद महिंद्रा

नई दिल्ली, आइएएनएस : दुनियाभर में विंटेज वाहनों को लेकर गजब का क्रेज है। शौकीन लोग ऐसे पुराने वाहनों की मुंहमांगी कीमत लगाने को तैयार रहते हैं। लेकिन भारत में ऐसे वाहनों का संभावित बाजार बहुत बड़ा होने के बावजूद इन्हें सहेजकर रखने की कोशिश नहीं के बराबर दिखती है। दिग्गज कारोबारी और महिंद्रा ग्रुप के चेयरमैन आनंद महिंद्रा ने अपनी ही कंपनी की बनाई एक जीप के माध्यम से विंटेज वाहनों की बदहाली पर एक ऐसी बहस छेड़ दी है। इस बहस पर गंभीरता से विचार किए जाने की सूरत में विंटेज और क्लासिक वाहनों का एक बड़ा बाजार खड़ा हो सकता है।

आनंद महिंद्रा ने वर्ष 1969 में आई मशहूर बॉलीवुड फिल्म आराधना के सदाबहार गीत 'मेरे सपनों की रानी कब आएगी तू...' में प्रयोग की गई जीप के जरिये भारत में हेरिटेज कारों की नीलामी की चर्चा छेड़ दी। उन्होंने एक ट्वीट के जरिये पूछा कि अगर आराधना फिल्म में राजेश खन्ना द्वारा प्रयोग की गई जीप की नीलामी की जाए, तो इसकी कीमत क्या होगी। उनकी इस जिज्ञासा के जवाब में कई रोचक जवाब देखने को मिले। एक यूजर ने लिखा कि हमारे सुपरस्टार राजेश खन्ना अपने रोमांस के लिए मशहूर थे, कार चलाने के लिए नहीं। दरअसल महिंद्रा ने न्यूयॉर्क टाइम्स के ट्वीट से प्रभावित होकर भारत के संबंध में हेरिटेज कारों की नीलामी की बात उठाई थी।

आनंद महिंद्रा। फाइल

1969 में आई मशहूर बॉलीवुड फिल्म आराधना के सदाबहार गीत 'मेरे सपनों की रानी कब आएगी तू...' में प्रयोग की गई जीप के जरिये भारत में महिंद्रा ने हेरिटेज कारों की नीलामी की चर्चा छेड़ दी

1955 में आई देवानंद की मशहूर फिल्म 'ज्वेल थीफ' में शेवरले बेल एयर कार प्रयोग की गई थी

न्यूयॉर्क टाइम्स ने बताया है कि हॉलीवुड कलाकार स्टीव मैक्क्वीन की 'हीरो कार' नीलामी के लिए तैयार है। इसकी नीलामी से करीब 50 लाख डॉलर (करीब 35 करोड़ रुपये) मिलने की उम्मीद है। हीरो कार 'बुलिट' फिल्म में प्रयोग की गई थी। वर्ष 1974 में आई इस फिल्म के लिए स्टीव मैक्वीन को 3,500 डॉलर (करीब 2,45,000 रुपये) मिले थे। मैक्क्वीन अपने कार और बाइक स्टंट के लिए मशहूर थे। न्यूयॉर्क टाइम्स को टैग करते हुए महिंद्रा ने लिखा कि वह 'सपनों की रानी' गाने में प्रयोग की गई जीप को खोजने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन अभी तक इसकी कोई खबर नहीं मिल सकी है।

इसका जवाब देते हुए एक यूजर ने लिखा कि यह अमेरिका नहीं है...आप जो जीप खोज रहे हैं, वह कब की कबाड़ में बेच दी गई है। यूजर ने महिंद्रा को शर्त लगाने की चुनौती देते हुए कहा कि अगर मैं हारा तो आपको शर्त हारने के टोकन के रूप में 1,111 रुपये दूंगा और अगर आप हारे तो मुझे महिंद्रा एंड महिंद्रा की नवीनतम एसयूवी देंगे। वैसे, यूजर ने यह भी कहा कि वह चाहता यही है कि हार जाए महिंद्रा को वह जीप सही-सलामत हालत में मिल जाए। एक अन्य यूजर ने तो उन्हें ट्विंकल खन्ना से पूछने तक की सलाह भी दे डाली। यूजर का कहना था कि यह कार कथित तौर पर डिंपल खन्ना ने राजेश खन्ना को उपहार के तौर पर दी थी। इसलिए संभव है कि ट्विंकल खन्ना को इस बारे में जानकारी हो। उनके इस ट्वीट को 115 यूजर्स द्वारा री-ट्वीट किया गया और 1.5 हजार यूजर्स ने इसे लाइक किया।

बालीवुड की फिल्मों में बेहतरीन कारों और मोटरसाइकिल का प्रयोग होता रहा है। चाहे वह पोर्शे हो, शेवरले हो या जावा। आराधना के गाने सपनों की रानी में राजेश खन्ना द्वारा प्रयोग की गई जीप विले सीजे-3बी थी। इसमें स्टीयरिंग बाईं ओर हुआ करता था। इसके अलावा वर्ष 1955 में आई देवानंद की मशहूर फिल्म 'ज्वेल थीफ' में शेवरले बेल एयर कार प्रयोग की गई थी। इस कार पर एक और सदाबहार गीत 'ये दिल न होता बेचारा' फिल्माया गया था। शान फिल्म में अमिताभ बच्चन द्वारा प्रयोग की गई पोर्शे को कौन भूल सकता है। अफसोस यह है कि इनमें से कोई भी वाहन सलामत हालत में किसी दावेदार के पास नहीं है।

...इसलिए फिल्मकार अनुराग कश्यप को अखरे मोदी!

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के विरोध के साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए सोशल मीडिया पर जहर उगल रहे फिल्म निर्माता अनुराग कश्यप से जुड़ी पर्दे की पीछे की कहानी सामने आ गई है। दरअसल, अनुराग अपनी फिल्म 'सांड की आंख' के लिए उप्र सरकार से अनुदान चाहते थे, जो उन्हें नहीं मिल सका। फिल्म 'मुक्काबाज' की सब्सिडी भी फंसी हुई है। भाजपा मानती है कि यह उसी की खीझ है।

अनुराग ने हाल ही में एक ट्वीट में मोदी के लिए अमर्यादित शब्दों का इस्तेमाल किया। इसके बाद भाजपा भी मोर्चा संभालने को सक्रिय हो गई। सरकार के सूचना सलाहकार शलभमणि त्रिपाठी ने राज्य फिल्म विकास परिषद तथा फिल्म बंधु के फिल्म निर्माताओं के साथ हुए पत्राचार को सार्वजनिक कर दिया। इसमें सूचना निदेशक एवं सदस्य सचिव फिल्म बंधु शिशिर द्वारा 'सांड की आंख' को अनुदान के संबंध में 13 सितंबर 2019 को लिखा गया पत्र भी है।

इस पत्र में अनुराग कश्यप को बताया गया है कि आवेदन पत्र के कई कॉलम नहीं भरे गए हैं। उनके द्वारा निर्देशित फिल्म 'मुक्काबाज' को अनुदान देने के लिए फिल्म बंधु ने 11 जून 2018 को स्क्रिप्ट अनुमोदित कर दी थी। उसमें जो नियम-शर्तें लिखी थीं, उससे संबंधित दस्तावेज उपलब्ध न कराए जाने से मुक्काबाज का अनुदान भी अभी नहीं मिल सका है। वहीं, सपा शासन में उनकी मसान फिल्म को दो करोड़ रुपये अनुदान दिया गया था।

अनुराग के मन में आई कड़वाहट की एक और वजह मानी जा रही है। सपा सरकार में तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने अनुराग को यश भारती सम्मान से नवाजा। उन्हें पचास हजार रुपये मासिक पेंशन देना शुरू कर दिया। योगी सरकार ने मासिक पेंशन नियमावली में संशोधन कर दिया, जिससे अनुराग सहित अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दीकी, नसीरुद्दीन शाह, क्रिकेटर आरपी सिंह आदि की पेंशन बंद हो गई।

84 करोड़ रुपये का नुकसान का दावा किया है रेलवे ने बंगाल में पिछले साल 13 से 15 दिसंबर के बीच नागरिकता संशोधन कानून और राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर के खिलाफ हुए आंदोलनों के दौरान हिंसा में। यह दावा रेलवे ने कलकत्ता हाई कोर्ट में दाखिल हलफनामे में किया है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 12 जनवरी 2020

केरल में दो अवैध लक्जरी अपार्टमेंट गिराए गए

सख्ती ▶ इन्हें तटीय विनियमन जोन के मानकों का उल्लंघन कर बनाया गया था, सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर हुई कार्रवाई

'जैन कोरल कोव' और 'गोल्डन कयलोरम' को आज ढहाया जाएगा

कोच्चि, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर शनिवार को केरल में मरादू नगरपालिका के तहत दो अवैध लक्जरी अपार्टमेंट्स को ढहा दिया गया। इन्हें तटीय विनियमन जोन (सीआरजेड) के मानकों का उल्लंघन कर बनाया गया था। बहुमंजिला 'होली फेथ एच2ओ' और 'अल्फा सरीन' अपार्टमेंट को विस्फोटक लगाकर सुबह क्रमशः 11.18 बजे और 11.46 बजे ढहा दिया गया। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के मुताबिक ही दो अन्य अपार्टमेंट 'जैन कोरल कोव' और 'गोल्डन कयलोरम' को रविवार को ढहाया जाएगा।

शनिवार को दोनों लक्जरी अपार्टमेंट्स को गिरता हुआ देखने के लिए इलाके के हजारों लोग जमा हुए थे। इस दौरान दोनों अपार्टमेंट्स से 200 मीटर के दायरे में स्थित अन्य इमारतों को एहतियातन खाली करा लिया गया था। ध्वस्तीकरण के बाद उन लोगों को अपनी-अपनी इमारतों में जाकर यह देखने के लिए कहा गया कि वे देखकर बताएं कि वहां तो कोई नुकसान नहीं हुआ है। कोच्चि के पुलिस आयुक्त विजय सखारे ने बताया कि दोनों अपार्टमेंट्स को गिराने के दौरान कोई जन या पशुधन हानि नहीं हुई है और न ही किसी अन्य संपत्ति को कोई नुकसान पहुंचा है। अधिकारियों ने बताया कि इमारतों को गिराने की पूरी कवायद करीब-करीब सटीक रही।

केरल के मरादु में तटीय नियमन क्षेत्र (सीआरजेड) के मानदंडों का उल्लंघन कर बनाए गए अपार्टमेंट को शनिवार को विस्फोट करके ध्वस्त कर दिया गया। प्रेट्र

मालूम हो कि तटीय विनियमन जोन के मानकों का उल्लंघन कर कुल 343 फ्लैट बनाए गए थे। सुप्रीम कोर्ट ने सितंबर, 2019 में केरल सरकार द्वारा सुझाई गई 138 दिनों की समयसीमा में इन्हें गिराने का आदेश दिया था। शुरुआत में फ्लैट में रहने वालों ने कई दिनों तक विरोध में धरना प्रदर्शन किया था और फ्लैट खाली करने से इन्कार कर दिया था, लेकिन बाद में वे मान गए थे। शीर्ष अदालत ने प्रत्येक फ्लैट मालिक को अंतरिम मुआवजे के तौर पर 25 लाख रुपये देने का आदेश भी दिया था।

लोगों की प्रतिक्रिया, सुप्रीम कोर्ट ने दिया कानून का सम्मान करने का संदेश : कोच्चि, प्रेट्र : दोनों अवैध लक्जरी अपार्टमेंट्स ढहाये जाने पर राज्य के लोगों ने मिश्रित प्रतिक्रिया दी है। एर्नाकुलम जिले में सामाजिक कार्यकर्ता टोनी पी. इमैनुअल ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट की ओर से ऐसा कड़ा फैसला देशभर में लोगों को संदेश देगा कि कानून का सम्मान किया ही जाना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने सही समय पर हस्तक्षेप किया क्योंकि केरल के तटीय इलाकों में ऐसे उल्लंघन बढ़ते जा रहे हैं। लेकिन अधिवक्ता एन. नांबियार ने कहा कि कानून लोगों के फायदे और कल्याण के लिए होता है। इन इमारतों को ढहाने से किसी को फायदा नहीं हुआ। बल्कि इससे गंभीर पारिस्थितिक मुद्दे पैदा हो गए हैं।

हाई कोर्ट के आदेश के खिलाफ केरल के रिजॉर्ट की याचिका खारिज

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने शनिवार को कापिको केरल रिजॉर्ट प्राइवेट लिमिटेड की वह याचिका खारिज कर दी जिसमें केरल हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती दी गई थी। हाई कोर्ट ने 2013 में केरल तटीय क्षेत्र प्रबंधन योजना और तटीय विनियमन क्षेत्र अधिसूचना के आधार पर अलपुझा जिले में वेम्बानाड झील के नेदियाथुरुथु द्वीप पर रिजॉर्ट का निर्माण प्रतिबंधित कर दिया था और द्वीप पर बने ढांचे को हटाने का आदेश दिया था। सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस आरएफ नरीमन, जस्टिस अनिरुद्ध बोस और जस्टिस वी. रामसुब्रमण्यन की पीठ ने हाई कोर्ट के उपरोक्त आदेश को बरकरार रखा है।

पाकिस्तान के बैट दस्ते ने पोर्टर का सिर काटा, सेनाध्यक्ष बोले–सैन्य तरीके से निपटेंगे

जागरण संवाददाता, पुंछ

▶ एलओसी पर गुलपुर सेक्टर में पाकिस्तान ने की बर्बर कार्रवाई

▶ पहली बार किसी नागरिक के शव के साथ की गई बर्बरता

पाकिस्तानी सेना अब बर्बर कार्रवाई पर उतर आई है। पुंछ जिले के गुलपुर सेक्टर में नियंत्रण रेखा पर पाकिस्तान की बॉर्डर एक्शन टीम (बैट) ने शुक्रवार को भारतीय क्षेत्र में घुसकर सेना के साथ काम करने वाले एक पोर्टर का सिर काट दिया और उसके शव को क्षत-विक्षत कर दिया। यह पहला मौका है जब बैट ने किसी आम नागरिक के साथ ऐसी बर्बरता की है। इस हमले में दो पोर्टरों की मौत हुई थी और तीन अन्य घायल हो गए थे। इस संबंध में शनिवार को सेनाध्यक्ष एमएम नरवाने ने कहा कि पेशेवर सेनाएं कभी भी बर्बर कृत्यों का सहारा नहीं लेती हैं। हम इस स्थिति से सैन्य तरीके से निपटेंगे। इस बीच, पुंछ पुलिस ने भी सिर काटने का मामला दर्ज कर लिया है। वहीं, डॉक्टरों ने भी पोस्टमार्टम रिपोर्ट में इस बात का जिक्र किया है कि पोर्टर का सिर गायब है।

पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, बैट हमले में मारे गए पोर्टर (28) मुहम्मद असलम का सिर गायब है और शव भी क्षत-विक्षत है। हालांकि एक दिन पहले सेना ने कहा था कि पाकिस्तान ने सीमा के निकट पोर्टरों के एक दल पर मोर्टार दागा था, जिसमें मुहम्मद असलम और (23) अल्ताफ हुसैन की मौत हो गई थी। वहीं, तीन अन्य घायल भी हुए थे। घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती करवाने के बाद हमले में मारे गए असलम व अल्ताफ के शव जरूरी औपचारिक कार्रवाई के बाद अंतिम संस्कार के लिए परिवार के हवाले कर दिए गए थे।

इस बीच दिल्ली में एक पत्रकारवार्ता में जब सेनाध्यक्ष नरवाने से इस घटना के बारे में पूछा गया तो उन्होंने केवल इतना कहा कि भारतीय सेना एलओसी पर सबसे अधिक पेशेवर और नैतिक तरीके से खुद को संचालित करती है। पेशेवर सेनाएं कभी भी बर्बर कृत्यों का सहारा नहीं लेती हैं।

कांग्रेस ने पीएम और रक्षा मंत्री की चुप्पी पर निशाना साधा

नई दिल्ली, प्रेट्र : कांग्रेस ने पाकिस्तान की बॉर्डर एक्शन टीम द्वारा सेना के दो पोर्टरों की हत्या को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की चुप्पी पर निशाना साधा है। पार्टी के मुख्य प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने कहा कि पाकिस्तानी सैनिकों ने एक पोर्टर का सिर काट लिया, लेकिन प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री चुप हैं। क्या शहादत की इस खबर पर सरकार ध्यान दे रही है? पाकिस्तान की कायरतापूर्ण कार्रवाई को कब मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा?

न्यूज गैलरी

महिला कांस्टेबल ने खुद को मारी गोली, मौत

सीतापुर : उप्र के सीतापुर स्थित खैराबाद थाने में तैनात महिला कांस्टेबल शोभा चौधरी (26) ने शनिवार दोपहर सरकारी पिस्टल से खुद को गोली मार ली। अस्पताल ले जाने पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। फॉरेंसिक टीम ने घटना स्थल पर पहुंचकर जांच की है। कांस्टेबल शोभा बुलंदशहर के गांव शेहेरा की रहने वाली थी। उसकी ज्वाइनिंग 2016 में हुई थी। इसी के बाद वह खैराबाद थाने में तैनात थी। उसकी शादी कुछ समय पहले हुई थी। उसका पति भी पुलिस विभाग में ही है। महिला आरक्षी के पास मालखाने की जिम्मेदारी थी। मालखाने में रखी सरकारी पिस्टल से ही उसने खुद को गोली मार ली। घटना के बाद पिस्टल की जानकारी जुटाई जा रही है। एएसपी एमपी सिंह के मुताबिक, शादी में अनबन की वजह से शोभा डिप्रेशन में थी। (जासं)

अभिनेत्री ने 'मी टू' में फिल्म निर्माता का लिया नाम

कोलकाता : 'मी टू' की लहर अब बांग्ला फिल्म उद्योग में भी प्रवेश कर चुकी है। लोकप्रिय टेलीविजन अभिनेत्री रूपंजना मित्रा ने कथित तौर पर प्रसिद्ध बांग्ला फिल्म निर्माता अरिंदम सिल के खिलाफ यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए हैं। एक डिजिटल मीडिया के साथ साक्षात्कार में अभिनेत्री ने बताया, आरोपित ने 'भूमिकन्या' के पहले एपिसोड की पटकथा पढ़ने के लिए उन्हें अपने कोलकाता कार्यालय में बुलाया था। यह दुर्गा पूजा से कुछ दिन पहले की बात है। (जासं)

महाराष्ट्र की केमिकल फैक्ट्री में विस्फोट, आठ की मौत

मुंबई : महाराष्ट्र के पालघर जिले में शनिवार को केमिकल फैक्ट्री में भीषण विस्फोट में कम से कम आठ लोगों की मौत हो गई। अंक फर्मा के निर्माणाधीन प्लांट में यह विस्फोट हुआ है। यह प्लांट कोलवाडे गांव के महाराष्ट्र औद्योगिक विकास कारपोरेशन (एमआइडीसी) क्षेत्र में स्थित है। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने मारे गए लोगों के आश्रितों को पांच-पांच लाख रुपये की सहायता देने की घोषणा की है। राहत एवं बचाव के लिए एनडीआरएफ टीम बुला ली गई है। पुलिस के अनुसार केमिकल की जांच के दौरान शाम 7:20 के आसपास हुआ विस्फोट इतना शक्तिशाली था कि 15 किमी के दायरे में उसकी आवाज सुनाई दी। (प्रेट्र)

लंबित मुकदमों का बोझ एआइ से कम करने पर विचार

बेंगलुरु, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) पर आधारित सिस्टम विकसित कर देश में लंबित मुकदमों की संख्या कम करने पर विचार कर रहा है। इस सिस्टम से न्याय मिलने में देरी की समस्या पर भी काबू पाया जा सकेगा। देश के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस एसए बोबडे ने शनिवार को यह जानकारी न्यायिक अधिकारियों के राज्य स्तरीय सम्मेलन में दी है।

बोबडे ने कहा कि देश में लंबित मुकदमों की बड़ी संख्या को देखते हुए इस तरह का सिस्टम विकसित करना आज की सबसे बड़ी जरूरत है। उन्होंने कहा, कोर्ट के लिए जरूरी है कि वे देखें कि न्याय में अनावश्यक विलंब न हो। इसके लिए हमारे पास जो भी अधिकतम योग्यता है, उसका इस्तेमाल करें। सम्मेलन में कर्नाटक के सीएम बीएस येदियुरप्पा, सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस मोहन के शांतनागौडर, एस अब्दुल नजीर, एएस बोपन्ना व कर्नाटक हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस अभय श्रीनिवास ओका भी मौजूद थे।

बर्फ में दफन हो रही थी जिंदगी की आस, वर्दी में आए फरिश्ते

नवीन नवाज, श्रीनगर

बर्फीली रात में जिंदगी की आस दफन होती दिख रही थी। ऐसे में कुछ फरिश्ते फौज की वर्दी में आए और बहनों को मौत के शिकंजे से निकालकर उनके आंचल में खुशियों की किलकारी भर दी। सेना के इन जवानों द्वारा समय पर मिली मदद से उत्तरी कश्मीर के सौगाम और जम्मू क्षेत्र के बनिहाल के इन परिवारों के आंगन में खुशियां झिलमिला रही हैं।

उत्तरी कश्मीर के कुपवाड़ा के सौगाम क्षेत्र निवासी तस्लीमा के भाई कहते हैं कि अगर फौज के लोग नहीं आते तो आज हमारे घर में जश्न नहीं मातम होता। उसने बताया कि दो दिन पहले रास्ता पूरी तरह बंद था, सिर्फ बर्फ ही बर्फ नजर आ रही थी और ऐसा लग रहा था कि मौत का मातम छाने वाला है। लेकिन तभी फौजी वर्दी में जिंदगी के फरिश्ते पहुंच गए।

उन्होंने बताया कि हम तस्लीमा को लेकर अस्पताल की तरफ जा रहे थे। भारी बर्फबारी से रास्ता बंद हो गया और अंधेरा भी हो गया था। लगा कि अब हम जिंदा नहीं रह सकेंगे। किसी तरह निकटवर्ती सैन्य शिविर में संपर्क किया और कुछ ही देर में सेना के जवान एक डॉक्टर के साथ हमारे पास आ पहुंचे। उन्होंने मेरी बहन को प्राथमिक उपचार दिया और जवानों ने स्ट्रेचर पर तस्लीमा को उठाया और करीब तीन किलोमीटर तक बर्फ में पैदल चले। फिर अपनी एंबुलेंस के जरिये उपजिला अस्पताल सोगाम पहुंचाया।

इधर, जवाहर सुरंग के पास बनिहाल जिला अस्पताल में नवजात भांजे को गोद में उठाकर घूम रहे फैयाज ने कहा कि पल-पल पास आती मौत को हमने महसूस किया है। हमारा गांव उखराल सबसे दुर्गम और पिछड़े इलाकों में एक है। गुरुवार दोपहर को अचानक मेरी बहन की प्रसव पीड़ा बढ़ गई। हम उसे स्थानीय अस्पताल में ले गए। वहां एक और गर्भवती महिला का इलाज चल रहा था। डॉक्टरों ने कहा कि ऑपरेशन करना पड़ेगा, इसलिए बनिहाल जिला अस्पताल जाना होगा। हम क्या करते, वहां से निकल पड़े। मेरी बहन और वह दूसरी महिला, दोनों को स्वास्थ्य विभाग की एंबुलेंस में लेकर वहां से निकले। अचानक हिमपात होने से एंबुलेंस फंस गई। दोनों की हालत बिगड़ रही थ। इस पर हमने पास के सेना के शिविर से संपर्क किया। कैंप से सेना के जवानों का एक दल और डॉक्टर मौके पर पहुंचे। उन्होंने अपनी एंबुलेंस के जरिए दोनों महिलाओं को यहां बनिहाल अस्पताल पहुंचाया। सेना का डाक्टर पूरे रास्ते साथ रहा। हमारे घर में यह खुशी तो फौज की देन है।

बर्फ में छह किलोमीटर तक कंधे पर उठाकर ले गए अस्पताल

जागरण संवाददाता, नाहन

हिमाचल में मौसम के कारण लोगों की परेशानियां कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। प्रदेश के जनजातीय इलाकों में जनजीवन सामान्य नहीं हो पाया है। सिरमौर जिले के संगड़ाह उपमंडल की कई सड़कें बंद हैं जबकि विद्युत आपूर्ति भी बाधित है।

शनिवार को हरिपुरधार की गेहल पंचायत के बड़िच निवासी 36 वर्षीय युवक हरिचंद नेगी को ठंड के कारण हृदयाघात हो गया। भारी बर्फबारी के कारण यहां मार्ग अवरुद्ध हैं ऐसे में ग्रामीणों ने उसे छह किलोमीटर तक कंधे पर उठा कर चले। इसके बाद पांच किलोमीटर तक उसे जेसीवी में ले जाकर करीब तीन घंटे बाद हरिपुरधार पीएचसी में पहुंचाया।

हिमाचल प्रदेश में सिरमौर जिले के डिमाईना गांव में युवक को हृदयाघात के बाद बर्फ पर पैदल चलकर अस्पताल ले जाते लोग। जागरण

लोगों का कहना है कि हरिपुरधार से शिमला के लिए उसे जेसीबी में ही भेजा गया। ग्रामीणों का कहना है कि उन्होंने हरिपुरधार से गेहल वाली सड़क को जल्द खुलवाने के लिए लोक निर्माण विभाग से आग्रह भी किया था, लेकिनअधिकारियों ने उनकी नहीं सुनी।

जम्मू-कश्मीर कैडर के आइएएस से पूछताछ करेगी राजस्थान एटीएस

जागरण संवाददाता, जयपुर

▶ फर्जी हथियार लाइसेंस मामले में भेजा गया नोटिस

फर्जी हथियार लाइसेंस मामले की जांच कर रही राजस्थान एटीएस जम्मू-कश्मीर कैडर के आइएएस अधिकारी राजीव रंजन को नोटिस भेजकर पूछताछ के लिए बुलाएगी। राजीव रंजन जम्मू मेट्रो रेल कॉरपोरेशन में कार्यरत हैं। राजीव रंजन को नोटिस भेजे जाने के साथ ही जम्मू पुलिस महानिदेशक और मुख्य सचिव को भी पत्र भेजा जाएगा। इस पत्र के माध्यम से राजीव रंजन को राजस्थान एटीएस के समक्ष पूछताछ के लिए भेजने का आग्रह किया जाएगा। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से इस बारे में राज्य के पुलिस महानिदेशक भूपेंद्र यादव और एटीएस महानिदेशक अनिल पालीवाल की चर्चा हुई है।

गौरतलब है कि करीब पांच साल तक देशभर में चले फर्जी हथियार लाइसेंस मामले का पर्दाफाश राजस्थान एटीएस ने 2017 में किया था। एटीएस ने यह राज उजागर किया था कि जम्मू-कश्मीर और नगालैंड से करीब पांच हजार फर्जी हथियार लाइसेंस बने हैं। इन्हें बनवाने वाले गिरोह का सरगना अजमेर निवासी मुहम्मद उस्मान है। मुहम्मद उस्मान ने आइएएस अधिकारी राजीव रंजन के भाई कुमार ज्योति रंजन के माध्यम से जम्मू-कश्मीर से बड़ी संख्या में फर्जी हथियार लाइसेंस बनवाए थे। राजीव के कुपवाड़ा में डीसी पद पर तैनात रहते हुए कुमार ज्योति ने फर्जी हथियार लाइसेंस बनवाए थे। इस मामले में उस्मान से हुई पूछताछ में सामने आया था कि उसने लाइसेंस बनवाने के बदले कुमार ज्योति रंजन के बैंक खाते में 42 लाख रुपये कई किस्तों में जमा कराए थे। उस्मान और उसका बेटा जुबेर दो बार राजीव से मिले भी थे। राजीव ने जम्मू-कश्मीर के कई अधिकारियों से उनका परिचय कराया था, जिनके जरिये फर्जी लाइसेंस बनवाए गए थे।

एटीएस ने चलाया था ऑपरेशन जुबैदा : अजमेर के मुहम्मद उस्मान की अगुआई में पूरे देश में फर्जी हथियार लाइसेंस गिरोह सक्रिय होने की खुफिया रिपोर्ट मिलने के बाद एटीएस के तत्कालीन अतिरिक्त महानिदेश उमेश मिश्रा की अगुआई में ऑपरेशन जुबैदा चलाया गया था। इसी में राजस्थान के अलावा मध्य प्रदेश, पंजाब, गुजरात और हरियाणा के पांच हजार लोगों के हथियार लाइसेंस जम्मू-कश्मीर एवं नगालैंड के विभिन्न जिलों से फर्जी दस्तावेज के आधार पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों की मिलीभगत से बनाए जाने की बात सामने आई थी। पिछले साल राज्य के गृह विभाग ने सीबीआइ को इस मामले की जांच के लिए लिखा था। सीबीआइ इस मामले की जांच कर रही है। राज्य एटीएस चाहती है कि यदि राजीव से पूछताछ करने का उसे अवसर मिले तो कई बड़े राज उजागर हो सकते हैं। एटीस के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक अनिल पालीवाल ने कहा कि फर्जीवाड़ा कर बने हथियार लाइसेंस कई राज्यों में पहुंचे थे। कुछ आरोपितों के खिलाफ चालान पेश कर दिया गया। अब तक 55 लोगों की गिरफ्तारियां हो चुकी हैं।

निर्भया के दो दोषियों की क्यूरेटिव याचिका पर 14 को होगी सुनवाई

▶ सुप्रीम कोर्ट के पांच जजों की पीठ करेगी सुनवाई

▶ चारों दोषियों को 22 जनवरी को दी जानी है फांसी

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट की पांच सदस्यीय पीठ निर्भया सामूहिक दुष्कर्म मामले के दो दोषियों की क्यूरेटिव याचिकाओं पर 14 जनवरी को सुनवाई करेगी। 32 वर्षीय विनय शर्मा और 26 वर्षीय मुकेश कुमार की तरफ से ये याचिकाएं गुरुवार को दायर की गई थीं। इस मामले के अन्य दो दोषियों अक्षय कुमार सिंह और पवन गुप्ता ने क्यूरेटिव याचिका नहीं दायर की है। दिल्ली की एक अदालत से चारों दोषियों को 22 जनवरी को सुबह सात बजे फांसी पर लटकाने के लिए डेथ वारंट जारी हो चुका है।

जस्टिस एनवी रमना, जस्टिस अरुण मिश्र, जस्टिस आरएफ नरीमन, जस्टिस आर भानुमति और जस्टिस अशोक भूषण की पीठ इनकी याचिकाओं पर सुनवाई करेगी। क्यूरेटिव याचिकाओं पर जजों के चैंबर में सुनवाई होती है। किसी दोषी के पास बचाव का यह आखिरी विकल्प होता है।

दोषियों में से तीन ने पुनर्विचार याचिका दायर की थी, जिसे शीर्ष अदालत ने नौ जुलाई, 2018 को खारिज कर दिया था।

क्या था मामला : 23 साल की पैरामेडिकल छात्रा निर्भया के साथ 16-17 दिसंबर, 2012 की रात दिल्ली के वसंत विहार इलाके में चलती बस में सामूहिक दुष्कर्म हुआ था। निर्भया अपने दोस्त के साथ घर लौट रही थी। दोषियों ने उन्हें फंसाकर बस में बिठा लिया था। अभियुक्तों ने निर्भया के साथ बहुत ही जघन्य बर्ताव किया था। निर्भया को पहले दिल्ली और उसके बाद सिंगापुर के माउंट एलिजाबेथ अस्पताल में भर्ती कराया गया था, लेकिन उसे बचाया नहीं जा सका। निर्भया ने सिंगापुर के अस्पताल में 29 दिसंबर को दम तोड़ दिया था। इस घटना को लेकर देश भर में हंगामा मचा था। इस मामले में छह अभियुक्त थे। इनमें से मुख्य अभियुक्त बस चालक राम सिंह ने तिहाड़ तेल में खुदकशी कर ली थी। जबकि एक दोषी नाबालिग था, जो अधिकतम तीन साल की सजा काटने के बाद रिहा हो चुका है।

वडोदरा में ऑक्सीजन प्लांट में विस्फोट, आठ की गई जान

राज्य ब्यूरो, अहमदाबाद : वडोदरा जिले में ऑक्सीजन गैस प्लांट में विस्फोट से आठ लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। माना जा रहा है कि सिलेंडरों में गैस भरने के दौरान विस्फोट हुआ है।

यह घटना शनिवार सुबह 11 बजे के आसपास पादरा तहसील के गवासाड गांव के समीप एम्स इंडस्ट्रीज में हुई। यह प्लांट पादरा-जांबुसार हाईवे पर स्थित है। हताहत होने वालों में से अधिकांश मजदूर बताए जा रहे हैं। घायलों को वडोदरा के समीप अतलादरा अस्पताल पहुंचाया गया है। घायलों की हालत को देखते हुए मरने वालों की संख्या बढ़ने की आशंका है।

घटना की जानकारी मिलते ही राहत एवं बचाव के लिए पुलिस व फायर ब्रिगेड का दस्ता मौके पर पहुंच गया, लेकिन एम्स इंडस्ट्रीज के प्रबंधक और आला अधिकारी नहीं पहुंचे थे। फैक्ट्री की ओर से अभी तक इस घटना के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है। फॉरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला के अधिकारी घटनास्थल पर पहुंच गए हैं और विस्फोट के कारणों की पड़ताल कर रहे हैं। पुलिस भी जांच में जुटी है।

जवान पर गर्म पानी फेंकने के आरोपित डीआइजी का तबादला

▶ मौजूदा पोस्टिंग से मणिपुर और नगालैंड सेक्टर में स्थानांतरित किया गया

▶ राजगीर जिले के भर्ती प्रशिक्षण केंद्र में जवान पर फेंका गया था गर्म पानी

नई दिल्ली, प्रेट्र : सीआरपीएफ ने एक प्रशिक्षण केंद्र में जवान पर गर्म पानी फेंकने के आरोपित उप महानिरीक्षक (डीआइजी) डीके त्रिपाठी का तत्काल प्रभाव से मणिपुर और नगालैंड सेक्टर में तबादला कर दिया है। आधिकारिक सूत्रों ने कहा कि इस मामले की विस्तृत जांच अभी लंबित है। सीआरपीएफ मुख्यालय ने अपने आदेश में अधिकारी के उनके नए पदभार के लिए सफलता की शुभकामनाएं दी हैं।

आदेश के अनुसार, डीके त्रिपाठी को बिहार के मोकामाघाट स्थित उनकी मौजूदा पोस्टिंग से मणिपुर और नगालैंड सेक्टर में स्थानांतरित किया गया है। कथित रूप से पानी फेंकने की घटना इस माह के शुरू में बिहार के राजगीर जिले में सीआरपीएफ के भर्ती प्रशिक्षण केंद्र में घटी। इस घटना में जवान अमोल खरात का चेहरा और छाती जल गई। अधिकारियों ने बताया कि महानिरीक्षक स्तर के अधिकारी की प्राथमिक जांच रिपोर्ट के बाद डीआइजी का तबादला कर दिया गया।

प्राथमिक जांच रिपोर्ट में क्या है, इसका तत्काल पता नहीं चल सका है, लेकिन अधिकारियों ने कहा कि मामले की विस्तृत जांच की सिफारिश की गई है। यह पूछे जाने पर कि आरोपित अधिकारी को तबादले के साथ शुभकामनाएं क्यों दी गईं, तो सूत्रों ने कहा कि स्थानांतरण और नियुक्ति के आदेश का यह एक मानक प्रारूप है। डीआइजी त्रिपाठी ने इससे पहले कहा था कि जांच चल रही है और किसी एक पक्षीय खबर पर टिप्पणी करना उचित नहीं होगा।

तीन सेक्टरों में पाक ने की भारी गोलाबारी

जेएनएन, जम्मू

पाकिस्तान की नापाक हरकतें जारी हैं। शनिवार देर शाम पाकिस्तानी सेना ने एलओसी पर राजौरी के केरी सेक्टर और जगवार में सैन्य चौकियों और रिहायशी क्षेत्रों में भारी गोलाबारी शुरू कर दी। भारतीय सेना ने भी इसका करारा जवाब दिया। देर रात तक धमाकों की आवाज दूर-दूर तक सुनाई दे रही थी। इससे पहले शुक्रवार रातभर पाकिस्तान ने अंतरराष्ट्रीय सीमा पर कठुआ जिले के हीरानगर सेक्टर में भी गोलाबारी की, जिसकी बीएसएफ ने कड़ा जवाब दिया।

पाकिस्तान सेना ने रात को केरी सेक्टर के केरी और नंबला क्षेत्र में भारी मात्रा में मोर्टार दागे, जो गांव में लोगों के घरों के आसपास आकर गिरे। रात को लोग घरों में दुबक गए। इससे किसी नुकसान की सूचना नहीं है।

इससे पूर्व पाकिस्तान ने तीन दिन की खामोशी के बाद शुक्रवार रात हीरानगर सेक्टर के करोल माथरियां, करोल कृष्णा, चक चंगा, छन्नटांडा आदि गांवों में भारी गोलाबारी की, जो शनिवार तड़के चार बजे तक रुक-रुक कर जारी रही। पाक रेंजरों ने अपनी पप्पू चक और करोल पंगा पोस्टों से मोर्टार दागे। बीएसएफ ने भी गोलाबारी का मुंहतोड़ जवाब दिया। गोलाबारी की वजह से गांवों के लोग रातभर सो नहीं सके। गौरतलब है कि पाकिस्तानी सेना हीरानगर सेक्टर में तारबंदी के पास चल रहे बांध के काम में रुकावट पैदा करने के लिए पिछले दो माह से गोलाबारी कर रही है। इससे सीमावर्ती लोगों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। हालांकि गांवों में बने पक्के बंकरों की वजह से लोग सुरक्षित है।

पुंछ के जंगली क्षेत्रों में सर्च ऑपरेशन : गुलपुर सेक्टर में नियंत्रण रेखा के पार से शुक्रवार को हुई फायरिंग में दो पोर्टरों की मौत के बाद शनिवार को कई जंगली इलाकों में पुलिस व सुरक्षाबलों ने बड़े पैमाने पर सर्च ऑपरेशन चलाया।

कश्मीर से गश्त के दौरान जवान लापता

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर : उत्तरी कश्मीर के गुलमर्ग सबसेक्टर में तैनात सेना का एक जवान राजेंद्र सिंह नेगी गश्त के दौरान लापता हो गया। वह उत्तराखंड का रहने वाला है। आशंका है कि उसे पाकिस्तानी सेना ने हिरासत में ले लिया है। सैन्य प्रशासन ने मामले की जांच के आदेश दे दिए हैं। इसके अलावा जवान का पता लगाने के लिए एलओसी पर लगातार तलाशी अभियान चलाए जा रहे हैं। साथ ही सेना द्वारा पाकिस्तानी सेना से भी संपर्क करने की सूचना है। हालांकि इस बात की अभी पुष्टि नहीं हुई है और संबंधित सैन्य अधिकारी इस मामले में कुछ भी कहने से बच रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि यह घटना गुरुवार की है।

सेक्स रैकेट में पकड़ी गईं अभिनेत्री अमृता धनोआ

▶ ग्राहकों को महिला सेक्स वर्करों की सप्लाई करने का आरोप

मुंबई, आइएएनएस : अभिनेत्री अमृता धनोआ को सेक्स रैकेट में शामिल होने के आरोप में मुंबई के एक होटल से गिरफ्तार किया गया है। रिपोर्टों में कहा गया है कि अमृता और मॉडल ऋचा सिंह ग्राहकों को महिला सेक्स वर्करों की सप्लाई किया करती थीं। अमृता के बॉलीवुड करियर के बारे में ज्यादा मालूम नहीं है। आइएमडीबी पर उन पर एक पेज है। इसके अनुसार, उन्होंने अनलिमिटेड नशा, परवीन बॉबी और द वर्ल्ड ऑफ फैशन फिल्मों में काम किया है।

बालू देशमुख के नेतृत्व में मुंबई पुलिस की एक टीम ने ग्रांट रोड पर स्थित एक चार सितारा होटल पर छापेमारी की। पता चला कि समीर नाम का एक दलाल ऑनलाइन सेक्स रैकेट चलाता है और लड़कियों की सप्लाई करता है। उसके पास से दो लड़कियों को पकड़ा गया। होटल प्रबंधन ने एक बयान जारी कर छापेमारी की पुष्टि की है। बयान में कहा गया है कि शुक्रवार की रात पुलिस ने होटल में छापेमारी की। पुलिस ने दो लोगों को कमरा बुक करने के लिए भेजकर जाल बिछाया था। बाद में पता चला कि वहां ठहरे मेहमानों ने अपने कमरे में लड़कियों को बुलाया था। वे पकड़े गए। जांच के दौरान हमने पुलिस को पूरा सहयोग दिया। होटल प्रबंधन का कहना है कि उसका कोई कर्मचारी इस रैकेट में शामिल नहीं था।

अमृता हाल ही में उस वक्त चर्चा में आई थीं, जब उन्होंने अपने पूर्व ब्वायफ्रेंड अरहान खान पर पांच लाख की धोखाधड़ी का आरोप और रिश्ते में रहने के दौरान धोखा देने का आरोप भी लगाया था। अपुष्ट सूत्रों ने बताया कि बिग बॉस-13 के प्रतिभागी अरहान और अमृता 2006 से 2010 तक रिलेशन में थे।

विश्वविद्यालयों में देश के अलग-अलग प्रांतों से विद्यार्थी पहुंचते हैं। उनकी विचारधारा में भी भिन्नता होती है। जहां कई प्रकार के मत होंगे, वहां मतभेद होना स्वाभाविक है। ऐसे में विवि प्रशासन व शिक्षकों की भूमिका अहम हो जाती है। छात्रों से परस्पर संवाद कर विवाद को न सिर्फ बढ़ने से रोका जा सकता है, बल्कि छात्रों के बीच सामंजस्य भी स्थापित किया जा सकता है। अलग-अलग विचारधारा वाले छात्रों को एक प्लेटफार्म पर लाकर विविध कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं, जो उनके भीतर समरसता के भाव को सृजित करने में सहायक सिद्ध होंगे **प्रो. राकेश भटनागर**, कुलपति-बीएचयू

क्रोध में कैंपस

कभी भारत विश्व गुरु हुआ करता था, आज हम विश्व गुरु बनने की कोशिश कर रहे हैं, नीतियां बना रहे हैं, लक्ष्य तय कर रहे हैं। आदिकाल से भारतीय ज्ञान-विज्ञान से दुनिया अभिभूत रही है। 3700 साल पहले अस्तित्व में आए तक्षशिला विश्वविद्यालय में दुनिया के कोने-कोने से दस हजार से ज्यादा छात्र अध्ययन करते थे। पांचवीं सदी के दौरान शुरू हुआ नालंदा विश्वविद्यालय दुनिया का पहला उच्च शिक्षण संस्थान है जहां छात्रों और अध्यापकों के लिए आवास (हॉस्टल) की व्यवस्था थी। ऐसे भारतीय उच्च शिक्षण संस्थानों की लंबी फेहरिस्त है। ताज्जुब करने वाली बात यह है कि इन सारे संस्थानों की एक आम उभयनिष्ट पहचान यह रही है कि ये सृष्टि के सबसे विकसित जीव को इंसान बनाते रहे। इनकी इसी समझ और सीख ने हमें विश्व गुरु का खिताब दिलाया। आज भी हमारे पास ऐसे उच्च शिक्षण संस्थान हैं जिनसे किसी भी देश को रश्क हो सकता है। अध्ययन-अध्यापन के मामले में हम किसी से पीछे नहीं है। बस सत्र चलना चाहिए। कक्षाएं लगनी चाहिए, जो नहीं हो पा रहा है। हमारे उच्च शिक्षण कैंपसों का सांप्रदायिक ध्रुवीकरण किया जा रहा है। राजनीतिक बिरादरी इस युवा जोश और ऊर्जा का अपने-अपने अनुसार इस्तेमाल कर रही है। किसी संस्थान पर वाम पंथ का ठप्पा है, तो कोई दक्षिण पंथ का मुलम्मा बना है। कुछ तो सांप्रदायिक पहचान रखने लगे हैं। जिस संस्थान में जिस विचारधारा का प्रभुत्व है, वहां दूसरी विचारधारा सांसत में हैं। किसी भी सरकारी नीति या योजना अगर इनकी विचारधारा के खांचे में नहीं बैठ रही है तो चक्का जाम, उपद्रव, हिंसक आंदोलन शुरू हो जाता है। इसमें अकादमिक सत्रों का सत्यानाश हो रहा है। ऐसे में कैंपस में मौजूद विभिन्न विचारधाराओं के बीच समरसता स्थापित करने वाले कदमों की पड़ताल आज सबसे बड़ा मुद्दा है।

स्थापित ताकतों को चुनौती का नतीजा

जेएनयू में लंबे समय से चल रहे छात्र आंदोलन का एक वीभत्स रूप तब देखने को मिला जब पिछले दिनों यह हिंसा में तब्दील हो गया। कहा जा रहा है कि यह हिंसक लड़ाई वामपंथी और दक्षिणपंथी या कहें कि राष्ट्रवादी विचारधारा के समर्थक छात्रों के बीच हुई है। पिछले कुछ समय से देश भर में विश्वविद्यालयी कैंपसों में लेफ्ट और राइट विचारधारा के बीच संघर्ष बढ़ा है।

पहले भी कॉलेज-विश्वविद्यालयों के छात्र राजनीतिक विचारधाराओं से प्रभावित होते थे, और इनमें विवाद, तनाव और कभी-कभी संघर्ष भी होता था। आजकल सुर्खियों में छाए जेएनयू से ही मैंने अपनी उच्चतर शिक्षा हासिल की। हमारे समय में भी छात्र वैचारिक रूप से बंटे होते थे। इनके बीच बहसें कभी-कभी उग्र रूप अख्तियार कर लेती थीं। लेकिन, अंत में हाथ में हाथ डालकर मित्र-भाव से लोग साथ-साथ अपने-अपने कमरों में वापस लौट जाते। दूसरे दिन फिर गर्मागर्म बहसें। लेकिन मारपीट की घटनाएं शायद ही होती हों। हालांकि जेएनयू का यह अनोखा रूप देश में एक अपवाद ही था, लेकिन अन्य कैंपसों में भी छात्रों में वैचारिक- राजनीतिक मतभेद के बावजूद वैसा मनभेद और संघर्ष नहीं होता था जो आज दिखाई पड़ता है। राज्यों के विश्वविद्यालयों में जहां छात्र राजनीतिक पार्टियों के साथ-साथ क्षेत्रीय या आंचलिक अस्मिताओं से जुड़े होते थे, वहां लड़ाई जेएनयू जैसी वैचारिक न होकर राजनीतिक वर्चस्व के लिए ज्यादा होती थी। यह कभी-कभार हिंसक भी हो जाती थी, लेकिन आज के मुकाबले में बहुत कम ही थी। यह बात मैं देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पढ़ने-पढ़ाने के अपने वैयक्तिक अनुभवों के आधार पर कह सकता हूं। छात्रों के बीच इन हिंसक संघर्षों के कारणों की पड़ताल करें तो सबसे बड़ा कारण है बीजेपी से जुड़े छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) और अन्य अस्मिताई राजनीति से जुड़ी विचारधाराओं का उभार, जिससे वामपंथी दलों और कांग्रेस समर्थक छात्र संगठनों के वर्चस्व को चुनौती मिल रही है। पहले केंद्रीय सत्ता कांग्रेस के पास थी। कांग्रेस के नेहरूवादी शिक्षा मॉडल और बाद में इंदिरा गांधी शासन में कांग्रेस समर्थक तथाकथित उदारवादियों के अलावा वामपंथी विद्वानों और छात्रों को फलने-फूलने का खूब मौका मिला। काफी लंबे समय तक कॉलेज-विश्वविद्यालयों में इन्हीं लोगों का वर्चस्व रहा। हालांकि दक्षिणपंथी राष्ट्रवादी विचारधारा और लोहियावाद आदि के समर्थक छात्र भी होते थे, लेकिन इनकी तादाद कम होती थी। इसलिए ये अपेक्षाकृत दबे और कम मुखर रहते थे। और शिक्षकों में तो, अपवादों को छोड़कर, तथाकथित उदारवादियों और वामपंथियों का एकाधिकार रहा। 1998 में अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्री बनने के बाद धीरे-धीरे जेएनयू व केंद्रीय विश्वविद्यालयों में राष्ट्रवादी वैचारिक पृष्ठभूमि के शिक्षकों की संख्या बढ़ी। छात्रों में भी इस विचारधारा का प्रभाव बढ़ने लगा। इससे वामपंथ- कांग्रेस समर्थक छात्र संगठनों के एकाधिकार को चुनौती मिलनी शुरू हुई। जेएनयू आदि संस्थानों में एबीवीपी के उभार के बाद वामपंथी छात्र संगठनों से इनके संघर्ष को इस रूप में समझा जा सकता है।

छात्रों के बीच के हिंसक संघर्ष को पश्चिमी संस्कृति और आधुनिक जीवनशैली के बढ़ते हुए असर से भी जोड़कर देखा जा सकता है। संचार क्रांति, स्मार्टफोन, इंटरनेट, पश्चिमी संस्कृति पर आधारित एप्स और टीवी कार्यक्रमों ने आक्रामकता को बढ़ावा दिया है। आधुनिक जीवनशैली में बढ़ती हुई वैयक्तिकता और घटती हुई सामूहिकता ने उत्प्रेरक का काम किया है। मार्क्सवादी और पश्चिमी चिंतन पद्धति जो चीजों को सिर्फ पक्ष या विपक्ष की स्थापित अवधारणा के रूप में देखती है, न कि उनकी समग्रता तथा जटिलता में, जो कि भारतीय चिंतन परंपरा है; इसने भी छात्रों के आपसी मतभेद को समरस तरीके से सुलझाने के बजाय और उलझाया है। चाहे किसी भी विचारधारा, जाति-पंथ के छात्र हों, वे सभी हमारे अपने हैं, इसी भारत मां की संतान हैं। तमाम मतभेदों के साथ भी वे सहिष्णु रहकर शिक्षा, समाज और देश के लिए समवेत रूप से कार्य कर सकते हैं। इस संदर्भ में हमारी भारतीय चिंतन पद्धति एक सही मार्गदर्शक होगी। आदिग्रंथ ऋग्वेद में उल्लिखित है:, 'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् , देवा भागं यथा पूर्वे सज्जानाना उपासते'। अर्थात हम सब एकसाथ आएं, आपस में बात करें, एक-दूसरे को समझें। यही आचरण वंदनीय और श्रेष्ठ है।

प्रो निरंजन कुमार
दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग

कैंपसों में राष्ट्रवादी विचारधारा से वामपंथ- कांग्रेसी एकाधिकार को चुनौती मिलने लगी है। इतिहास रहा है कि स्थापित वर्चस्व उभरती हुई ताकतों को कुचलने का प्रयास करता है, जिसकी परिणति कई बार हिंसक संघर्षों में होती है।

कुलपतियों की खरी-खरी

लोकतंत्र में सभी को अपनी बात रखने का अधिकार है लेकिन यदि कोई नीति या नियम बनाए जाते हैं तो सबसे पहले उसे समझना जरूरी होता है। बिना समझे हर बात का विरोध करना उचित नहीं है। हर बात का विरोध तर्कसंगत नहीं है। पहले उसे समझना जरूरी होता है

डॉ सुरेंद्र कश्यप, कुलपति, अटल बिहारी वाजपेयी मेडिकल विश्वविद्यालय, नेरचौक, मंडी

जेएनयू को देश के अन्य विश्वविद्यालयों की अपेक्षा सबसे ज्यादा फंडिंग होती है। वहां के छात्रों को बहुत ज्यादा स्वतंत्रता और सुविधाएं हैं, जिसका गलत उपयोग हो रहा है। लोकतंत्र में बोलने की स्वतंत्रता है, इसका मतलब यह नहीं कि देश विरोधी गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए।

प्रो. राघवेंद्र प्रसाद तिवारी, कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर (मप्र)

लोकतंत्र को प्रभावी बनाने में छात्रों की भूमिका अहम होती है। यही कारण है कि विभिन्न राजनीतिक दलों ने उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों के लिए संगठन बनाए हैं। ये संगठन छात्र चुनाव में भाग लेते हैं, किंतु इनकी भागीदारी लोकतांत्रिक होनी चाहिए। विरोध व आंदोलन शांतिपूर्वक होना चाहिए। भारत के स्वाधीनता आंदोलन में छात्रों ने अहम भूमिका निभाई थी। इधर, कुछ समय से छात्र आंदोलन व हिंसा एक-दूसरे के पूरक के तौर पर उभरे हैं, जो गलत है। शैक्षणिक संस्थाएं लोकतांत्रिक व सेकुलर तरीके से चलनी चाहिए।

प्रो. तारिक मंसूर, कुलपति अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी

...जब छात्र संगठनों ने आजादी की जंग में फूंकी जान

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) जिस उद्देश्य को लेकर शुरू हुआ था वो सपना साकार होना तो दूर अब बहुत दूर होता नजर आ रहा है। आजादी के वक्त छात्र संगठनों ने देश के लिए जो योगदान किया वह क्रांतिकारियों की बात करता था और अहिंसा की भी। हालांकि आज जेएनयू में जो हो रहा है उसे कुछ छात्र संगठन क्रांति समझ रहे हैं, लेकिन हिंसा और क्रांति का फर्क न समझकर वे देश को गहरी खाई को ओर ले जा रहे हैं। ऐसे में उन्हें देश की स्वतंत्रता में छात्रों के योगदान को याद करना चाहिए।

आजादी में सक्रिय योगदान

दुनिया में छात्र राजनीति का इतिहास पुराना है, वहीं भारत में छात्र राजनीति का इतिहास आजादी से पहले का है। छात्रों ने आजादी की लड़ाई में न सिर्फ बढ़-चढ़कर भाग लिया बल्कि इसके लिए बहुत से छात्रों ने अपनी जान दांव पर लगाने से भी गुरेज नहीं किया। भारतीय युवा को राष्ट्रीय आंदोलन से सामाजिक सुधार आंदोलनों में महान और परोपकारी भावना से काम किया। यह भारतीय छात्र आंदोलन के आजादी से पूर्व उच्च चरित्र को दर्शाता है।

राजनीतिक चेतना के लिए आवाज

आनंद मोहन बोस ने बंगाल में एक छात्र संगठन की नींव रखी जिसका नाम था स्टूडेंट एसोसिएशन।

सुरेंद्र नाथ बैनर्जी ने मेट्रोपोलिटियन कॉलेज की फैकल्टी रहते हुए देशहित में राजनीतिक चेतना के लिए छात्रों के बीच आवाज उठाई। इसके बाद 1893 में छात्रों ने आशुतोष मुखर्जी के नेतत्व में सुरेंद्रनाथ बनर्जी के मुकदमे को लेकर आंदोलन किया। 1885 में बंगाली युवाओं के एक समूह खासतौर पर छात्र भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यक्रमों से संतुष्ट नहीं थे। वे क्रांतिकारी तरीकों से देश की स्वतंत्रता पाना चाहते थे।

ऐसे हुई शुरुआत

छात्र आंदोलन भारत में 19वीं और 20वीं सदी में विभिन्न अवस्थाओं में शुरू हुए। 19 वीं सदी के पहले आधे वर्षों में भारतीय समाज ने काफी सामाजिक सुधारों का अनुभव किया। जिनमें कुछ छात्र ने अपना योगदान दिया और कुछ संगठनों ने सामाजिक सुधारों को अपना मुख्य लक्ष्य बनाया। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 के बाद भारत में राजनीतिक चेतना जाग्रत हुई और छात्र समुदाय इससे प्रभावित हुआ।

सांप्रदायिकता के खिलाफ बिगुल

1905 से पहले जब ब्रिटिश बंगाल को सांप्रदायिकता के जरिए बांटने का प्रयास कर रहे थे। उस वक्त देश के कोने-कोने से स्वत :स्फूर्त प्रदर्शन हुए थे। 1905 के बंगाल विभाजन को बीसवीं सदी में देश में छात्र आंदोलनों का मील का पत्थर माना जा सकता है। भारत विभाजन के खिलाफ कलकत्ता के छात्रों ने ईडन हिंदू हॉस्टल में लॉर्ड कर्जन का पुतला फूंका और परीक्षाओं का बहिष्कार किया। विभाजन विरोधी आंदोलन के उभार के वक्त बंगाल में छात्रों के कई संगठन और संस्थाएं आकार ले रही थीं। महाराष्ट्र में उपेन्द्रनाथ और वीडी सावरकर ने 1906 में यंग इंडिया लीग की स्थापना की । वहीं पंजाब में छात्रों को संगठित करने के लिए नई हवा का गठन हुआ।

गांधी-तिलक के भी रहे साथ

बंगाल आंदोलन के वक्त से ही भारतीय छात्र स्वतंत्रता आंदोलन में अर्थपूर्ण और महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। उन्होंने बाल गंगाधर तिलक और फिर महात्मा गांधी के नेतृत्व में

मास पॉलिटिक्स में योगदान दिया। भारतीय छात्र रूस में 1917 में हुई अक्टूबर क्रांति से काफी प्रभावित थे। छात्रों को यूरोप की वैचारिक धाराओं से भी अवगत कराया गया जिसने इस नेक काम के लिए प्रतिबद्धताओं को बढ़ाने का काम किया है।

सविनय अवज्ञा आंदोलन

साइमन कमीशन के भारत आने पर 1928 में यह भारत की स्व सरकार के लिए एक परेशानी थी। छात्रों ने भारत की जल्द स्वतंत्रता की मांग की थी। 1930 में महात्मा गांधी के सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान छात्रों ने अभूतपूर्व रूप से योगदान दिया। इस आंदोलन के परिणाम 1936 में कांग्रेस के समर्थन से ऑल इंडिया स्टूडेंट फेडरेशन का गठन हुआ।

नेताओं की गिरफ्तारी के बाद थामी कमान

1920 में भारत में शैक्षिक और राजनीतिक परिवर्तन देखने को मिले। अप्रैल 1919 में जलियावांला बाग हत्याकांड के बाद महात्मा गांधी का असहयोग आंदोलन 1920 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अभिजात्य वर्ग के एक बड़े आंदोलन में परिवर्तित हो गया। यह आंदोलन छात्र समुदाय के राजनीतिक जीवन का टर्निंग प्वाइंट बन गया। कांग्रेस नेताओं ने छात्रों को शैक्षिक संस्थाओं के बाहर आने और खुद को स्वतंत्रता आंदोलन के लिए पूरी तरह से समर्पित कर देने के लिए प्रोत्साहित किया। रोजाना होने वाले आंदोलन के लिए मानव शक्ति के रूप में सामने आए और साथ ही उन्होंने आंदोलनों का उस वक्त नेतृत्व किया जब कांग्रेस के नेता गिरफ्तार कर लिए गए।

लाला लाजपतराय ने की अध्यक्षता

पहली वार्षिक ऑल इंडिया कॉलेज स्टूडेंट कांफ्रेंस 1920 में लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में नागपुर में संपन्न हुई। लाला लाजपतराय की छात्रों से आगे आकर असहयोग आंदोलन में सहयोग की अपील ने काम किया और छात्रों ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वहीं क्षेत्रीय छात्र संगठन भी बंगाल, पंजाब और देश के दूसरे राज्यों में अस्तित्व में आए। छात्र संघों की लाला लाजपतराय, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरोजनी नायडू, भगवानदास, मदनमोहन मालवीय और सीआर दास जैसे नेताओं ने अध्यक्षता की।

छात्र राजनीति से कैंपस पॉलिटिक्स तक

1947 के बाद देश में छात्र आंदोलन ने अपनी गति खो दी। छात्र आंदोलनों में नाटकीय बदलाव आया है। वे अपनी एकता और विचारधारा के लक्ष्यों को पुन: प्राप्त करने में असफल रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद छात्र आंदोलन असंगठित और छिटपुट स्थानीय मुद्दों पर केंद्रित रहे हैं, जिनका उद्देश्य सिर्फ शिकायतें करना है। विचारधारा की राजनीति स्वतंत्रता के बाद 'कैंपस पॉलिटिक्स' में बदल चुकी है। कुछ एक मामलों को छोड़ दें तो छात्र राजनीति अपने उद्देश्यों को पूरा करने में खरी नहीं उतरी है।

मूल्य आधारित छात्र राजनीति

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान छात्र राजनीति का योगदान अपने चरम पर था। यह आंदोलन में छात्र राजनीति की मूल्य आधारित भागीदारी का समय था। उस वक्त सभी शैक्षिक मामले, राजनीतिक मामलों के अधीन आ गए थे। जब छात्र समुदाय की विचारधारा के स्तर पर चेतना अपने शिखर पर थी। छात्र आंदोलन कैंपसों को लंबे समय तक बंद कराने और छात्रों को राष्ट्रीय संघर्ष से जोड़ने में कामयाब रहे। छात्र आंदोलन के लिए स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेना महान और पवित्र कर्म था।

छात्र हित हो सर्वोपरि

प्रो विवेक कुमार
स्कूल ऑफ सोशल साइंस, जेएनयू

दूरदराज गांव के गरीब छात्र का एक सपना होता है। जब संस्थान का कदम उस सपने के आड़े आने लगता है तो वह आंदोलित होने पर विवश होता है।

विभिन्न प्रांतों से पिछड़े वर्गों से विश्वविद्यालय में पढ़ने आ रहे छात्रों के समक्ष जब पुरानी शिक्षा व्यवस्था में बदलाव किया जाता है, तब इस संकट के समाधान के लिए राजनीतिक व सामाजिक धरातल पर किसी संस्था के न होने के कारण छात्र आंदोलन करते हैं। असहाय होकर अपने हितों को सुरक्षित रखने के लिए तब उनके पास आंदोलन करने के अलावा कोई रास्ता नहीं रह जाता है। उच्च शिक्षण संस्थानों में मौजूदा स्थिति में विभिन्न विचारधारा के छात्रों के बीच समरसता लाने के लिए उन्हें उनके शोधकार्य व अकादमिक गतिविधियों में व्यस्त रखने की जरूरत है। जिससे वह इस ओर ध्यान दें और उनका दिमाग जब अकादमिक प्रक्रिया में ही थक जाएगा तो उनके मन में प्रदर्शन का विचार नहीं आएगा। लेकिन प्रशासन को भी संवादहीन रवैया अख्तियार करने की जरूरत नहीं है। संवादहीन रवैया अपनाने के कारण ही शिक्षण संस्थानों में छात्र पुरानी व्यवस्था को बदलने के खिलाफ खड़े हो गए हैं। जेएनयू जैसे शिक्षण संस्थान को करीब 50 साल हुए हैं स्थापित हुए। ऐसे में इसकी चली आ रही पुरानी प्रशासनिक व्यवस्था को अगर बदला जाएगा तो छात्र अपनी आवाज तो उठाएंगे ही।

जेएनयू, डीयू जैसे विश्वविद्यालयों में वंचित व गरीब वर्ग के बड़ी संख्या में छात्र पढ़ाई करने आते हैं। ऐसे में अकादमिक व छात्रावास की फीस बढ़ोतरी से इनके जीवन में बहुत फर्क पड़ता है। निजी शिक्षण संस्थानों में आंदोलन नहीं होते हैं क्योंकि वहां पर समृद्ध परिवारों से छात्र पढ़ाई करने आते हैं। वंचित व गरीब वर्ग के छात्रों को नौकरी की चिंता होती है, वह अच्छी शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं। इसलिए वह उन प्रशासनिक फैसलों के विरुद्ध आंदोलित होते हैं जिससे वह बहुत ज्यादा प्रभावित हो जाते हैं। छात्रों के बीच संवाद की कमी रहने के पीछे एक बड़ा कारण यह भी है कि संस्थानों में आयोजिन होने वाले कला एवं रचनात्मक कार्यक्रम अपने मकसद में कामयाब नहीं हैं। इनमें सिर्फ डीजे की व्यवस्था करा दी जाती है। इसमें कोई रोचक तत्व नहीं होता है। दूरदराज से आने वाले छात्रों के लिए उनकी अपनी सांस्कृतिक धरोहरों का एक दूसरे से साझा किए जाने वाले कार्यक्रम बनाए जाने चाहिए। कला व रचनात्मक मेलजोल को विभिन्न प्रांतों से आने वाले छात्र आपस में बांटेंगे, तो इससे उनके बीच सद्भावना स्थापित होगी।

अस्तित्व बचाने की लड़ाई, खटाई में पड़ी जेएनयू की पढ़ाई

संदीप महापात्रा
पूर्व अध्यक्ष, जेएनयू छात्रसंघ

जेएनयू कैंपस में जबसे दक्षिणपंथी छात्र संगठन एबीवीपी लोकप्रिय होने लगा, तब से सभी वाम छात्र संगठन एक जुट होकर इसके खिलाफ गिरोह बना लिया। छात्रसंघ को अपने कब्जे में कर वर्चस्व के लिए हर माध्यम का सहारा लिया है।

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में हिंसक विरोध के बाद शीर्षस्थ विश्वविद्यालयों में शुमार यह संस्था अपनी गरिमा खो रही है। इस हिंसा के बाद सवाल उठने लगा है कि क्या छात्र आंदोलन के नाम पर किया जाने वाला हर कृत्य जायज ठहराया जा सकता है? हमारे स्वतंत्रता संग्राम में छात्रों की भूमिका अहम है, जब उन्होंने गांधी जी को बहुमूल्य सहायता प्रदान की या आपातकाल के दौरान उन जयप्रकाश नारायण को सामने लाने में अहम भूमिका निभाई जो पहले आपातकाल विरोधी लड़ाई का नेतृत्व करने के अनिच्छुक थे। हालांकि, पिछले एक महीने में होने वाली घटनाओं से ऐसा लगता है कि छात्रों को राजनीतिज्ञों, शिक्षाविदों के एक वर्ग द्वारा अपने निहित स्वार्थ के लिए औजार के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। सीएए-एनआरसी के खिलाफ विरोध जो कैंपसों से शुरू हुआ था, वह जल्द ही उग्रपंथियों की नजर में आ गया और लुप्त होते विरोध को विस्तार देने के लिए जेएनयू को केंद्र बिंदु बनाया गया। अंततः तमाम घटनाओं का विश्लेषण यह बताता है कि वैश्विक स्तर पर खारिज हो रहे वाम दृष्टिकोण के लिए यह अस्तित्व की लड़ाई बन चुका है।

वाम नेतृत्व वाले छात्र संगठन ही इकलौते ऐसे थे जो कैंपस की राजनीति में सक्रिय थे और अपने गढ़ की रखवाली करते थे मध्य युग के किसी भी सरदार की तरह जो किसी को भी अपना एक इंच भी नहीं देते थे। पश्चिम बंगाल, केरल और त्रिपुरा में यही मानदंड था। इसमें तभी बदलाव हुआ जब इन राज्यों में सत्ता परिवर्तन हुआ। जेएनयू सहित कई केंद्रीय विश्वविद्यालयों में भी ऐसे ही मानक है, जहां वामपंथी छात्र संगठन एआइएसएफ, एसएफआइ और बाद में आइसा वर्चस्व के लिए एक दूसरे के साथ लड़ रहे थे। एआइएसएफ और एसएफआइ जेएनयूएसयू के प्रमुख दावेदार थे। आइसा के आने के बाद एआइएसएफ और एसएफआइ मिलकर उसके खिलाफ हो गए। हालांकि, एक बार जब एबीवीपी ने परिसर में लोकप्रियता हासिल करना शुरू कर दिया, तो इन सभी छात्र संगठनों ने इसके खिलाफ गिरोह बना लिया और अपने शिकंजे में छात्रसंघ कर लिया। उन्होंने अपने वर्चस्व के लिए हर माध्यम का सहारा लिया है। मैं जब एक छात्र कार्यकर्ता था, उस वक्त भी वर्चस्व के लिए हिंसक और भड़काऊ प्रदर्शन के कई उदाहरण सामने आए थे। यहां तक कि पिछली सदी के आठवें दशक के शुरुआती दिनों में इन संगठनों या उनके कुछ अवतारों ने स्थिति को इतना खराब कर दिया कि विश्वविद्यालय लंबे समय तक बंद था। 1999 में ये छात्र संगठन महसूस कर रहे थे कि विश्वविद्यालय की जनरल बॉडी मीटिंग के दौरान हार हो सकती है। प्रवेश नीति के मुद्दे पर उनके कई समर्थकों ने उन्हें छोड़ दिया तो उन्होंने हिंसक तरीके का सहारा लिया, जिसमें कई साथी घायल हुए। यह और बात है कि यद्यपि एक न्यायिक जांच गठित की गई थी, लेकिन यह शिक्षकों के सक्रिय समर्थन और उनके द्वारा अपनाए कपट के कारण अनिर्णायक रही। 2002 में गुरुदक्षिणा के अवसर पर स्वर्गीय अशोक सिंघल को आमंत्रित किया गया तो हिंसा भड़क गई थी। ऐसे और भी कई उदाहरण हैं, जब 'जेएनयू संस्कृति' के नाम पर ऐसे सभी मामलों में उचित और अर्थपूर्ण जांच को विफल कर दिया गया। जो कि दुखद था और अब भी है। कैंपस में ऐसे शिक्षकों का सक्रिय प्रश्रय था, जो वाम विचार प्रक्रिया के प्रति निष्ठा रखते थे और कई मामलों में वामपंथी कैडर का धन्यवाद देने के लिए अपना स्थान छोड़ देते थे।

यह महत्वपूर्ण समय आवाज उठाने का और परिसर में सामान्य स्थिति बहाल करने का है। साथ ही इन ताकतवर लोगों के कुचक्र से कैंपस को सुरक्षित कराना है, ऐसा न हो कि सीएए आंदोलन कट्टरपंथियों द्वारा अपहृत कर लिया जाए। जेएनयू प्रदर्शन में निहित स्वार्थ की संभावना के दुरूपयोग से भी इनकार नहीं किया जा सकता है।

जनमत

क्या देश के उच्च शिक्षण संस्थानों का सांप्रदायिक ध्रुवीकरण सुशिक्षित समाज के सपने में बड़ी बाधा बन रहा है?

हां 95%
नहीं 05%

क्या कैंपस की विभिन्न वैचारिक ऊर्जा और जोश के बीच समरसता के अभाव की वजह तुष्टिकरण की राजनीति है?

हां 90%
नहीं 10%

आपकी आवाज

छात्र आज सत्ता और विपक्ष के हाथों की कठपुतली बन गए हैं। इससे अब यह खुद समस्या बन गए हैं। **अमन कुमार**

शर्म आनी चाहिए उनको जो विद्या के मंदिर का माहौल खराब करते है। केंद्र और राज्य सरकारों को विश्वविद्यालयों के ऐसे संगठनों पर पाबंदी लगाने के बारे में सोचना चाहिए जिनका संबंध किसी राजनीतिक पार्टी से हो। **राजेश कुमार**

लोग आंदोलन और धरने की आड़ में गुंडागर्दी कर रहे हैं। उसे ये सब करने के लिए राजनीतिक दल बढ़ावा दे रहे हैं। अपनी राजनीति को चमकाने के चक्कर में दलों ने देश की अखंडता को खतरे में डाल दिया है। **रघुकुल यथार्थ**

Download UPSC IAS Material: www.iascgl.com
www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 12 जनवरी 2020

दैनिक जागरण
अपनी प्रसन्नता के निर्धारक आप स्वयं होते हैं

गैर जिम्मेदार ईरान

आखिरकार ईरान अपनी उस गलती को स्वीकार करने के लिए बाध्य हुआ जिससे वह इन्कार कर रहा था। निःसंदेह उसने ऐसा इसीलिए किया, क्योंकि इसके सुबूत सामने आने लगे थे कि यूक्रेन का यात्री विमान उसकी मिसाइल का ही निशाना बना। इस विमान में चालक दल के सदस्यों सहित 176 लोग सवार थे। इनमें से 80 से अधिक यात्री तो ईरान के ही थे। साफ है कि बदले की आग में जलते ईरान ने उन निर्दोष लोगों की बलि ले ली जिनका उसके और अमेरिका के बीच जारी टकराव से कहीं कोई लेना-देना नहीं था। यह मानवीय भूल नहीं अक्षम्य लापरवाही है। भले ही ईरान ने इस यात्री विमान को निशाना बनाए जाने के लिए माफी मांगी हो, लेकिन उसकी ओर से जिस तरह यह कहा गया कि यूक्रेन का विमान कथित तौर पर संवेदनशील क्षेत्र की ओर मुड़ रहा था उससे यही पता चलता है कि वह अपनी भीषण लापरवाही पर पर्दा डालने की कोशिश कर रहा है। इस कोशिश को बेनकाब किया जाना चाहिए ताकि यह स्पष्ट हो सके कि ईरान ने बेहद गैर जिम्मेदाराना हरकत को अंजाम दिया और फिर उसे मानवीय भूल के आवरण से ढकने में जुटा। इस तरह के स्पष्टीकरण को हास्यास्पद ही कहा जाएगा कि ईरानी सेना ने यात्री विमान को क्रूज मिसाइल समझ लिया।

आखिर जिस देश की सेना यात्री विमान और क्रूज मिसाइल में भेद करना न जानती हो उसे परमाणु हथियार से लैस होने की इजाजत कैसे दी जा सकती है? ईरान ने यात्री विमान को निशाना बनाकर तो यही रेखांकित किया कि वह परमाणु हथियार हासिल करने का हकदार बिल्कुल भी नहीं है। बेहतर हो कि ईरान की इस कथित मानवीय भूल का संज्ञान संयुक्त राष्ट्र भी ले। उसे न केवल ईरान को इस हादसे के लिए जवाबदेह बनाना होगा, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना होगा कि दुनिया के अशांत क्षेत्रों में इस तरह की गफलत न होने पाए। उड्डयन क्षेत्र के विशेषज्ञों ने ईरान से यह जो सवाल पूछा है कि आखिर जब वह इराक में अमेरिका के सैनिक ठिकानों पर मिसाइल हमले की तैयारी कर रहा था तो फिर उसने अपने हवाई क्षेत्र को प्रतिबंधित करना जरूरी क्यों नहीं समझा उसकी अनदेखी नहीं की जा सकती। किसी भी जिम्मेदार देश से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी सैन्य गतिविधियों को संचालित करते समय यात्री विमानों के सुरक्षित संचालन की चिंता करे और आवश्यक समझे तो उनकी उड़ान पर रोक लगा दे। चूंकि ईरान ने यह बुनियादी काम नहीं किया इसलिए 176 लोग जान से हाथ धो बैठे। इस त्रासदी के बाद यह जरूरी है कि दुनिया भर की एयरलाइंस और अधिक सतर्क हो जाएं।

चिंताजनक संकेत

भले ही हिमाचल प्रदेश भौगोलिक रूप से छोटा राज्य है, लेकिन बहादुरी में यह देश के लिए मिसाल है। गर्व की बात है कि यहां के चार जांबाजों को सेना का सर्वोच्च सम्मान परमवीर चक्र मिला है। इसके अलावा सेना के अन्य सम्मान भी यहां के जांबाज समय-समय पर हासिल करते रहे हैं। भारतीय सैन्य अकादमी में भी प्रदेश के युवा अपनी प्रतिभा का बेहतर प्रदर्शन कर सेना की विभिन्न इकाइयों में सेवाएं दे रहे हैं। यह देश प्रेम का जज्बा ही है कि जब प्रदेश में कहीं भी सेना की भर्ती होती है तो युवाओं की भीड़ उमड़ पड़ती है। सेना में अफसर ही नहीं सिपाही देने में भी हिमाचल हमेशा अग्रणी रहा है। हिमाचल के प्रत्येक गांव और हर दूसरे घर से जवान सेना में सेवाएं दे रहा है, लेकिन अब चिंता यह है कि पहाड़ के युवा मैदान में हांफने लगे हैं। ऊना में जारी भर्ती रैली में भी सामने आया है कि भर्ती होने आए युवाओं में से सिर्फ दस फीसद ही मैदान की परीक्षा पास कर पाए हैं यानी दौड़ में ही हांफ गए। इसका एक कारण सही खानपान न होना तो है ही, लेकिन बढ़ती नशाखोरी भी बड़ा कारण है। युवाओं के दमखम में आई कमी की एक वजह खेल गतिविधियों में शामिल न होना और मोबाइल इत्यादि में खोया रहना भी है। एक दौर था जब खेत-खलिहानों में भी युवा खेलते देखे जाते थे, लेकिन अब अधिकतर युवा बंद कमरों में इंटरनेट में ही व्यस्त रहते हैं। यह भी सही है कि प्रदेश में सेना भर्ती के लिए कोचिंग सेंटर के अलावा शहरों व कस्बों में जिम भी खोले गए हैं। सरकारी स्तर पर भी बच्चों को सशक्त बनाने के लिए खेलों व शारीरिक विकास के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, लेकिन पुलिस, वन विभाग व सेना की भर्ती में युवाओं का मैदान टेस्ट पास न कर पाना गंभीर मामला है। यह बात सभी को समझनी होगी कि युवा ही कल का भविष्य हैं। अगर ये स्वस्थ व सशक्त होंगे, तभी राष्ट्र मजबूत हो सकेगा। मजबूत व सशक्त युवाओं के लिए समाज के हर वर्ग की जिम्मेदारी है। सबसे जरूरी है कि युवाओं को गलत राह पर जाने से रोका जाए। नशे के खिलाफ प्रत्येक व्यक्ति को जागरूक होना होगा। सरकारी स्तर पर प्रयास भी तभी सफल होंगे, जब सभी लोग इसके खिलाफ एकजुट होंगे। उम्मीद की जानी चाहिए कि इस मामले में प्रत्येक स्तर पर गंभीरता देखने को मिलेगी। एकजुट प्रयासों से ही इसमें सफलता सुनिश्चित हो सकेगी।

सेना की भर्ती रैली में सामने आया है कि दस फीसद युवा ही दौड़ में तय लक्ष्य हासिल कर पा रहे हैं, यह चिंता के साथ संभलने का मौका इसलिए है, क्योंकि इससे सबक लेकर स्थिति को सुधारा जा सकता है

बेजा विरोध से मजबूत होती मोदी सरकार

संजय गुप्त

विपक्ष को इसका आभास हो तो बेहतर कि मोदी सरकार अपने एजेंडे को पूरा करने के लिए संकल्पबद्ध है और अतार्किक विरोध उसे फायदा ही पहुंचा रहा है

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में नकाब पहने लोगों ने जिस तरह छात्रों को लाठी-डंडों से पीटा और तोड़फोड़ की उसकी जितनी भी निंदा-भर्त्सना की जाए, कम है। इन नकाबपोश हमलावरों की पहचान करके उन्हें सख्त सजा दी जानी चाहिए। सजा के हकदार वे छात्र भी हैं जो करीब तीन महीनों से विश्वविद्यालय में पठन-पाठन बाधित किए हुए थे और अपनी मांगें मनवाने के लिए हिंसा का सहारा भी ले रहे थे। इन छात्रों ने नए छात्रों का रजिस्ट्रेशन रोकने के लिए विश्वविद्यालय के सर्वर रूप में जाकर जिस तरह तोड़फोड़ की उसे भी गुंडागर्दी के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता। किसी भी विश्वविद्यालय में कोई भी विवाद हो उसे हिंसा के जरिये सुलझाने की कोशिश करना अतिवादी कृत्य है। इस अतिवाद से केवल वैमनस्य ही बढ़ेगा और समस्याएं और अधिक विकराल होंगी। गांधी और आंबेडकर के देश में विश्वविद्यालय परिसर में हिंसक घटनाएं होना खतरनाक है। दिल्ली पुलिस ने अपनी प्रारंभिक जांच में हिंसा करने वाले करीब दस छात्रों की पहचान की है। इनमें दोनों यानी वाम और दक्षिणपंथी गुट के छात्र हैं। एक नाम छात्रसंघ की अध्यक्ष का भी है। इस पर हैरानी नहीं कि जेएनयू हिंसा की भी वैसी ही मनमानी व्याख्या की जा रही है जैसी नागरिकता संशोधन कानून को लेकर की जा रही है। इसमें संदेह है कि विपक्ष के ऐसे आचरण से मोदी सरकार की सेहत पर कोई असर पड़ने वाला है। वैसे भी उसका एजेंडा साफ है और उसके तहत वह देश की पुरानी समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध है। विपक्ष को इसका आभास हो तो बेहतर कि दूसरे कार्यकाल में मोदी सरकार अपने एजेंडे को पूरा करने के लिए कहीं अधिक संकल्पबद्ध है और उसका बेजा विरोध उसे फायदा ही पहुंचा रहा है।

इस कानून के खिलाफ खड़े राजनीतिक दलों ने सरकार विरोध के अपने अभियान में जिस तरह जेएनयू हिंसा को भी भुनाना शुरू कर दिया है उससे यदि कुछ साफ हो रहा तो यही कि उन्हें मोदी सरकार के विरोध का कोई न कोई बहाना चाहिए। यदि ऐसे राजनीतिक और साथ ही गैर राजनीतिक तत्व यह समझ रहे हैं कि अपने अतार्किक विरोध से वे मोदी सरकार को दबाव में ले आएंगे तो इसका मतलब यही है कि उन्हें इसका भान ही नहीं कि यह सरकार अपने एजेंडे से इस तरह पीछे हटने वाली नहीं है। इसका प्रमाण केवल यही नहीं कि उसने तमाम विरोध को दरकिनार कर विगत दिवस नागरिकता संशोधन कानून को अधिसूचित कर दिया, बल्कि यह भी है कि उसने तीन तलाक विधेयक को कानून का रूप देने के अपने संकल्प को पूरा किया और कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के असंभव लक्ष्य को भी पूरा किया। साफ है कि विपक्षी दल या तो मोदी और शाह के इरादों से अनजान हैं या फिर यह समझने से इन्कार कर रहे कि राष्ट्रीय महत्व के मसलों पर उनका अनावश्यक विरोध कर वह उन्हें ही राजनीतिक रूप से मजबूत करने का काम कर रहे हैं।

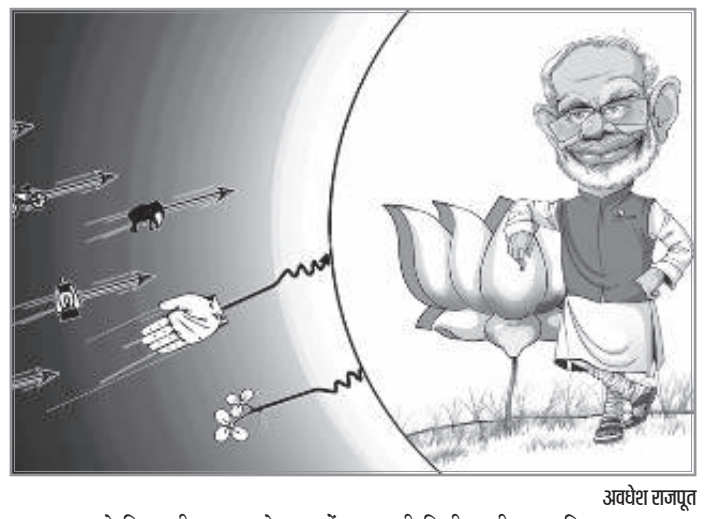

अवधेश राजपूत

जहां तक जेएनयू की बात है, यह विश्वविद्यालय अपनी विशिष्ट वामपंथी संस्कृति के लिए जाना जाता है। यहां वामपंथी संस्कृति को पोषण इसलिए मिला, क्योंकि वामपंथियों को खुश करने के लिए ही प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इस विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। चूंकि इस विश्वविद्यालय में वामपंथी विचारकों को चुन-चुनकर रखा गया इसलिए वह वामपंथ का अड्डा बन गया। यह उस दौर में हुआ जब भारत तत्कालीन सोवियत संघ के पाले में दिखता था। चूंकि इंदिरा गांधी ने जेएनयू के जरिये वामपंथियों के मन की मुराद पूरी की इसलिए आपातकाल के दौरान उन्होंने भी उनका साथ दिया। चूंकि जेएनयू में वामपंथी सोच-विचार को संरक्षित करने का सिलसिला दशकों तक कायम रहा इसलिए वाम दलों और छात्र संगठनों ने इस विश्वविद्यालय को अपनी निजी जागीर मान लिया। एक समय कांग्रेसी छात्र संगठन वामपंथी छात्र संगठनों को चुनौती देता था, लेकिन जैसे ही कांग्रेस और वामपंथी दलों के बीच वैचारिक दूरी घटी, कांग्रेसी छात्र संगठन ने अपने हथियार डाल दिए। बीते कुछ समय से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद वामपंथी छात्र संगठनों को चुनौती देने की कोशिश कर रहा है। इसे वामपंथी छात्र संगठन सहन नहीं कर पा रहे हैं।

2014 में नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने के बाद वामपंथी छात्र संगठन और अधिक बेचैन एवं उग्र हो गए। मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में एम जगदीश कुमार जेएनयू के कुलपति बने। चूंकि वह न तो वामपंथी खेमे के थे और वाम पृष्ठभूमि वाले इसलिए पहले दिन से उनका विरोध शुरू हो गया। तीन महीने पहले जब जेएनयू की फीस बढ़ाई गई तो उसका उग्र विरोध शुरू हो गया। हालांकि विश्वविद्यालय प्रशासन ने बढ़ी फीस में कटौती कर दी, फिर भी वामपंथी छात्र संगठनों ने धरना-प्रदर्शन जारी रखा। इस धरना प्रदर्शन के दौरान विभिन्न विभागों में ताले डाले गए और शिक्षकों को पढ़ाने से जबरन रोका गया। इतना ही नहीं स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनादर किया गया और कुलपति पर हमला करने की कोशिश की गई। हैरानी यह रही कि किसी ने भी इस मनमानी और अभद्रता की आलोचना करना जरूरी नहीं समझा। जाहिर है कि इसीलिए नहीं समझा, क्योंकि जेएनयू नागरिकता संशोधन कानून के विरोध का भी अड्डा बना हुआ था।

यह पहली बार नहीं है जब जेएनयू अप्रिय कारणों से चर्चा में आया हो। इसके पहले वह तब चर्चा में आया था जब 2016 में वहां संसद पर हमले के दोषी आतंकी अफजल गुरु के समर्थन में भारत तेरे टुकड़े होंगे...जैसे भद्दे नारे लगे थे। आज भले ही विपक्षी दल और वामपंथी बुद्धिजीवी और मीडिया का एक हिस्सा जेएनयू में हिंसा के लिए सरकार को जिम्मेदार ठहरा रहा हो, लेकिन आखिर जब नागरिकता कानून को लेकर उसका विरोध पहले से जारी हो तब फिर वह ऐसा कोई काम क्यों करेगी जिससे उसकी समस्या और बढ़े? क्या इससे उसे कोई राजनीतिक लाभ मिलने वाला है? बेहतर होगा कि सरकार यह स्पष्ट करने में संकोच न करे कि वह किसी दबाव में आए बिना यह सुनिश्चित करेगी कि जेएनयू का संचालन सही तरीके से हो और वहां पठन-पाठन का उचित माहौल बने। मोदी सरकार दबाव में न झुकने और नामुमकिन को मुमकिन करने के लिए जानी जाती है। इस बार भी उसे दबाव में नहीं आना चाहिए। उसे विपक्षी दलों की ओर से फैलाई जा रही तमाम नकारात्मकता के बाद भी उन मसलों को सुलझाने के लिए आगे बढ़ते रहने के अपने इरादे रेखांकित करते रहने चाहिए जिन्हें हल करने के लिए लोगों ने उसे भारी बहुमत से दोबारा चुना है।

response@jagran.com

लोकप्रिय पुस्तक का विमोचन

हास्य-व्यंग्य

संतोष त्रिवेदी

गुरुजी को विमोचन का इतना अभ्यास था कि किसी भी किताब को देखते ही उनके 'कर-कमल' फड़फड़ाने लगते

पुस्तक मेले में घुसते ही 'वह' दिखाई दिए। मैं कन्नी काटकर निकलना चाहता था, पर उन्होंने मुझे पकड़ ही लिया और पन्नी में लिपटी अपनी किताब पकड़ा दी। फिर फुसफुसाते हुए बोले, 'अब आए हो तो विमोचन करके ही जाओ। तुम मेरे आत्मीय हो। आपदा में अपने ही याद आते हैं।' मैंने भी अनमने ढंग से कहा, 'कोई वरिष्ठ नहीं मिला क्या? मैं तो आपसे कितना छोटा हूं।' मेरी बात को 'इग्नोर' करते हुए उन्होंने लंबी आह भरी। बोले कि 'बात यह है कि इस वक्त सीजन बड़ा 'टाइट' चल रहा है। 'कर-कमलों' वाले सभी वरिष्ठ एडवांस में 'बुक' हैं। कोई भी 'डेट' खाली नहीं है। बमुश्किल कल एक पेशेवर विमोचक ने हामी भरी थी, परंतु तेरहवीं पुस्तक लोकार्पित करते-करते वह स्वयं इस लोक से 'वॉक-आउट' होने से बचे।

किताब के बारे में वह यह रहस्योद्घाटन भी कर गए कि इसमें लिखी गई कविताएं बिल्कुल पानी के बताशे की तरह हैं। जुबान में पड़ते ही घुल जाती हैं। साहित्य में यथार्थ के प्रयोग का इससे बेहतर उदाहरण फिलहाल नहीं मिलता। फिर क्या था, प्रकाशक ने इतना सुनते ही उनका गला पकड़ लिया और लेखक ने माथा। बड़ी मुश्किल से उन्हें सुरक्षित गले के साथ प्रशंसकों की भीड़ से बाहर निकाला गया। अच्छी बात यह हुई कि लेखक ने वहीं पर अपनी 56वीं पुस्तक आने की घोषणा कर दी। तब जाकर प्रकाशक संतुष्ट हुआ, लेकिन साहित्य तभी से सदमे में है।' मैं अब कोई जोखिम नहीं लेना चाहता। उस 'विमोचन-कांड' से मैंने यही सीखा है। हालांकि दो-तीन बंदों को हमने 'बुक' किया हुआ है, पर बतौर 'बैक-अप' तुम्हें चुन रहा हूं। तुम भले ही वरिष्ठ नहीं हो, पर यह बात भीड़ नहीं जानती। तुम बस मेरे बारे में यह पढ़ देना। यह कहकर उन्होंने मुझे एक पर्ची थमा दी। मैंने उसे चुपचाप जेब में रख लिया और आगे बढ़ने लगा।

बड़े जतन से मुझे संभालते हुए वह घटना-स्थल तक ले गए। तीन चेहरे पहले से ही वहां कैंची लिए तैनात थे। इनमें एक पैदाइशी विमोचक थे और बाकी दोनों उनके चेले। गुरुजी को विमोचन का इतना अभ्यास था कि किसी भी किताब को देखते ही उनके 'कर-कमल' फड़फड़ाने लगते। मेले में यदि किसी दिन वह कोई विमोचन नहीं कर पाते तो उनका शुगर-लेवल बढ़ जाता। इधर किताब में बंधा फीता कटने के लिए तड़प रहा था। जैसे ही चार लोग इकट्ठे हो गए, मुक्ति पाने के लिए पुस्तक तैयार थी। मैंने बिना देरी किए कैंची चला दी। इस बीच अनुभवी विमोचक ने सही पैकेट पर वार किया। कई मोबाइल एक साथ चमक उठे। इस तरह किताब की मुंह दिखाई संपन्न हुई। अब विमोचित किताब पर मेरा मुंह खुलने का समय हो गया। मैंने जेब टटोली, पर पर्ची नदारद थी। फिर किताब को दो बार उलट-पुलट कर पूरी तरह 'स्कैन' कर लिया। खैर, इसके बाद मेरा वक्तव्य शुरू हो गया, 'मित्रों, कवि ने बिल्कुल नई जमीन पकड़ी है। इसके शीर्षक से ही क्रांति झलकती है। कवि गहन अंधकार में भी आशा का दामन नहीं छोड़ता। वह सुराख जैसी सुरंग में आकाश जैसी स्वच्छंदता की कल्पना करता है। मैं चाहता हूं कि आप लोग स्थापित कवियों को दरकिनार कर इस कवि पर गौर करें। साहित्य में प्रयोगवाद की आज से शुरुआत हो रही है।'

मैं आगे कुछ और बोलता, तभी भीड़ में से भी किसी ने 'प्रयोग' कर दिया। मेज के नीचे रखी समोसे की टोकरी पता नहीं किसने ऊपर रख दी! अचानक सभी साहित्य-प्रेमी समोसों पर टूट पड़े। जैसे-तैसे मेरे हाथ भी एक समोसा लगा पर विमोचित पुस्तक गायब मिली। समोसे और साहित्य दोनों एक साथ निपट रहे थे। दस मिनट की अफरा-तफरी के बाद पुस्तक-लेखक और प्रकाशक पाठकों के इस अप्रत्याशित हमले का जायजा ले रहे थे। मैंने धीरे से लेखक महोदय से पूछा 'कुछ ज्यादा नुकसान हो गया क्या?' अब लेखक जी चौंक पड़े। बोले 'अरे नहीं मित्र, किताब 'हिट' हो गई है। समोसे तीस ही थे, जबकि किताबें पूरी पचास।। मतलब अपनी किताब समोसों से ज्यादा बिकी। तुम्हारा आभारी रहूंगा जीवन भर।' मैं संकोच सहित उस 'आभार' को लेकर मेले से बाहर निकल आया।

response@jagran.com

ऊर्जा

जीवन मंथन

सनातन धर्म में वर्णित सागर मंथन की कथा हर युग में प्रासंगिक है। इसमें देवताओं ने अमृत और राक्षसों ने विष प्राप्त किया था। यह अमृत और विष मनुष्य अपनी प्रवृत्ति से पाता है। इस प्रसंग में स्वयं भगवान द्वारा राक्षसों को विष/मदिरा देने का तात्पर्य है कि कर्मों के अनुसार ईश्वर उसे नकारात्मक प्रवृत्ति के रूप में यह पिलाते हैं। यह नकारात्मक प्रवृत्ति ही राक्षस रूप है जो मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार प्राप्त करता है तथा अपने कर्मों की मदिरा पीकर अपना विनाश करता है। सागर मंथन की कथा में अपने आचरण को धर्म के अनुसार रखने वाला मनुष्य सम योग की स्थिति में रहकर सदैव परमपिता से जुड़कर अमृत रूपी शांति तथा परम आनंद का अनुभव करता है।

प्रत्येक मनुष्य कर्मों के अनुसार अपनी मनोवृति एवं फल पाता है। पाप कर्मों में लिप्त मनुष्य अपने कर्मों के अपराध बोध के कारण अशांत रहता है। इसलिए उसमें नकारात्मक भाव जागृत होकर उसे तरह-तरह की व्याधियां घेर लेती हैं। वहीं धर्म मार्ग पर चलने वाला मनुष्य कर्मों के अनुरूप सकारात्मक स्थिति से आनंद की अनुभूति करता है। इसलिए अपराधबोध से ग्रस्त मनुष्य संसार को नकारात्मक भाव एवं अशांति में ही छोड़ता है जबकि धर्म मार्ग पर चलकर सम स्थिति को प्राप्त मनुष्य परम शांति की स्थिति में परमानंद में बिना मानसिक कष्ट के विलीन हो जाता है और नए जन्म में जीव अपने पुराने कर्मों के अनुसार अपनी मनोवृत्ति प्राप्त करता है।

मानव जीवन रूपी सागर मंथन की यह सबसे बड़ी मणियां मोती उसे प्राप्त हो जाती हैं। अंतिम क्षणों में अक्सर प्रत्येक मनुष्य इस तत्व को महसूस करता है कि मैंने जीवन रूपी समुद्र मंथन में नकारात्मक कर्मरूपी मदिरा क्यों चुनी? वह स्वयं आप को अत्यंत असहाय महसूस करता है जबकि सत्कर्म के मार्ग पर चलने वाले मनुष्य को परम शांति की अनुभूति होती है। मनुष्य को इस अटल सत्य को समझ कर जीवन रूपी सागर मंथन में अमृत की ही खोज करनी चाहिए।

कर्नल शिवदान सिंह

तथ्य-कथ्य | जंगल की आग

(हाल में लगी आग से प्रभावित क्षेत्र, आंकड़ा लाख एकड़ में)

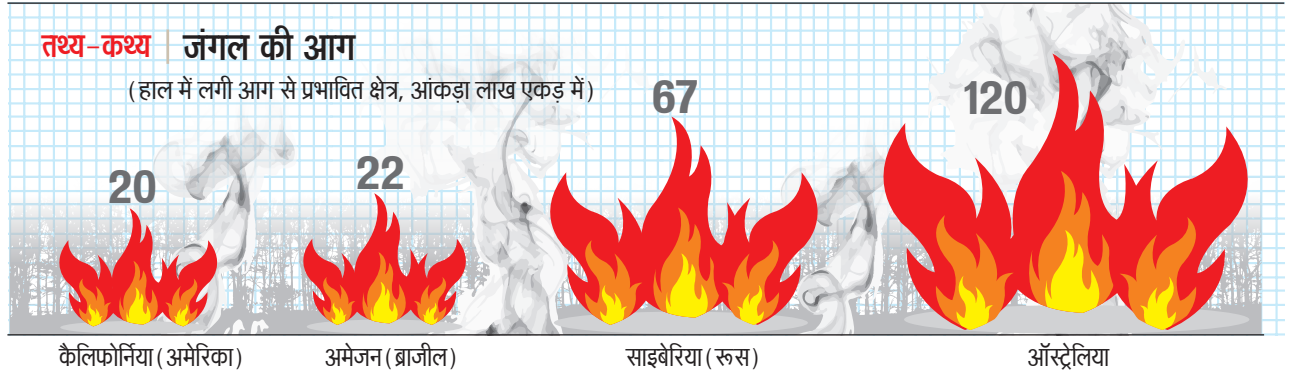

जलवायु परिवर्तन से उपजा खतरा

मुकुल व्यास

कार्बन डाईऑक्साइड की सामान्य से अधिक मात्रा बच्चों में सोचने-समझने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है

वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड के स्तर में वृद्धि से बच्चों की बौद्धिक क्षमता पर असर पड़ सकता है। अमेरिका के कोलोराडो विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने इसके प्रमाण जुटाए हैं। उनके अनुसार वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड के बढ़ते हुए स्तर से भविष्य में बच्चों की सोचने-समझने की क्षमता कमजोर पड़ सकती है। इससे पहले हुए अध्ययनों में भी यह बात उभरकर आई थी कि कार्बन डाईऑक्साइड की सामान्य से अधिक मात्रा बच्चों की सोचने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है।

अब शोधकर्ताओं ने यह पता लगाने की कोशिश की है कि वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड का बढ़ा हुआ स्तर एक कक्षा के भीतर बच्चे के ज्ञानार्जन को किस प्रकार प्रभावित करता है। पिछले अध्ययनों से पता चला था कि प्रदूषण से बच्चों के कारण सीखने-समझने में दिक्कत आती है, लेकिन स्वच्छ हवा के लिए खिड़कियों को खोलने से यह समस्या काफी हद तक दूर की जा सकती है। इस नए अध्ययन में शोधकर्ताओं ने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया है कि जब हवा में सामान्य से अधिक कार्बन डाईऑक्साइड होगी तो क्या होगा?

इसे जानने के लिए उन्होंने एक मॉडल में दो परिदृश्यों की कल्पना की। पहले परिदृश्य में मनुष्य वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड के उत्सर्जन में कटौती करता है और दूसरे परिदृश्य में कोई कटौती नहीं करता। शोधकर्ताओं ने पाया कि पहले परिदृश्य में बच्चों की सीखने और समझने की क्षमता में वर्ष 2100 तक 25 प्रतिशत की कमी आएगी, क्योंकि उत्सर्जन में कमी के बावजूद छात्रों को सामान्य से अधिक कार्बन डाईऑक्साइड झेलनी पड़ेगी। कार्बन डाईऑक्साइड के उत्सर्जन में कोई कटौती न होने वाले दूसरे परिदृश्य में बच्चों की बौद्धिक क्षमता 50 प्रतिशत तक कम होने की आशंका है। शोधकर्ताओं का कहना है कि सामान्य से अधिक मात्रा में कार्बन डाईऑक्साइड से युक्त हवा के प्रभावों के बारे में यह पहला अध्ययन है। उन्होंने कहा कि उत्सर्जन खत्म करके इस समस्या से निपटा जा सकता है।

इस बीच, कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन को घटाने के लिए कार्बन भंडारण की सीसीएस (कार्बन कैप्चर एंड स्टोरेज) तकनीक अपनाने के सुझाव दिए गए हैं। अभी दुनिया में सिर्फ दो दर्जन सीसीएस प्रोजेक्ट शुरू हो पाए हैं। इसकी वजह उच्च लागत के साथ-साथ तकनीक की उपयोगिता के बारे में अनिश्चितता भी है, लेकिन शोधकर्ताओं का कहना है कि बहुत कम समय में चट्टानों में कार्बन डाईऑक्साइड के भंडारण के लिए कुएं (इंजेक्शन वेल) निर्मित किए जा सकते हैं। इससे आइपीसीसी द्वारा निर्धारित लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं। आइपीसीसी ने दुनिया में सीसीएस टेक्नोलॉजी के जरिये वर्ष 2050 तक कार्बन उत्सर्जन में 13 प्रतिशत कटौती का लक्ष्य रखा है। अब देखना यह होगा कि दुनिया इस लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में कितने प्रयास करती है।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

राजरंग

'काम' के बदले समर्थन

केंद्र सरकार ने जबसे रेलवे में कैडर मर्जर का फैसला किया है तबसे इसके समर्थक और विरोधियों के बीच तलवारें खिंची हुई हैं। जहां अधिकांश यूनियनों ने इस फैसले के खिलाफ आवाज उठाने का निर्णय किया है, वहीं अफसरों की एक दोयम दर्जे की यूनियन इसके समर्थन में भी उतर आई है। यह अलग बात है कि यह समर्थन किस तरह से हासिल किया गया और आगे इसकी क्या स्थिति होगी, इसे लेकर रेल भवन में तरह-तरह की चर्चाएं हो रही हैं। जहां कुछ लोगों का कहना है कि अब तक उपेक्षित यूनियन के पदाधिकारियों को विशेष अधिकार दिए जाने का वादा किया गया है। वहीं कुछ अन्य लोग मानते हैं कि भंग किए जाने के भय से यूनियन को समर्थन का एलान करना पड़ा है। चर्चा तो यहां तक है कि सरकार से चुनिंदा काम कराने के बाद यूनियन पलटी मार सकती है। इस बात के संकेत यूनियन के एक पदाधिकारी ने दूसरी बड़ी यूनियन के नेता से मुलाकात में दिए। पदाधिकारी ने कहा कि 'अभी हमें सरकार से कुछ काम करवाने हैं। इसके बाद हम भी आपके साथ खड़े नजर आएंगे।'

शुभ मुहूर्त का इंतजार

राम मंदिर निर्माण की जिम्मेदारी संभालने वाले ट्रस्ट का मसौदा बनकर तैयार हो गया है। बस केवल शुभ मुहूर्त का इंतजार किया जा रहा है। बताया जाता है कि अयोध्या डेस्क से जुड़े गृह मंत्रालय के दो वरिष्ठ अधिकारी चुपचाप अयोध्या का दौरा भी कर आए हैं जहां उन्होंने इस आंदोलन से जुड़े वरिष्ठ धार्मिक नेताओं से विचार-विमर्श किया है। वैसे तो कहा तो यह भी जा रहा है कि ये लोग ट्रस्ट के मसौदे पर मुहर लगाने गए थे ताकि बाद में कोई विवाद खड़ा न हो। माना जा रहा है कि मकर संक्राति के बाद कभी भी ट्रस्ट की घोषणा की जा सकती है। वैसे तो सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुसार सरकार के पास नौ फरवरी तक समय है, लेकिन सरकार तब-तक इंतजार करने के मूड में नहीं है।

दलालों के दलाल

रेलवे में टिकट दलालों के रैकेट को तोड़ने के कई प्रयास हुए, मगर कभी निर्णायक कामयाबी नहीं मिली। अब मौजूदा सरकार भी इसके लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रही है। इसके लिए अगले सप्ताह देशव्यापी अभियान छेड़ा जा रहा है, लेकिन अभियान से पहले ही इस मुहिम के फेल होने की भविष्यवाणियां की जाने लगी हैं। रेलवे के एक अधिकारी ने इसकी वजह भी बता दी। अधिकारी का कहना था कि जिस आरपीएफ को अभियान की कमान सौंपी गई है, उसके क्षत्रपों ने दलाल विरोधी अभियानों को ही कमाई का जरिया बना लिया है। इसके लिए सभी डिवीजनों में आरपीएफ के अधिकारियों ने बाकायदा इलाके बांट रखे हैं। अभियान के नाम पर प्रत्येक इलाके का प्रभारी बड़े दलालों से मोटी उगाही कर लेता है। इसके बाद अभियान के नाम पर छोटे-मोटे दलालों को पकड़कर तस्वीरें खिंचवा कर मीडिया में वाहवाही लूटी जाती है। आरपीएफ के उत्साही महानिदेशक को इसकी जानकारी नहीं है। यदि उन्हें वास्तव में दलालों पर अंकुश लगाना है तो पहले आरपीएफ के भीतर मौजूद इन 'दलालों के दलालों' की गर्दन पकड़नी चाहिए।

बजट पर टिकी निगाहें

जैसे-जैसे बजट की तारीख नजदीक आ रही है, वैसे-वैसे उद्योग जगत में चिंताएं गहराती जा रही हैं। भले ही कॉरपोरेट टैक्स में कटौती के जरिये इंडिया इंक को भारी भरकम राहत मिली है, लेकिन अर्थव्यवस्था में मांग की कमी से उसके हाथ-पांव फूले हुए हैं। उद्योगपति अपनी निजी राय से लेकर उद्योग चैंबरों तक बातचीत में मान रहे हैं कि बजट में मांग बढ़ाने के ठोस उपाय नहीं हुए तो भविष्य का संकट बढ़ सकता है। दबी जुबान से उद्योग जगत के लोग बजट बनाने वाली टीम की काबिलियत पर भी सवाल उठा रहे हैं। कॉरपोरेट सेक्टर से जुड़े कई लोग तो यह भी कह रहे हैं कि मंत्रालय में जो लोग बजट पर उद्योग जगत से चर्चा कर रहे हैं उनके हाथ में निर्णय लेने की कितनी ताकत है, अभी यह भी स्पष्ट नहीं है। इसलिए एक फरवरी के इंतजार में सब 'फिंगर क्रॉस' की मुद्रा में हैं।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

33,356 दुष्कर्म के कुल मामले दर्ज किए गए हैं देश भर में, एनसीआरबी द्वारा जारी ताजा आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2018 में।

आजकल

विवाद से मुनाफा कमाने का दांव फुस्स

फिल्मों के रिलीज होने से पहले उसे या उससे जुड़े किसी किरदार का किसी न किसी प्रकार से विवाद का हिस्सा बनाने की रणनीति बीते कुछ समय से जोर पकड़ती जा रही है। हालांकि फिल्म को विवाद में लाने के लिए तर्क भी दिए जाते हैं, लेकिन इससे कई बार फिल्म को फायदा होता है, तो कई बार दांव उल्टा पड़ जाता है। इस शुक्रवार को देश भर में रिलीज की गई फिल्म 'छपाक' के साथ भी ऐसा ही होता दिख रहा है

अनंत विजय
anant@nda.jagran.com

फिल्म 'तान्हाजी' और 'छपाक' का पोस्टर। प्रतीकात्मक फोटो।

दीपिका पादुकोण की फिल्म 'छपाक' रिलीज हो गई और फिल्म कारोबार के जानकारों के मुताबिक उसकी फिल्म को अपेक्षित ओपनिंग नहीं मिल पाई। फिल्म के दर्शकों के पसंद करने के पूर्वानुमान के आंकड़ों से भी कम की ओपनिंग मिली। पहले दिन की ओपनिंग संतोषजनक नहीं कही जा सकती है। 'छपाक' पहले दिन पांच करोड़ रुपये का बिजनेस भी नहीं कर पाई, जबकि अनुराग कश्यप जैसे सूरमा भी इस फिल्म के प्रमोशन के लिए कूद गए थे। वैसे भी अनुराग कश्यप फ्लॉप फिल्मों के ही निर्देशक बन कर रह गए हैं जो अपनी निजी कुंठा बेहद अमर्यादित तरीके से ट्वीटर पर निकालते रहते हैं। पहले दिन पांच करोड़ से नीचे रह जाना 'छपाक' के लिए झटके जैसा है। मेट्रो शहरों के कुछ मल्टीप्लैक्स में इस फिल्म को देखने दर्शक पहुंचे, लेकिन मेट्रो से बाहर इस फिल्म को अतिसाधारण ओपनिंग मिली। पटना के एक सिनेमा हॉल में एक शो में तीन दर्शक के रहने की खबरें आईं। दीपिका पादुकोण जैसी बड़ी स्टार और मेघना गुलजार जैसी मशहूर निर्देशक के होते हुए फिल्म 'छपाक' को पहले दिन बॉक्स ऑफिस पर इतनी कम ओपनिंग मिलना चकित करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि दीपिका का जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के आंदोलनकारी छात्रों के बीच जाने की युक्ति भी काम नहीं कर पाई। सात जनवरी की शाम जब दीपिका पादुकोण जेएनयू के आंदोलनकारी छात्रों के बीच पहुंची थीं तो उसके बाद एक वर्ग विशेष ने फिल्म के पक्ष में माहौल बनाना शुरू कर दिया था। टिकट खरीदने और उसका स्क्रीन शॉट ट्वीटर पर पोस्ट करने की मुहिम भी चलाई गई थी। लेकिन अब जब दीपिका की फिल्म छपाक को देखने के लिए अपेक्षित संख्या में दर्शक नहीं पहुंचे तो ये संकेत तो साफ हो गया है कि सोशल मीडिया पर चाहे जितना शोर मचा लो फिल्म को फायदा नहीं मिला। बल्कि इसका फायदा अजय देवगन की फिल्म 'तान्हाजी' को हो गया। 'तान्हाजी' को बॉक्स ऑफिस पर पहले ही दिन 15 करोड़ रुपये से अधिक की ओपनिंग मिली जो सफल फिल्म होने का संकेत देती है। फिल्म 'छपाक' की रिलीज के तीन दिन पहले दीपिका पादुकोण का जेएनयू जाना और वहां आंदोलनकारी छात्रों के साथ खड़े होने की रणनीति फिल्म प्रमोशन के लिए थी, लेकिन अब वो चौतरफा घिर गई हैं। राजनीतिक तौर पर भी उनके बयानों की लानत मलामत हो रही है। केंद्रीय मंत्री स्मृति इरानी ने उनके जेएनयू जाने को लेकर उनको घेरा है। लगता है फिल्म को सफल बनाने के लिए जेएनयू जाने की रणनीति उल्टी पड़ती नजर आ रही है।

फिल्म इंडस्ट्री में कई बड़े निर्माता निर्देशक एक रिपोर्ट पर विश्वास करते हैं और फिल्म की रिलीज के पहले उसकी रिपोर्ट पर गंभीरता से विचार कर रणनीति बनाते हैं। एक कंपनी ऑरमैक्स, सिनेमैट्रिक्स रिपोर्ट जारी करती है जिसके आधार पर पहले दिन बॉक्स ऑफिस ओपनिंग (एफबीओ) के बारे में अंदाज लगाया जाता है। ऑरमैक्स सिनेमैट्रिक्स निश्चित तारीख पर रिलीज होनेवाली फिल्मों के प्रमोशन कैंपेन को चार आधार पर ट्रैक करती है ताकि पहले दिन फिल्म की ओपनिंग का अंदाज लगाया जा सके। ये चार आधार होते हैं बज (चर्चा), रीच (पहुंच) अपील और इंटरेस्ट (रुचि)। ये एक रियल टाइम रिपोर्ट होती है जो किसी भी फिल्म के प्रमोशन कैंपेन को रोजाना ट्रैक करती है। इसको फर्स्ट डे बॉक्स ऑफिस मॉडल कहते हैं। इसके आधार पर ना केवल फिल्म का प्रमोशन कैंपेन डिजाइन किया जाता है, बल्कि उसमें बदलाव भी किया जाता है। इस व्यवस्था को भरोसेमंद बनाने के लिए फिल्मों के 29 मार्केट से जानकारियां जमा की जाती है। विश्लेषण करने के बाद सिनेमैट्रिक्स रिपोर्ट तैयार की जाती है।

इस रिपोर्ट में फिल्मों पर असर डालनेवाले बाहरी कारकों के प्रभाव का भी ध्यान रखा जाता है। बाहरी कारक यानी फिल्म रिलीज की तारीख के दिन या उसके आसपास पड़ने वाले त्योहार, छुट्टियां, क्रिकेट मैच, परीक्षाएं या मौसम को विश्लेषित किया जाता है। गौरतलब है कि फिल्म 'धूम 3' के लिए एफबीओ रिपोर्ट साढ़े बत्तीस करोड़ रुपये की ओपनिंग की थी जबकि वास्तविक ओपनिंग 30.9 करोड़ रुपये की रही जो पूर्वानुमान के बहुत करीब थी। फिल्म 'आर राजकुमार' के लिए ओपनिंग का पूर्वानुमान 8.3 करोड़ रुपये का था जबकि वास्तविक ओपनिंग 8.8 करोड़ रुपये की हुई थी। कंपनी मानती है कि उसकी रिपोर्ट एकदम सटीक नहीं होती है और उसमें पांच फीसद ऊपर नीचे की गुंजाइश होती है।

'छपाक' फिल्म की सात जनवरी को दिन में ये रिपोर्ट आती है जिसमें वो ऊपर उल्लिखित चारों मापदंडों पर तीसरे स्थान पर आती है जबकि उसके रिलीज वाले दिन अजय देवगन-काजोल की फिल्म 'तान्हाजी, द अनसंग वॉरियर' पहले स्थान पर थी। पहुंच में भी फिल्म 'छपाक' इसी दिन रिलीज होनेवाली 'तान्हाजी, द अनसंग वॉरियर' और 24 जनवरी को रिलीज होनेवाली फिल्म 'स्ट्रीट डांसर' से पीछे थी। दर्शकों की रुचि में भी दीपिका की फिल्म 'तान्हाजी' से पीछे चल रही थी। इससे भी चिंता की बात यह थी कि एफबीओ में 'छपाक' और 'तान्हाजी, द अनसंग वॉरियर' की पहले दिन की ओपनिंग में बहुत अधिक फर्क थी। 'तान्हाजी' को इस रिपोर्ट में 'छपाक' से लगभग दोगुनी ओपनिंग मिलने का पूर्वानुमान लगाया गया था। बताया जाता है कि इस रिपोर्ट के आते ही फिल्म 'छपाक' का प्रमोशन देख रहे लोगों ने रणनीति बदली और उसके बाद ही दीपिका के जेएनयू जाने की योजना बनाई थी। फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े जानकारों का कहना था कि ऐसा पहली बार हो रहा था कि दीपिका की किसी भी फिल्म की पहले दिन बॉक्स ऑफिस ओपनिंग (एफबीओ) का आंकड़ा इकाई में नहीं आया था। एफबीओ के सिंगल डिजिट में आने से भी जेएनयू जाने की योजना बनी थी। दीपिका पादुकोण के जेएनयू जाने के दो दिन बाद सिनेमैट्रिक्स की नौ जनवरी की रिपोर्ट से पता लगा था कि 'छपाक' को बहुत मामूली फायदा हुआ था। चार मापदंडों पर दीपिका के जेएनयू जाने का थोड़ा ही असर हुआ, लेकिन फर्स्ट डे बॉक्स ऑफिस ओपनिंग के पूर्वानुमान पर असर नहीं पड़ा। जबकि 'तान्हाजी' के एफबीओ में मामूली वृद्धि होती दिख रही है। दोनों फिल्में रिलीज हो गई हैं तो ये साफ हो गया है कि सिनेमैट्रिक्स रिपोर्ट के आंकड़े फिल्म दर्शकों के बारे में तकरीबन सही अंदाज लगा पा है।

दीपिका पादुकोण की फिल्म का प्रमोशन देख रहे लोगों ने सोचा होगा कि उनके जेएनयू जाने से छपाक के पहले भी उसी तरह का विवाद उठ खड़ा होगा जिस तरह का विवाद फिल्म पद्मावत के वक्त उठ खड़ा हुआ था। उनके जेएनयू पहुंचने पर विवाद शुरू तो हुआ, लेकिन उसकी चंद घंटों में ही निकल गई। विवाद से मुनाफा कमाने की रणनीति का कोई फायदा नहीं हुआ। विवाद उठाकर मुनाफा कमाने की रणनीति अब पुरानी हो गई है। आमिर खान की जब भी कोई फिल्म रिलीज होती है तो वो विवाद उठाने से नहीं चूकते हैं। किसी फिल्म की रिलीज के पहले उनको गुजरात दंगों की याद आती है तो किसी फिल्म के पहले वो नर्मदा आंदोलन को लेकर विवादित बयान दे देते हैं। विवाद उठाकर मुनाफा कमाने में आमिर खान को महारत हासिल है। जब कोई फिल्म नहीं आ रही होती है तो वो आमतौर पर खामोश ही रहते हैं। किसी भी कलाकार को या फिल्म प्रोड्यूसर को अपने उपक्रम से मुनाफा कमाने का हक है, लेकिन मुनाफा के लिए लोगों की भावनाएं भड़का कर उनको सिनेमा हॉल तक खींचने का उपाय करना कितना उचित है इस पर भी विचार करने की जरूरत है। दीपिका की फिल्म 'छपाक' को जिस तरह से विवाद का कोई फायदा नहीं मिला उससे बॉलीवुड के इन सितारों को सीख तो मिली ही होगी। उल्ट इस बार तो दीपिका विवाद में चौतरफा घिर भी गईं हैं। हां, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के आंदोलनकारी छात्रों के साथ जाकर खड़े होने का एक फायदा ये हुआ कि कुछ राज्यों में ये फिल्म टैक्स फ्री हो गई।

फिर से

डर लगता है अब लाल रंग से

भारत के कम्युनिस्ट, लाल रंग जिनका चिन्ह है। आपस में सभी कामरेड एक दूसरे को लाल सलाम देते हैं। इस लाल से इनका उद्देश्य समझा जा सकता है। कामरेड इन दिनों खूब सक्रिय हैं। कहते हैं कोई इनकी सुनता नहीं, सरकार इन्हें टारगेट करना चाहती है, जेएनयू बंद करना चाहती है आदि। ये मुट्ठी भर लोग जनता को भड़काकर देश में खून की नदियां बहाना चाहते हैं। जेएनयू को अपनी जागीर समझते हैं। जो विद्यार्थी इनके धरने में नहीं जाता, उसे टारगेट करते हैं। जेएनयू की ही एक छात्रा ने अपनी परेशानी साझा करते हुए बताया, 'दीदी ये लोग परीक्षा नहीं देना चाहते। इनके चलते हमारा कैरियर बर्बाद हो रहा है। इनके सब मुद्दों पर हम साथ खड़े थे। विद्यार्थी हक से आखिर हमारा भी तो संबंध है, लेकिन इनकी हिंसक गतिविधियों के हम खिलाफ हैं। हम यहां पढ़ने आए हैं, किसी पार्टी का मोहरा बनने नही। आए दिन कुछ उपद्रवी लड़के कोई पन्ना लेकर आ जाते हैं और कहते हैं साइन करो। मना करने पर फब्तियां कसते हैं।'

अस्तित्व का संकट होने पर क्या इस स्तर तक गिरा जा सकता है? क्यों देश की जनता को अपनी ओर करके चुनाव नहीं जीत पाते भारत के कम्युनिस्ट? क्या उन्होंने इसका आकलन किया। किसी कम्युनिस्ट ग्रुप में बैठकर आपको ऐसी अनुभूति होगी कि सब समस्या का समाधान इनके पास है, लेकिन असल में सबकुछ इसके विपरीत है।

मुझे इस लाल रंग से अब डर लगता है। लाल, जिसे प्रेम का प्रतीक समझती थी, उसी को खून में बदलते नहीं देख पाऊंगी। इन दिनों जिस तरह से लोगों ने बयानबाजी कर देश की मुसलमान जनता को गुमराह किया, विभाजन जैसी सांप्रदायिक घटना की आशंका ने घेर लिया। विभाजन पर शोध के दौरान इस मंजर को करीब से जाना था। महिला और बच्चों की जो दुर्गति उसमें हुई थी, उसे भुलाया नहीं जा सकता है। सरकार के निर्णय और वामपंथियों के विरोध का तालमेल मैंने बिठाने का प्रयास किया।

बात कश्मीर की करें तो पहले शायद ही कोई वर्ष ऐसा गुजरता था जब कोई बड़ी आतंकी घटना नहीं घटती हो। कश्मीर समस्या आज की देन नहीं, बल्कि आजादी के लगभग साथ ही हमें प्राप्त हुई थी। पिछली सरकारों ने भी इस समस्या को हल करने का प्रयास किया, लेकिन सभी तरीके वही ढाक के तीन पात साबित हुए। अधिकांश भारतीय राजनीतिक दल इस बात को भली-भांति जानते हैं कि इसके अलावा कश्मीर समस्या का कोई विकल्प नहीं। अगर होता तो कश्मीर समेत पूरा देश सदियों तक नहीं जलता। दूसरा राममंदिर और तीसरा बड़ा निर्णय नागरिकता संशोधन अधिनियम था। वामपंथियों ने बिना पढ़े ही गलत तरीके से इसे देश में प्रस्तुत

किया, जिससे देश में सांप्रदायिक माहौल बनाया गया। गांधी के देश में विरोध का यह कौन सा तरीका है जिसमें बेगुनाहों को निशाना बनाया जाए। अपनी बात रखने का कौन सा तरीका है कि घर से हथियार लेकर निकला जाए। ऐसा करने वाले पाकिस्तान या किसी अन्य मुल्क के लोग नहीं आए, बल्कि अपने देश के कुछ मूढ़ थे जिन्हें पता ही नहीं कि किसे और क्या खतरा है इस अधिनियम से।

भारत एक सेक्युलर देश माना जाता है, जहां कम संख्या में रहने वाले लोगों का हित सबसे पहले देखा जाता है। इस कानून का भी यही मकसद है। पड़ोसी देशों में प्रताड़ित अल्पसंख्यकों के हितों का ध्यान रखना आखिर क्यों जरूरी नहीं। यही तो मानवता भी है। दिक्कत यदि सिर्फ हिंदू अल्पसंख्यक से है, तो यह बहुत निराशाजनक बात है।

(डॉ. सीमा सिंह की फेसबुक वॉल से संपादित अंश, साभार)

ट्वीट-ट्वीट

अच्छा विभाग और अच्छा मंत्रालय नहीं मिलने से जो हमारे नए बनाए गए मंत्री नाराज हैं। उनसे मैं यही कहना चाहूंगा कि जो सरकार बनी है उसका उद्देश्य यह था कि भारतीय जनता पार्टी को सत्ता से दूर रखा जाए। लिहाजा मंत्रालय मायने नहीं रखता। छोटे दुख दर्द को जहर का घूंट बनाकर पी जाना चाहिए।
संजय निरुपम@sanjaynirupam

स्मृति ईरानी जी, मुझे नहीं लगता कि जेएनयू जाकर दीपिका पादुकोण किसी विचारधारा से जुड़ गईं। बाहरी गुंडों ने वहां के छात्रों को पीटा और ऐसे मौके पर यह पीड़ितों के साथ एकजुटता दिखाने की कोशिश थी। आपने दीपिका पादुकोण के बारे में जो कहा वह सही नहीं लगा।
कबीर बेदी@iKabirBedi

पहले दिन ही दिन फिल्म तानाजी ने 16 करोड़ रुपये कमाए और शाम के बाद उसकी कमाई में तेजी का रुख रहा। वहीं छपाक की कमाई साढ़े चार करोड़ रुपये रही और बाद के शो में उसके दर्शक घटते गए। यानी पीआर नाकाम हुआ और कंटेंट बाजी मार गया।
धवल पटेल@dhaval241086

जब देश के कुछ लोग देश की अखंडता को भंग करने की कोशिश करें तो हमारा फर्ज है हम ऐसा न होने दें। ये वो लोग है जो सबसे ज्यादा असहिष्णु हैं। हमें संयम और दृढ़ता से ऐसे लोगों को बताना है कि भारत हमारा देश है, हमारा अस्तित्व है हमारी ताकत है। हम इसे बिखरने नहीं देंगे। जय हिंद।
अनुपम खेर@AnupamPKher

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या छात्रों के एक वर्ग द्वारा जेएनयू के कुलपति को हटाने की मांग उचित है?

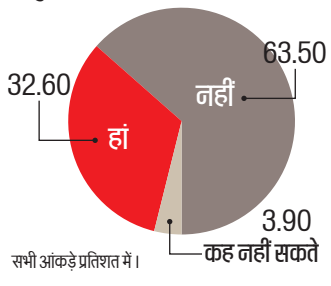

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या सरकार को जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने पर विचार करना चाहिए?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

दिल्लीवालों पर चढ़ा दिखे चुनावी रंग,
जाते हैं इस बार वह देखो किसके संग।
देखो किसके संग वायदे बरस रहे हैं,
सुनकर पिछली बार जिन्हें वे तरस रहे हैं।
मिले मुफ्त का माल न आदत तुम यह डालो,
होती है तकलीफ बाद में दिल्लीवालों।
– ओमप्रकाश तिवारी

रचनाकर्म

डिजिटल क्रांति की पड़ताल का प्रयास

प्रणव सिरोही

यह पुस्तक बताती है कि कैसे ऑटोमेशन हमारे जीवन में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है और तमाम आशंकाओं के बावजूद भविष्य इसी में निहित है...

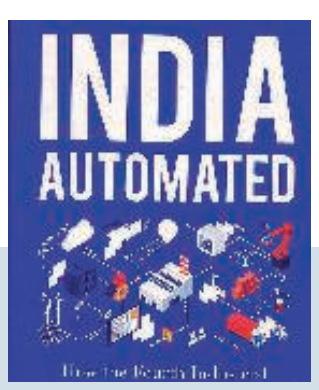

पुस्तक : इंडिया ऑटोमेटेड
लेखक : प्रांजल शर्मा
प्रकाशक : मैकमिलन
मूल्य : 650 रुपये

आज हमारे जीवन का शायद ही कोई पहलू तकनीकी हलचल से अछूता रह गया हो। तकनीक की इस दुनिया में बदलाव भी बहुत तेजी से हो रहे हैं। यह तकनीकी संक्रमण इतना तीव्र है कि जब तक किसी तकनीक से ताल मिलाई जाती है, तब तक उसमें कोई नया पड़ाव आ जाता है। ऐसा ही एक नया पड़ाव है ऑटोमेशन यानी स्वचालन, जो हमारे दैनंदिन जीवन में क्रांतिकारी बदलावों की बुनियाद रख रहा है। लेखक एवं पत्रकार प्रांजल शर्मा ने अपनी पुस्तक 'इंडिया ऑटोमेटेड- हाउ द फोर्थ इंडस्ट्रियल रिवॉल्यूशन इज ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया' में इसी परिवर्तन की पड़ताल की है।

वास्तव में ऑटोमेशन दोधारी तलवार के समान है। ऐसा इसलिए, क्योंकि भारत जैसे बड़ी युवा आबादी वाले देश में इसके चलते रोजगारों में कमी की आशंका भयाक्रांत करती है। इससे डेमोग्राफिक डिविडेंड यानी जनसांख्यिकीय लाभांश के मोर्चे पर लाभ की स्थिति नुकसान में परिणत हो सकती है। फिर भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि ऑटोमेशन तमाम सुधारों को आकार दे रहा है। यह पुस्तक इसी परिदृश्य पर प्रकाश डालती है। यह बताती है कि कैसे भारत में सरकारी से लेकर निजी क्षेत्र को ऑटोमेशन से भारी लाभ पहुंचा है। इससे नागरिकों-उपभोक्ताओं को भी समय से और बेहतर सुविधाएं मिलना सुनिश्चित हुआ है। यह तकनीक कैसे ई गवर्नेंस, आयकर प्रोसेसिंग, आपदा प्रबंधन से लेकर नियमन जैसी सरकारी प्रक्रियाओं को आसान बना रही है। वहीं निजी क्षेत्र में मानव संसाधन, विनिर्माण, डिजिटल आपूर्ति, वित्त एवं बीमा जैसे क्षेत्रों में उत्पादन एवं सक्षमता को बढ़ाने में महती भूमिका निभा रही है।

हालांकि लेखक ऑटोमेशन से रोजगार के अवसरों में कमी और डाटा सुरक्षा जैसी चिंताओं पर भी चर्चा करते हैं, लेकिन वह इससे नई किस्म के रोजगार सृजन की उम्मीद भी बंधाते हैं। तमाम आशंकाओं के बावजूद वह मानते हैं कि भविष्य इसी में निहित है, क्योंकि इससे नुकसान कम और फायदे बहुत ज्यादा हैं। जैसे वह तेल एवं गैस क्षेत्र की ही मिसाल देते हैं। जहां सटीकता बहुत मायने रखती है, वहां ऑटोमेशन जैसी तकनीक किसी रामबाण से कम नहीं। इसी तरह वह नेटफ्लिक्स के माध्यम से समझाते हैं कि कैसे एआइ सिस्टम से लैस तकनीक आपके लॉगइन करने से लेकर पॉज और फास्ट-फॉरवर्ड करने जैसी गतिविधियों पर नजर रखती है और आपकी पसंद के लिहाज से ही अगली बार सामग्री परोसती है। पुस्तक भविष्य में रोबोट वारियर्स जैसी दिलचस्प संकल्पना पर भी चर्चा करती है। यह बताती है कि कैसे लखनऊ के फैजुल्लागंज में बुनियादी सुविधाओं से लेकर इजरायल में पिलकॉम के जरिये बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। यह ऑटोमेशन के माध्यम से ही संभव हो रहा है।

इस तकनीकी प्रवर्तन से कंपनियों की क्षमताओं में बेहतरी के भी किताब में तमाम दृष्टांत हैं। एक मिसाल फ्लिपकार्ट की ही दी गई है, जिसके अनुसार कंपनी की बेंगलुरु इकाई में एक घंटे में जितने लोग 500 पैक तैयार करते, उसकी तुलना में ऑटोमेशन के जरिये उतनी ही अवधि में 4,500 पैक तैयार कर दिए जाते हैं। इसी तर्ज पर अमेरिकी कंपनी एटीएंडटी अपने टॉवरों की निगरानी और उनमें समस्या सुधार के लिए ड्रोन का सहारा लेती है तो टीसीएस जैसी कंपनी नियुक्ति प्रक्रिया को ऑटोमेशन के जरिये संपादित कर रही है, जिसमें मानवीय पक्षपात जैसी आशंकाएं भी सीमित होती जा रही हैं। जाहिर है कि इससे कंपनियों की परिचालन क्षमताओं में गुणात्मक एवं मात्रात्मक, दोनों किस्म के सुधार हो रहे हैं। किताब में नेस्ले इंडिया, टाटा क्लिक, मदुरै फैशन व अपोलो हेल्थ जैसी तमाम केस स्टडीज भी विषय को समझाने में मददगार साबित हुई हैं।

पुस्तक की भाषा सरल है। यदि ऑटोमेशन से उपजी चुनौतियों के समाधान को समर्पित एक अध्याय और होता, तब यह और अधिक बेहतर बन पड़ती। फिर भी यह अपने विषय के साथ पूरा न्याय करते हुए पठनीय बन पड़ी है।

अंडमान के द्वीपों का भ्रमण

कन्हैया झा

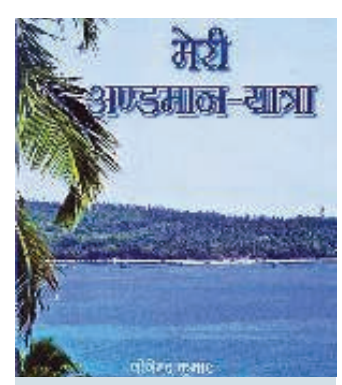

पुस्तक : मेरी अंडमान यात्रा
लेखक : योगेंद्र कुमार
प्रकाशक : अग्रवाल पब्लिकेशंस
मूल्य : 350 रुपये

भारत जैसे देश में, जहां पर्यटन का व्यापक परिदृश्य और विभिन्न क्षेत्र हों, वहां यात्रा वृत्तांत लिखना अधिक मुश्किल काम नहीं, लेकिन इस वृत्तांत में उस स्थान से जुड़े समग्र पहलुओं के बारे में रोचक तरीके से लिखना थोड़ा मुश्किल जरूर है। हालांकि भारत में यात्रा वृत्तांत लिखने वालों की एक लंबी सूची रही है, फिर भी योगेंद्र कुमार ने अपनी पुस्तक 'मेरी अंडमान यात्रा' में अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के बारे में जिस तरह से लिखा है, उसे सजीव कहा जा सकता है। उन्होंने इस पुस्तक में इस द्वीप समूह का ऐतिहासिक परिचय तो प्रस्तुत किया ही है, साथ ही वहां की जनजातियों की जीवन-शैली, उनका क्रमिक विकास, उनकी परंपराएं, उनका सामान्य जन-जीवन और सांस्कृतिक धरोहर को अक्षुण्ण रखने की प्रतिबद्धता का भी बड़े ही रोचक एवं सारगर्भित रूप में वर्णन किया है।

लेखक ने यहां जितने भी द्वीपों का भ्रमण किया, उनके विषय में विस्तृत जानकारी देने का प्रयास किया है। योगेंद्र कुमार उत्तर प्रदेश सरकार में वाणिज्य कर विभाग में एडीशनल कमिश्नर रह चुके हैं, साथ ही वह लेखक भी हैं और हिंदी में लिखी गई यह उनकी छठी पुस्तक है। इस पुस्तक में दस अध्याय हैं, जिनमें इस द्वीप समूह की जनजातियों की जानकारी के अलावा राजधानी पोर्ट ब्लेयर के बारे में विस्तृत विवरण के साथ सेल्युलर जेल, वीर सावरकर पार्क, रॉस द्वीप (वर्तमान में नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वीप), कार्बन कोव समुद्र-तट पोर्ट ब्लेयर, हैवलॉक द्वीप (वर्तमान में स्वराज द्वीप), नील द्वीप (वर्तमान में शहीद द्वीप) आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है।

हालांकि इस पुस्तक की भाषा सरल है और इसमें चित्रों के जरिये भी बहुत कुछ समझाने का प्रयास किया गया है, लेकिन पुस्तक में इस्तेमाल किया गया कागज यदि सामान्य श्रेणी का रखा गया होता तो इसकी कीमत कम हो सकती थी। यह पुस्तक खास तौर पर उन लोगों के लिए बेहद उपयोगी साबित हो सकती है, जो इन द्वीपों की यात्रा के इच्छुक हैं। उनकी इन द्वीपों की यात्रा-संबंधी अनेक जिज्ञासाओं को शांत करने में समर्थ है यह पुस्तक।

आशीष व्यास
संपादक, नई दुनिया, मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश डायरी

शराब पर शुरू हुई राजनीतिक जंग

शराब अब मध्य प्रदेश में राजनीतिक टकराव का नया कारण बन गई है। करीब पांच वर्ष बाद प्रदेश में शराब दुकानों की संख्या बढ़ाई जा रही है। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस तर्क के साथ सरकार के फैसले का विरोध शुरू कर दिया है कि- 'शराब की अतिरिक्त दुकानें खोलने का यह फैसला प्रदेश को तबाह और बर्बाद करने वाला है। यह निर्णय वापस नहीं लिया गया तो हम आंदोलन करेंगे।'

दरअसल राज्य सरकार ने अब शराब ठेकेदारों को शहरी क्षेत्र में पांच और ग्रामीण इलाके में 10 किमी के दायरे में उप-दुकान खोलने की सशुल्क अनुमति देने का प्रावधान कर दिया है। दूसरी शराब दुकान न होने पर ही अनुमति मिलेगी। इसी के साथ अब अहाता भी अनिवार्य रूप से खोलना होगा। सरकार की इस नीति को लेकर माना जा रहा है कि काफी प्रयासों के बावजूद शराब की अवैध बिक्री बड़े पैमाने पर जारी है। नए और पुराने शराब ठेकेदारों के आपसी विवाद से भी अवैध बिक्री लगातार बढ़ रही है। सबसे ज्यादा विवाद की स्थिति पड़ोसी राज्यों के नजदीकी जिलों में देखी जाती रही है। विशेष रूप से शराबबंदी वाले गुजरात से लगती सीमा पर इस कारण आए दिन विवाद की स्थिति बनती है। यह कदम शराब की अवैध बिक्री पर रोक लगाने और राजस्व नुकसान कम करने के लिए भी है।

शासन-प्रशासन अपने निर्णय को सही ठहराने के लिए जो भी तर्क दे, लेकिन इससे विपक्ष फिर से हमलावर रुख में नजर आने लगा है। शराब को लेकर ट्विटर-वार जैसे ही शुरू हुआ, भाजपा के कई नेता शिवराज सिंह चौहान से सुर मिलाते नजर आए। जैसे- 'कांग्रेस सरकार की सौगात, बड़ी दुकान, छोटी दुकान इसके नीचे उप-दुकान, बताओ अब कुल कितनी दुकान।' या फिर, मालवा की कहावत है- 'पग-पग रोटी, डग-डग नीर' के स्थान पर अब 'पग-पग दारू, हर पल दारू?' ट्विटर पर छाए इन नए मुहावरों को साझा करते हुए शिवराज सिंह चौहान ने कहा- 'मुझे लगता है थोड़े दिनों में कमलनाथ जी एक और सरकारी फरमान जारी कर मध्य प्रदेश का नाम बदलकर 'मदिरा-प्रदेश' कर देंगे!'

सरकारी निर्णय के बचाव में कूदे कमलनाथ सरकार के मंत्री पीसी शर्मा के इस दावे ने सभी को चौंका दिया कि राज्य सरकार शराब के अवैध व्यापार को खत्म करने की कोशिश में जुटी है। अपनी धारणा

को तथ्यों से साबित करते हुए मंत्रीजी ने यह भी बताया कि 31 दिसंबर 2019 तक 672 प्रकरणों में 94 अपराधियों को गिरफ्तार किया गया है। प्रदेश में आठ करोड़ 85 लाख रुपये से ज्यादा की अवैध शराब जब्त भी की गई है। पूर्ववर्ती शिवराज सरकार पर पलटवार कर हुए उन्होंने सरकार की तरफ से सफाई भी दी कि भाजपा सरकार में 400 नई दुकानें खोली गई थीं, जबकि राज्य सरकार का प्रयास है कि इन दुकानों के जरिये प्रदेश में अवैध शराब की बिक्री पर रोक लगाई जाए।

राजनीतिक गलियारों में चर्चा यह भी है कि शराब के जरिये शुरू हुई इस राजनीतिक जंग का परिणाम कुछ भी नहीं निकलेगा, क्योंकि दोनों ही दलों की सरकारों ने अपने-अपने निर्णय को सही ठहराते हुए शराब के कारोबार को राजस्व प्राप्ति का सबसे बड़ा जरिया माना है। दोनों ही पार्टियों के दौर में शराब कारोबारियों के राजनीतिक रसूख भी सामने आते रहे हैं। राजनीतिक तालमेल भी इस तरह का है कि जैसे ही शराब कारोबार से जुड़ा कोई निर्णय सामने आता है, कुछ दिन तक आरोप-प्रत्यारोप सामने आते हैं और इसके बाद सारे नेता नए मुद्दों की तलाश में जुट जाते हैं। भाजपा ने फिर से आंदोलन के जरिये लड़ाई का ऐलान किया है! अब देखना केवल यह है कि पार्टी जमीनी लड़ाई के अपने दावे को कैसे व्यावहारिक रूप में सामने लाती है?

फिर लगा काला टीका : दुष्कर्म के मामलों को लेकर मध्य प्रदेश के माथे पर लगा काला टीका और गहरा हो गया है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो (एनसीआरबी) की ओर से जारी ताजा आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2018 में देश भर में दर्ज दुष्कर्म के कुल 33,356 मामलों में से अकेले मध्य प्रदेश में 5,433 मामले हैं। चिंता यह भी है कि इनमें से 54 मामलों में पीड़िता छह वर्ष से कम उम्र की थी। उल्लेखनीय यह भी है कि वर्ष 2016 और 2017 में भी मध्य प्रदेश में दुष्कर्म के सर्वाधिक मामले दर्ज किए गए थे। प्रदेश की छवि लगातार खराब कर रहे महिला उत्पीड़न के मामले अब सार्वजनिक और सामूहिक रूप से आत्म विश्लेषण का गंभीर मुद्दा बनते जा रहे हैं। ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि कागजों में लगातार बढ़ते और दर्ज होते अपराध को लेकर पुलिस गंभीर नहीं है। मध्य प्रदेश पुलिस ने एक नई पहल पर काम शुरू किया है। अलग-अलग 21 तकनीक का इस्तेमाल कर अब एक ऑटोमैटिक इनवेस्टिगेशन सपोर्ट सिस्टम तैयार किया जा रहा है। इसमें प्रदेश के लगभग हर नागरिक को जोड़ा जाएगा। फायदा यह होगा कि एक हेल्पलाइन के जरिये उसे मदद मिल सकेगी। पुलिस का सूचना तंत्र भी मजबूत होगा। इस तकनीक को नेशनल पुलिस मिशन के रूप में भी स्वीकार कर लिया गया है। मध्य प्रदेश के सेवानिवृत्त डीजीपी एसके त्रिपाठी भी इस बात से सहमत हैं कि अपराध को दो तरह से नियंत्रित किया जा सकता है। पहला, छोटी घटना यानी छेड़छाड़ आदि में ही इतनी कठोर कार्रवाई हो जाए कि बड़ी घटनाएं न हो पाएं। दूसरा, जो घट गई हैं, उनमें त्वरित कार्रवाई हो।

फिल्म ने बढ़ाई सियासी गर्मी : शीतलहर से परेशान समूचे मध्य प्रदेश में इन दिनों एक अलग तरह की राजनीतिक गर्मी दिखाई दे रही है। कारण है फिल्म-छपाक। फिल्म को कांग्रेस सरकार द्वारा टैक्स फ्री किए जाने के बाद से भाजपा हमलावर है। उधर, कांग्रेस प्रदेश सरकार के निर्णय को साहसिक बता रही है। कांग्रेस के छात्र संगठन एनएसयूआइ के कार्यकर्ता भोपाल में पहले शो के टिकट लेकर पहुंचे और दर्शकों को निशुल्क बांटे। जवाब में भाजपा ने लोगों से फिल्म 'तानाजी' देखने की अपील कर दी। भाजपा ने इस फिल्म को भी टैक्स-फ्री करने की मांग की। फिल्मों के जरिये शुरू हुआ यह विवाद सोशल मीडिया पर दीपिका पादुकोण की आलोचना-समर्थन से भी जुड़ गया।

123 मगरमच्छ व 231 घड़ियाल का आकलन किया गया था उत्तराखंड में नेपाल बॉर्डर से लेकर हरिद्वार तक 6370 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में 2008 में। अब इनकी वास्तविक गणना के लिए ड्रोन से इनकी गिनती होगी

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 12 जनवरी 2020

बिहार

गवाह चुस्त होगा तो जल्द मिलेगा न्याय

अक्सर यह देखा जाता है कि बड़े आपराधिक मामलों में कई बार गवाहों के डर जाने से न्याय पर असर पड़ता है। देश भर में बीते दिनों ऐसे कई मामले सामने आए हैं जिनमें संबंधित मामलों पर अदालतों में सुनवाई की प्रक्रिया विचाराधीन रहने के दौरान गवाहों को न केवल डराया-धमकाया गया, बल्कि उनकी हत्या भी कर दी गई। ऐसे में इस बात को समझने की आवश्यकता है कि यदि गवाह अगर डरता है, तो न्याय कैसे होगा? इस मूलभूत सवाल का जवाब तलाशने के क्रम में गवाहों की सुरक्षा की जरूरत महसूस हुई और अब बिहार में भी इस व्यवस्था को लागू कर दिया गया है। राज्य मंत्रिमंडल ने इस व्यवस्था को मंजूरी दे दी है। सुप्रीम कोर्ट ने इस संबंध में आदेश दिए थे। अब उसी के अनुरूप व्यवस्था होगी। बिहार में भी यह एक गंभीर समस्या थी। प्रमुख आपराधिक मामलों में गवाहों की हत्या हुई। उन्हें धमकाया गया। परिवार को परेशान किया गया। शहाबुद्दीन जैसे जेल में बंद अपराधियों के खिलाफ भी लोग डर के मारे गवाही देने से बचते थे।

गवाहों को सुरक्षा मिलेगी यह बेहतरीन फैसला है। इससे न्याय मिलने की उम्मीद बढ़ेगी, लेकिन गवाहों की सुरक्षा प्रदान की पूरी प्रक्रिया को संवेदनशील बनाना होगा।

इस तरह की घटनाएं भी सामने आईं कि डर की वजह से चश्मदीद गवाह पलट गए और गुनाहगार सजामुक्त हो गए। अब गवाह को सुरक्षा मिलेगी। सरकार ने प्रावधान किए हैं कि अगर कोई गवाह यह शिकायत करता है कि उसे खतरा महसूस हो रहा है, तो प्रशासन तत्काल उसकी सुरक्षा के लिए जरूरी इंतजाम करेगा। गवाह को पुलिस सुरक्षा दी जाएगी। उसके घर के आसपास सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। घर पर भी पुलिस की तैनाती की जा सकती है। गवाह की पहचान छुपाने का इंतजाम भी किया जा सकता है। अगर गवाह कोर्ट रूम में अभियुक्त के सामने गवाही देने से कतराता हो उसका व्यक्तिगत विचारण कक्ष में न्यायाधीश के सामने गवाही कराई जा सकती है। अधिक विवाद की स्थिति में कोशिश होगी कि कोर्ट में भी गवाह और अभियुक्त का आमना-सामना नहीं कराया जाए। सरकार की कोशिश है कि गवाह निर्भय होकर गवाही दे। कोर्ट-कचहरी के चक्कर के डर से वैसे भी बहुत की कम लोग गवाही देने को तैयार होते हैं। जो तैयार होते हैं, अगर उन्हें सुरक्षा नहीं मिलेगी, तो फिर वह मुकर जाएंगे। ऐसे में न्याय कैसे मिलेगा? कानून लागू होने के साथ ही इस संबंध में भी विचार कर लेना चाहिए कि क्या पुलिस या प्रशासन के पास पर्याप्त संसाधन मौजूद हैं कि वह गवाह को पर्याप्त सुरक्षा दे सके।

राज्य के सभी थानों में पुलिस वालों की संख्या कम है। वीआइपी ड्यूटी और अन्य औपचारिक कार्य में भी पुलिस वाले तैनात रहते हैं। ऐसे में अगर बड़ी संख्या में गवाह पुलिस सुरक्षा की मांग करने लगें, तो फिर क्या होगा? जरूरत है कि इस व्यवस्था को लागू करने के लिए समुचित प्रशासनिक प्रबंध पहले ही कर लिए जाएं। समय-समय पर समीक्षा की जाए। इसके लिए पूरे राज्य में पर्याप्त संख्या में पुलिस सुरक्षा बलों की भी भर्ती करनी होगी।

बंगाल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से उम्मीदें

बंगाल में अगले वर्ष यानी 2021 में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। बीते वर्ष यानी 2019 में इस राज्य में भारतीय जनता पार्टी को जिस तरह से 18 सीटों पर सफलता मिली, उससे इस राज्य में सत्ता में आने का पार्टी का उत्साह बढ़ता जा रहा है। भारतीय जनता पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं में यह उत्साह दिख भी रहा है। ऐसे दौर में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को दो दिवसीय कोलकाता दौरे पर आए तो आमजन के अलावा भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं की भी उम्मीदें परवान चढ़ गईं। आमजन को विकास का सपना साकार होते दिख रहा है तो भारतीय जनता पार्टी नरेंद्र मोदी के सहारे आने वाले चुनावों की तैयारी में जुट गई है। वर्ष 2019 में दोबारा प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेंद्र मोदी पहली बार कोलकाता आए हैं। इसलिए प्रधानमंत्री की इस बंगाल यात्रा को विशेष दृष्टिकोण से भी देखा जा रहा है।

इससे पहले मोदी लोकसभा चुनाव के दौरान कोलकाता आए थे। तब उन्होंने आमजन के बीच भारतीय जनता पार्टी को मजबूती देने की पहल की और उनका दौरा कामयाबी की इबारत लिख गया। बंगाल में 18 सीटें जीतकर भारतीय जनता पार्टी ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की जमीन हिला दी थी। अब नरेंद्र मोदी का दौरा ऐसे समय में हो रहा है जब सीएए यानी नागरिकता संशोधन अधिनियम और एनआरसी यानी राष्ट्रीय नागरिक पंजी पर विपक्ष उनकी धज्जी उड़ाने में

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। फाइल फोटो।

जुटा है। एक तरफ ममता बनर्जी सड़कों पर उतर कर आंदोलनरत हैं तो दूसरी तरफ वामपंथी दल-कांग्रेस भी मोर्चा खोले हुए हैं। इस बीच सामने निकाय चुनाव और अगले वर्ष राज्य में विधानसभा चुनाव की भी चुनौती है। ऐसे में भारतीय जनता पार्टी को इस बात का पूरा भरोसा है कि नरेंद्र मोदी की इस दो दिवसीय यात्रा में नए समीकरण बनेंगे।

गौर करें तो ममता बनर्जी ने सोनिया गांधी की दिल्ली में सोमवार को बुलाई गई बैठक में जाने से मना कर दिया है और वह वामो-कांग्रेस के एनआरसी विरोधी आंदोलन से भी खुद को किनारे कर नई राह बना चुकी हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कोलकाता आने से पहले ही विपक्षी एकता में दो फाड़ हो जाने को भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता अपने लिए शुभ संकेत मान रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी बंगाल में भले सत्ता में नहीं है, लेकिन केंद्र में उसकी सरकार होने की वजह से तृणमूल, वामो-कांग्रेस उसी से दो-दो हाथ करते हैं। जाहिर है कि ऐसे में भारतीय जनता पार्टी निकाय चुनाव में अपनी पूरी ताकत दिखाकर बंगाल में एक बार फिर मजबूत दस्तक देने की तैयारी में है। ममता बनर्जी ने भी वर्ष 2010 में निकाय चुनाव के जरिये ही वामपंथी किले में सेंध लगाई थी। इसीलिए राजनीतिक पंडित नरेंद्र मोदी के इस दौरे को भाजपा के निकाय चुनाव प्रचार की नींव के तौर पर देख रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी निकाय चुनाव में ममता के किले को ढहाकर अपनी दमदार उपस्थिति की उम्मीद भी संजोए है। भारतीय जनता पार्टी का यह सपना कितना कारगर होगा यह तो आने वाला वक्त बताएगा, लेकिन इस बात से तो कतई इन्कार नहीं किया जा सकता कि अनेक परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास के बहाने नरेंद्र मोदी ने विकास के नए अध्याय लिखने शुरू कर दिए हैं। भारतीय जनता पार्टी के स्थानीय नेताओं ने नरेंद्र मोदी की विकास यात्रा का गुणगान भी शुरू कर दिया है। फिलहाल राज्य में निकाय चुनाव की अधिसूचना जारी नहीं हुई है, लेकिन इस दौरे को प्रचार अभियान की एक महत्वपूर्ण कड़ी कहा जाए तो कहीं से अतिशयोक्ति नहीं होगी।

उत्तराखंड

शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षकों की कमी

वैसे तो देश के अधिकांश राज्यों में विभिन्न स्तरों पर विद्यालयों में शिक्षकों की व्यापक संख्या में कमी है, जिसके समाधान के लिए समय-समय पर संबंधित राज्य सरकार के साथ ही केंद्र सरकार की ओर से भी कोशिश की जाती है। हालांकि इस समस्या का समाधान मुकम्मल तौर पर करने में अनेक प्रकार की बाधाएं भी आती हैं जिसमें सबसे बड़ी बाधा तो धन की उपलब्धता से ही जुड़ा होता है, लेकिन चूंकि शिक्षा एक बड़ा मसला है, लिहाजा इस ओर सरकारें ध्यान भी देती हैं।

ऐसे में उत्तराखंड में भी सरकारी विद्यालयों से लेकर महाविद्यालयों में शिक्षकों की कमी दूर करने को सरकार की ओर से शिद्दत से कोशिशें शुरू की गई हैं। सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में एलटी और प्रवक्ताओं के रिक्त पदों पर भर्ती के लिए अधियाचन भेजे गए हैं। उम्मीद जताई जा रही है कि अतिथि शिक्षकों के मामले में भी जल्द फैसला होगा। दरअसल, राज्य में माध्यमिक शिक्षकों के सात हजार से ज्यादा पद रिक्त हैं। विद्यालयों में स्थायी शिक्षकों की नियुक्ति को लेकर जितनी गंभीरता दिखानी चाहिए, अभी तक उसका अभाव ही दिखा है। अब शिक्षा मंत्रालय ने पहल करते हुए भर्तियों का सालाना कैलेंडर तैयार करने और हर साल सेवानिवृत्त होने वाले शिक्षकों की संख्या को देखते हुए रिक्त पदों में 25 फीसद वृद्धि कर भर्ती कराने के निर्देश शासन को दिए हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि नए शैक्षिक सत्र से मौजूदा व्यवस्था में बदलाव दिखेगा और विद्यालयों में शिक्षकों की पहुंच से शिक्षण में सुधार दिखेगा। कमोबेश यही स्थिति सरकारी महाविद्यालयों की भी है। वहां राज्य लोक सेवा आयोग से शिक्षकों के चयन की प्रक्रिया अब तेजी से पूरी हो सकेगी। हाई कोर्ट के आदेश पर शिक्षकों के चयन और तैनाती प्रक्रिया में पेश आ रही बाधा दूर हो सकेगी।

सरकारी विद्यालयों से लेकर महाविद्यालयों में शिक्षकों की कमी दूर की जानी चाहिए। शिक्षक न होने से छात्र-छात्राओं की पढ़ाई पर बुरा असर पड़ रहा है।

यदि ऐसा संभव हुआ तो सरकारी महाविद्यालयों को स्थायी शिक्षक मिल सकेंगे। विद्यालय हों या महाविद्यालय, दोनों में ही शिक्षकों के बगैर शिक्षा की गुणवत्ता की कल्पना नहीं की जा सकती। दूरदराज पर्वतीय क्षेत्र के महाविद्यालयों में शिक्षक नई नियुक्ति और पदोन्नति पर जाना पसंद नहीं कर रहे हैं। संबंधित महकमों और सरकार में दृढ़ इच्छाशक्ति की कमी ने इस समस्या को विकट बना दिया है। इस मामले में उत्तराखंड से कहीं ज्यादा अच्छी स्थिति में हिमाचल प्रदेश है। दोनों ही राज्यों की भौगोलिक परिस्थितियां समान हैं, बावजूद इसके उत्तराखंड जिन दिक्कतों से जूझ रहा है, उन्हें हिमाचल की तर्ज पर सुलझाने की जरूरत महसूस नहीं की गई। ऐसी समस्याओं का फौरी समाधान किया जा रहा है। यही वजह है कि विद्यालयी शिक्षा से लेकर सरकारी महाविद्यालयों में अच्छा शैक्षिक माहौल बन नहीं पा रहा है। शिक्षकों की तैनाती होने के बाद ही ये उम्मीद की जा सकती है कि माहौल में सुधार होगा। राज्यपाल ने भी कुलपतियों के साथ बैठक में सरकारी महाविद्यालयों में शिक्षकों की कमी दूर करने के निर्देश दिए थे।

झारखंड

संकट में बेजुबान और गौवंशीय पशु

देश के अनेक राज्यों में बेसहारा पशुओं परसंकट छाया हुआ है। दरअसल इन पशुओं के रहने या फिर भोजन की मुकम्मल व्यवस्था नहीं होने के कारण देश के अनेक इलाकों में बड़ी संख्या में इनकी मौत हो रही है। हालांकि ऐसा भी नहीं है कि इनकी देख-रेख के लिए सरकार की ओर से व्यवस्था नहीं की गई है, लेकिन इसकी पर्याप्त निगरानी के अभाव में अक्सर इस तरह की लापरवाही सामने आती है।

इसी संदर्भ में झारखंड की विभिन्न गोशालाओं में रखे गए गोवंशीय पशु संकट में हैं। इन बेजुबान पशुओं के चारे के लिए राज्य सरकार से राशि नहीं मिल पा रही है। गोशालाएं किसी तरह इनके चारे की व्यवस्था कर पा रही हैं। इनकी देखभाल व दवा आदि की राशि की भी पूर्ति इधर-उधर से मांगकर की जा रही है। यह स्थिति राज्य स्थित सभी 22 निबंधित गोशालाओं की है, जो निश्चित रूप से चिंताजनक है। इन गोशालाओं में लगभग पांच हजार गोवंशीय पशु रहते हैं। राज्य सरकार इन्हें राज्य गोसेवा आयोग के माध्यम से अनुदान देती है, जिससे यहां रखे गए गोवंशीय पशुओं

प्रतीकात्मक फोटो।

के लिए चारे, दवा आदि चीजों की आपूर्ति की जाती है। लेकिन पिछले छह माह से यह सेवा बंद है। इन गोशालाओं में लावारिस व पुलिस द्वारा तस्करों से बचाए गए गोवंशीय पशु ही पहुंचते हैं। इनका पालन व देखभाल राज्य सरकार से मिलने वाले अनुदान राशि से होती है। राज्य गोसेवा आयोग के सचिव ने भी स्वीकार किया है कि तीन माह पहले राज्य की 22 गोशाला के लिए 2.5 करोड़ की राशि विभाग से खुराक मद में मांगी गई थी। लेकिन अभी तक यह राशि नहीं मिली है। यह भी बताया गया कि यह राशि पीएल एकाउंट में है, जिसे निकालने पर फिलहाल रोक लगी है। इसके लिए राज्य का खजाना खाली होने को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। राज्य में गोसेवा आयोग गठित है, लेकिन यह कभी पूरी तरह सक्रिय नहीं रहा। कभी इसके अध्यक्ष का पद रिक्त रहता है, तो कभी इसे काम करने के लिए आवश्यक राशि नहीं मिलती है। ऐसे में इससे बहुत अपेक्षा नहीं की जा सकती। दूसरी तरफ, गोशालाओं को अनुदान के रूप में दी जाने वाली राशि की भी समीक्षा नहीं होती। इसका निगरानी तंत्र भी काफी कमजोर है। जो भी हो, इसका खामियाजा बेजुबान पशुओं को भुगतना पड़ता है। उम्मीद है कि नई सरकार न केवल समय पर अनुदान उपलब्ध कराएगी, बल्कि दी जाने वाली राशि के खर्च पर आवश्यक निगरानी रखेगी और खर्च का हिसाब भी लेगी। साथ ही, अनुदान वितरण में पारदर्शिता भी सुनिश्चित की जाएगी।

बिहार सरकार गवाह ही नहीं पूरे परिवार को देगी सुरक्षा

राज्य ब्यूरो, पटना

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में शनिवार को हुई कैबिनेट की बैठक में राज्य में गवाही सुरक्षा योजना-2018 पर सरकार की मुहर लग गई। अधिसूचना जारी होने के साथ ही पूरे प्रदेश में योजना लागू हो जाएगी।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर सरकार ने योजना में गवाहों के साथ जरूरत के अनुसार पूरे परिवार की सुरक्षा को लेकर खास इंतजाम किए हैं। सरकार की कोशिश है कि मुकदमों में ट्रायल सफलतापूर्वक हो और गवाह कोर्ट में बेधड़क गवाही दे सकें। कैबिनेट विभाग के अपर मुख्य सचिव आमिर सुबहानी ने बताया कि बिहार गवाह सुरक्षा योजना-2018 की स्वीकृति मिली है। योजना से गवाहों को पूर्ण सुरक्षा दी जाएगी। सुप्रीम कोर्ट द्वारा तय प्रावधान के तहत कोष की स्थापना की जाएगी। कोष में राज्य सरकार राशि जमा करेगी।

योजना में 'खास प्रावधान' : बकौल आमिर सुबहानी, गवाह पूरी तरह से सुरक्षित रहें इसको लेकर कई तरह के प्रावधान किए गए हैं। अगर कोई गवाह खतरे का अंदेशा जता कर शिकायत करता है तो प्रशासन तत्काल कार्रवाई करेगा। योजना में गवाह के अलावा पूरे घर के अगल-बगल सीसीटीवी लगाए जा सकते हैं। घर पर पुलिस की तैनाती की जा सकती है। पुलिस गश्त बढ़ाई जा सकती है। गवाह की पहचान छुपाने का भी प्रावधान किया गया है। अगर गवाह को किसी प्रकार का खतरा हो तो उसके लिए एक पुलिसकर्मी को खास जिम्मेदारी दी जाएगी जो लगातार उसकी निगरानी करेगा।

अगर गवाह को किसी तरह की परेशानी होगी तो वह तत्काल उस पुलिसकर्मी को सूचित करेगा। फिर भी अगर खतरा है तो उसे दूसरी जगह शिफ्ट भी किया जा सकता हैं। अगर गवाह कोर्ट रूम में अभियुक्त के सामने गवाही देने से कतराता हो तो व्यक्तिगत विचारण कक्ष में न्यायाधीश के सामने उसकी गवाही कराई जा सकती है। अधिक विवाद की स्थिति में कोशिश होगी कि कोर्ट में भी गवाह और अभियुक्त का आमना-सामना नहीं कराया जाए।

सरकारी कारिंदें सीधे नहीं खटखटा सकेंगे कोर्ट का दरवाजा

पटना : सरकार केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण (कैट) की तर्ज पर राज्य कर्मियों के लिए बिहार प्रशासनिक न्यायाधिकरण का गठन करेगी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में शनिवार को हुई कैबिनेट की बैठक में इस पर मुहर लग गई। बिहार सरकार के कर्मचारी सेवा संबंधित मामलों में अब सीधे कोर्ट का दरवाजा नहीं खटखटा सकेंगे। राज्यकर्मियों को सेवा संबंधित मामलों में अब बिहार प्रशासनिक न्यायाधिकरण में अपील करनी होगी।

आयुष्मान में इलाज के 154 नए पैकेज

संदीप पांडेय, लखनऊ

- केंद्र सरकार ने दी हरी झंडी, 15 फरवरी से मरीज ले सकेंगे लाभ
- 153 तरह के इंप्लांट-स्टंट होंगे शामिल, रोगियों को राहत
- कई बीमारियों के पैकेज का शुल्क भी बढ़ा दिया गया है

प्रतीकात्मक।

आयुष्मान योजना अब नए कलेवर में होगी। फर्जीवाड़े पर प्रहार के साथ ही इलाज का दायरा भी बढ़ेगा। केंद्र सरकार ने 154 नए पैकेजों की हरी झंडी दे दी है। 15 फरवरी से इनका लाभ मिलने लगेगा। खासकर, कैंसर का इलाज टाटा कैंसर इंस्टीट्यूट के आधार पर होगा।

आयुष्मान योजना यूपी में 2018 सितंबर से लागू हुई थी। अब फीड बैक के आधार पर 2020 में योजना में बदलाव किया जा रहा है। केंद्र सरकार ने राज्यों को 154 नए पैकेजों की सूची भेज दी है। इसमें क्लीनिकल व सर्जिकल दोनों प्रोसीजर शामिल हैं। साथ ही कई बीमारियों के पैकेज का शुल्क भी बढ़ा दिया गया है, ताकि निजी अस्पतालों में धन का अभाव अड़ंगा न बने।

टाटा की तर्ज पर कैंसर का इलाज: केंद्र सरकार ने कैंसर मरीजों का इलाज टाटा इंस्टीट्यूट के आधार पर कराने का फैसला किया है। ऐसे में वहां के विशेषज्ञों से आयुष्मान में कैंसर का पैकेज तय कराया गया। अब रेडियोथेरेपी, सर्जिकल व कीमोथेरेपी से इलाज करने में पैकेज फॉलो नहीं करने होंगे। एक पैकेज में ही तीनों तरह का इलाज शामिल होगा। इसमें इलाज की गाइड लाइन भी तय की गई है।

इंप्लांट का पहली बार विकल्प

पहले नी-रिप्लेसमेंट या अन्य हड्डी के सर्जरी के प्रोसीजर तय थे। इंप्लांट का अलग से कोई पैकेज निर्धारित नहीं था। ऐसे में मरीज की किस दिक्कत में कौन सा इंप्लांट बेहतर रहेगा, डॉक्टर के पास यह विकल्प नहीं था। इस बार लगभग 153 तरह के इंप्लांट व स्टंट शामिल किए गए हैं। इससे हड्डी व हृदय रोगियों को राहत मिलेगी।

आइसीयू शिफ्टिंग अब तुरंत

पहले मरीज को वार्ड से तुरंत आइसीयू में शिफ्ट करना मुश्किल होता था। कारण, अस्पताल को वार्ड, एचडीयू व आइसीयू का पैकेज के लिए कॉम्प्रिहेंसिव हेल्थ एंड इंटीग्रेटेड सर्विसेज (साची) को मरीज की हिस्ट्री भेजकर अनुमति लेनी होती थी। अब अस्पताल मरीज का ब्योरा दर्ज कर मरीज को अपने स्तर से तत्काल आइसीयू में शिफ्ट कर सकते हैं। साची बाद में वेरीफिकेशन कर भुगतान करेगा।

अब 1584 होंगे कुल पैकेज

आयुष्मान योजना में अब तक 1430 कुल पैकेज हैं। इनके तहत मरीजों का इलाज चल रहा है। वहीं फरवरी से लगभग 1584 पैकेज हो जाएंगे।

16 जनवरी से स्टाफ का प्रशिक्षण

योजना से जुड़े कर्मियों का प्रशिक्षण 16 जनवरी से शुरू होगा। माह के अंत तक सरकारी व निजी अस्पतालों के स्टाफ को पैकेज के प्रयोग के बारे में ट्रेनिंग दे दी जाएगी। साची की सीईओ संगीता सिंह के मुताबिक यूपी में 15 फरवरी से नए पैकेज लागू हो जाएंगे।

नर्मदा के कई जोन में रेत खनन का दुष्परिणाम, गायब हो रहे जीव

नदी को चार जोन में बांटा गया, अलग-अलग प्रयास की जरूरत बताई गई। प्रतीकात्मक।

आशीष दीक्षित, होशंगाबाद

मध्य प्रदेश की जीवनरेखा कही जाने वाली नर्मदा नदी में रेत के अवैध उत्खनन के कारण कई जलीय जीव गायब हो गए हैं। पर्यावरणविदों और प्राणी शास्त्रियों द्वारा किए गए शोध में यह स्थिति सामने आई है। शोधकर्ताओं का कहना है कि ऊद बिलाव, सेई, कछुआ, जलपातल, जलमानुस जैसे जीव कभी आसानी से दिख जाते थे, अब वे नजर नहीं आते।

लगातार बिगड़ती स्थिति की वजह और सुधार के उपाय तलाश रहे विशेषज्ञों ने रिपेरियन जोन तय किए हैं यानी ऐसे जोन जहां अलग-अलग प्रयास की आवश्यकता है। नदी को चार जोन में बांटा गया है। विशेषज्ञों के मुताबिक रेत माफिया ने नदी के रिपेरियन जोन-टू पर कब्जा कर लिया है। जबकि यही जोन इन जीवों का आवासीय क्षेत्र माना जाता है। छह जनवरी को हुई कार्यशाला में इन गंभीर मुद्दों पर चिंतन किया गया। इसमें कई वनस्पति शास्त्री, जलीय जीव विशेषज्ञ, जैव विविधता बोर्ड व प्रशासनिक अधिकारी शामिल हुए।

ये हैं चार जोन : विशेषज्ञों के अनुसार रिपेरियन जोन-वन में सर्वाधिक पानी रहता है। यह क्षेत्र जलीय जीवों के विचरण और वनस्पतियों के लिए सबसे उपयुक्त है। जोन-टू किनारे और गहरे पानी के बीच का हिस्सा कहलाता है। यह क्षेत्र जलीय जीवों के प्रजनन और आवास के अनुकूल रहता है। जोन-थ्री में किनारे से लगा जमीन का हिस्सा रहता है। जिस पर सर्वाधिक पौधारोपण का दावा किया गया है। जोन-फोर किनारे से दूर ठोस जमीन है। जहां पौधारोपण सहित अन्य अभियान चलाए जाते हैं।

> नर्मदा के रिपेरियन जोन-टू में रेत माफिया जिस तरह से रेत उत्खनन कर रहा है, इससे जलीय जीवों के आवासीय और प्रजनन क्षेत्र समाप्त हो चुके हैं। शासकीय प्रशिक्षणों में भी यह जानकारी दी गई है। यहां रेत उत्खनन पूरी तरह बंद करने के लिए ठोस प्रयास होना चाहिए।
>
> -आरआर सोनी, जिला समन्वयक, मप्र जैव विविधता बोर्ड

चिंताजनक

नशे में राष्ट्रीय स्तर पर पांचवें और जहरीली शराब से मौत के मामलें में तीसरे नंबर पर हरियाणा

'उड़ता पंजाब' से भी आगे उड़ता हरियाणा

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़

नशे के मामले में भले ही 'उड़ता पंजाब' बदनाम है, लेकिन हरियाणा उससे भी दो कदम आगे निकल गया है। उत्तर भारत के आठ राज्यों के साथ मिलकर नशे के खिलाफ अभियान चला रहा हरियाणा नशे के मामले में राष्ट्रीय स्तर पर पांचवें स्थान पर पहुंच गया है तो जहरीली शराब से मौत के आंकड़े में तीसरे नंबर पर। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के अनुसार वर्ष 2018 में ड्रग्स के कारण हरियाणा में जहां 86 लोग मारे गए, वहीं नकली शराब से 162 की मौत हो गई।

एनसीआरबी की इस रिपोर्ट के मुताबिक हरियाणा में एक साल में नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रॉपिक सब्सटांसेज (एनडीपीएस) अधिनियम के तहत दो हजार 587 मामले दर्ज हुए जो उत्तर भारत के राज्यों में सबसे ज्यादा है। पंजाब में हालात सुधरे हैं, लेकिन हरियाणा में स्थिति और बिगड़ गई। यहां से राजस्थान, गुजरात और उत्तर प्रदेश में भी अवैध शराब पहुंचाई जा रही है। वर्ष 2018 में नकली शराब के सेवन से प्रदेश में 162 मौतें दर्ज हुईं, जबकि सर्वाधिक आबादी वाले उत्तर प्रदेश में ऐसे 78 केस दर्ज हुए। इस दौरान पंजाब में 159 मौतें हुईं।

ड्रग्स से हुई मौतों में भी हरियाणा पंजाब से आगे रहा। ड्रग्स से देश में कुल 864 लोगों की जान गई, जिनमें 709 पुरुष और 155 महिलाएं थीं। ड्रग्स से हरियाणा में 86 लोगों की मौत के मुकाबले पंजाब 78 मौतों के साथ हरियाणा से एक स्थान नीचे रहा। हरियाणा-पंजाब के अलावा राजस्थान 153 मौतों के साथ देश में पहले नंबर पर रहा। इसके बाद मध्य प्रदेश में 94, कर्नाटक में 91 और उत्तर प्रदेश में 88 मौतें हुईं।

सिरसा में स्थिति गंभीर

ड्रग्स के सर्वाधिक मामले राजस्थान और पंजाब से सटे सिरसा जिले में सामने आए हैं। यहां वर्ष 2014 के दौरान 1405 ड्रग एडिक्ट इलाज के लिए पहुंचे थे, वहीं 2018 में ऐसे रोगियों की संख्या 18 हजार 551 पहुंच गई। पहले 25-30 वर्ष की आयु के युवा नशे की गिरफ्त में थे, लेकिन अब 15 से 20 साल के युवाओं की संख्या ज्यादा है।

राष्ट्रीय सर्वे की तर्ज पर सरकार कराएगी राज्य सर्वेक्षण

नशे और संगठित अपराध से निपटने के लिए हरकोका (हरियाणा संगठित अपराध नियंत्रण अधिनियम) लागू करने के बाद प्रदेश सरकार नशे पर राज्य सर्वेक्षण कराएगी। इसके आधार पर नशा के खिलाफ एक मजबूत तंत्र तैयार किया जा सकेगा। मौजूदा समय में पंचकूला में अंतरराज्यीय नियंत्रण सचिवालय बनाया गया है। सभी राज्यों के नोडल अधिकारियों के वाट्स-एप नंबर, मोबाइल तथा ई-मेल की जानकारी उपलब्ध हैं। सूचनाओं का आदान-प्रदान करने से नशे का नेटवर्क तोड़ने में आसानी होगी। जिला व खंड स्तर पर विशेष टास्क फोर्स का गठन किया जा रहा है।

गंगा में घुले जहर को अब दूर करेगा 'सिंथेटिक बीड्स', स्वच्छ होगा पानी

मुहम्मद रईस, वाराणसी

गंगा में घुले जहर को अब सिंथेटिक बीड्स दूर करेगा। प्रदूषक तत्वों को कम करने के लिए आइआइटी-बीएचयू के शोधार्थियों ने मशरूम से सिंथेटिक बीड्स बनाया है, जो गंगा जल को साफ करने में कारगर साबित हो सकता है। गंगा में मौजूद क्रोमियम, आर्सेनिक, निकिल, कैडमियम व लेड जैसे हैवी मेटल, खतरनाक बैक्टीरिया को सोख कर यह सिंथेटिक बीड्स पानी को स्वच्छ करते हुए तलहटी में बैठ जाएंगे।

रिसर्च टीम का नेतृत्व कर रहे स्कूल ऑफ बायो-केमिकल इंजीनियरिंग के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. विशाल व शोध छात्र वीर सिंह ने सिंथेटिक बीड्स बनाने को 'प्लुटोरस फ्लोरिडा' नामक मशरूम चुना। इसके पाउडर में चार तरह के रसायन का प्रयोग कर बीड्स तैयार किया। हालांकि पेटेंट के मद्देनजर प्रयुक्त रसायनों की जानकारी अभी साझा नहीं की जा रही है। इससे पूर्व टीम ने गत वर्ष भी छोटे आकार के कम क्षमतावान बीड्स तैयार किए थे, जिसके उत्साहजनक परिणाम को देख जून 2019 में न केवल इसका पेटेंट फाइल किया गया, बल्कि अब इसे और अपग्रेड कर दिया गया है। बीड्स के आकार से उसकी क्षमता तक को गंगा या इस जैसी अन्य बड़ी नदियों में इस्तेमाल करने के हिसाब से तैयार किया गया है। नदियों के जल प्रवाह को स्वच्छ करने के साथ शहरों में होने वाली जलापूर्ति से जुड़े टैंकों में इनका प्रयोग किया जा सकता है।

लैब में उगाया गया था मशरूम

डा. विशाल के मुताबिक 'प्लुटोरस फ्लोरिडा' मशरूम को प्रयोग के लिए लैब में ही उगाया गया। इसके लिए मध्य प्रदेश स्थित नार्दन कोल्ड फील्ड लिमिटेड से दूषित पानी लाकर उसमें चावल के भूसे को दो-तीन दिन के लिए भिगोया गया। इसके बाद भूसा बाहर निकाल पॉलीथिन बैग में भरा गया, जिनमें मशरूम के बीज डाले गए। जब पौधा निकल आया तो पाया गया कि इसने भूसे में से हैवी मैटल सोख लिए हैं। फूल निकलने पर पौधे को काट कर सुखा लिया गया और पाउडर बनाया गया। कुछ विशेष तरह के केमिकल का प्रयोग कर इस पाउडर से सिंथेटिक बीड्स बनाया गया। पानी डालते ही यह हैवी मेटल सहित विषाक्त पदार्थ व हानिकारक बैक्टीरिया को सोख कर खत्म कर देता है।

44 प्रतिशत लोग भारत में (पुरुष और महिला) तंबाकू का सेवन करते थे वर्ष 2000 में। 2025 तक इनमें लगभग 22.3 प्रतिशत की कमी आने की उम्मीद है। वैश्विक रूप से वर्ष 2000 में 33.3 प्रतिशत लोग तंबाकू के लती थे। इनकी संख्या 2025 में 20.9 प्रतिशत तक हो सकती है।

शह और मात है हृदयेश्वर की जिंदगी

इनसे मिलिए

मनीष गोधा, जयपुर

पॉवर व्हील चेयर पर बैठे हृदयेश्वर प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्टीफन हाकिंग की याद दिलाते हैं। हाकिंग उनके प्रेरणास्रोत भी हैं। 17 साल की उम्र में हृदयेश्वर ने कई उपलब्धियां हासिल की हैं। वह सबसे कम उम्र के पेटेंट धारक भी हैं। उन्होंने 60 खिलाड़ियों के साथ खेलने वाला गोलाकार शतरंज भी बना डाला है। मांसपेशियों की लाइलाज बीमारी से जूझ रहे इस नन्हे वैज्ञानिक को गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद राष्ट्रीय बाल शक्ति पुरस्कार से सम्मानित करेंगे।

कहते हैं कि हौसला हो तो हर काम आसान हो जाता है, ये कर दिखाया है 17 साल के हृदयेश्वर सिंह भाटी ने। हृदयेश्वर जब सिर्फ चार साल के थे तो चलते-चलते अचानक गिर पड़े और मांसपेशियों की लाइलाज बीमारी ड्यूशिन मस्कुलर डिस्ट्रोफी के शिकार हो गए। इस बीमारी ने उनके 80 फीसद शरीर को लकवाग्रस्त कर दिया। हृदयेश्वर आज उपलब्धियों का आसमान नाप रहे है। इस गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद राष्ट्रपति भवन में उन्हें राष्ट्रीय बाल शक्ति पुरस्कार से सम्मानित करेंगे और वो दिल्ली में जनपथ में निकलने वाली राष्ट्रीय परेड का हिस्सा भी बनेंगे।

अपनी पावर व्हीलचेयर पर बैठे हृदयेश्वर प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्टीफन हाकिंग की याद दिलाते हैं। हृदयेश्वर उन्हें प्रेरणास्रोत मानते हैं। बैठे-बैठे कुछ सोचना और फिर उस पर काम शुरू कर देना, यह हृदयेश्वर की आदत में शामिल है। इसी के चलते वे तीन गोलाकार शतरंज बना चुके हैं और इनके पेटेंट भी उनके पास है। इसी आविष्कार ने उन्हें देश का सबसे छोटा पेटेंट धारक बना दिया है। क्योंकि सिर्फ नौ साल की उम्र में उन्होंने छह खिलाड़ियों के खेलने वाला गोलाकार शतरंज बना लिया था। इसके बाद उन्होंने 12 और 60 खिलाड़ियों के साथ खेलने वाला गोलाकार शतरंज भी बना डाला।

ऐसे मिली प्रेरणा: हृदयेश्वर बताते हैं कि वे अपने पिता के साथ शतरंज खेल रहे थे। कुछ दोस्त आए और वो भी खेलना चाहते थे। बस यहीं से ज्यादा लोगों के खेल सकने वाला शतरंज बनाने का आइडिया दिमाग में आया। इन आविष्कारों के कारण दुनिया भर में 100 अलग-अलग तरह के शतरंज बनने लगे। नतीजतन भारत अलग-अलग शतरंज वेरिएंट के आविष्कारों की संख्या में विश्व में शीर्ष पर पहुंच गया।

खुद बनाए गए गोलाकार शतरंज के साथ हृदयेश्वर सिंह भाटी। फाइल

तीन पेटेंट के हैं मालिक

आज हृदयेश्वर के नाम तीन पेटेंट हैं। इसके अलावा उन्होंने अन्य चीजें भी बनाई हैं इनमे सबसे अहम है दिव्यांगों के लिए रैंप जो उनकी व्हीलचेयर को सीधे गाड़ी में पहुंचा दे। उन्होंने सामान्य 9 बाई 9 के सुडोकू की जगह 16 बाई 16 का सुडोकू भी बनाया है। हृदयेश्वर कहते हैं हमारे देश में दिव्यांगों के लिए दो ही स्थितियां हैं। पहली यह है कि स्थितियों को झेलो और दूसरी स्थितियों के अनुसार आविष्कार करो, तो मैंने आविष्कार करना स्वीकार किया। हृदयेश्वर के पिता सरोवर सिंह भाटी बताते है कि हृदयेश्वर ने इस्तेमाल करने वाली ज्यादातर चीजें खुद तैयार कराई हैं। उसने ऐसा टायलेट भी बनवाया है जो इस्तेमाल के बाद सोफा बन जाता है।

संगीत और विज्ञान के दीवाने हैं

हृदयेश्वर संगीत और विज्ञान के दीवाने हैं। उनका विचार है कि कंप्यूटर्स की प्रोग्रामिंग बाइनरी सिस्टम यानी 0,1 के बजाय ट्राइनरी सिस्टम 0, 1, 2 पर होनी चाहिए, ताकि साइबर अटैक से बचा जाए। हृदयेश्वर प्रधानमंत्री से अपना यही आइडिया शेयर करेंगे ताकि इस पर रिसर्च हो सके। हृदयेश को भारत सरकार द्वारा अति उत्कृष्ट आविष्कारक बालक 2019 के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। संगीत में वो फ्रेड्डी मर्क्युरी, बीटल्स और बीसवीं सदी के सातवें दशक के इंग्लिश बैंड के दीवाने है। इसके साथ वह कई वीडियो गेम भी खेलते हैं।

स्कूल के टापर्स में थे शुमार

हृदयेश्वर बीमारी के बाद भी कुछ समय तक स्कूल गए और अपने स्कूल के टापर्स में थे, लेकिन अब ओपन स्कूल से पढ़ाई कर रहे हैं। हर दिन करीब 10 घंटे वो इंटरनेट के जरिए देश-दुनिया की जानकारी लेते हैं। कई तरह के क्विज भी खेलते हैं। मां मीनाक्षी कंवर अंग्रेजी की लेक्चरर हैं और पिता सरोवर सिंह खुद गणित में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। जीवन के प्रति हृदयेश्वर का रवैया बेहद सकारात्मक है और वे कहते हैं जो चल नहीं सकता वो हौसले के दम पर उड़ सकता है।

चर्चित चेहरा

अब्दुल समद
रोहित जैसा नया स्टार

मंदिरों के शहर जम्मू के उस्ताद मोहल्ला के पार्क में खेलते हुए आगे बढ़े अब्दुल समद के लिए क्रिकेट जुनून है। जम्मू-कश्मीर रणजी टीम के इस खिलाड़ी ने गत चार मैचों में 127 .58 के स्ट्राइक रेट से 370 रन बनाए हैं, जो यह साबित करता है कि वह लंबी रेस का घोड़ा हैं। आलराउंडर इरफान पठान की खोज कहे जाने वाले समद रोहित शर्मा को आदर्श मानते हैं। आइपीएल में हैदराबाद सनराइजर्स की टीम में चुने जाने के बाद उनके खेल में आक्रामकता और भी बढ़ गई है। प्रशंसकों की नजर में तो वह देश के नए सिक्सर किंग हैं।

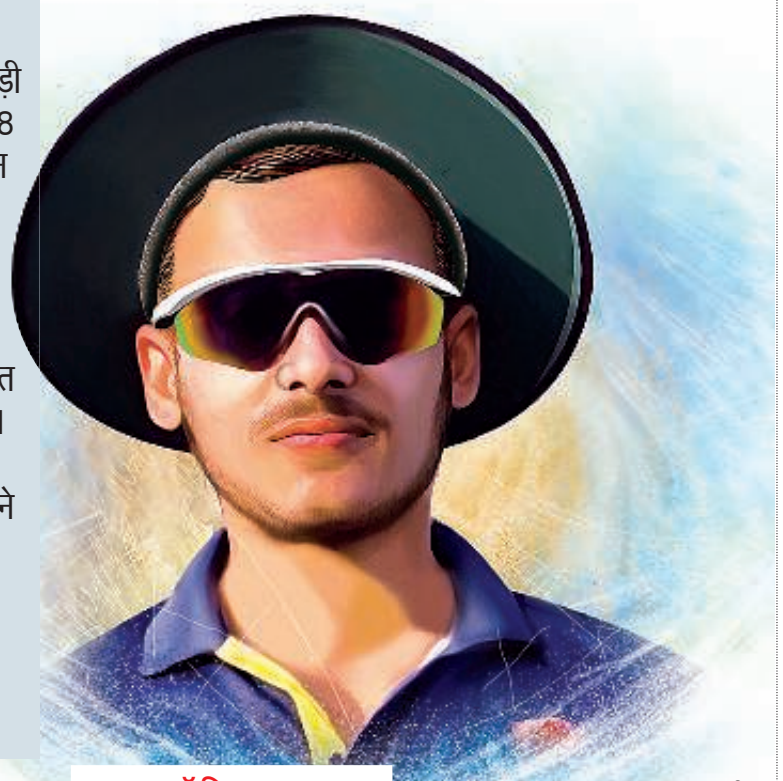

अशोक शर्मा, जम्मू

रणजी ट्राफी के मैच में झारखंड के खिलाफ 75 गेंदों पर 128 रन हों या असम के खिलाफ 72 गेंदों पर नाबाद 103 रन। यह ताबड़तोड़ बल्लेबाजी ही जम्मू-कश्मीर के 18 साल के उभरते आलराउंडर अब्दुल समद की पहचान है। रोहित शर्मा को आदर्श मानने वाले इस युवा सितारे के रणजी पदार्पण को प्रशंसक नए सिक्सर किंग के उदय के तौर पर देख रहे हैं। हाल ही में सनराइजर्स हैदराबाद ने दाएं हाथ के बल्लेबाज एवं बायें हाथ के लेग स्पिनर अब्दुल समद को आइपीएल के लिए अपनी टीम में चुना है। अब्दुल ने इस रणजी सत्र के चार मैचों में 127.58 के स्ट्राइक रेट से 370 रन ठोंके हैं। इसमें 27 छक्के और 30 चौके शामिल हैं। इससे पता चलता है कि उनकी तैयारी कितनी मजबूत है।

जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले के कालाकोट में जन्मे अब्दुल समद को खेल का माहौल परिवार से ही मिला। पिता फारूक मोहम्मद स्वयं युवा सेवा एवं खेल विभाग में थे। उनका पहला प्यार क्रिकेट ही था। रणजी टीम में चयन नहीं हुआ तो वॉलीबाल को चुना और राष्ट्रीय स्तर पर आठ बार जम्मू-कश्मीर का प्रतिनिधित्व किया। वह चाहते थे कि बेटे देश के लिए खेले।

पिता बताते हैं कि समद ने दस वर्ष की आयु में युवा सेवा एवं खेल विभाग की ओर से ऊधमपुर में आयोजित अंडर-14 क्रिकेट प्रतियोगिता में बल्ले और गेंद से शानदार प्रदर्शन कर अपनी टीम को जीत दिलाई। क्रिकेट समद का जुनून है और इसके लिए वह मैदान पर तो पसीना बहाते ही हैं, घंटों दर्पण के सामने खड़े होकर शैडो प्रैक्टिस करते हैं। उनके बड़े भाई और क्रिकेटर तैयब फारूक कहते हैं कि उसने जब से होश संभाला है, सिक्सर ही उसका तसलीबख्श शॉट रहा है।

इरफान पठान की खोज हैं समद : समद को पूर्व आलराउंडर और जम्मू-कश्मीर क्रिकेट से जुड़े इरफान पठान की खोज बताया जा रहा है। उन्होंने टैलेंट हंट में समद समेत पांच खिलाड़ियों को चुना था। समद के जोश को देखकर वह पहले ही कह चुके हैं कि आने वाला समय इसी खिलाड़ी का है। समद काफी कुछ पृथ्वी शा जैसे भी हैं।

कपिल देव के ऑटोग्राफ वाले बैट से की शुरुआत: समद ने जीवन में पहली बार करीब पांच वर्ष की आयु में कपिल देव के ऑटोग्राफ वाला बैट पकड़ कर की थी। उनके पिता दिल्ली से कपिल के ऑटोग्राफ वाला बैट लेकर आए थे। जब समद ने यह बैट पकड़ा तो काफी देर उससे खेलते रहे। वो बैट उन्होंने आज भी संभाल कर रखा है।

पढ़ाई के लिए कालाकोट से जम्मू लाए थे नाना: समद के पिता मोहम्मद फारूक की नौकरी राजौरी जिले में थी। अब्दुल समद और उनके भाई को नाना स्व. मुहम्मद अफजल अपने साथ उस्ताद मोहल्ला स्थित घर ले आए। लारेंस पब्लिक स्कूल में पढ़ाई के दौरान ही क्रिकेट के प्रति लगन देखकर परिजनों ने उन्हें स्टेडियम भेजना शुरू कर किया, जहां रणधीर सिंह राजन से समद ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

पापा ने डाला चसका : समद के पिता मुहम्मद फारूक बताते हैं कि कुछ दिन पूर्व मैं कह रहा था कि अच्छा होता आपने अच्छा पढ़ लिया होता। खेलों में हमारे जैसे लोगों के लिए कहां स्कोप है। इस पर समद ने कहा, क्रिकेट का चस्का भी तो आपने ही लगाया था। उस समय लगा था कि कहीं इन्हें सफलता न मिली तो इनका दोषी भी मैं ही बनूंगा। अल्लाह का शुक्र है कि आज उसे सफलता की राह दिखने लगी है।

काम आई मां की सख्ती: समद की मां फिरजाना कौसर का कहना है, 'मैं किसी से यह नहीं सुनना चाहती थी कि आपके बेटों को आवारागर्दी करते देखा। कभी उन्हें गलियों, सड़कों में खड़े नहीं होने दिया। यहां खेलने भी जाते थे, वहां भी कई बार देखने पहुंच जाती थी।'

एक नजर कॅरियर पर

2018-19	में सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में पर्दापण किया
27	सितंबर 2019 को विजय हजारे ट्रॉफी में खेलने का मौका मिला
9	दिसंबर 2019 को जम्मू-कश्मीर की रणजी टीम में चयन

समद टी-20 मुकाबलों में सलामी बल्लेबाज की भूमिका निभाते हैं और रणजी मुकाबलों में लोअर मिडिल आर्डर पर धूम मचा रहे हैं

सनराइजर्स हैदराबाद की ओर से प्लेइंग इलेवन में खेलने का मौका मिले तो प्रतिभा साबित कर पाऊंगा। अब जिम्मेदारी और अधिक बढ़ गई है। लक्ष्य शेष रणजी मुकाबलों में बेहतरीन प्रदर्शन करना है।

-अब्दुल समद

बिहार की बेटी बनी इंटरनेशनल यंग प्लेयर

उभरता सितारा

जितेंद्र कुमार, पटना

बिहार के बाढ़ की स्वीटी ने साबित कर दिखाया है कि अगर लगन हो तो किसी भी लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है, दौड़ने के शौक से शुरू होकर रग्बी प्लेयर बनने की उनकी कहानी अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंच गई है, वह इस साल की इंटरनेशनल यंग प्लेयर चुनी गई हैं।

खेलने के नाम पर उसे सिर्फ इतना पता था कि दौड़ना है और फिर जब उसने दौड़ना शुरू किया तो सबको पीछे छोड़ दिया। पहले एथलेटिक्स और फिर रग्बी में भी। नतीजा, आज वह इंटरनेशनल यंग प्लेयर ऑफ द ईयर है। यह कहानी है बिहार के बाढ़ के नवादा गांव की रहने रग्बी खिलाड़ी स्वीटी कुमारी की। वर्ल्ड रग्बी द्वारा जारी वर्ष 2019 के विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत उसे यह पुरस्कार दिया गया है। पिछले साल स्वीटी ने एशियन यूथ व सीनियर रग्बी चैंपियनशिप में बेस्ट प्लेयर का खिताब जीता था।

स्वीटी के पिता दिलीप कुमार चौधरी नॉन बैंकिंग कंपनी में एजेंट हैं। कमाई बहुत ज्यादा नहीं है। इसमें ही सात भाई-बहनों का लालन-पालन होता है। स्वीटी बताती हैं कि खेल से ज्यादा उनकी रुचि दौड़ने में थी। नवादा गांव के मध्य विद्यालय में पढ़ने के दौरान ही उनका भाई सुशांत 100 मीटर दौड़ प्रतियोगिता के लिए प्रैक्टिस करता था। स्वीटी भी देखा-देखी उनके पीछे दौड़ने लगी। उसकी गति इतनी तेज थी कि भाई क्या, गांव का कोई लड़का उसकी बराबरी नहीं कर पाता।

एसएस गर्ल्स स्कूल, बाढ़ में पढ़ने के दौरान उन्होंने स्कूल और जिलास्तरीय कई दौड़ प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। उस समय उनकी गति 12.8 सेकेंड में 100 मीटर दौड़ने की थी। स्कूल की ओर से जिला और मंडल स्तरीय प्रतियोगिताओं के दौरान ही उनकी मुलाकात रग्बी के कोच पंकज कुमार ज्योति से हुई। पंकज ने ही स्वीटी को सुझाव दिया कि वह एक बार रग्बी खेल को आजमाए। इसी सुझाव और प्रेरणा से स्वीटी ने रग्बी खेल को न सिर्फ चुना बल्कि खुद पहल कर टीम भी तैयार की। इसके बाद क्या था स्वीटी ने जल्द ही राज्य टीम में अपनी जगह पक्की कर ली और फिर तीन साल के भीतर इंडियन अंडर-17 और सीनियर महिला टीम में शामिल हो गईं।

गांव वाले भी नहीं जानते थे रग्बी क्या है, अब सब जान गए : स्वीटी कहती हैं, कि जब मैंने रग्बी खेलना शुरू किया तो सब यही पूछते यह क्या खेल है? मेरे माता-पिता या गांव के लोग भी नहीं जानते थे कि रग्बी क्या है और कैसे खेला जाता है? मगर अब पूरा गांव जान गया है। अब तो मेरे गांव के कई बच्चे रग्बी खेलते हैं। बिहार टीम में चार-पांच खिलाड़ी बाढ़ के ही हैं।

स्वीटी बताती हैं कि गांव में जब छत पर भाई-बहन के साथ खेलती थी तो हवाई जहाज देखकर बहुत खुश होती थी। मन में ख्याल आता था कि हवाई जहाज की ऊंचाई से मेरा गांव कैसा लगता होगा? सपना था कि एक बार हवाई जहाज से अपने गांव को देखूंगी। वर्ष 2017 में रग्बी मैच के लिए दुबई जाते समय जब हवाई जहाज में बैठी तो लगा कि छत के नीचे से गांव के लोग मुझे देख रहे होंगे। बाद में सिंगापुर, इंडोनेशिया, फिलिपींस और जापान सहित अन्य देशों में भी आयोजित रग्बी प्रतियोगिता के लिए विदेश जाना हुआ। स्वीटी बताती है कि विदेश से जब घर लौटती हूं तो देश-दुनिया की बातें अपने दोस्तों और परिवार के साथ शेयर करती हूं।

अवार्ड तो मिले मगर नहीं मिलते हैं रुपये: स्वीटी की चर्चा हर ओर है। अखबारों में तस्वीर आती है। खेलने के लिए वह विदेश जा रही हैं, इन सब बातों ने उसकी जिंदगी कितनी बदली? इस सवाल पर स्वीटी कुछ देर चुप होकर कहती है, ज्यादा नहीं बदली। पहले गांव की महिलाएं जो पीठ पीछे बुराई करती थीं, वे जरूर चुप हो गईं मगर आर्थिक मोर्चे पर संघर्ष अब भी जारी है। आज मैं इंटरनेशनल प्लेयर हूं मगर खेलने के लिए आज भी महिला रग्बी खिलाड़ियों को मैच फीस नहीं मिलती।

दो बार बेस्ट प्लेयर भी रह चुकी हूं मगर उसके लिए भी कोई नकद इनाम नहीं मिला। सम्मान से हौसला तो बढ़ता है, मगर एक बड़ी जरूरत पैसों की भी होती है। खासकर रग्बी जैसे खेल के लिए पौष्टिक डाइट की जरूरत होती है। अभी तक पापा के पैसों से ही जीवनयापन चल रहा है। रग्बी के साथ ही ग्रेजुएशन की पढ़ाई भी कर रही हूं।

बिहार में रग्बी के प्रशिक्षण की कमी

स्वीटी कहती हैं, बिहार में अन्य खेलों के लिए एकलव्य प्रशिक्षण केंद्र तो हैं, लेकिन रग्बी के लिए कोई संस्थान नहीं है। खुद से छोटी लड़कियों को खुद प्रशिक्षण देती हूं। गांव में लोग बेटियों को खेलकूद के लिए बाहर भेजना नहीं चाहते हैं। इसके बावजूद जो लड़कियां आती हैं उन्हें रग्बी सिखाती हूं। खुद भी मैदान में अभ्यास करती हूं। अगला लक्ष्य है कि 2020 में इंटरनेशनल रग्बी में भारत के लिए गोल्ड मेडल लेकर आऊं।

इंडियन कोबरा
का जीनोम डिकोड

पिछले हफ्ते अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ताओं की एक टीम ने यह जानकारी दी थी कि उन्होंने इंडियन कोबरा के जीनोम को डीकोड कर लिया है। इस प्रक्रिया में उन जीन की पहचान की जाती है जो इसके विष को परिभाषित करते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि इसके माध्यम से वह अधिक प्रभावी एंटीवेनम दवाएं बनाई जा सकेंगी।

2030
तक विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सर्पदंश से होने वाली मौतों की संख्या को आधा करने की रणनीति बनाई है

50,000
मौतें होती हैं भारत में सर्पदंश की वजह से सालाना, दुनियाभर में यह आंकड़ा एक लाख तक पहुंच जाता है।

कैसे हैं मौजूदा एंटीवेनम

वेनम यानी कि जहर 140 ऑड प्रोटीन या पेप्टाइड्स का एक जटिल मिश्रण है। इनमें से केवल कुछ घटक विषाक्त पदार्थ होते हैं जिनके लक्षण सांप के काटने के बाद दिखाई देते हैं। वर्तमान में मौजूदा एंटीवेनम इन विषों पर विशेष रूप से टार्गेट नहीं कर पाता है। एंटीवेनम का उत्पादन एक शताब्दी पुरानी प्रक्रिया द्वारा किया जा रहा है। जैसे कि विष की एक छोटी मात्रा को घोड़ा या फिर भेड़ को दिया जाता है, इसके बाद इन जानवरों का प्रतिरक्षा तंत्र विष से शरीर की रक्षा के लिए एंटीबाडी का उत्पादन करता है। इसी एंटीबॉडी को एकत्र करके एंटीवेनम के रूप में विकसित किया जाता है। यह प्रक्रिया बहुत जटिल होती है और इससे तैयार एंटीवेनम पूरी तरह प्रभावी भी नहीं हो पाता है। बता दें कि इस शोध को 42 शोधकर्ताओं ने अंजाम दिया है। इसमें एक भारतीय शोधकर्ता भी शामिल हैं।

भारत में सांपों की प्रजातियां

1.	इंडियन कोबरा
2.	कॉमन करैत
3.	रसेल वाइपर
4.	सॉ स्केल्ड वाइपर

जीनोम के डिकोड होने से मिलेगी मदद

भारतीय कोबरा के जीनोम में शोधकर्ताओं ने 19 प्रमुख विष जीनों की पहचान की है जो केवल सांप काटने के उपचार में मायने रखते हैं। शोधकर्ताओं ने बताया कि इस जानकारी के माध्यम से सिंथेटिक ह्यूमन एंटीबॉडी का प्रयोग कर बेहतर एंटीवेनम बनाए जा सकते हैं। घोड़ों से मिले एंडीबॉडी में अक्सर

क्या होता है जीनोम

जीनोम किसी भी जीव के डीएनए में मौजूद सभी जीन का एक पूर्ण सेट होता है। प्रत्येक जीनोम में जीव के बारे में संपूर्ण जानकारी होती है। जीनोम को डिकोड करके जीव की विशेषता के बारे में भी पता लगाया जा सकता है। मानव जीनोम में अनुमानत: 30,000 से 35,000 जीन होते हैं।

जानवरों में भी होती हैं संवेदनाएं

संवेदनशीलता ही इंसान और जानवर में अंतर करती है, लेकिन आपको जानकार आश्चर्य होगा कि जानवरों में भी संवेदनाएं होती हैं। वे भी इंसान की तरह खुश होते हैं, हंसते हैं, सहानुभूति दिखाते हैं। प्राइमेटोलॉजिस्ट प्रोफेसर फ्रांस डे वाल ने करीब चार दशकों के अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष पेश किया है। उनकी किताब 'मामाज लास्ट हग' में जानवरों से जुड़ी ऐसे अनेक बातें दुनिया के सामने प्रमाणिक रूप से पेश की गई हैं। उनके अनुसार जानवर और हमारे दिमाग में इतनी समानता होती है कि मानव के फोबिया का इलाज चूहों के दिमाग में भय पैदा होने के अध्ययन से किया जाना संभव हुआ। वैज्ञानिकों ने धीरे-धीरे यह मानना शुरू कर दिया है कि केवल इंसान ही एकमात्र प्राणी नहीं होता जो भावनाएं समझता है।

कुत्तों को एक दूसरे से होती है जलन

यूनिवर्सिटी ऑफ वियना के शोधकर्ताओं ने बताया कि कुत्ते ईर्ष्या करने में पूरी तरह सक्षम होते हैं। क्लिवर डॉग लैब की टीम ने दो कुत्तों को प्रशिक्षित करना शुरू किया। दोनों खुश थे, लेकिन जैसे ही एक कुत्ते को रोटी का टुकड़ा मिलता, दूसरा नाराज हो जाता। प्रो. वाल कहते हैं कि एक बार दो बंदरों को एक साथ रखा। ककड़ी का प्रलोभन देकर मैंने छोटा सा कार्य दिया। लेकिन, जब मैंने एक बंदर को अंगूर देना शुरू किया वहां एक ड्रामा शुरू हो गया। जिस दूसरे को ककड़ी दिया वह हड़ताल पर चला गया। उसने ककड़ी के टुकड़े मुझ पर फेंकना शुरू कर दिया।

चिंपाजी की होती है अच्छी समझ

प्रो. वाल की किताब में ऐसी कई घटनाएं हैं जो बताती हैं कि चिंपाजी बहुत ही समझदार जीव होते हैं। वे इंसानी मनोभावों, जज्बातों को बहुत अच्छी तरह से समझते हैं। हंसते हैं, रोते हैं और इस तरीके के मनोभाव व्यक्त करने वाले कई क्रियाकलाप को अंजाम देते हैं। लोगों से उनके भावनात्मक जुड़ाव की भी कहानियां हैं। एक मामले में मादा चिंपांजी द्वारा बच्चे को बोतल से दूध पिलाने का उल्लेख है। एक घटना में मादा चिंपांजी को शिकारियों से बचाए जाने का उल्लेख है जिसमें जंगल में छोड़े जाने से पहले वह बचाने वाले के पास आती है और उसे गले लगाती है। मानो वह बिना धन्यवाद दिए नहीं जाना चाहती हो। कई डॉल्फिन और व्हेल ने भी बचाने वाले गोताखारों के प्रति ऐसी ही संवेदना जताई है।

जीव एक मनोभाव अनेक

अरस्तू सोचते थे कि हास्य ही इंसान को जानवरों से अलग करता है। मनोवैज्ञानिकों को भी इसमें संदेह है कि जानवर खुशी या मजाक की स्थिति में हंसते हैं, लेकिन यह ज्ञात है कि लंगूरों को फिल्में देखना पसंद होता है। जब कोई इंसान जिसे वे पसंद करते हैं, गिरता है तो उनके चेहरे पर चिंता होती है, लेकिन जब उन्हें लगता है कि वे ठीक हैं वे हंसते हैं। जैसा कि हम अक्सर करते हैं। इधर कुत्तों की वफादारी की कई कहानियां हैं। ग्रेफ्रियार्स बॉबी जिसने अपनी मौत से पहले लिक के कब्र की 14 वर्षों तक रक्षा की। इस तरह की वफादारी अन्य जानवरों में भी होती है। हाथी अपने मृत साथी के दांत या हड्डी एकत्र करता है।

दुखी होते हैं वूल

इंसान की तरह ही दूसरे जीवों का तंत्रिका तंत्र रिश्ते बनाने के लिए जिम्मेदार होता है। जो प्रेम में पड़े होते हैं उनके रक्त में ऑक्सिटोसिन का स्तर उनसे काफी ज्यादा होता है जो सिंगल होते हैं। इसी तरह का हॉर्मोन उत्तरी अमेरिका में पाए गए दो प्रजातियों के चूहे (वूल) के बीच प्यार संबंध को आकार देता है। मीडो वूल कामुकतापूर्ण जीवन जीते हैं, जबकि प्रेयरी वूल जोड़े बनाते हैं। जिसमें नर व मादा विशेष रूप से मिलते हैं और संतान पैदा करते हैं। इनके दिमाग में ज्यादा ऑक्सिटोसिन होता है। यदि वे अपने साथी को खो देते हैं वे तनाव और अवसाद की स्थिति में आ जाते हैं।

स्तनपायी करते हैं देखभाल

आपने गाइड कुत्तों के बारे में सुना ही होगा, लेकिन, शायद थाइलैंड के अभयारण्य में रहने वाले उस हाथी मेइ पर्म के बारे में नहीं। जब भी उसकी अंधी दोस्त जोकिया परेशान होती या छटपटाती, मेइ दौड़ कर उसके पास जाता। उसे अपनी सूंड से सहलाता। उसके मुंह में अपना सूंड रख देता। गौरतलब है कि सूंड हाथी के लिए सबसे संवेदनशील अंग होता है।

आइटीपीसीएल के कर्ज पुनर्गठन में मुश्किल

नई दिल्ली, आइएएनएस : अन्य कंपनियों पर बकाया के चलते आइएलएंडएफएस तमिलनाडु पावर कंपनी लिमिटेड (आइटीपीसीएल) के कर्ज पुनर्गठन में मुश्किलें आ रही हैं। कंपनी का तमिलनाडु जनरेशन एंड डिस्ट्रीब्यूशन कॉरपोरेशन लिमिटेड (टीएएनजीईडीसीओ) पर काफी बकाया है। टीएएनजीईडीसीओ पर बकाया के चलते कर्ज के पुनर्गठन में रुकावट तो आ ही रही है, साथ ही कर्जदाताओं की रिकवरी भी बाधित हो रही है।

प्रधानमंत्री ने पूर्वोत्तर भारत में उद्योग व वाणिज्य को बढ़ावा देने के बारे में हमारे सुझावों को गंभीरता से सुना है। वे देश के इस हिस्से के विकास को लेकर गंभीर हैं।

— राजीव सिंह, महानिदेशक, इंडियन चेंबर ऑफ कॉमर्स

बढ़ते कदम ▶ केंद्रीय पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने किया मिशन पूर्वोदय का शुभारंभ

पूर्वी भारत से उगेगा समृद्धि का सूरज : प्रधान

मिशन का मुख्य उद्देश्य शहर में एकीकृत स्टील हब के माध्यम से पूर्वी भारत का त्वरित विकास

जागरण संवाददाता, कोलकाता

कोलकाता में कार्यक्रम को संबोधित करते प्रधान। फाइल

स्टील हब से बदलेगी इकोनॉमी की तस्वीर

- इस्पात संयंत्रों के पास स्टील क्लस्टर बनेंगे, छोटे और मझोले स्टील को प्राथमिकता मिलेगी
- इन्फ्रास्ट्रक्चर और लॉजिस्टिक के हब विकसित होंगे, बड़ी संख्या में रोजगार पैदा होंगे।
- इस्पात क्षेत्र के लिए कैपिसिटी एडिशन होगा, भारत इस्पात निर्यातक देश बनेगा

केंद्रीय पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने शनिवार को कोलकाता में मिशन पूर्वोदय का शुभारंभ किया। मिशन का मुख्य उद्देश्य शहर में एकीकृत स्टील हब के माध्यम से पूर्वी भारत का त्वरित विकास करना है। केंद्रीय मंत्री ने मिशन पूर्वोदय को वह योजना बताया, जिसका दम पर भारत पांच लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बन सकता है। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआइआइ) द्वारा शनिवार को आयोजित कार्यक्रम में योजना का शुभारंभ करते हुए प्रधान ने कहा कि चाहे स्वतंत्रता संग्राम हो या सामाजिक सुधार, पूर्वी भारत से हर क्षेत्र में देश का नेतृत्व किया है। पूर्वी भारत में असीम संभावनाएं हैं। प्राकृतिक संपदा से भरपूर होने के बावजूद क्षेत्र का आर्थिक व सामाजिक विकास देश के अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा कम हुआ है। मिशन पूर्वोदय के साथ क्षेत्र के विकास को एक नया आयाम मिलेगा।

पूर्वी भारत के विकास के लिए केंद्र सरकार द्वारा उठाए गए कदमों की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने पूर्व भारत के विकास पर अपूतपूर्व कोशिश की है। हमारी सरकार ने 102 लाख करोड़ नेशनल इन्फ्रास्ट्रक्चर पाइपलाइन योजना की शुरुआत की है। अब पाइपलाइन हो या पेयजल आपूर्ति, जल मार्ग, वायु मार्ग या सड़क, हमारी सरकार त्वरित गति से सुविधाओं का विकास कर रही है। हमारी विकास की योजना में पूर्वी भारत को विशेष स्थान मिला है।

तकनीक पर विशेष चर्चा करते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि 21वीं सदी ज्ञान व तकनीक की सदी है। नई तकनीक आज देश व अर्थव्यवस्था को नए आयाम दे रही है। डिजिटल आधारित इंडस्ट्री 4.0 से हमे बहुत उम्मीद है। स्टील के उत्पादन के क्षेत्र में इंडस्ट्री 4.0 की स्वीकार्यता से नई औद्योगिकरण की लहर का पूरा लाभ पूर्वी भारत को मिलना तय है।

देश में कारोबार के लिए सुधरते माहौल की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि ईज ऑफ डूइंग बिजनेस हमारी सरकार के लिए सिर्फ एक नारा भर नहीं है। हमारी सरकार ने कारोबारी माहौल को आसान बनाने के हर आयाम पर काम किया है। हाल ही में हमारी सरकार ने कोयला क्षेत्र में अब तक सबसे बड़ा सुधार किया है। अब कोयला क्षेत्र में अधिक उत्पादन और अधिक कमाई सुनिश्चित हुई है। एक बार फिर से इसका सबसे बड़ा लाभ पूर्वी भारत को ही मिलेगा।

भारत के पूर्वी क्षेत्र (ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ़ व पश्चिम बंगाल) और आंध्र प्रदेश के उत्तरी हिस्से में देश भर के कुल कच्चे लोहे (आयरन ओर), कोकिंग कोल के 80 फीसद के साथ क्रोमाइट, बॉक्साइट व डोलोमाइट बड़ा हिस्सा पाया जाता है। यहां पारादीप, हल्दिया, विजाग और कोलकाता जैसे अहम बंदरगाह भी हैं। केंद्रीय मंत्री के अनुसार देश को पांच लाख करोड़ डॉलर की इकोनॉमी का आकार देने में पूर्वी भारत के पांच राज्य अहम हैं, जिसमें स्टील क्षेत्र का खास योगदान हो सकता है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्टील नीति के तहत स्टील की उत्पादन क्षमता 75 फीसद बढ़ाने के हमारे लक्ष्य को पूरा करने में पूर्वी क्षेत्र का खास योगदान हो सकता है। वर्ष 2030-31 तक हमारी लक्षित 30 करोड़ टन स्टील उत्पादन में से 20 करोड़ टन का उत्पादन अकेले पूर्वी क्षेत्र कर सकता है। ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल व आंध्र प्रदेश के उत्तरी हिस्से को मिला कर प्रस्तावित स्टील हब पूर्वी भारत के विकास का ध्वजवाहक बनेगा। कार्यक्रम को मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव रसिका चौबे ने भी संबोधित किया। संयुक्त सचिव रोहित यादव ने पूर्वोदय योजना की रूपरेखा पेश की।

तेल की कीमतों को लेकर घबराने की जरूरत नहीं : प्रधान

जागरण संवाददाता, कोलकाता : केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने शनिवार को कहा कि अमेरिका और ईरान के बीच जारी तनाव से तेल की कीमतों पर संभावित असर को लेकर घबराने की जरूरत नहीं है। कोलकाता में सीआइआइ की ओर से आयोजित कार्यक्रम के मौके पर प्रधान ने साफ कहा कि केंद्र सरकार 'इंतजार करो और देखो' की स्थिति में है। प्रधान ने दावा किया कि वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कोई कमी नहीं है। हालांकि उन्होंने माना कि तेल की कीमतों में कुछ बढ़ोतरी हुई है लेकिन पिछले दो दिनों से इसमें फिर से नरमी आई है।

बेजार चमड़ा कारोबार को इनायत की दरकार

- बिना सरकारी प्रयास के 8500 करोड़ का निर्यात करता था कानपुर
- तीन साल में आधा हुआ कारोबार और निर्यात, विदेशी ग्राहक छिने

श्रीनारायण मिश्र, कानपुर

पिछले कुछ समय से कानपुर में चमड़ा उद्योग हिला हुआ है। बढ़े खर्च और टेनरियों की आए दिन बंदी ने इसकी चूलें हिला दी हैं। प्रदेश को सबसे ज्यादा विदेशी मुद्रा देने वाला यह उद्योग सिमटकर आधा रह गया है। ऐसे में उद्यमियों और निर्यातकों की यही मांग है कि सरकार इस उद्योग को पूरी क्षमता से निर्बाध चलते रहने की व्यवस्था बनाए।

कानपुर चमड़ा उद्योग के लड़खड़ाने से इससे प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से जुड़े करीब 12 लाख लोगों की आजीविका पर असर पड़ा है। वैश्विक बाजार में यहां के निर्यातक नकारे जा रहे हैं। वक्त पर सप्लाई न दे पाने के कारण आयातक उनसे मुंह मोड़ने लगे हैं। पाकिस्तान, बांग्लादेश और चीन इनके ग्राहक हड़प रहे हैं। केंद्र सरकार से एक साल पहले मिला 2600 करोड़ रुपये का आर्थिक पैकेज उद्योगों के न चलने से नाकाम होकर रह गया। उद्यमियों का कहना है कि वे पर्यावरण से जुड़ी चिंताओं को दूर करने के लिए स्वयं भरपूर प्रयास करने के पक्ष में हैं लेकिन सरकार से गुजारिश है कि इस दिशा में ढांचागत इंतजाम में सहयोग करे। उद्योग यदि लालफीताशाही से मुक्त हों तो कानपुर फिर विश्व में अपनी धाक जमा लेगा।

खास है कानपुर : 2016-17 में उत्तर प्रदेश ने कुल 84282.89 करोड़ रुपये का निर्यात किया था। इसमें चमड़ा उत्पादों की हिस्सेदारी 12.47 फीसद यानी 10508.50 करोड़ रुपये थी। इसमें करीब 7,000 करोड़ की हिस्सेदारी कानपुर के चमड़ा उद्योग की थी।

कानपुर में चमड़ा उद्योग

उद्योग	संख्या	टर्नओवर	निर्यात
टेनरी	400	3800	2200
फुटवियर	1400	3500	2500
सैडलरी	225	1200	1000
वस्त्र व अन्य	100	1500	800
कुल	2125	10000	6500

(वार्षिक टर्नओवर व निर्यात के आंकड़े करोड़ रुपये में, एक सर्वे के अनुसार)

गंवाई 4100 करोड़ की विदेशी मुद्रा : 2017-18 में कानपुर क्षेत्र से चमड़ा उत्पाद का निर्यात बढ़कर 8500 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया था। इसके बाद इसमें गिरावट का दौर शुरू हो गया। 2018-19 में निर्यात घटकर 6500 करोड़ पर आ गया। चालू वित्त वर्ष 2019-2020 में निर्यात में 32 फीसद की गिरावट है। वित्त वर्ष के आखिर तक कुल निर्यात 4400 करोड़ रुपये पर सिमटने के आसार हैं।

बंगाल बढ़ रहा आगे : उप्र सरकार ने कानपुर में उद्योग स्थापना के 1841 करोड़ रुपये के निवेश करार किए, जिसमें 200 करोड़ का निवेश भी जमीन पर नहीं उतरा। वहीं, तीन गुना सस्ती जमीन, उद्योग चलने की गारंटी और सरकार से ढांचागत व्यवस्था मिलने के कारण चमड़ा उद्योग का 700 करोड़ रुपये का निवेश बंगाल चला गया।

ऐसा माहौल बनाने की जरूरत है। जिससे उद्यमी और विदेशी ग्राहकों का कानपुर उद्योग पर भरोसा लौटे। इसके लिए उद्योग का निरंतर चलते रहना जरूरी है।

असद ईराकी, टेनरी संचालक

वैश्विक बाजार बहुत प्रतिस्पर्द्धी है, इसलिए इंडस्ट्री चलती रहे। निर्यातकों को जीएसटी रिफंड जल्दी मिले और आयकर स्लैब भी बढ़ाया जाए। **रफत कय्यूम, उद्यमी**

चर्म उद्योग यदि निरंतर चलते रहेंगे तो वे खुद बाजार में अपना मुकाम हासिल कर लेंगे। इसलिए इनके लिए ढांचागत इंतजाम बेहतर होने चाहिए।

जावेद इकबाल, अध्यक्ष, चर्म निर्यात परिषद

लड़खड़ाए उद्योग की उम्मीदें

- टेनरियां पूरी क्षमता से निर्बाध चलें।
- पर्यावरण संबंधी ढांचागत इंतजाम में सरकार सहयोग करे।
- निर्यातकों को विशेष पैकेज मिले।
- जाजमऊ को औद्योगिक क्षेत्र घोषित किया जाए।
- बिजली दरों में छूट मिले और जाजमऊ में अलग पावर स्टेशन बने।
- टीडीएस के त्रुटिपूर्ण नियम खत्म किए जाएं।
- नीतियों को उद्योगों के अनुकूल बनाएं, अफसरशाही के दबाव से बचाएं।

अमेरिका-ईरान तनातनी से बासमती चावल निर्यात रुका

राजीव शर्मा, लुधियाना : अमेरिका और ईरान के बीच जारी तनातनी और खाड़ी क्षेत्र में युद्ध के हालात से पंजाब के बासमती चावल निर्यातकों में घबराहट है। निर्यातकों का तर्क है कि खाड़ी क्षेत्र में हलचल के कारण बासमती चावल के शिपमेंट बीच में ही रुक गए हैं। इसके अलावा पिछले साल की करीब 1,200 करोड़ रुपये का भुगतान भी ईरान में अभी फंसा हुआ है। नए ऑर्डर पर ब्रेक लगा हुआ है। निर्यातकों का मानना है कि ईरान में निर्यात खुलने में अब वक्त लग सकता है। ऐसे में घरेलू मार्केट में भी दबाव आ गया है और बासमती की कीमतों में सुस्ती का रुख बना है।

घरेलू बाजार में एक्स-मिल चावल का भाव 5,600 रुपये प्रति क्विंटल से लुढ़ककर करीब 5000 रुपये प्रति क्विंटल रह गया है। साफ है कि मौजूदा परिस्थितियों में निर्यातकों के तमाम गणित गड़बड़ा गए हैं। उनका तर्क है कि केंद्र सरकार बासमती चावल निर्यातकों को राहत देते हुए कम से कम पांच लाख टन चावल की खरीद कर सीएसडी कैंटीन में दे। इसके अलावा भी निर्यातकों को मौजूदा स्थिति से निपटने में राहत दी जाए। ईरान में फंसा बकाया भुगतान वापस दिलाने में भी सहयोग किया जाए। भारत से ईरान के अलावा सउदी अरब व इराक प्रमुख खरीदार देश हैं। मौजूदा हालात को देखते हुए निर्यात में 25 फीसद तक का असर पड़ सकता है। फिलहाल, अभी भी निर्यातकों की ईरान के पास करीब 1200 करोड़ रुपये की पैमेंट बकाया है।

मौजूदा हालात कारोबार के अनुकूल नहीं: पंजाब राइस मिलर्स एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अरविंदर पाल सिंह ने कहा कि मौजूदा हालात कारोबार के अनुकूल नहीं हैं। ऐसे में निर्यातक किसी भी तरह का रिस्क नहीं ले रहे हैं। इसके अलावा निर्यातकों के कई शिपमेंट खराब हालात के चलते रास्ते में ही अटक गए हैं। इसे लेकर भी चिंता बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि अभी तक पिछला पेमेंट भी क्लीयर नहीं हो पाया है।

भरोसे के कारोबार को बजट से भरोसा

जेएनएन, नई दिल्ली

अर्थव्यवस्था में विभिन्न सेक्टर के समक्ष समय के साथ नई चुनौतियां आती रहती हैं। इन्हीं चुनौतियों से संभावनाओं का रास्ता निकालने के लिए हर सेक्टर सरकार से सहयोग की उम्मीद करता है। आम बजट सरकार की ओर से इच्छापूर्ति का वही पिटारा होता है, जिसमें हर सेक्टर को कुछ ना कुछ मिलने की आस रहती है। सरकार भी विभिन्न सेक्टर की जरूरत को समझते हुए बजट में उनके लिए जरूरी घोषणाएं करती है। पहली फरवरी को मोदी सरकार 2.0 का दूसरा आम बजट आएगा। जैसे-जैसे बजट की तारीख नजदीक आती जा रही है, हर सेक्टर की निगाह इसी ओर टिकी हुई है। सरकार से आम बजट में इस बार ऐसी ही कुछ उम्मीद लगाए बैठा एक सेक्टर है बीमा कंपनियों का।

जिंदगी के साथ से जिंदगी के बाद तक लोगों को सुरक्षा भरोसा दिलाने वाले सेक्टर का भरोसा कायम रखना सरकारों की प्राथमिकता में भी रहा है। पिछले बजट में सरकार ने इस सेक्टर की कुछ मांगों को पूरा किया था। इस बार भी बीमा सेक्टर सरकार से कुछ आस लगाए है। फिलहाल अर्थव्यवस्था में सुस्ती का जैसा माहौल दिख रहा है, उससे यह कयास लगाए जा रहे हैं कि बजट में सरकार कुछ बड़ी घोषणाएं कर सकती है। बाजार में पूंजी बढ़ाना और लोगों को निवेश के लिए प्रोत्साहित करना सरकार की प्राथमिकता में रह सकता है। इन परिस्थितियों ने बीमा उद्योग की उम्मीदों को बढ़ाया है। उद्योग जगत के जानकार मान रहे हैं कि बीमा सेक्टर में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआइ) की अधिकतम सीमा बढ़ाई जा सकती है। अभी बीमा सेक्टर में एफडीआइ की अधिकतम सीमा 49 फीसद है और बजट में इसे बढ़ाकर 74 फीसद किया जा सकता है।

अभी केवल इंश्योरेंस इंटरमीडियरीज में एफडीआइ सीमा अधिक है। इस क्षेत्र में 100 फीसद एफडीआइ की अनुमति है। बीमा सेक्टर में एफडीआइ की सीमा वर्ष 2015 में बढ़ाई गई थी। तब एफडीआइ की सीमा को 26 से बढ़ाकर 49 फीसद किया गया था।

बीमा सेक्टर को आस

- सेक्टर में एफडीआइ 49 फीसद से बढ़ाए जाने की उम्मीद
- पिछले पांच साल से सेक्टर में नहीं बढ़ी एफडीआइ की सीमा

प्रतीकात्मक

उम्मीदें और भी

एफडीआइ सीमा के अलावा विशेषज्ञ इस बार बजट में आयकर में 80-सी के तहत मिलने वाली छूट की सीमा बढ़ाने जाने का भी अनुमान लगा रहे हैं। अभी यह सीमा डेढ़ लाख रुपये की है, जिसमें बीमा प्रीमियम, पीपीएफ, एनएससी और अन्य निवेश शामिल हैं। बीमा सेक्टर को टर्म इंश्योरेंस पर जीएसटी कटौती की भी आशा है। जीएसटी कटौती और 80-सी की सीमा बढ़ाए जाने से ज्यादा लोग बीमा के लिए आकर्षित होंगे। यह बीमा सेक्टर के साथ-साथ ग्राहकों के लिए भी फायदेमंद होगा

बीमाधारकों को लाभ

सेक्टर में एफडीआइ बढ़ना मोटे तौर पर कारोबारी फैसला नजर आता है। इसका सीधा बीमाधारकों पर असर नहीं दिखाई देता है। हालांकि लंबी अवधि में यह फैसला बीमाधारकों के लिए भी लाभकारी साबित होगा। एफडीआइ बढ़ने से सेक्टर में पूंजी प्रवाह बढ़ेगा। साथ ही टेक्नोलॉजी सुधार होगा। निवेश बढ़ने से डिस्ट्रीब्यूशन चैनल भी मजबूत होगा। इन सभी कारकों का सकारात्मक असर सेवा पर पड़ेगा और ग्राहक लाभान्वित होंगे। एफडीआइ बढ़ने से बीमा की पहुंच बढ़ाने और ज्यादा से ज्यादा लोगों को इससे जोड़ने में भी मदद मिलेगी। बीमा कंपनियां ग्राहकों के अनुकूल ज्यादा प्रोडक्ट भी मार्केट में उतार सकेंगी।

मुरुगप्पा ग्रुप में उत्तराधिकार को लेकर विवाद गहराया, पुत्री ने मांगी बोर्ड में सीट

- कंपनी के बोर्ड में सदस्यता की मांग कर रही हैं अरुणाचलम
- परिवार की महिला सदस्यों की है एआइएल में 8.15 परसेंट हिस्सेदारी

चेन्नई, आइएएनएस : मुरुगप्पा ग्रुप में उत्तराधिकार को लेकर विवाद गहरा गया है। इसके बोर्ड पर लैंगिक भेदभाव का आरोप है। ग्रुप के पूर्व चेयरमैन एमवी मुरुगप्पन की बड़ी पुत्री वल्ली अरुणाचलम 40 हजार करोड़ की इस कंपनी के बोर्ड में परिवार की महिला सदस्यों की भागीदारी चाहती हैं। अरुणाचलम ने खुलकर कह दिया है कि वह या उनके परिवार का कोई सदस्य अंबाडी इन्वेस्टमेंट लिमिटेड (एआइएल) के शेयरधारकों के साथ किसी संभावित राइट ऑफ फर्स्ट रिफ्यूजल क्लॉज के लिए कानूनी रूप से बाध्य नहीं है। इस कानूनी प्रावधान के तहत किसी को कोई चीज नकारने या स्वीकारने का पहला हक प्रदान किया जाता है।

अंबाडी इन्वेस्टमेंट लिमिटेड मुरुगप्पा ग्रुप के प्रमोटर्स परिवार की होल्डिंग कंपनी है। 59 वर्षीय वल्ली अरुणाचलम अमेरिका स्थित एक टेक्नोलॉजी कंपनी में कंसल्टेंट हैं। अरुणाचलम, उनकी बहन वेल्लाची मुरुगप्पन और उनकी मां एमवी वल्ली मुरुगप्पन की अंबाडी इन्वेस्टमेंट लिमिटेड में सम्मिलित रूप से 8.15 परसेंट हिस्सेदारी है। अरुणाचलम का कहना है कि उनके परिवार की महिला सदस्य को कंपनी के बोर्ड में जगह दी जानी चाहिए।

अरुणाचलम के मुताबिक उनके पिता की इच्छा के अनुरूप कंपनी ने उन्हें हिस्सेदारी बेचने का मौका भी नहीं दिया। वह अपनी हिस्सेदारी उचित कीमत पर परिवार के अन्य सदस्यों को बेचने की इच्छुक थीं। हालांकि उन्होंने ग्रुप के चेयरमैन पद पर अपनी या अपनी बहन की नियुक्ति के सवाल पर कोई जवाब नहीं दिया। अरुणाचलम ने कहा कि वह अपने पिता की इच्छा के अनुरूप परिवार के सदस्यों को अपनी हिस्सेदारी बेचना चाहतीं थी। लेकिन परिवार के सदस्यों ने उनके ऑफर का समय रहते जवाब नहीं दिया।

अरुणाचलम ने ग्रुप के प्रमोटर्स पर बिजनेस में परिवार की महिलाओं के प्रवेश पर भेदभाव का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि भेदभाव के चलते ही 2017 में उनके पिता की मौत के बाद उन्हें या उनकी बहन को कंपनी बोर्ड में हिस्सेदारी नहीं दी गई थी। अरुणाचलम ने मुरुगप्पन ग्रुप की अन्य शाखाओं के सामने दो मांगे रखी हैं। उनका कहना है कि उन्हें या उनकी बहन को कंपनी बोर्ड में एक सीट दी जाए या अंबाडी इन्वेस्टमेंट में उनके परिवार की 8.15 परसेंट हिस्सेदारी उचित कीमत पर खरीदी जाए।

नीतिगत बदलावों से विदेशी ई-कॉमर्स कंपनियों पर बढ़ेगा दबाव : फिच

- एजेंसी के मुताबिक रिलायंस रिटेल के ऑनलाइन कारोबार से भी कंपनियों पर बढ़ेगा दबाव
- नए नियम लागू होने से विदेशी कंपनियों को तैयार करना पड़ेगा नया सेट-अप

जेएनएन, नई दिल्ली

ऑनलाइन कारोबार को लेकर भारत में हो रहे नीतिगत व अन्य बदलावों से इस क्षेत्र की बड़ी विदेशी ऑनलाइन कंपनियों पर खासा असर पड़ने के आसार दिख रहे हैं। रेटिंग एजेंसी फिच का कहना है कि मुकेश अंबानी नियंत्रित रिलायंस रिटेल के ई-कॉमर्स कारोबार में कदम रखने से भी भारत में काम कर रही अंतरराष्ट्रीय ई-कॉमर्स कंपनियों को बड़े दबाव का सामना करना पड़ सकता है। फिच सॉल्यूशंस ने कहा है कि ई-कॉमर्स नीति पर काम चल रहा है और इसके मार्च से प्रभाव में आने की उम्मीद है। पहले जारी मसौदा दिशा-निर्देशों के तहत विदेशी ऑनलाइन विक्रेताओं को उन कंपनियों या सहयोगियों के उत्पादों को बेचने से रोका गया है, जिनमें उनकी इक्विटी हिस्सेदारी है। इसके अलावा, सरकार बड़े ऑनलाइन खुदरा विक्रेताओं और छोटे उद्यमियों के बीच विवाद को सुलझाने के लिए एक नियामकीय प्राधिकरण स्थापित करने की संभावनाओं पर भी काम कर रही है। फिच ने कहा, 'हमारा मानना है कि लगातार निवेश के बावजूद अमेजन और फ्लिपकार्ट जैसी अंतरराष्ट्रीय ई-कॉमर्स कंपनियों को नीतिगत बदलावों और रिलायंस रिटेल के ई-कॉमर्स मंच 'जियो मार्ट' के डिजिटल बाजार में कदम रखने से दबाव का खतरा बढ़ गया है।' रेटिंग एजेंसी ने कहा, 'नई नीति के तहत, अंतरराष्ट्रीय ई-कॉमर्स कंपनियों के भारत में बाजार बिगाड़ने वाली कीमतें निर्धारित करने और भारी छूट देने पर रोक होगी।' इसके अलावा, ई-कॉमर्स कंपनियों को स्टोर से जुड़े आंकड़े भारत स्थित सर्वर में रखने होंगे। इससे उन पर अतिरिक्त बोझ पड़ेगा।

गौरतलब है कि पिछले दिनों एक अध्ययन के आधार पर भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआइ) ने विदेशी ऑनलाइन कंपनियों को डिस्काउंट और प्राइसिंग के मुद्दे पर कठघरे में खड़ा किया है। आयोग का मानना है कि खासतौर पर मोबाइल फोन के मामले में ई-कॉमर्स कंपनियां इतना ज्यादा डिस्काउंट देती हैं कि घरेलू खुदरा कारोबारियों के लिए उनके सामने टिक पाना मुश्किल हो जाता है। सीसीआइ के मुताबिक यह कई अन्य कैटेगरी के उत्पादों के साथ हो रहा है, जिसकी वह जांच करेगा।

नुकसान से बचना हो तो तीन या चार से ज्यादा फंड्स में निवेश मत करें

अंग्रेजी में एक कहावत है - डोंट पुट ऑल योर एग इन वन बास्केट। यानी अपने सभी अंडे एक टोकरी में मत रखो। निवेश के लिहाज से इसका मतलब है कि अपनी सारी रकम एक ही जगह निवेश न करके दो तीन विकल्पों में निवेश करनी चाहिए। जब हम बड़े हुए और निवेशक बने तो हमें पता चला कि निवेशक के लिए इसका पालन करना जरूरी है। यही डावर्सिफिकेशन है।

फंड में निवेश करने वाले इसे एक आदेश के तौर पर लेते हैं कि उनको सिर्फ एक या दो फंड्स की जगह बडी संख्या में फंड्स में निवेश करना चाहिए। ऐसे में वे फैसला करते हैं कि दो फंड्स में निवेश करना एक में निवेश करने से बेहतर है। इसी तरह से तीन फंड्स में निवेश करना दो में निवेश करने से बेहतर है। और चार फंड्स में निवेश करना तीन में निवेश करने से बेहतर है। क्या इसकी कोई अधिकतम सीमा है? क्या 10 फंड्स में निवेश करना नौ में निवेश करने से बेहतर है? 10 फंड्स में निवेश करना कैसा रहेगा। अगर 50 या इससे अधिक फंड्स में निवेश किया जाए तो? एक सीमा के बाद डायवर्सीफिकेशन का कोई मतलब नहीं रह जाता है। इसके बाद इससे फायदा होने के बजाए नुकसान होता है और यह मजाक बन जाता है।

क्या इससे रिटर्न घटता है? ज्यादातर निवेशक सोचते हैं कि डायवर्सिफिकेशन की एक सीमा होना अच्छी बात नहीं है। कुछ साल पहले किसी ने मुझसे पूछा था कि कितने फंड्स में निवेश करना चाहिए। मैने कहा तीन या चार फंड्स में निवेश करना बेहतर है। बाद में उस व्यक्ति ने मुझे अपना पोर्टफोलियो ई-मेल किया। तब मुझे पता चला कि वह मेरी सलाह को नहीं समझ पाया है। मेरा मतलब था कि आपको अधिकतम तीन या चार फंड्स में निवेश करना चाहिए। लेकिन उसने इसका मतलब निकाला कि उसे कम से कम तीन या चार फंड्स में निवेश करना चाहिए।

निवेशक सोचते हैं कि डायवर्सिफिकेशन के लिए ज्यादा से ज्यादा फंड्स में निवेश करना चाहिए। हालांकि, सच यह है कि अगर एक सीमा से अधिक संख्या में फंड्स में निवेश करते हैं तो यह आपको अतिरिक्त डायवर्सिफिकेशन मुहैया नहीं कराता है। म्यूचुअल फंड अपने आप में निवेश नहीं हैं। इसके जरिये आप इक्विटी फंड या स्टॉक्स में निवेश करते हैं। अगर कोई फंड ज्यादा संख्या में स्टॉक खरीदता है तो हो सकता है वे एक ही तरह के हों। इसकी वजह से एक सीमा के बाद ज्यादा डायवर्सिफिकेशन का कोई मतलब नहीं रह जाता है। एक सीमित संख्या के बाद जब आप ज्यादा फंड्स लेते हैं तो आप आमतौर पर पहले से मौजूद स्टॉक्स जैसे ही और स्टॉक खरीद रहे होते हैं।

यह डायवर्सिफिकेशन नहीं है। इसे समझने के लिए पहले हम इस बात पर विचार करते हैं कि हम अपने निवेश को डायवर्सिफाई क्यों करते हैं। डायवर्सिफिकेशन आपको एक तरह से निवेश के खराब प्रदर्शन से बचाता है। अगर पूरे बाजार की तुलना में एक कंपनी या सेक्टर खराब प्रदर्शन करता है और उसमें आपकी थोड़ी रकम लगी हुई है तो ज्यादा नुकसान नहीं होता है। आप छोटी, बड़ी और मझोले आकार की कंपनियों में भी निवेश करके डावर्सिफिकेशन कर सकते हैं। कभी-कभी सिर्फ छोटी या बड़ी कंपनियां ही अच्छा या खराब प्रदर्शन करती हैं। अगर पूरा मार्केट ही जोरदार गिरावट की चपेट में आ जाता है तो डायवर्सिफिकेशन से कोई मदद नहीं मिलती है।

आमतौर पर निवेशक इसलिए कई फंड में निवेश करते हैं क्योंकि किसी ने उनको ये फंड्स बेच दिए हैं और कमीशन कमाया है। निवेशक को यह पता ही नहीं होता है कि डायवर्सिफिकेशन क्या है। वह मानता है कि ज्यादा से ज्यादा फंड्स में निवेश करना अच्छा है। सवाल सिर्फ यह नहीं है कि ज्यादा फंड में निवेश करने से कोई फायदा होता है या नहीं। वास्तव में इससे नुकसान होता है। एक इन्वेस्टमेंट पोर्टफोलियो में बहुत ज्यादा फंड्स होने से निवेशक म्यूचुअल फंड्स में निवेश के सबसे बड़े लाभ से वंचित रह जाते हैं। यह लाभ है निवेश को आसानी से ट्रैक करना और उसका आकलन करना। निवेशक को समय-समय पर, या कम से कम हर तिमाही अपने पोर्टफोलियो में मौजूद एक-एक फंड का आकलन करके देखना चाहिए कि आपको यह फंड उम्मीद के मुताबिक रिटर्न दे रहा है या नहीं। अगर आपके पोर्टफोलियो में म्यूचुअल फंड की संख्या काफी अधिक है तो यह काम काफी कठिन हो जाता है। अगर आपके पास 15 या 20 फंड्स हैं और इनमे से ज्यादातर ऐसे फंड है जिसे किसी ने आपको बेचा है तो आपके लिए फंड्स के प्रदर्शन की समीक्षा करना असंभव है। अगर आप अपने पोर्टफोलियो का आकलन नहीं कर सकते और मैनेज नहीं कर सकते हैं तो आपके लिए अपने वित्तीय लक्ष्य को हासिल करना बहुत मुशिकल है।

आपको ज्यादा से ज्यादा तीन या चार फंड्स में निवेश करना चाहिए। इससे अधिक फंड्स में निवेश करना समय और प्रयासों की बर्बादी है।

धीरेंद्र कुमार, सीईओ वैल्यू रिसर्च

बोनस

फंड मैनेजर और सलाहकार अक्सर निवेशकों को बताते हैं कि उन्हें अपने फंड्स का डायवर्सिफिकेशन करना चाहिए। निवेशकों को अपनी सारी रकम किसी सूरत में एक विकल्प में नहीं लगाना चाहिए। यह सलाह पूरी तरह सही है। लेकिन इसकी गलत व्याख्या कर लेने वाले निवेशकों की संख्या कतई कम नहीं है। डायवर्सिफिकेशन के नाम पर निवेशक फंड्स का ढेर लगा लेते हैं। वे नुकसान से बचने की कोशिश में एक जैसे फंड्स खरीदते रहते हैं, जिसका अंतिम नतीजा यह होता है कि नुकसान गहराता है, कम नहीं होता। ऐसे में बुनियादी सवाल यह है कि कितने फंड्स को पर्याप्त मानना चाहिए?

02 लोगों की मौत हो गई अमेरिका के पेंसिल्वेनिया प्रांत में एक हेलीकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से। घटना कंबरलैंड काउंटी की है। काउंटी के प्रवक्ता ने बताया कि दुर्घटना की जांच की जा रही है। यह घटना सिल्वर स्प्रिंग टाउनशिप के आवासीय इलाके में हुई है।

यात्रा प्रतिबंध के दायरे को बढ़ाने पर विचार कर रहा व्हाइट हाउस

वाशिंगटन, एपी : ट्रंप प्रशासन विवादास्पद यात्रा प्रतिबंध के दायरे को बढ़ाने पर विचार कर रहा है। इस बाबत तैयार किए गए दस्तावेज पर व्हाइट हाउस में चर्चा भी हो चुकी है। हालांकि अभी इस प्रस्ताव को अंतिम रूप नहीं दिया गया है, लेकिन जानकारों का मानना है कि अगर इसे मंजूरी मिलती है तो इससे कई मुस्लिम देश प्रभावित होंगे। व्हाइट हाउस के प्रवक्ता होगन गिडले ने देश की सुरक्षा के लिए यात्रा प्रतिबंध को बेहतर बताया है।

दरअसल, अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने पदभार ग्रहण करने के कुछ दिनों बाद 27 जनवरी, 2017 को कार्यकारी आदेश जारी कर छह मुस्लिम (ईरान, लीबिया, सोमालिया, सूडान, सीरिया और यमन) बहुल देशों के नागरिकों के अमेरिका आने पर प्रतिबंध लगा दिया था। इसका बड़े पैमाने पर विरोध हुआ था। बाद में इस सूची में समय-समय पर परिवर्तन होता रहा। फिलहाल पांच मुस्लिम देशों ईरान, लीबिया, सोमालिया, सीरिया और यमन के साथ ही

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप। फाइल

वेनेजुएला और उत्तर कोरिया पर प्रतिबंध लागू है। फिलहाल यह तो पता नहीं चला है कि सूची में किन देशों को शामिल किया जाएगा, लेकिन इस पूरी प्रक्रिया से जुड़े दो लोगों का कहना है कि सात देशों, जिनमें से अधिकांश मुस्लिम देश हैं उन्हें सूची में जोड़ा जाएगा। एक अन्य व्यक्ति ने कहा कि विस्तार में कई वह देश शामिल किए जा सकते हैं जो ट्रंप के शुरुआती आदेश में तो थे, लेकिन अदालती रोक के चलते उन्हें बाद में प्रतिबंध वाली सूची से हटा लिया गया था।

वेल्स ने कहा– भारत और अमेरिका संबंधों के लिए कप्तान होंगे श्रृंगला

वाशिंगटन, प्रेट्र : एक शीर्ष अमेरिकी राजनयिक ने अमेरिका में भारत के राजदूत रहे हर्षवर्धन श्रृंगला के विदाई समारोह में कहा कि श्रृंगला भारत के विदेश सचिव के रूप में 'भारत और अमेरिकी संबंधों के कप्तान' बनेंगे। श्रृंगला को भारत का अगला विदेश सचिव नियुक्त किया गया है। वह इस महीने के अंत में अपनी नई जिम्मेदारी को संभालेंगे। श्रृंगला करीब एक साल तक अमेरिका में बतौर भारत के राजदूत की भूमिका निभाई।

दक्षिण एवं मध्य एशिया की कार्यवाहक सहायक सचिव एलिस जी वेल्स ने इस मौके पर कहा कि हमें यह जानकर खुशी हुई कि श्रृंगला विदेश सचिव बनने जा रहे हैं। हम जानते हैं कि हमें इस रूप में दोनों देश के संबंधों के लिए एक कप्तान मिलने जा रहा है और वह वैसे संवेदनशील कार्य पूरे करेंगे जिसे पूरा करने की जरूरत है ताकि दो महत्वपूर्ण देश साथ जुड़ सकें। इस मौके पर श्रृंगला ने कहा 'यह काफी महत्वपूर्ण साल रहा। काफी अच्छा कार्यकाल रहा।'

ईरानियों ने भी उठाए सवाल

पहले पृष्ठ का शेष

विमान हादसे का सच आने के बाद ईरान के लोगों में भी गुस्सा देखने को मिला है। ट्विटर पर कई ईरानियों ने सवाल उठाया कि अमेरिकी ठिकानों पर हमले के बीच विमान को उड़ान भरने की इजाजत क्यों दी गई थी?

दो मिसाइलों की हुई थी पहचान: अमेरिका के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया था कि विमान के उड़ान भरने के दो मिनट बाद ही सतह से हवा में मार करने वाली दो मिसाइलों के दागे जाने का पता चला था। अमेरिकी सैन्य उपग्रहों ने इनकी पहचान की थी। ये मिसाइल रूस निर्मित टोर बताई जा रही है। इसका इस्तेमाल ईरानी सेना करती है। गुरुवार को एक वीडियो सामने आया था, जिसमें विमान की ओर कोई चीज तेज गति से आती दिखी और फिर तेज रोशनी हुई। इसके कुछ सेकेंड बाद तेज धमाका सुना गया।

अमेरिका भी कर चुका है ऐसी गलती: वर्ष 1988 में अमेरिका के युद्धपोत यूएसएस विंसेनेस ने गलती से ईरान के एक यात्री विमान को मार गिराया था। इसमें सवार सभी 290 लोगों की मौत हुई थी।

दुनिया ने की घटना की निष्पक्ष जांच की मांग

फ्लोरेंस पैली। फाइल

पेरिस, एएफपी : ईरान की स्वीकारोक्ति के बाद कई देशों ने घटना की पूरी जांच करने की मांग की है। फ्रांस की रक्षा मंत्री फ्लोरेंस पैली ने कहा, 'हमें इस तरह की घटनाओं से सबक लेना चाहिए।' जर्मनी के विदेश मंत्री हाइको मास ने कहा, 'तेहरान इस घटना को पूरी तरह स्पष्ट करे।' स्वीडन के प्रधानमंत्री स्टीफन लफ्वेन ने बयान में कहा, 'इस घटना की निष्पक्ष और पूरी जांच होनी चाहिए।'

विमान हादसे पर बोले ईरानी कमांडर, 'काश मैं मर गया होता'

तेहरान, एजेंसियां : यूक्रेन के यात्री विमान को मार गिराने की घटना पर ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कोर के एयरोस्पेस कमांडर आमिर अली हाजीजादेह ने गहरा दुख जताया है। उन्होंने कहा, 'मैं विमान हादसे के बारे में सुनने के बाद मरने के लिए तरस गया हूं। काश मैं मर जाता और इस तरह का हादसा देखने को नहीं मिलता।' हाजीजादेह ने कहा कि ईरानी मिसाइल ऑपरेटर यूक्रेन के विमान को अमेरिकी क्रूज मिसाइल समझने की गलती कर बैठा। उसने इसकी पुष्टि करनी भी चाही, लेकिन उस वक्त किसी वजह से उसका संचार उपकरण काम नहीं कर सका। उसके पास फैसला लेने के लिए सिर्फ 10 सेकेंड का वक्त था। दुर्भाग्य से उसने विमान पर मिसाइल दागने का फैसला किया और उसका नतीजा हमारे सामने है।

उत्तरी आयरलैंड में तीन साल बाद बैठी विधानसभा

बेलफास्ट, एएफपी : उत्तरी आयरलैंड में शनिवार को तीन साल के गतिरोध के बाद वहां की विधानसभा बैठी। नेशनलिस्ट और यूनियनिस्ट पार्टियों के आपसी समझौते के तहत विधानसभा का सत्र फिर से शुरू हुआ है। गैर पारंपरिक ऊर्जा की योजना लागत में घोटाला सामने आने पर जनवरी 2017 में विधानसभा निलंबित हो गई थी। इसके 90 सदस्यों ने चुने जाने के बाद केवल एक बार बैठक की थी। लेकिन प्रो-आयरिश रिपब्लिकन और प्रो-ब्रिटिश यूनियनिस्ट के बीच शुक्रवार को हुए समझौते के बाद निर्वाचित सदस्य फिर से विधानसभा पहुंचे और बैठे। अगर वे सोमवार तक समझौता करने और विधानसभा को पुनर्जीवित करने में विफल रहते तो विधानसभा भंग हो जाती है और दोबारा चुनाव होते। अब सदस्य मंत्रियों का चुनाव करेंगे और उनके विभागों का वितरण होगा। यूनियनिस्ट पार्टी के नेता एर्लेन फोस्टर पहले मंत्री के रूप में शपथ लेंगी और वही सरकार का नेतृत्व करेंगी।

न्यूज गैलरी

संयुक्त राष्ट्र को भारत ने अपने बजट का भुगतान किया

एंटोनियो गुतेरस। फाइल

संयुक्त राष्ट्र : नकदी की कमी से जूझ रहे संयुक्त राष्ट्र को भारत ने इस वर्ष के अपने बजट 23 .4 मिलियन डॉलर (166 करोड़ से ज्यादा) का भुगतान कर दिया है। इसके लिए संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुतेरस के प्रवक्ता स्टेफनी डुजेरिक ने भारत को धन्यवाद दिया है। भारत चौथा देश जिसने अपने हिस्से का बजट संयुक्त राष्ट्र को दिया है। जिन देशों ने अभी तक बजट का भुगतान किया है, उनमें यह सबसे अधिक है। सभी देशों को जनवरी अंत तक अपने बजट का भुगतान करना होता है। 193 सदस्यीय यूएन के 47 देशों द्वारा अपने बजट का भुगतान नहीं करने पर नकदी का संकट खड़ा हो गया था। (आइएएनएस)

अफगानिस्तान में अमेरिकी सेना के वाहन पर बम फेंका

काबुल : अफगानिस्तान में शनिवार को एक अमेरिकी सेना के वाहन पर सड़क के किनारे बम से हमला हुआ। इसकी नाटो और अफगान अधिकारियों ने पुष्टि की है। तालिबान के प्रवक्ता कारी युसूफ अहमदी ने हमले की जिम्मेदारी लेते हुए कहा कि हमले को कंधार प्रांत के डांड जिले में अंजाम दिया गया। एक संक्षिप्त बयान में नाटो के प्रवक्ता ने कहा कि अधिकारी अभी भी स्थिति का आकलन कर रहे हैं और जैसे ही अधिक जानकारी मिलेगी वैसे ही मीडिया से साझा की जाएगी। हमले में किसी के हताहत होने की जानकारी नहीं मिली है। (एपी)

काला सागर में दो जहाजों की टक्कर, तीन लोग लापता

इस्तांबुल : इस्तांबुल के समीप काला सागर में रूस के एक बड़े जहाज और तुर्की के मछली पकड़ने वाले एक छोटे जहाज की टक्कर हो गई। टक्कर के बाद तुर्की के तीन नागरिक लापता बताए गए हैं, जिनकी समुद्र में तलाश की जा रही है। रूस का टैंकर जहाज इजमिर की ओर जा रहा था। टक्कर की मुख्य वजह घने कोहरे को बताया जा रहा है। (एपी)

रक्षा खर्च को लेकर अमेरिका, दक्षिण कोरिया की वार्ता जल्द

सियोल : दक्षिण कोरिया के विदेश मंत्रालय ने बताया कि उनके यहां अमेरिकी सैनिकों के रहने के खर्च को लेकर अमेरिका से अगले हफ्ते बातचीत शुरू होगी। दोनों देशों के मुख्य वार्ताकार के बीच यह बातचीत 14 जनवरी को शुरू होगी। वर्तमान में दक्षिण कोरिया में 28,500 सैनिक तैनात हैं। इनके तैनाती पर होने वाले खर्च के बंटवारे को लेकर अमेरिका और दक्षिण कोरिया बातचीत को आगे बढ़े हैं। (आइएएनएस)

ताइवान में जीतीं साई, चीन को झटका

कड़ा संदेश ▶ ड्रैगन को हरकतों के जवाब में महिला राष्ट्रपति को 57 फीसद वोट

साई की हुंकार, चीन की धमकियों के आगे नहीं झुकेगा ताइवान

ताइपे, एजेंसियां : चीन को कड़ा संदेश देते हुए ताइवान की जनता ने राष्ट्रपति साई इंग-वेन को भारी बहुमत से फिर सत्ता सौंपी है। शनिवार को आए चुनाव परिणाम में इस द्वीपीय देश में पहली महिला राष्ट्रपति को दोबारा सत्ता हासिल हुई। चीन ताइवान की स्वतंत्रता को स्वीकार नहीं करता, वह उसे अपना हिस्सा मानता है। ताइवान के मामलों में किसी देश का बोलना भी चीन को पसंद नहीं है। साई की जीत पर अमेरिका ने खुशी जाहिर की है और उन्हें बधाई दी है। विदेश मंत्री माइक पोंपियो ने आशा जताई है कि वह चीन के क्रूरतापूर्ण दबाव को भुलाकर उसके साथ संबंधों में स्थिरता लाने की कोशिश करेंगी।

मतों के बढ़ते अंतर के बीच मतगणना के बीच साई (63) अपनी पार्टी के मुख्यालय में समर्थकों के बीच आईं। हाथों में देश और पार्टी की झंडियां लिए हजारों हर्षातिरेक समर्थकों ने नारेबाजी करते हुए उनका स्वागत किया। साई ने कहा, ताइवान ने दुनिया को दिखा दिया है कि स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक तरीके की जीवनशैली से उसे कितना प्यार है। हम अपने देश से प्यार करते हैं, यह हमारा गौरव है। राष्ट्रपति ने कहा, वह चीन से वार्ता की इच्छुक हैं और क्षेत्र में शांति चाहती हैं। इसलिए चीन अपनी नकारात्मक हरकतों को छोड़े, द्वीप की 2.3 करोड़ जनता को देश का भाग्य

न्यू ताइपे सिटी के एक मतदान केंद्र में वोट डालने के लिए अपनी बारी का इंतजार करती राष्ट्रपति एवं उम्मीदवार साइ इंग–वेन। एपी

तय करने दे। चीन की धमकियों के आगे ताइवान बिल्कुल नहीं झुकेगा। साई के मुख्य प्रतिद्वंद्वी और चीन समर्थित केएमटी पार्टी के मुखिया हान कुओ यू ने अपनी हार स्वीकार कर ली है। परिणामों के अनुसार साई की डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी को 80 लाख मतों में 57 प्रतिशत मतों का बड़ा हिस्सा मिला। जबकि हान की पार्टी को 38 प्रतिशत मत मिले। केंद्रीय चुनाव आयोग मतों ने मतों की गिनती पूरी नहीं की है लेकिन हान ने मतों के बड़े अंतर को देखते हुए अपनी हार स्वीकार कर ली है।

ताइवान का नतीजा चीन के लिए बड़े झटके से कम नहीं है। उसने साई को

ताइवान में राष्ट्रपति साई इंग–वेन की भारी जीत के बाद पार्टी के मुख्यालय में जश्न मनाते उनके समर्थक। केंद्रीय चुनाव आयोग के अनुसार, देश के 22 शहरों और काउंटी में करीब 19310000 मतदाता हैं। कुल मतदाताओं में छह फीसद 20 से 23 वर्ष आयु के बीच के हैं। एएफपी

राष्ट्रपति पद पर न लौटने देने के लिए हान के पक्ष में पूरी ताकत झोंक दी थी। पिछले चार साल से चीन ने ताइवान पर आर्थिक और कूटनीतिक दबाव बना रखा था जिससे वहां की जनता साई के शासन से उकता जाए। लेकिन उसकी यह नीति काम नहीं आई और साई की पार्टी उम्मीद से ज्यादा मतों से जीतकर सत्ता पर फिर काबिज हो गई है। उल्लेखनीय है कि साई की पार्टी हांगकांग में लोकतंत्र की मांग वाले आंदोलन का समर्थन करती है। इसलिए साई की जीत को चीन के लिए दोहरा झटका माना जा रहा है। हांगकांग के लोकतंत्र समर्थकों ने भी साई की जीत का स्वागत किया है।

ताइवान को अपना क्षेत्र मानता है चीन : चीन इस द्वीपीय क्षेत्र को अपना हिस्सा मानता है। जबकि ताइवान खुद को स्वायत्त देश बताता है। चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने पिछले साल चेतावनी दी थी कि विलय के लिए चीन ताइवान पर हमला भी कर सकता है। हालांकि वह शांतिपूर्ण तरीका पसंद करेंगे।

113 सदस्यीय है संसद : शनिवार को राष्ट्रपति चुनाव के साथ ही 113 सदस्यीय संसद के लिए भी वोट डाले गए। वर्ष 2016 के चुनाव में 68 सीटें जीतकर डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी पहली बार सत्ता में आई थी। जबकि कुओमिनटांग पार्टी की सीटों की संख्या कम होकर 35 रह गई थी।

मांगें पूरी होने पर ही अमेरिका से बात करेगा उत्तर कोरिया

सियोल, एएफपी : उत्तर कोरिया ने यह साफ कर दिया है कि अमेरिका जब तक उसकी मांगें मान नहीं लेता, तब तक परमाणु वार्ता बहाल नहीं होगी। विदेश मंत्रालय ने शनिवार को बताया कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से उत्तर कोरिया के सर्वोच्च नेता किम जोंग उन को भेजा गया जन्मदिन का बधाई संदेश मिला है। परंतु परमाणु वार्ता की टेबल पर लौटने के लिए यह पर्याप्त नहीं है। किम का आठ जनवरी को जन्मदिन था।

उत्तर कोरिया की सरकारी न्यूज एजेंसी केसीएनए ने विदेश मंत्रालय के सलाहकार किम की गवन के हवाले से कहा, 'ट्रंप की ओर से भेजा गया जन्मदिन का बधाई संदेश मिला है। यह सच है कि किम जोंग उन और राष्ट्रपति ट्रंप के बीच व्यक्तिगत संबंध खराब नहीं है, लेकिन सिर्फ इस निजी रिश्ते के आधार बातचीत बहाल नहीं होगी। हमें पिछले डेढ़ साल के दौरान अमेरिका से धोखा मिला है।'

उल्लेखनीय है कि जून, 2018 से ट्रंप और किम के बीच तीन बार मुलाकात हुई, लेकिन उत्तर कोरिया पर लगे प्रतिबंधों को हटाने की मांग पर गत फरवरी में वियतनाम में हुई शिखर वार्ता बेनतीजा समाप्त हुई थी। उसी समय से दोनों देशों में गतिरोध बना हुआ है। किम ने परमाणु वार्ता बहाल करने के लिए अमेरिका को अपने बर्ताव में बदलाव लाने के लिए 2019 के आखिर तक का वक्त दिया था।

गैंगस्टर की तरह दबाव बनाता है अमेरिका: किम ने नए साल के संबोधन में नए रणनीतिक हथियारों की धमकी देने के साथ ही परमाणु हथियारों और अंतरमहाद्वीपीय मिसाइलों के परीक्षणों पर खुद से लगाई गई

▶ सियोल ने कहा, किम को जन्मदिन का बधाई संदेश भेजना पर्याप्त नहीं

उत्तर कोरिया के सर्वोच्च नेता किम जोंग उन की फाइल फोटो। रायटर

रोक को खत्म करने का एलान किया था। इस मौके पर उन्होंने कहा था कि अमेरिका गैंगस्टर की तरह दबाव बनाता है।

ट्रंप ने किम को भेजा जन्मदिन का बधाई संदेश: बता दें कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने आठ जनवरी को उत्तर कोरिया के सर्वोच्च नेता किम जोंग-उन के जन्मदिन पर उन्हें बधाई संदेश भेजा था। दक्षिण कोरिया के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार चुंग यूई-योंग के अनुसार, बीते बुधवार को वाशिंगटन में उनकी ट्रंप से मुलाकात हुई थी। योंग ने कहा, ट्रंप को किम का जन्मदिन याद था। उन्होंने अपना बधाई संदेश मुझे किम तक पहुंचा देने को कहा था। योंग ने हालांकि इस बारे में कुछ नहीं कहा कि यह लिखित संदेश था या इसमें जन्मदिन की शुभकामनाओं के अलावा कुछ और भी शामिल था।

बांग्लादेश के उप विदेश मंत्री ने रद किया भारत का दौरा

ढाका, प्रेट्र: बांग्लादेश के उप विदेश मंत्री मुहम्मद शहरयार आलम ने अपना प्रस्तावित भारत दौरा रद कर दिया है। उन्हें नई दिल्ली में 14 से 16 जनवरी के बीच होने वाले रायसीना डायलॉग में अपने विचार रखने थे। शहरयार ने यह निर्णय प्रधानमंत्री शेख हसीना के संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) दौरे के चलते लिया है। उन्होंने उन मीडिया खबरों को गलत बताया जिनमें दौरा रद होने के लिए अन्य कारण बताए गए हैं।

भारतीय विदेश मंत्रालय के सहयोग से आयोजित होने वाले रायसीना डायलॉग में वैश्विक मसलों पर विदेशी नेता, राजनयिक और अन्य प्रमुख लोग शामिल होकर अपने विचार रखते हैं। बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय ने बयान जारी कर कहा है कि उप विदेश मंत्री को रायसीना डायलॉग में वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था। लेकिन कार्यक्रम की तारीखों के दौरान ही उन्हें प्रधानमंत्री शेख हसीना के साथ यूएई जाना पड़ रहा है। इसलिए वह भारत का अपना दौरा रद कर रहे हैं। इसके लिए बांग्लादेश का विदेश मंत्रालय ने रायसीना

मुहम्मद शहरयार आलम। फाइल

डायलॉग के आयोजनकर्ता ओवरसीज रिसर्च फाउंडेशन को खेद पत्र भी भेजा है। बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि शहरयार आलम के भारत दौर में दोनों देशों के द्विपक्षीय मसलों पर कोई कार्यक्रम नहीं था। मंत्रालय ने यह भी कहा है कि कुछ मीडिया रिपोर्ट में आलम का दौरा रद होने के पीछे अन्य कारण बताए गए हैं, जो पूरी तरह से बेबुनियाद हैं। आलम का यह दौरा दो बांग्लादेशी मंत्रियों के भारत दौरे रद होने के बाद रुका है, इसलिए इसे भारत के सीएए से जोड़कर देखा गया।

स्कॉटलैंड के लोग कर रहे आजादी की मांग

स्कॉटलैंड में लोग सड़कों पर उतर कर ब्रिटेन से आजादी की मांग फिर बुलंद करने लगे हैं। शनिवार को स्कॉटलैंड के ग्लासगो शहर में आजादी समर्थकों ने विशाल रैली निकाली। इसमें हजारों लोगों ने हिस्सा लिया। वर्ष 2014 में स्कॉटलैंड की आजादी के लिए हुए जनमत संग्रह ने ब्रिटेन के समक्ष अभूतपूर्व स्थिति पैदा कर दी थी। हालांकि इस जनमत संग्रह में 55 फीसदी लोगों ने ब्रिटेन से आजादी के खिलाफ वोट दिया था। ब्रिटेन ब्रेग्जिट की राह पर है। लेकिन स्कॉटलैंड के अधिकांश लोग ब्रिटेन के यूरोपीय यूनियन में बने रहने के पक्ष में हैं। वह मान रहे हैं कि उन्हें उनकी मर्जी के खिलाफ यूरोपीय यूनियन से बाहर निकाला जा रहा है। अब जब ब्रिटेन यूरोपीय यूनियन से अलग होने के कगार पर है तो लोगों का गुस्सा तेज हो गया है। रायटर

बिजली की कमी से जूझ रहा है नेपाल का त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा

काठमांडू, प्रेट्र: नेपाल का एकमात्र अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा 'त्रिभुवन' बिजली की कमी का सामना कर रहा है। मीडिया में आई एक खबर में यह दावा किया गया है। हिमालयन टाइम्स की खबर के मुताबिक, हवाईअड्डा प्रबंधन ने एक नोटिस में सभी हितधारकों से यह सुनिश्चित करने को कहा गया है कि सर्दियों के मौसम में बिजली का सर्वोत्तम तरीके से इस्तेमाल किया जाए।

इसमें आगे कहा गया है कि यह सभी अधिकारियों को अधिसूचित किया गया है कि हवाईअड्डे पर सरकारी संस्थाएं और दुकानें बिजली के रोजाना खपत में कमी लाएं। त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा प्रबंधन ने हितधारकों से यह भी अनुरोध किया है कि वे हीटर का अनावश्यक उपयोग नहीं करें।बिजली की कमी के कारण परिचालन उपकरण भी प्रभावित हो रहे हैं।

नोटिस के मुताबिक, मामूली उद्देश्यों के लिए बिजली के उपयोग से हवाई अड्डे का संचार, दिशा एवं गंतव्य सूचक प्रणाली तथा निगरानी प्रणाली प्रभावित हुई है। बता दें कि नेपाल ने कुछ दिन पहले ही 'विजिट नेपाल 2020' कार्यक्रम का शुभारंभ किया था।

ओमान के सुल्तान काबूस बिन सईद का निधन

मस्कट, एजेंसियां: ओमान के सुल्तान काबूस बिन सईद का शुक्रवार को 79 साल की उम्र में निधन हो गया। शनिवार को रॉयल कोर्ट ने यह जानकारी दी। 1970 में ब्रिटेन की मदद से अपने पिता सईद बिन तैमूर का तख्तापलट कर सत्ता पर काबिज हुए काबूस कुछ दिनों से बीमार चल रहे थे और माना जाता है कि वह आंत के कैंसर से पीड़ित थे। काबूस की जगह संस्कृति मंत्री और उनके चचेरे भाई हैथम बिन तारिक अल सईद को उत्तराधिकारी बनाया गया है।

सुल्तान ओमान में सर्वोच्च पद है। वह प्रधानमंत्री, सेना का सुप्रीम कमांडर, रक्षा मंत्री, वित्त मंत्री और विदेश मंत्री जैसी अहम जिम्मेदारियां भी संभालता है। उनके निधन पर तीन दिन के राष्ट्रीय शोक की घोषणा की गई है। इस दौरान ओमान का राष्ट्रीय ध्वज 40 दिनों तक आधा झुका रहेगा। सुल्तान काबूस अविवाहित थे और

▶ चचेरे भाई हैथम बिन तारिक अल सईद को बनाया गया उत्तराधिकारी

काबूस बिन सईद। फाइल/एपी

उनका कोई सगा भाई भी नहीं था। इसके चलते उत्तराधिकार को लेकर तमाम तरह की अटकलें लगाई जा रही थीं। ओमान के संविधान के मुताबिक, शाही परिवार को सिंहासन खाली होने के तीन दिनों के अंदर उत्तराधिकारी का चयन करना होता है। यदि शाही परिवार किसी एक नाम पर सहमत नहीं होता है तो काबूस द्वारा लिखे पत्र के मुताबिक किसी व्यक्ति को उत्तराधिकारी बनाया जाता है। दिवंगत सुल्तान काबूस बिन सईद ने अपने पत्र में हैथम बिन सईद को अपना उत्तराधिकारी बताया था।

रॉयल फैमिली की बैठक में उनके नाम पर मुहर लगाई गई। उन्होंने शनिवार सुबह नए सुल्तान की शपथ ली। टीवी संदेश में हैथम ने सभी देशों के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और मैत्रीपूर्ण संबंधों की मस्कट की नीति को बनाए रखने का वादा किया है। उन्होंने विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से हल करने में सहायता करने की बात भी दोहराई है। हैथम को देशी में बढ़ती बेरोजगारी और ईरान-अमेरिका के बीच चल रहे तनाव जैसे मुद्दों से जूझना होगा। काबूस ने अरब प्रायद्वीप को आधुनिक राष्ट्र में बदल दिया था।

सऊदी अरब के नेतृत्व वाले खाड़ी सहयोग परिषद में अपनी सदस्यता बरकरार रखते हुए उन्होंने विश्व शक्तियों के साथ ईरान के परमाणु समझौते में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

पीएम मोदी ने सुल्तान को बताया भारत का सच्चा दोस्त

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ओमान के सुल्तान काबूस बिन सईद के निधन पर शोक जताते हुए उन्हें क्षेत्रीय शांति का प्रतीक बताया। प्रधानमंत्री ने ट्वीट कर कहा, 'महामहिम सुल्तान काबूस बिन सईद के निधन के बारे में जानकर मुझे गहरा दुख हुआ है। वह एक दूरदर्शी नेता थे। उन्होंने ओमान को एक आधुनिक और समृद्ध राष्ट्र में बदल दिया। वह भारत के सच्चे दोस्त थे। उन्होंने भारत और ओमान के बीच साझेदारी को मजबूत बनाने में अहम भूमिका निभाई।

भारत से नहीं मिला था निमंत्रण : रूसी राजदूत

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारत में रूस के राजदूत निकोले कुदाशेव ने शनिवार को कहा कि उन्हें भारत सरकार की ओर से जम्मू-कश्मीर की यात्रा का निमंत्रण नहीं मिला था। अमेरिकी राजदूत कैनेथ जस्टर समेत 15 राजदूतों के ग्रुप ने इसी हफ्ते जम्मू-कश्मीर की दो दिवसीय यात्रा की थी और वहां चुनिंदा राजनीतिक प्रतिनिधियों, समाज के लोगों और शीर्ष सैन्य अधिकारियों से बातचीत की थी।

पत्रकारों से बातचीत में कुदाशेव ने कहा, 'मुझे इस टीम का हिस्सा बनने के लिए आधिकारिक निमंत्रण नहीं मिला। यह निजी यात्रा नहीं थी। मेरे सहयोगियों (अन्य राजदूतों) को निमंत्रण मिला था। यात्रा करने का फैसला उनका था। अगर मुझे मिलता तो मैं विचार करता।' उन्होंने आगे कहा, 'हम मानते हैं कि वहां (कश्मीर) की स्थिति पूरी तरह भारत का अंदरूनी मामला है। रूसी कूटनीति की आदत अपने मित्र साझीदारों के अंदरूनी मामलों पर टिप्पणी करने की नहीं है।

मुल्तान में गैर मुस्लिम वकील नहीं लड़ सकेंगे बार का चुनाव

इस्लामाबाद, एएनआइ : पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के साथ भेदभाव का एक और मामला सामने आया है। मुल्तान बार एसोसिएशन ने एक प्रस्ताव पारित किया है, जिसके बाद हिंदू और अहमदिया समेत गैर मुस्लिम वकील बार काउंसिल का चुनाव नहीं लड़ सकेंगे।

स्थानीय अखबारों में छपी रिपोर्ट के मुताबिक, बार काउंसिल का चुनाव लड़ने के इच्छुक वकीलों को भी इस्लाम में अपनी आस्था को साबित करने के लिए एक हलफनामा दाखिल करना अनिवार्य होगा। बता दें कि मुल्तान के जिला बार एसोसिएशन के वकीलों द्वारा यह प्रस्ताव लाया गया था, जिसे पारित कर दिया गया।

पाकिस्तान में धार्मिक अल्पसंख्यकों पर अत्याचार के मामले लगातार सामने आते रहते हैं। बहुसंख्यक सुन्नी समुदाय के निशाने पर प्रमुख रूप से हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध और अहमदिया समुदाय के लोग

प्रस्ताव पारित

- पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों से भेदभाव का एक और मामला सामने आया
- वकीलों को भी इस्लाम में अपनी आस्था को साबित करने के लिए एक हलफनामा दाखिल करना अनिवार्य होगा।

रहते हैं। शियाओं की स्थिति भी वहां बहुत अच्छी नहीं है। यही हाल सिखों का है।

अभी कुछ दिनों पहले ही गुरुद्वारा ननकाना साहिब पर एक बेकाबू भीड़ ने हमला कर दिया था और गुरुद्वारा का नाम बदलने तक की मांग की थी। जिसकी भारत ने कड़े शब्दों में निंदा की थी। इसी प्रकार पेशावर में एक सिख युवक की हत्या को लेकर भी पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय बिरादरी ने जमकर आलोचना की थी।

मौजूदा समय में क्रिकेट खेलने के लिहाज से पाकिस्तान दुनिया की सबसे सुरक्षित जगह है।
— क्रिस गेल, वेस्टइंडीज के क्रिकेटर

चार दिनी टेस्ट से तेज गेंदबाजों के चोटिल होने का डर : मिस्बाह

कराची, प्रेट्र : पाकिस्तान के चीफ कोच और मुख्य चयनकर्ता मिस्बाह उल हक ने चेताया कि अगर टेस्ट मैच को चार दिवसीय कर दिया जाता है तो तेज गेंदबाजों की चोटों का जोखिम भी बढ़ जाएगा। इस तरह वह भी उन खिलाड़ियों की सूची में शामिल हो गए जिन्होंने आइसीसी के पारंपरिक प्रारूप में छेड़छाड़ के प्रस्ताव का विरोध किया था।

भारतीय बल्लेबाज ने कहा, रोहित, राहुल और मैं अच्छा कर रहे हैं, शिखर ने श्रीलंका के खिलाफ तीसरे टी-20 में बनाए थे 52 रन

अब मैं भी टी-20 विश्व कप की दौड़ में शामिल हो गया : धवन

पुणे, प्रेट्र: भारतीय सलामी बल्लेबाज शिखर धवन ने श्रीलंका के खिलाफ तीसरे टी-20 मैच में तेजतर्रार अर्धशतक लगाने के बाद कहा कि वह फिर से दौड़ में शामिल हो गए हैं।

धवन के खेल के सबसे छोटे प्रारूप में फॉर्म में लौटने से भारतीय टीम प्रबंधन और कप्तान विराट कोहली के सामने सिरदर्द होगा कि वे फॉर्म में चल रहे तीन सलामी बल्लेबाजों लोकेश राहुल और रोहित शर्मा में किन दो ओपनरों का चयन करें। बहरहाल, ऑस्ट्रेलिया में होने वाले टी-20 विश्व कप से पहले यह टीम के लिए अच्छी चीज है। भारतीय उप कप्तान रोहित शर्मा ने श्रीलंका सीरीज में आराम लेने का फैसला किया था, जिससे धवन ने दो मौकों का फायदा उठाया और इंदौर में 32 रन के बाद शुक्रवार को पुणे में 52 रन की पारी खेली। सलामी बल्लेबाजों की दौड़ के बारे में पूछने पर धवन ने कहा, 'सभी तीन खिलाड़ी (रोहित, लोकेश और मैं) अच्छा कर रहे हैं। रोहित ने 2019 में शानदार प्रदर्शन किया। राहुल पिछले एक-दो महीने से बेहतरीन कर रहे हैं और वह अच्छे खिलाड़ी हैं। मैं भी पिक्चर में आ गया हूं। मैंने भी अच्छा कर दिया है। तो पिक्चर अच्छी बन रही है अभी, खैर ये सिरदर्दी मेरी नहीं है इसलिए मैं इसके बारे में नहीं सोचता क्योंकि यह चीज मेरे हाथों में नहीं है। मेरे हाथों में प्रदर्शन करना और अच्छा खेलना है।' उन्होंने कहा, 'मैं खुश हूं और संतुष्ट हूं कि मुझे दो मौके मिले और इनका फायदा उठाया। बाकी कोच और कप्तान के ऊपर है, तो उनकी सिरदर्दी मैं क्यों लूं?' दिल्ली के इस बल्लेबाज को लगता है कि बायें हाथ का बल्लेबाज होना उनके लिए अच्छा है। उन्होंने कहा, 'निश्चित रूप से बायें हाथ का बल्लेबाज होना फायदेमंद है क्योंकि इससे गेंदबाजों की लाइन एवं लेंथ में खलल पड़ता है और इसका खेल पर अपना असर पड़ता है।'

नियमित रूप से जीतना चाहते हैं: धवन ने कहा कि भारतीय टीम टी-20 विश्व कप से पहले अपने लक्ष्य का बचाव करने में महारत हासिल की कोशिश में जुटी है और इसलिए वह टॉस जीतकर जानबूझ कर पहले बल्लेबाजी का फैसला कर रही है। धवन ने कहा , 'हम पहले बल्लेबाजी करना चाहते थे क्योंकि हम पहले बल्लेबाजी करते हुए खुद को और अधिक बेहतर करना चाहते हैं और ज्यादा से ज्यादा मैच जीतना चाहते हैं ताकि इससे आत्मविश्वास में बढ़ोतरी हो इसलिए जानबूझकर हम ऐसा कर रहे हैं और नतीजा आपके सामने है। हम पहले बल्लेबाजी करके भी जीत रहे हैं। हम बड़े लक्ष्य निर्धारित कर रहे हैं और इससे बतौर टीम आत्मविश्वास में काफी बढ़ोतरी होती है।'

मलिंगा ने हार के लिए खुद को जिम्मेदार ठहराया: श्रीलंकाई कप्तान लसित मलिंगा ने भारत के खिलाफ टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में मिली हार के लिए खुद को जिम्मेदार ठहराया लेकिन स्वीकार किया कि कम अनुभवी टीम की अगुआई करने से उनका प्रदर्शन प्रभावित हो रहा है। इस अनुभवी तेज गेंदबाज ने कहा कि शुरुआती विकेट नहीं ले पाना और साझेदारियां नहीं बनाना उनकी टीम के कमजोर प्रदर्शन का कारण है। उन्होंने कहा, 'हम सीरीज हार गए। मुझे अच्छा प्रदर्शन करना होगा क्योंकि मुझे टी-20 खेलने का अनुभव है लेकिन मुझे इस सीरीज में एक भी विकेट नहीं मिला इसलिए हम इस स्थिति में पहुंचे।' मलिंगा 82 टी-20 मैच खेल चुके हैं। उन्होंने कहा, 'मैं टीम में टी-20 का सबसे अनुभवी खिलाड़ी हूं। हां, मुझ पर विकेट लेने का दबाव था क्योंकि मैं विकेट झटकने वाला गेंदबाज हूं लेकिन अगर हम मैच जीतना चाहते हैं तो हमें पहले छह ओवरों में शुरुआती एक दो विकेट निकालने होंगे, जो हमें इस सीरीज में नहीं मिले। शीर्ष क्रम महत्वपूर्ण होता है और भारतीय शीर्ष क्रम ने अच्छी साझेदारियां निभाई।

बल्ले से योगदान देकर खुश हूं : शार्दुल ठाकुर

पुणे : श्रीलंका के खिलाफ तीसरे टी-20 मैच में अंतिम ओवरों में तेजी से रन बनाने वाले शार्दुल ठाकुर का कहना है कि अगर वह नीचे आकर बल्ले से योगदान दे सकते हैं तो यह टीम के लिए काफी अहम साबित होगा। शार्दुल ने आठ गेंदों पर दो छक्कों और एक चौके की मदद से नाबाद 22 रन बनाए और भारत को 20 ओवरों में छह विकेट के नुकसान पर 201 रनों का विशाल स्कोर देने में अहम भूमिका निभाई। शार्दुल ने कहा, 'मुझे लगता है कि मेरे पास बल्लेबाजी करने की क्षमता है और मैं कड़ा अभ्यास कर रहा हूं। अगर मैं नंबर आठ पर बल्लेबाजी से टीम में योगदान दे सकता हूं तो यह टीम के लिए अहम है। मैं आउट स्विंगर भी डाल सकता हूं इसलिए मेरा ध्यान गेंद को जल्दी स्विंग कराने पर होता है। मैं टीम में पहली बार 2016 में आया था और तब से मैंने टीम के साथ वक्त गुजारा है। अब मुझे यह घर जैसा लगता है और मैं अलग महसूस नहीं करता।'

अभ्यास सत्र के दौरान शिखर धवन ● फाइल फोटो, एपी

तेज गेंदबाजी मेरे स्वभाव में है : नवदीप सैनी

पुणे : भारतीय तेज गेंदबाज नवदीप सैनी ने कहा है कि वह शुरू से ही स्वभाविक रूप से तेज गेंदबाजी करते आ रहे हैं। सैनी ने शुक्रवार को श्रीलंका के खिलाफ खेले गए तीसरे टी-20 मैच में तीन विकेट हासिल किए। 27 वर्षीय सैनी घरेलू क्रिकेट में लाल गेंद से खेलते थे, लेकिन उन्होंने कहा कि सफेद गेंद से गेंदबाजी करना अब उनके लिए आसान हो गया है। सैनी ने कहा, 'जब मैं शुरुआत में लाल गेंद से खेलता था तो मुझे सफेद गेंद से गेंदबाजी करने में दिक्कत होती थी लेकिन अब अभ्यास करने के बाद सफेद गेंद से गेंदबाजी करना मेरे लिए आसान हो गया है और मैं इसमें सुधार कर रहा हूं। मेरे सीनियर भी मेरी काफी मदद कर रहे हैं और मुझे बता रहे हैं कि विभिन्न परिस्थितियों में कैसी गेंदबाजी करनी है।' सैनी ने कहा, 'तेज गेंदबाजी करना मेरे लिए स्वभाविक है। मैं जिम जाता हूं। अपने खाने-पीने का भी ध्यान रखता हूं।'

जीत में योगदान देकर खुश हूं: मनीष पांडे

पुणे: श्रीलंका के खिलाफ तीसरे टी-20 मैच में 31 रनों की तेजतर्रार पारी खेलने वाले भारतीय बल्लेबाज मनीष पांडे ने कहा कि वह जीत में अपना योगदान करके बेहद खुश हैं। पांडे ने कहा, 'एक बात मेरे जेहन में थी कि यदि अंत में मैं अच्छे रन बनाता हूं तो अच्छा रहेगा। मैं इसके लिए तैयार था। मेरे कोच ने भी मुझे हमेशा यही सिखाया है और मुझे मौका मिला। शार्दुल के साथ अच्छी साझेदारी हुई। घरेलू क्रिकेट में और नेट पर मैंने अच्छी बल्लेबाजी की थी। मैं मौका मिलने के इंतजार में था। मुझे डिलीवर करना था। आप अपने ऊपर लगातार काम करते हो। मैच में कुछ अवसर ऐसे आते हैं जब आप अपने शॉट्स खेल सकते हो। काफी लंबे वक्त के बाद मुझे भारत के लिए खेलने का मौका मिला। मैंने ट्रेनिंग के दौरान कोच से बात की और जाना कि इस मौके को कैसे हथियाना है। मैं काफी वक्त बाद टीम इंडिया के लिए और जीत में योगदान करके काफी खुश हूं।'

बराबरी की लड़ाई के लिए हो जाइये तैयार

भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच मंगलवार से शुरू होगी वनडे सीरीज वार्नर-स्मिथ के साथ भारत को टक्कर देने आई है फिंच की टीम

अभिषेक त्रिपाठी ● नई दिल्ली

ऑस्ट्रेलियाई टीम मंगलवार से शुरू होने वाली तीन वनडे मुकाबलों की सीरीज खेलने के लिए भारत पहुंच चुकी है। विराट कोहली की टीम भी श्रीलंका को तीन टी-20 मैचों की सीरीज में 2-0 से हराकर एक नई सीरीज के लिए तैयार है। एक के बाद एक सीरीज की आपाधापी से भले ही कुछ लोग खुश नहीं हों लेकिन भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बराबरी की लड़ाई देखने के लिए सभी तैयार होंगे। ऑस्ट्रेलिया ने पिछले साल वनडे विश्व कप से पहले भारत में खेली पांच वनडे मुकाबलों की सीरीज में मेजबान टीम को 3-2 से पराजित किया था।

आरोन फिंच की कप्तानी में एक बार फिर कंगारू वही करिश्मा दोहराने को तैयार हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि इस बार फिंच की टीम में डेविड वार्नर और स्टीव स्मिथ भी हैं जो पिछली बार प्रतिबंध के कारण भारत नहीं आ सके थे। भारत आइसीसी वनडे रैंकिंग में दूसरे और ऑस्ट्रेलिया तीसरे नंबर पर है और इसी कारण इसे बैटल ऑफ इक्वल यानी बराबरी का मुकाबला कहा जा रहा है।

गावस्कर की टीम से विराट की सेना तक का सफर: भारतीय प्रशंसकों के लिए भारत बनाम ऑस्ट्रेलिया मैच सालों तक अंडरडॉग और चैंपियन के बीच मुकाबला रहा। भारत को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ कोई सीरीज जीतने में 31 साल लग गए, जब सुनील गावस्कर के नेतृत्व में भारतीय टीम ने 1979 में ऑस्ट्रेलिया को अपने घर में टेस्ट सीरीज में 2-0 से शिकस्त दी थी। सात साल बाद दोनों देशों ने भारत में यादगार सीरीज खेली जहां पर चेन्नई का टाई टेस्ट शामिल था। यह दोनों टीम भले ही अभी सिर्फ तीन वनडे मैचों की सीरीज खेल रही हों लेकिन सबकी नजर इस साल ऑस्ट्रेलिया में होने वाले टी-20 विश्व कप और इस साल के आखिरी में भारत के ऑस्ट्रेलिया दौरे पर है। टी-20 विश्व कप के बाद भारत ऑस्ट्रेलिया में चार टेस्ट तीन वनडे और तीन टी-20 खेलेगा। पिछले साल ऑस्ट्रेलिया में अपनी कप्तानी में पहली बार भारत को टेस्ट सीरीज में जीत दिलाने वाले विराट इस कारनामे को दोबारा दोहराना चाहेंगे।

बॉर्डर भी हैं दीवाने: भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच गावस्कर-बॉर्डर ट्रॉफी खेली जाती है जो दोनों देशों के दिग्गज कप्तानों के नाम पर है। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान एलन बॉर्डर ने 2016 में कहा था कि दोनों देशों के बीच प्रतिस्पर्धा शानदार रही है। यह 1986 में टाई टेस्ट से शुरू हुई। हम इससे पहले एक दूसरे के खिलाफ ज्यादा टेस्ट नहीं खेले थे। मैं यहां 1979 में आया और अगली बार 1986 में। 1990 से सचिन तेंदुलकर का उभरना भी दोनों देशों के बीच प्रतिस्पर्धा का कारण बना, जहां सचिन बनाम शेन वॉर्न की मैदानी जंग को कौन भूल सकता है। तेंदुलकर के नेतृत्व में भारतीय टीम ने 1996-97 और 1997-98 में अकेले दम पर टेस्ट सीरीज जीती। 1997-98 में चेन्नई टेस्ट में उनके दूसरी पारी के शतक ने भारत की झोली में हारा हुआ मैच डाल दिया। मार्क टेलर ने इस हार के बाद कहा था कि हम किसी टीम से नहीं एक इंसान सचिन से हार गए। इसके बाद सौरव गांगुली के नेतृत्व में भारतीय टीम ने नए आयाम खड़े किए। 2001 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपने घर में 2-1 से टेस्ट सीरीज जीतना इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। सही मायनों में 2001 की जीत ने भारत के बारे में दुनिया के विचार बदलकर रख दिए। 2001 टेस्ट सीरीज हारने के बाद रिकी पोंटिंग ने कहा कि वह सीरीज मेरे जीवन की सबसे यादगार सीरीज रही। 2004 में पोंटिंग की टीम ने बदला लिया और 25 साल बाद यहां टेस्ट सीरीज जीती।

मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में शनिवार को अभ्यास सत्र के दौरान ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज स्टीव स्मिथ, कप्तान आरोन फिंच और डेविड वार्नर (बायें से) ● एएफपी

भारत बनाम ऑस्ट्रेलिया

मैच	तारीख	स्थान
पहला वनडे	14 जनवरी	मुंबई
दूसरा वनडे	17 जनवरी	राजकोट
तीसरा वनडे	19 जनवरी	बेंगलुरु

137 वनडे मुकाबले अब तक भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेले गए हैं। 50 मैच भारत और 77 मैच ऑस्ट्रेलिया जीता, 10 मैच परिणाम रहित रहे

61 वनडे अब तक अपने घर में भारतीय टीम ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेले हैं। 27 में उसे जीत मिली जबकि 29 में शिकस्त का सामना करना पड़ा, पांच मैच परिणाम रहित रहे

रन, विकेट और स्लेजिंग...

नई दिल्ली: भारत और ऑस्ट्रेलिया जब भी आपस में भिड़े हैं तो रनों और विकेट का अंबार लगने के साथ जमकर स्लेजिंग भी हुई। दोनों देशों के बीच बढ़ती इस प्रतिस्पर्धा में हर बार सीरीज में कोई ऐसा नाम आया जिसने दमदार प्रदर्शन किया। जो भारत की जीत में अकेला योद्धा बना या किसी ने मैच जिताने वाला स्पेल डाला। ऐसे ही खिलाड़ियों पर नजर डालते हैं, जिन्होंने ऑस्ट्रेलियाई टीम को अकेले कड़ी चुनौती दी।

रवि शास्त्री

भारत को 1985 बेंसन एंड हेजेस विश्व सीरीज का खिताब दिलाने में टीम इंडिया के वर्तमान मुख्य कोच रवि शास्त्री ने अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने उस सीरीज में 182 रन और आठ विकेट लिए। पाकिस्तान के खिलाफ फाइनल में नाबाद 63 रन बनाने से पहले शास्त्री ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ग्रुप मुकाबले में 51 रनों की अहम पारी खेली थी। भारत को चैंपियन बनाने वाले शास्त्री को मैन ऑफ द सीरीज के साथ ही ऑडी-100 सिडान कार मिली थी।

सचिन तेंदुलकर

भारत के 1991-92 ऑस्ट्रेलिया दौरे पर सभी की निगाहें सचिन तेंदुलकर पर थीं पहले दो टेस्ट हारने के बाद भारतीय टीम तीसरा टेस्ट ड्रॉ कराने में कामयाब रही थी जिसमें शास्त्री के शानदार दोहरे शतक के अलावा सचिन की 148 रनों की बेहतरीन पारी भी शामिल थी, लेकिन पांचवें टेस्ट में सचिन ने शतक लगाकर अपने पहले ऑस्ट्रेलियाई दौरे पर छाप छोड़ी। एक छोर से गिरते विकेटों के बीच सचिन ने ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाजी आक्रमण मर्व हयूज, क्रेग मैकडरमोर्ट और पॉल रिफिल का सामना किया और 114 रन बनाए।

हरभजन सिंह

ऑस्ट्रेलिया 2001 में भारत का दौरा करने पहुंची तो चोट के कारण अनिल कुंबले सीरीज से बाहर हो गए। इसके बाद हरभजन सिंह ने भारतीय स्पिन विभाग की कमान संभाली। भज्जी ने मौका को भुनाते हुए कोलकाता टेस्ट में एक हैट्रिक समेत 13 विकेट निकालकर भारत को जीत दिला दी। उन्होंने पूरी सीरीज में 32 विकेट लिए। फाइनल टेस्ट में उन्हें मैन ऑफ द मैच, वहीं पूरी सीरीज में दमदार प्रदर्शन करने के लिए उन्हें मैन ऑफ द सीरीज का पुरस्कार भी मिला।

2037 रन मौजूदा भारतीय बल्लेबाजों में रोहित शर्मा ने बनाए हैं ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे में, इसके बाद विराट कोहली हैं जिनके नाम 1727 रन हैं

युवराज सिंह

अंडर-19 विश्व कप में शानदार प्रदर्शन करने के बाद युवराज सिंह को वर्ष 2000 में आइसीसी नॉकआउट कप के लिए भारतीय टीम में जगह मिली। अपने करियर के मात्र दूसरे वनडे और क्वार्टर फाइनल जैसे अहम मुकाबले में युवराज ने ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाजी आक्रमण ग्लेन मैक्ग्रा, ब्रेट ली और जैसन गिलेस्पी का डटकर सामना किया और 80 गेंद में 84 रन बनाकर टीम इंडिया को 265 रनों तक पहुंचाया। इस पारी के बाद युवराज ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

वीवीएस लक्ष्मण

जब भी 2001 के कोलकाता टेस्ट के बारे में पूछा जाता है तो सौरव गांगुली कहते हैं कि यह भगवान का टेस्ट मैच था। मैच पर नजर डालें तो वीवीएस लक्ष्मण और राहुल द्रविड़ ने कुछ ऐसी ही पारियां खेली थी। पहली पारी में 171 रन पर ढेर होने के बाद भारतीय टीम को फॉलोऑन खेलने के लिए मजबूर होना पड़ा। भारतीय टीम की दूसरी पारी में भी हालत खराब थी, लेकिन लक्ष्मण और द्रविड़ ने चौथे दिन एक भी विकेट नहीं गिरने दिया और 376 रनों की साझेदारी कर दी, जिससे भारत ने कंगारुओं को 384 रनों का लय दिया। लक्ष्मण ने 281 और द्रविड़ ने 180 रनों की पारी खेली।

स्मिथ, वार्नर की मौजूदगी से ऑस्ट्रेलिया मजबूत : वॉ

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान स्टीव वॉ ने कहा कि भारतीय क्रिकेट टीम इस साल के आखिर में जब ऑस्ट्रेलिया का दौरा करेगी तो लोग 'दुनिया की दो सर्वश्रेष्ठ टीमों' के बीच खेली जाने वाली टेस्ट सीरीज को लंबे समय तक याद रखा जाएगा। उन्होंने साथ ही उम्मीद जताई कि भारतीय टीम इस दौरे पर डे-नाइट टेस्ट मैच खेलेगी।

भारतीय टीम ने 71 साल के इंतजार को खत्म करते हुए 12 महीने पहले ऑस्ट्रेलिया को उसकी सरजमीं पर हराकर अपने टेस्ट क्रिकेट इतिहास में पहली बार सीरीज जीती थी। उस टीम में हालांकि स्टीव स्मिथ और डेविड वार्नर जैसे दिग्गज मौजूद नहीं थे। उस समय दोनों खिलाड़ी गेंद से छेड़छाड़ के मामले में सजा के तहत एक साल तक टीम से बाहर थे। वॉ ने कहा कि भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच हमेशा शानदार सीरीज होती है। यह परंपरा बन गई है। मुझे लगता है यह शानदार सीरीज होगी। हर कोई इसका इंतजार कर रहा है। इसमें कोई शक नहीं कि इससे वार्नर और स्मिथ की वापसी से टीम काफी मजबूत होगी।

वॉ ने भारत के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज के लिए यहां पहुंचने के बाद कहा कि इसमें कोई शक नहीं कि अभी भारत के पास दुनिया की सबसे बेहतर संपूर्ण टीम है। वह इस चुनौती का इंतजार कर रहे होंगे। यह ऐसी सीरीज होगी जिसे लोग लंबे समय तक याद करेंगे। इस वनडे सीरीज के दौरान यह पता चल सकता है कि भारतीय टीम इस ऑस्ट्रेलिया दौरे पर डे-नाइट टेस्ट मैच खेलेगी या नहीं। कोहली की कप्तानी वाली टीम ने पिछले दौरे पर नवंबर में गुलाबी गेंद से टेस्ट मैच खेलने में झिझक दिखाई थी। वॉ का मानना है कि इस बार भारत के लिए डे-नाइट टेस्ट के लिए मना करना मुश्किल होगा और कोहली को यह चुनौती स्वीकार करनी चाहिए। वॉ ने कहा कि किसी भी टीम के लिए ऑस्ट्रेलिया में डे-नाइट का टेस्ट क्रिकेट खेलना चुनौतीपूर्ण होता है। विराट कोहली की तरह का खिलाड़ी इसका स्वागत और चुनौती स्वीकार करना पसंद करेगा। अगर आप दुनिया की सर्वश्रेष्ठ टीम है तो आप हर टीम के खिलाफ किसी भी परिस्थिति में जीतना चाहते हैं। भारत को यह चुनौती स्वीकार करनी चाहिए। अगामी वनडे सीरीज के बारे में पूछे जाने पर वॉ ने कहा कि भारतीय टीम का पलड़ा भारी रहेगा। टीम के सबसे सफल कप्तानों में शामिल इस पूर्व खिलाड़ी ने कहा कि दोनों टीमें प्रतिस्पर्धी क्रिकेट खेलने के लिए जानी जाती है, दोनों दुनिया की सर्वश्रेष्ठ टीम है।

धौनी की तरह नजदीकी मैच जिताना चाहते हैं कैरी

मुंबई, प्रेट्र: ऑस्ट्रेलिया के विकेटकीपर बल्लेबाज एलेक्स कैरी चाहते हैं कि वह मैच को लंबा खींचे और फिर नजदीक तक ले जाने के बाद मैच को जिताएं। वैसे ही जैसे पूर्व भारतीय कप्तान महेंद्र सिंह धौनी करते आए हैं। कैरी ने कहा कि मुझे अपने खेल के कई हिस्सों में अभी सुधार करना है। मैं जानता हूं कि मुझे मध्य क्रम या निचले क्रम में बल्लेबाजी करनी है तो मैं ऑस्ट्रेलिया के लिए मैच को खत्म करना चाहता हूं। जब आप धौनी की तरह दुनिया के सर्वश्रेष्ठ बनना चाहते हो तो आपको उनसे बहुत कुछ सीखने की जरूरत होती है। मैं खुशकिस्मत हूं कि पिछले वर्ष मुझे उनके खिलाफ खेलने का मौका मिला। वह मैच को गहराई तक ले जाते हैं और फिर भारत को जीत दिलाते हैं। मैं वनडे में ऐसा ही करना चाहता हूं। 28 वर्षीय कैरी ने स्वीकार किया कि भारत के खिलाफ सीरीज चुनौतीपूर्ण होगी। खासतौर पर जसप्रीत बुमराह और मुहम्मद शमी जैसे गेंदबाजों को खेलना। भारत में वापस आना साफ है कि यहां मुश्किल मैच होंगे। हमें विश्व के सर्वश्रेष्ठ भारतीय गेंदबाजों के आगे कुछ अलग करना होगा।

पांड्या के न्यूजीलैंड दौर में चयन पर संशय

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: न्यूजीलैंड के छह सप्ताह के आगामी दौरे के लिए भारत की सीमित ओवर की टीम में ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या के शामिल होने की उम्मीद थी लेकिन वह न्यूजीलैंड दौरे के लिए जाने वाली भारतीय-ए टीम में शामिल होने से पहले ही फिटनेस टेस्ट में फेल हो गए। इससे उनके विराट कोहली की कप्तानी वाली टीम में भी शामिल होने पर संशय हो गया क्योंकि उसका चयन रविवार को ही मुंबई में होना है। फिलहाल पांड्या को भारतीय-ए टीम से बाहर कर दिया गया। पांड्या की जगह अब विजय शंकर भारत-ए टीम के साथ न्यूजीलैंड के लिए उड़ चुके हैं।

भारत-ए को 22 जनवरी से न्यूजीलैंड में तीन लिस्ट ए मैच और दो गैरआधिकारिक टेस्ट मैच खेलने हैं। वहीं कोहली की कप्तानी वाली टीम इंडिया को 24 जनवरी से शुरू होने वाले न्यूजीलैंड दौरे पर पांच टी-20 अंतरराष्ट्रीय, तीन वनडे और दो टेस्ट मैच खेलने हैं। ये टीम बेंगलुरु के एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम में 19 जनवरी को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ आखिरी वनडे खेलने के अगले ही दिन न्यूजीलैंड के लिए उड़ जाएगी। यह भी देखना होगा कि ए टीम से चूके पांड्या को सीनियर टीम में मौका मिलेगा कि नहीं क्योंकि वह ए टीम के लिए किए गए दोनों फिटनेस टेस्ट में फेल हो गए हैं। इससे साफ होता है कि हार्दिक पांड्या अभी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के लिए फिट नहीं हैं।

सफेद गेंद के क्रिकेट पर ध्यान: इस साल ऑस्ट्रेलिया की मेजबानी में टी-20 विश्व कप खेला जाना है, इसे देखते हुए चयनकर्ताओं का मुख्य ध्यान सफेद गेंद के क्रिकेट के लिए अहम खिलाड़ियों के चयन पर लगा होगा। श्रीलंका के खिलाफ हाल में समाप्त हुई सीरीज में खेलने वाली टी-20 टीम के खिलाड़ियों का चयन तय ही है। जहां तक वनडे टीम की बात है तो उसकी सबसे कमजोर कड़ी केदार जाधव हैं जो दबाव के बावजूद 50 ओवर की टीम में अपना स्थान बरकरार रखे हुए हैं। न्यूजीलैंड में जाधव की तकनीकी खामियां सामने आ सकती हैं और हाल के दिनों में ज्यादा ओवर नहीं खेलने को देखते हुए उन्हें टीम से बाहर किया जा सकता है। वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे सीरीज में जाधव ने संतोषजनक प्रदर्शन किया था। अगर टीम तकनीकी मजबूती के पहलू को देखते है तो अजिंक्य रहाणे लंबे समय बाद सीमित ओवर क्रिकेट में वापसी कर सकते हैं लेकिन अगर ऐसा नहीं है तो मुंबई के सूर्यकुमार यादव की आक्रामक बल्लेबाजी को देखते हुए पांचवें या छठे स्थान के विकल्प के रूप में देखा सकता है।

नजरिया

- फिटनेस टेस्ट में फेल होने के बाद भारत-ए टीम से बाहर
- न्यूजीलैंड दौरे के लिए आज होना है टीम इंडिया का चयन

नजरिया पूर्व भारतीय कप्तान सुनील ने कहा, मौजूदा खिलाड़ियों से राय लेने के बाद हो चार दिवसीय टेस्ट पर फैसला

एमएस धौनी के लंबे आराम पर गावस्कर ने उठाए सवाल

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: पूर्व भारतीय कप्तान और दिग्गज बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने जुलाई में विश्व कप सेमीफाइनल में भारत की हार के बाद से क्रिकेट से पूर्व भारतीय कप्तान महेंद्र सिंह धौनी के आराम लेने पर शनिवार को सवाल उठाए और कहा कि क्या कोई खुद को इतने लंबे समय तक भारत की ओर से खेलने से दूर रख सकता है?

पिछले साल नौ जुलाई को विश्व कप सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड के खिलाफ भारत की हार के बाद से धौनी के भविष्य को लेकर अटकलों का दौर जारी है। 38 साल के धौनी ने इस हार के बाद से प्रतिस्पर्धी क्रिकेट नहीं खेला है लेकिन उनके आइपीएल में वापसी करने की उम्मीद है। गावस्कर ने धौनी के विश्व कप टीम में जगह बनाने के सवाल पर कहा, 'फिटनेस ऐसी चीज है जिसके बारे में मैं आपको कुछ नहीं बता सकता। यह सवाल स्वयं धौनी से पूछा जाना चाहिए। उन्होंने 10 जुलाई से खुद को भारत की ओर से खेलने के लिए उपलब्ध नहीं रखा है।'

गावस्कर ने यहां 26वें लाल बहादुर शास्त्री स्मृति व्याख्यान के बाद कहा, 'यह महत्वपूर्ण सवाल है। क्या कोई भारत के लिए खेलने से खुद को इतने समय तक दूर रख सकता है? यह सवाल है और इसी के अंदर जवाब है।' टेस्ट क्रिकेट को पांच दिन से घटाकर चार दिन का करने के आइसीसी के प्रस्ताव पर गावस्कर ने कहा, 'मुझे लगता है कि यह मायने नहीं रखता। मौजूदा खिलाड़ी क्या सोचते हैं यह मायने रखता है। बीसीसीआइ के फैसला करने से पहले उनसे सलाह मशविरा होना चाहिए।

आइपीएल की बराबरी नहीं कर सकती रणजी ट्रॉफी: गावस्कर ने कहा कि रणजी ट्रॉफी में जब तक खिलाड़ियों की मैच फीस में भारी भरकम इजाफा नहीं किया जाता, तब तक यह आइपीएल की बराबरी नहीं कर सकती। रणजी ट्रॉफी खेलने के लिए एक खिलाड़ी को प्रति मैच लगभग ढाई लाख रुपये मिलते हैं लेकिन कुछ समय पहले तक खिलाड़ियों को काफी कम मैच फीस मिलती थी। इस इजाफे के बावजूद इस प्रथम श्रेणी टूर्नामेंट से खिलाड़ियों को होने वाली कमाई मामूली है।

लाल बहादुर शास्त्री स्मृति व्याख्यान में बोलते सुनील गावस्कर ● सौजन्य आयोजक

सुनील बोले, क्लासरूम में वापस लौटें छात्र

नई दिल्ली: पूर्व भारतीय कप्तान सुनील गावस्कर ने देश में मौजूदा समय में चल रहे माहौल को लेकर चिंता जताई है। पिछले करीब एक महीने के भीतर अलग अलग मौकों पर जामिया मिलिया इस्लामिया, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी और जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी में छात्र हिंसा का शिकार हुए हैं। गावस्कर ने कहा कि देश में उथल-पुथल का माहौल है और मैं भारतीय क्रिकेट के बारे में जो कुछ भी कहूंगा वह इसे जरा भी आसान नहीं करेगा। हमारे कुछ युवा क्लास में होने की बजाय सड़कों पर हैं। उनमें से कुछ सड़कों पर रहने के कारण अस्पताल पहुंच रहे हैं। हम एक राष्ट्र के रूप में तभी आगे जा सकते हैं, जब हम सब एक साथ होंगे, जब हम में से हर एक केवल भारतीय होगा। खेल ने हमें यही सिखाया है कि हम तभी जीतेंगे जब हम साथ होंगे। भारत कई संकट से पार पा चुका है और इससे भी उबर जाएगा। मैं छात्रों से यही कहूंगा कि आप क्लास रूम में वापस चले जाइए, क्योंकि वही आपकी मेन ड्यूटी है। यूनिवर्सिटी पढ़ाई के लिए गए हैं। पढ़ाई कीजिए।

3 में से एक बच्चे को दुनिया में संतुलित आहार नहीं मिल रहा है। मध्य प्रदेश के इंदौर में चल रहे 'पेडिकॉन 2020' में मिस्र के शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. वेल बहवह ने यह दावा किया है।

स्टेपल पिनों से करते हैं कमाल की कलाकारी

- स्टेपल और सनलाइट आर्ट में नाम कमा रहे हमीरपुर, उप्र के युवा कलाकार अवनीश
- स्वामी विवेकानंद के चित्र के लिए मिला है इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में स्थान
- पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के चित्र के लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराने की चाहत

स्टेपल आर्ट से तैयार की गई स्वामी विवेकानंद की कलाकृति के साथ अवनीश। जागरण

संडे बॉक्स जरा हटके...

केके द्विवेदी, हमीरपुर

कला संवेदना से सृजित होती है। इसके लिए जरूरी नहीं कि विधिवत शिक्षा-दीक्षा ही ली जाए। बेशक डिग्री से कला की तालीम को पंजीयन का दर्जा मिल जाता है, लेकिन भाव मन की गहराइयों से ही पैदा होते हैं। कोई समय गुजारने के लिए ये शौक पालता है तो कुछ शोहरत के लिए। इनसे जुदा कुछ चितेरे ऐसे भी होते हैं जो कुछ कर गुजरने के लिए कला के सेवक बन जाते हैं। हमीरपुर, उप्र के गोहांड ब्लॉक में स्थित गांव बरौली खरका निवासी 25 वर्षीय अवनीश इसकी बानगी हैं। बिना किसी प्रशिक्षण के वह स्टेपल और सनलाइट आर्ट के माध्यम से अपने सपनों को सृजित कर रहे हैं।

अवनीश के पिता जयप्रताप फर्नीचर का काम करते हैं। माता चंद्रादेवी घर संभालती है। बकौल अवनीश साइंटिस्ट बनने का सपना था। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, इसलिए बीएससी के बाद पिता के साथ काम में जुटना पड़ा। काम में मन लगा तो लकड़ी से बर्तन और सजावटी सामान बनाने लगे। इससे हौसला बढ़ा। आर्ट में दिलचस्पी होने लगी। स्टेपल आर्ट के बारे में पता चला तो छोटे-छोटे चित्र बनाना शुरू कर दिया। मार्च 2018 में मित्र का चित्र तैयार किया। सभी ने हौसला बढ़ाया तो अन्य चित्र तैयार किए और आर्ट मेनिया की ओर से अजमेर में आयोजित प्रदर्शनी में भाग लिया। सराहना मिली तो ये सिलसिला चल निकला...।

कहते हैं, कला मेरा शौक है, कमाने का साधन नहीं। फर्नीचर के काम से खर्च चल जाता है। इसीलिए मैं चित्र बेचता नहीं, यदि कोई इच्छा जाहिर करता है तो उसका चित्र बना देता हूं।

कला को मिल रहा सम्मान...

अवनीश को अब तक एक दर्जन से अधिक अवार्ड मिल चुके हैं। स्टेपल के जरिए स्वामी विवेकानंद का चित्र भी काफी सराहा गया। महज पांच दिन में 17 हजार पांच स्टेपल पिन का प्रयोग कर चित्र बनाने पर उन्हें इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में स्थान मिला। स्टेपल पिन से उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का भी चित्र तैयार किया है। अब इसके लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड की तैयारी कर रहे हैं। बताते हैं कि इस चित्र में 30,601 स्टेपल पिन लगे। अवनीश ने सनलाइट आर्ट की मदद से लकड़ी पर मदर टेरेसा का चित्र उकेरा है। इसे धूप और मैग्नीफाइंग ग्लास के जरिए बनाया गया है।

एंबुलेंस बन जाती है इनकी लग्जरी कार

प्रेरक ▸ कार केवल शौक के लिए नहीं, अब तक सैंकड़ों घायलों और जरूरतमंदों को पहुंचाया अस्पताल

प्रशासन ने भी दी कार को एंबुलेंस की तरह इस्तेमाल करने की इजाजत

- घायल को अस्पताल पहुंचाने तक गाड़ी पर लगाते हैं बोर्ड, नीली बत्ती और सायरन
- कार में स्ट्रेचर और चादर के अलावा प्राथमिक उपचार का सामान भी रखते हैं

नरेंद्र शर्मा, जयपुर

स्वस्थ समाज

जयपुर निवासी कर अधिकारी संदीप गुप्ता अपनी लग्जरी फॉरच्यूनर गाड़ी को जरूरत पड़ने पर एंबुलेंस बनाकर अब तक सैंकड़ों लोगों को अस्पताल पहुंचा चुके हैं। इनमें से 65 लोग तो ऐसे थे, जिन्हे यदि समय पर अस्पताल नहीं पहुंचाया जाता तो उनकी मौत हो सकती थी। संदीप सड़क दुर्घटनाओं में घायल हुए लोगों के लिए अपनी गाड़ी को एंबुलेंस बनाने में बिलकुल संकोच नहीं करते, अंततः उन्होंने अपनी गाड़ी को एंबुलेंस भी बना लिया।

सड़क पर आते-जाते कहीं भी दुर्घटना में घायल या जरूरतमंद को देखते हैं तो तुरंत अपनी गाड़ी से उसे अस्पताल पहुंचाते हैं। उन्होंने इसके लिए अपनी गाड़ी में खास इंतजाम कर रखे हैं, जिसकी इजाजत उनके कामों को देखते हुए प्रशासन ने उन्हें दी है। अब जरूरत पड़ने पर नीली बत्ती, सायरन और एंबुलेंस लिखे बोर्ड को तुरंत लगाते हैं ताकि घायल को जल्द से जल्द अस्पताल तक पहुंचा दें। कार में स्ट्रेचर और चादर के अलावा प्राथमिक उपचार का सामान भी रखते हैं। घायल को अस्पताल तक पहुंचाते समय रास्ते में खुद प्राथमिक उपचार करने का प्रयास करते हैं। यातायात पुलिस ने उन्हे एक पत्र भी देखा रखा है, जिसमें लिखा है कि घायलों की मदद करने के लिए वह एंबुलेंस की तरह विशेष अधिकारों का इस्तेमाल कर सकते हैं। घायल को अस्पताल पहुंचाने तक वे नीली बत्ती, सायरन और एंबुलेंस लिखे हुए बोर्ड का उपयोग करते हैं और बाद में उतारकर गाड़ी में रख लेते हैं।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें www.jagran.com/topics/positive-news

मैंने किया, आप भी करें...

इस सामाजिक सरोकार के लिए संदीप गुप्ता पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल, राज्य के पुलिस महानिदेशक सहित कई संस्थाएं भी सम्मानित कर चुकी हैं। संदीप गुप्ता किसी भी घायल को अस्पताल पहुंचाने के साथ ही उसके पास अपना विजिटिंग कार्ड अवश्य छोड़ते हैं, जिसमें मोबाइल नंबर और पते के साथ ही यह भी लिखा हुआ है कि यदि भविष्य में आपको कोई घायल रास्ते में मिले तो आप भी यही करें, उसे अस्पताल अवश्य पहुंचाएं। उनका मकसद घायलों को समय पर इलाज दिलाना है।

जरूरत पड़ने पर कार को एंबुलेंस की तरह उपयोग करने के लिए प्रशासन से मिला अनुमति पत्र दिखाते संदीप गुप्ता। जागरण

एक ताने ने बदल डाला जिंदगी का तानाबाना

जीना इसी का नाम है

गौरव दुबे, अलीगढ़

रास्ते में मिले एक ताने ने दिव्यांग वीरेंद्र की जिंदगी का ताना-बाना बदला दिया। उन्होंने ठान लिया कि कुछ करके दिखाएंगे। पहले समोसे की दुकान के साथ इंटर तक पढ़ाई की और फिर एसएससी परीक्षा की तैयारी। अब आयकर विभाग में असिस्टेंट के पद पर हैं। वह आयकर अधिकारी बनने के लिए तैयारी कर रहे हैं।

अलीगढ़, उप्र के ब्लॉक धनीपुर क्षेत्र स्थित गांव बोनेर के वीरेंद्र कुमार तीन भाइयों में अग्रज हैं। वह दो साल के थे, तभी पोलियो वायरस ने हमला बोल दिया। दोनों पैरों से लाचार हो गए। घर के आर्थिक हालात बहुत खराब थे, लेकिन पिता की बेटे को पढ़ाने की इच्छा प्रबल थी। उन्होंने प्राथमिक स्कूल में दाखिला करा दिया। पैरों से लाचार वीरेंद्र कुमार हाथों से घिसटते हुए स्कूल जाते। यहीं से उन्होंने 2005 में पांचवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद एक कार्यक्रम में ट्राईसाइकिल मिली, तब हाथ से चलना छूटा।

वीरेंद्र ने बताया कि 11वीं में फेल होने के बाद उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। बेरोजगार थे, कुछ समझ नहीं आ रहा था। बताते हैं, एक सुबह की बात है, राह चलते किसी के सामने आ गया तो उसने मेरे पैरों को देखते हुए कहा ये कहां से सामने आ गया, अब न जाने कैसा दिन गुजरेगा। यह बात ऐसी चुभी कि ठान लिया अब ऐसा बनेंगे कि लोग ताने नहीं, नजीर दें। 2011-12 में 12वीं का प्राइवेट फार्म भर पढ़ाई शुरू कर दी। आखिर 2012-13 में इंटर की परीक्षा पास कर ली। कॉलेज से बीए कर सेल्फ स्टडी से एसएससी की तैयारी शुरू की।

वीरेंद्र के पिता को छोटी सी दुकान पर मुश्किल हो रही थी। लिहाजा वीरेंद्र भी दुकान पर बैठने लगे। वहां पूरे दिन समोसे बनाते, बीच-बीच में पढ़ाई करते। वीरेंद्र ने 2015 में कंबाइंड हायर सेकेंडरी लेवल (सीएचएसएल) परीक्षा पास कर ली, लेकिन टाइपिंग में फेल हो गए। उनकी लगन की जानकारी होने पर शिक्षा क्लासेज के निदेशक योगेश सिंह ने 2016 में एसएससी की तैयारी में सहयोग किया। 2017 में कंबाइंड ग्रेजुएशन लेवल (सीजीएल) की परीक्षा उत्तीर्ण कर वीरेंद्र कुमार आयकर विभाग में टैक्स असिस्टेंट बन गए।

उप्र के अलीगढ़ में बोनेर स्थित दुकान में समोसे तलते वीरेंद्र कुमार (फाइल फोटो)। जागरण

दिखा रहे राह...

- समोसे की दुकान पर काम करते हुए दिव्यांग ने पास की सीजेएल की परीक्षा
- पांचवीं तक हाथों के बल पर स्कूल जाते थे दिव्यांग वीरेंद्र
- 11वीं में पढ़ाई छोड़ी पर एक घटना ने बदल दी जिंदगी, अब कर अधिकारी बनने के लिए कर रहे प्रयास

दैनिक जागरण के सहयोगी मीडिया प्लेटफॉर्म विश्वास.न्यूज की पड़ताल में सामने आया सच

इंदिरा गांधी के दबाव में सीताराम येचुरी के इस्तीफे का दावा गलत

विश्वास.News
क्योंकि सच जानना आपका अधिकार है
www.vishvasnews.com

जेएनएन, नई दिल्ली: जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में छात्रों के विरोध प्रदर्शन के बीच सोशल मीडिया पर जेएनयू छात्रसंघ के पूर्व अध्यक्ष और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के वरिष्ठ नेता सीताराम येचुरी की एक पुरानी तस्वीर वायरल हो रही है। दावा किया जा रहा है कि 1975 के आपातकाल के दौरान इंदिरा गांधी ने दिल्ली पुलिस के साथ जेएनयू कैंपस जाकर उनकी पिटाई की और उन्हें छात्रसंघ प्रेसिडेंट के पद से इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया। विश्वास न्यूज की पड़ताल में यह दावा गलत निकला।

पड़ताल: रिवर्स इमेज में हमें यह तस्वीर एक ब्लॉग पर मिली। ब्लॉग में इस तस्वीर का इस्तेमाल 'हिंदुस्तान टाइम्स' को क्रेडिट देते हुए किया गया है। दी गई जानकारी के मुताबिक, 'यह तस्वीर 5 सितंबर 1977 की है, जब कॉमरेड सीताराम येचुरी ने जेएनयू के छात्रों के साथ इंदिरा गांधी के खिलाफ प्रदर्शन करते हुए उनसे जेएनयू के चांसलर पद से इस्तीफा दिए जाने की मांग की थी।' ब्लॉग के लेखक के तौर पर जेएनयू के प्रोफेसर चमन लाल का जिक्र किया गया है। विश्वास न्यूज ने प्रोफेसर चमन लाल से संपर्क किया। प्रोफेसर लाल ने विश्वास न्यूज के साथ इस पूरी घटना के विवरण को साझा किया। उन्होंने बताया कि यह तस्वीर वास्तव में कैंपस की नहीं है, बल्कि इंदिरा गांधी के आधिकारिक निवास के बाहर की है और इस दौरान पुलिस के साथ कोई भिड़ंत नहीं हुई थी। प्रोफेसर लाल स्वयं इस मार्च में शामिल थे। आपातकाल के दौरान जेल में रहने के बाद चमन लाल ने इसी साल (1977) जेएनयू में दाखिला लिया था। वह बताते हैं, 'यह घटना 1977 की है, जब आपातकाल के बाद हुआ चुनाव इंदिरा गांधी हार चुकी थीं, लेकिन उन्होंने जेएनयू के चांसलर पद से इस्तीफा नहीं दिया था।' उस दिन के घटनाक्रम का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया, '5 सितंबर 1977 को दोपहर में जेएनयू छात्रसंघ के तत्कालीन अध्यक्ष सीताराम येचुरी के नेतृत्व में छात्रों का जत्था इंदिरा गांधी के घर के सामने पहुंचा। हम लोगों ने आपातकाल के दौरान हुए अत्याचारों को लेकर इंदिरा गांधी के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। कुछ देर की नारेबाजी के बाद इंदिरा गांधी अपने घर से बाहर निकलीं और छात्रों के बीच आकर खड़ी हो गईं। उनके चेहरे पर मुस्कान थी। इंदिरा गांधी के साथ कई और नेता भी थे, जिसमें आपातकाल के दौरान गृह मंत्री रहे ओम मेहता भी शामिल थे। सीताराम येचुरी ने इंदिरा गांधी के सामने जेएनयू छात्र संघ की मांगों को पढ़ना शुरू किया। येचुरी जिस ज्ञापन को पढ़ रहे थे, उसमें आपातकाल के दौरान आम लोगों पर हुए अत्याचारों का जिक्र था। और जैसे-जैसे येचुरी ने इसके बारे में बोलना शुरू किया, इंदिरा गांधी के चेहरे की मुस्कान गायब होने लगी। थोड़ी ही देर में उनका चेहरा तमतमाने लगा और बीच में ही वह मुड़कर तेजी से चलते हुए वापस अपने घर में प्रवेश कर गईं। लाल बताते हैं, 'इसके बाद भी येचुरी ने बोलना बंद नहीं किया। पूरा ज्ञापन पढ़े जाने के बाद हम लोगों ने ज्ञापन को वहीं छोड़ा और वापस चले आए। 5 सितंबर 1977 को हुए इस विरोध प्रदर्शन के ठीक अगले दिन इंदिरा गांधी ने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के चांसलर पद से इस्तीफा दे दिया। आपातकाल हटने के बाद जब छात्रसंघ का चुनाव हुआ था, तब येचुरी जेएनयू के प्रेसिडेंट बने थे। आपातकाल लगने के साथ ही जेएनयू छात्रसंघ के चुनाव पर प्रतिबंध लगा दिया गया था और उस वक्त यूनियन के प्रेसिडेंट दिवंगत डी पी त्रिपाठी थे, जबकि वायरल पोस्ट में इस दौरान येचुरी के प्रेसिडेंट होने का दावा किया गया है।

लेखक और जेएनयू में येचुरी के सीनियर रहे सुहैल हाशमी से भी विश्वास न्यूज ने बात की। उन्होंने कहा, 'यह तस्वीर 1975 की नहीं, बल्कि 1977 की है, जब जेएनयू छात्रों ने तत्कालीन जेएनयू प्रेसिडेंट सीताराम येचुरी के नेतृत्व में इंदिरा गांधी के तत्कालीन निवास वेलिंगडन क्रिसेंट (अब मदर टेरेसा क्रिसेंट) के बाहर विरोध प्रदर्शन किया था।' हाशमी इस विरोध प्रदर्शन में शामिल थे। उन्होंने कहा, 'तस्वीर में इंदिरा गांधी के बाईं तरफ (दाढ़ी में) मनोज जोशी नजर आ रहे हैं, जो उस वक्त जेएनयू के काउंसलर थे और बाद में रक्षा सलाहकार भी बनें।' वायरल तस्वीर में सीताराम येचुरी के भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआइ) नेता होने का दावा किया गया है, जबकि वह एसएफआइ के नेता थे, जो मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआइ-एम) की छात्र ईकाई है।

निष्कर्ष: जेएनयू में दिल्ली पुलिस के साथ मिलकर इंदिरा गांधी द्वारा तत्कालीन छात्रसंघ नेता सीताराम येचुरी की पिटाई कर उन्हें इस्तीफा देने के लिए मजबूर करने के दावे के साथ वायरल हो रही तस्वीर फर्जी है।

क्या है वायरल पोस्ट में?

फेसबुक यूजर नरसिंह प्रसाद ने इंदिरा गांधी की पुरानी तस्वीर को शेयर करते हुए लिखा है, '1975 का आपातकाल। इंदिरा गांधी दिल्ली पुलिस के साथ जेएनयू में घुसीं और सीपीआइ नेता सीताराम येचुरी की पिटाई की, जो उस वक्त जेएनयू स्टूडेंट यूनियन के प्रेसिडेंट थे। इंदिरा गांधी ने येचुरी को इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया और उनसे माफी मंगवाई। इसे कहते हैं कम्युनिस्टों के साथ सख्ती से निपटना। अमित शाह उनके (इंदिरा गांधी) सामने संत लगते हैं।'

झूठी खबर और अफवाहों की हकीकत जानने के लिए वाट्सएप करें: 9205 270 923

पांच वक्त के नमाजी आचार्य रफीक समझा रहे योग का मर्म

पेशे से शिक्षक...

- स्वामी विवेकानंद के विचारों को आगे बढ़ा रहे ओडिशा के योगगुरु रफीक खान
- शिविरों में कराते हैं योगाभ्यास, वैदिक मंत्रों का धाराप्रवाह पाठ सुन चौंक जाते हैं सभी

योग सिखाते आचार्य रफीक खान (फाइल फोटो)। जागरण

अब सूची में कई मुस्लिम नाम...

आचार्य रफीक कहते हैं कि योग की तरह गायत्री मंत्र में बहुत सारे गुण हैं। इसके जप से सेहतमंद रह सकते हैं। अन्य वैदिक मंत्रों में भी अलौकिक शक्ति है। अब उनकी सूची में कई मुस्लिम नाम भी हैं जिन्होंने योग के बूते खुद को सेहतमंद बनाया है। वह हर मुसलमान को योग अपनाने की सलाह भी देते हैं।

मो. शबीर, सुंदरगढ़

अपना देस खुशबू माटी की

पाखंड में डूबी धर्म की व्याख्याएं हमारी सोच को संकीर्ण बनाती हैं। स्वामी विवेकानंद ने इन्हीं संकीर्णताओं से ऊपर ऊठकर मानवतावाद का सिद्धांत दिया था। इसके मूल में धर्म, जाति, समुदाय से ऊपर उठकर संपूर्ण मानवता के कल्याण की परिकल्पना है...। यह कहना है आचार्य रफीक खान का। स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रेरित यह शिक्षक ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले के हिमगिर प्रखंड स्थित लुआबहाल प्राथमिक विद्यालय में बच्चों को शिक्षा देने के साथ-साथ समाज को सुशिक्षित बनाने में भी जुटा है।

स्वामी विवेकानंद के विचारों, भारतीय दर्शन और संस्कृति से रफीक खान इस कदर प्रभावित हैं कि उन्होंने योग और वैदिक दर्शन के प्रचार-प्रसार में अपना जीवन समर्पित कर दिया है। रफीक मुस्लिम हैं, लेकिन गायत्री मंत्र से लेकर तमाम वैदिक मंत्रों का नियमित रूप से जाप करते हैं। राम और रहीम दोनों के प्रति वह समान श्रद्धा रखते हैं और योग को स्वस्थ रहने के लिए जरूरी मानते हैं। अपने शिक्षण कार्य से समय निकाल कर वह नियमित रूप से गांवों में घूम-घूम लोगों को योग के माध्यम से भारतीय जीवन दर्शन और वैदिक दर्शन का मर्म समझाते हैं। लोगों को योग और विवेकानंद दर्शन से जोड़ने के साथ साथ वह सर्वधर्म सद्भाव का भी संदेश दे रहे हैं।

रफीक योग की शिक्षा देते हैं इसलिए लोग उन्हें आचार्य रफीक खान के नाम से जानते हैं। उनके योग शिविरों में भीड़ देखते ही बनती है। इन शिविरों में जब लोग उन्हें गले में भगवा पट्टा लटकाए, आसन-प्राणायाम करते हुए और संस्कृत श्लोकों-मंत्रों का धाराप्रवाह उच्चारण करते देखते-सुनते हैं तो सहसा उन्हें भरोसा नहीं होता कि श्लोक पाठ करने वाला योगशिक्षक मुस्लिम धर्मानुयायी है। आचार्य रफीक कहते हैं, लेकिन इसमें मुझे कोई अजूबा नहीं लगता। हमारे देश की संस्कृति की यही खासियत है। जहां अच्छाई है, उसे सभी को अपनाना चाहिए। मेरे लिए गायत्री मंत्र और नमाज दोनों इबादत और श्रद्धा के लिहाज से बराबर महत्व रखते हैं। मैं वेद पाठ भी करता हूं और नमाज भी पढ़ता हूं...। स्वामी विवेकानंद के सिद्धांतों और संदेशों की चर्चा करते हुए रफीक कहते हैं कि स्वामीजी ने मानवता को सबसे बड़ा धर्म बताया था। मेरे विचारों में भी यही सबसे बड़ा धर्म है। योग और वैदिक दर्शन के प्रचार-प्रसार का काम जीवन भर जारी रहेगा। स्वामी जी ने ही कहा था कि मंजिल तक पहुंचने से पहले रुको मत। इसी सिद्धांत के तहत लक्ष्य की ओर बढ़ रहा हूं।

आचार्य रफीक ने पतंजलि योग पीठ से योग की विधिवत शिक्षा ली है। वहीं से इन्हें आचार्य की उपाधि दी थी। कहते हैं, शुरू में मुस्लिम समाज के कुछ लोगों ने विरोध किया था, लेकिन धीरे-धीरे सबकुछ सामान्य होता गया। हां, मेरे घर के लोगों ने भरपूर साथ दिया।

उत्तराखंड में ड्रोन से गिने जाएंगे मगरमच्छ व घड़ियाल

केदार दत्त, देहरादून

उत्तराखंड में नेपाल बॉर्डर से लेकर हरिद्वार तक 6370 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में कितने मगरमच्छ और घड़ियाल हैं, इसकी सही तस्वीर अब सामने आएगी। ड्रोन से इनकी गिनती होगी। उत्तराखंड देश में ऐसा पहला राज्य है, जहां मगरमच्छ व घड़ियालों की गणना में ड्रोन का उपयोग किया जाएगा। इस माह के अंतिम सप्ताह से शुरू होने वाली गणना के लिए उत्तराखंड फॉरेस्ट ड्रोन फोर्स तैयारियों को अंतिम रूप देने में जुटी है।

वन्यजीव विविधता के लिए मशहूर उत्तराखंड में मगरमच्छ व घड़ियालों का संसार भी बसता है। नेपाल सीमा पर शारदा नदी से लेकर हरिद्वार तक वन विभाग के चार सर्किल पश्चिमी, शिवालिक, राजाजी व कार्बेट टाइगर रिजर्व में इनकी अच्छी-खासी संख्या है। हालांकि वर्ष 2008 में ये आकलन किया गया कि 6370 वर्ग किमी के इस क्षेत्र में 123 मगरमच्छ व 231 घड़ियाल हैं, मगर इस गणना में कुछ क्षेत्र ही शामिल थे। 2016 में पायलट प्रोजेक्ट के तहत सिर्फ पश्चिमी वृत्त में मगरमच्छों की गणना हुई, जिसमें ड्रोन का प्रयोग किया गया। यहां इनकी संख्या 65 निकली थी, लेकिन राज्य के अन्य क्षेत्रों में मगरमच्छ व घड़ियाल की गणना नहीं हो पाई। ऐसे में प्रदेश में इनकी वास्तविक संख्या को लेकर तस्वीर साफ नहीं हुई।

लावारिस कुत्ते गोद लेने की पहल पर सम्मानित

जागरण संवाददाता, शिमला : नगर निगम शिमला को लावारिस कुत्तों को गोद लेने व प्रबंधन (एडॉप्शन एंड मैनेजमेंट) योजना की पहल के लिए स्कॉच अवार्ड (सिटी) से सम्मानित किया गया है। इंडिया हैबिटेट सेंटर नई दिल्ली में शनिवार को आयोजित कार्यक्रम के दौरान यह पुरस्कार दिया गया। पशु जन चिकित्सा अधिकारी डॉ. नीरज मोहन ने यह पुरस्कार स्कॉच ग्रुप के चेयरमैन से हासिल किया। पंकज राय ने शिमला शहर में गत वर्ष अक्टूबर में यह पहल की थी। यह पहल न केवल लावारिस कुत्तों के खतरे को कम करने में सहायक थी, बल्कि इसके तहत उन्हें गोद भी लिया गया।

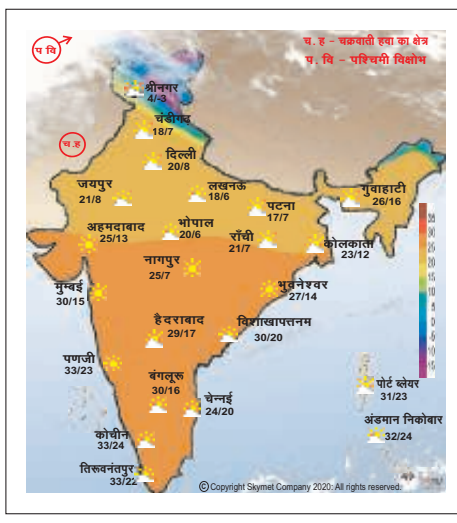

मौसम विशेष

जम्मू-कश्मीर, लद्दाख व हिमाचल प्रदेश में मध्यम वर्षा तथा भारी हिमपात होगी। हरियाणा, दिल्ली व राजस्थान में रात के तापमान में बढ़ने के आसार हैं। ठंडी सुबह में मध्यम कोहरा छाया रहेगा। शीतल हवाओं के साथ दिन ठंडा रहेगा। पंजाब में कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है।

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुम्बई	28/15/आंबा	अहमदाबाद	25/09/आंबा
कोलकाता	24/13/आंबा	बड़ोदा	26/13/सा
चेन्नई	31/22/आंबा	नागपुर	26/08/आंबा
हैदराबाद	30/18/आंबा	इन्दौर	26/11/आंबा
बंगलूरू	30/17/आंबा	रांची	28/14/आंबा
त्रिवेन्द्रम	33/23/सा	पटना	29/14/ग
गुवाहाटी	26/16/सा	जमशेदपुर	29/14/आंबा
गंगटोक	08/-7/आंबा	पुणे	28/18/सा

साप्ताहिक राशिफल

रविवार 12 जनवरी, 2020 से शनिवार 18 जनवरी, 2020 तक

पं. बी. बी. शास्त्री 'देवेश'

मेष (चू,चे,चो,ला,ली,लू,ले,लो,आ)
व्यापार, नौकरी, उद्योग कार्य में सफलता, धनागम में अवरोध, व्यस्ततम दिनचर्या से थकान, विदेश कार्य में समाचार, मानसिक चिंता, संतान के प्रति योजना, चयन में सफलता, मित्रों से सहयोग, प्रणय में सुख, मंगल कार्य, राजनीतिक प्रयास सार्थक, व्यय में वृद्धि, शुभ अंक 5

वृष (इ,ऊ,ए,ओ,पा,वी,वू,वे,वो)
व्यापार, नौकरी, उद्योग कार्य में प्रगति, अर्थ साधन में प्रयास, आत्मविश्वास की वृद्धि, चिंता की समाप्ति, सुख साधनों की वृद्धि, अध्ययन में रुचि, संतान की सफलता, शत्रुपक्ष से सावधान, प्रणय में मधुरता, यात्रा योग, स्थान परिवर्तन, आय में सुधार, शुभ अंक 6

मिथुन (का,की,कू,घ,ड,छ,के,को,हा)
धनागम अच्छा, निर्णय सोच-विचार कर करें, पारिवारिक चिंता, विदेश से समाचार, भवन वाहन योग, संतान से सहयोग, चयन में सफलता, मित्रों से सहयोग, प्रणय में मधुरता, यात्रा का योग, अधिकारी से सहयोग, शुभ अंक 7

कर्क (ही,हू,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो)
व्यापार, नौकरी, कार्य में प्रगति, धनागम अच्छा, दिनचर्या व्यस्ततम, व्यर्थ की वार्तालाप से बचें, चिंता की समाप्ति, निर्माण कार्य में सफलता, संतान से चिंतित, शत्रुपक्ष से सावधान, जीवन साथी से मिलन, विचारों में स्थिरता, राज्यपक्ष से लाभ, शुभ अंक 8

सिंह (मा,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे)
व्यापार, नौकरी, उद्योग कार्य में सहयोग से सफलता, अर्थ साधन अच्छा, विशेष व्यक्ति से मिलन, धन निवेश में सफलता, सुख साधनों की वृद्धि, अनुबंध की प्राप्ति, प्रणय में सुख, राज्य पक्ष से सावधान, दृढ़ निश्चयता से कार्य करें, शुभ अंक 9

कन्या (टो,पा,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो)
व्यापार, नौकरी, उद्योग कार्य में सफलता, अर्थ साधन में सफलता, धन के आवागमन में सावधानी, व्यापारिक संपर्क की वृद्धि, पारिवारिक चिंता, भूमि वाहन योग, चयन में देरी, शत्रुपक्ष पर विजय, प्रणय में मधुरता, राज्य कार्य में सफलता, वाहन में सावधानी, धर्म में रुचि, शुभ अंक 11

तुला (रा,री,रू,रे,रो,ता,ती,तू,ते)
धनागम अच्छा, धन निवेश में सावधानी, विदेश कार्य में सफलता, महिला से सहयोग, भौतिक साधनों की वृद्धि, संतान से अनबन, अध्ययन में अवरोध, मित्रों से सहयोग, पत्नी से विरोध, यात्रा में सावधानी, राज्य पक्ष से सहयोग, व्यय में सावधानी, शुभ अंक 11

वृश्चिक (तो,ना,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू)
धनागम में प्रगति, साझेदारी में सावधानी, निर्णय सलाह से करें, चिंता का समाधान, साधनों की वृद्धि, सजावट योग, संतान से चिंतित शत्रुपक्ष से सावधान, प्रणय में अनबन, रक्षा साधन कार्य में सफलता, व्यय में सावधानी, शुभ अंक 11

धनु (ये,यो,भा,भी,भू,धा,फा,ढा,भे)
व्यापार, नौकरी और उद्योग कार्य में प्रगति, धनागम अच्छा, संपर्क एवं व्यापारिक वृद्धि, कार्य पर निर्णय, सोच समझाकर करें, वाहन भवन का योग, अनुबंध की प्राप्ति, राज्यपक्ष से सावधान, धर्म में रुचि, व्यय अधिक, शुभ अंक 1

मकर (भो,जा,ज,खी,खू,खे,खो,गा,गी)
अर्थ साधन में सुधार, साझेदारी में सावधानी बरतें, चिंता की समाप्ति, विदेश व्यापार में सफलता, संतान के लिए कार्य योजना, खान-पान पर ध्यान रखें, जीवन साथी का मिलन, अनुबंध की प्राप्ति, राजनीतिक प्रयास सफल, शुभ अंक 2

कुम्भ (गू,गे,गो,सा,सी,सू,से,सा,दा)
व्यापार, नौकरी, उद्योग कार्य में सफलता, धनागम अच्छा, कार्यशैली में सुधार करें, रुचि, व्यर्थ के कार्य से बचें, दांपत्य में सुख, संपूर्ति का अनुबंध, धर्म में रुचि, आय में सुधार, दांपत्य में सुख, सोच-समझकर निर्णय लें, मित्रों से सहयोग, शुभ अंक 4

मीन (दी,दू,थ,झ,ञ,दे,दो,चा,ची)
व्यापार, नौकरी, उद्योग कार्य में सफलता, धनागम अच्छा, विदेश से समाचार, निर्माण योग, संतान की प्रगति, चयन में सफलता, मित्रों से सहयोग, प्रणय में अनबन, रक्षा साधन कार्य में प्रगति, स्थान परिवर्तन प्रभावी, अधिकारी से सहयोग, व्यय अधिक, शुभ अंक 5

राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
आजकल
रविवार 12 जनवरी 2020
www.jagran.com

इंग्लैंड के खिलाफ बापू नाडकर्णी का कमाल, कायम है रिकॉर्ड

आज ही के दिन भारतीय गेंदबाज बापू नाडकर्णी ने मद्रास में 1964 में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट मैच में 21 ओवर लगातार मेडन फेंके थे। मैच में उन्होंने कुल 32 ओवर की गेंदबाजी में 27 ओवर मेडन फेंके और उनका औसत 0 .16 का रहा। यह अब भी एक रिकॉर्ड है।

मानव क्लोनिंग पर 19 देशों ने लगाया प्रतिबंध

आज ही के दिन 1998 में 19 देशों ने मानव क्लोनिंग पर प्रतिबंध लगा दिया था। इन देशों ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसमें मानव क्लोनिंग रिसर्च और कार्यों पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया गया। फ्रांस, इटली, स्पेन, पुर्तगाल, तुर्की जैसे देश शामिल थे।

स्वामी विवेकानंद ने दुनिया को वेदांत से कराया अवगत

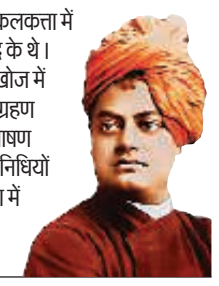

आज ही के दिन वर्ष 1863 में स्वामी विवेकानंद का जन्म कलकत्ता में हुआ था। बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। वे कुशाग्र बुद्धि के थे। प्रारंभिक पढ़ाई के बाद ही वे आध्यात्म और एक गुरु की खोज में जुट गए थे। रामकृष्ण परमहंस से मिलने के कुछ वक्त बाद संन्यास ग्रहण किया। वर्ष 1893 में शिकागो में विश्व धर्म महासभा में ऐतिहासिक भाषण दिया। वेदांत दर्शन को आगे बढ़ाने के साथ उन्होंने ध्यान की अमूल्य निधियों को सर्वसुलभ करवाया। 4 जुलाई 1902 को संसार से विदा ली। देश में उनके जन्मदिन को युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

10 मिनट में सीबीसी टेस्ट कर सकता है नया उपकरण

जागरण संवाददाता, कोलकाता

- आइआइटी खड़गपुर ने विकसित किया यंत्र, विभिन्न बीमारियों का पता लगाने के लिए आसानी से किया जा सकेगा परीक्षण

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आइआइटी) खड़गपुर के शोधकर्ताओं ने ऐसा उपकरण विकसित किया है, जिससे महज 10 मिनट में 95 फीसद सटीक तरीके से कंप्लीट ब्लड काउंट (सीबीसी) टेस्ट किया जा सकता है। सीबीसी टेस्ट विभिन्न बीमारियों का पता लगाने के लिए किया जाने वाला सामान्य रक्त परीक्षण है। इस जांच में करीब 200 रुपये तक की लागत आती है। हालांकि, इस परीक्षण की पद्धति महंगी है, क्योंकि इसके लिए अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरण और प्रशिक्षित कर्मचारियों की जरूरत पड़ती है।

शोधकर्ताओं की टीम की अगुआई करने वाले आइआइटी खड़गपुर के डिपार्टमेंट ऑफ मैकेनिकल इंजीनियरिंग के प्रोफेसर सुमन चक्रवर्ती ने बताया-'हमने मोटर से चलने वाले डिस्क पर आधारित छोटा सा उपकरण तैयार किया है, जिससे सीबीसी टेस्ट किया जा सकता है। यह उपकरण हिमाटोक्रिट, हीमोग्लोबिन, लाल रक्त कोशिकाओं, सफेद रक्त कोशिकाओं और प्लेटलेट काउंट संबंधी टेस्ट 95 फीसद सटीक तरीके से कर सकता है। इस उपकरण का डिस्क बायो-डिग्रेडेबल है, जिसे टेस्ट के बाद डिस्पोस्ड किया जा सकता है। इस तरह का आविष्कार ग्रामीण इलाकों में रोग-निदान संबंधी सेवाएं प्रदान करने में मिसाल कायम कर सकता है।

आइआइटी खड़गपुर के निदेशक वीके तिवारी ने बताया कि उनके निर्माणाधीन सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल में इस तरह के उपकरण का इस्तेमाल किया जाएगा, जिससे टेलीमेडिसीन और मोबाइल हेल्थ केयर बेहतर होगा और समाज के आखिरी व्यक्ति तक ये सेवा पहुंच पाएगी। उन्होंने उम्मीद जताई है कि जल्द से जल्द यह उपकरण बाजार में लाया जाएगा।

गंभीर जलवायु संकट से जूझ रही हैं एशिया की नदियां

- इस सदी के अंत तक पिघल कर एक तिहाई हो जाएंगे ग्लेशियर
- प्रदूषण ने भी बिगाड़े हालात, संकट में है अरबों लोगों का जीवन

हांगकांग, एएफपी : हिंदूकुश पर्वत श्रृंखला के ग्लेशियर इस सदी के अंत तक पिघल कर एक तिहाई हो जाएंगे। इससे अफगानिस्तान से म्यांमार तक फैले 800 किलोमीटर लंबे हिंदूकुश-हिमालयी क्षेत्र (एचकेएच) से जुड़े देश सर्वाधिक प्रभावित होंगे। ग्लोबल वॉर्मिंग व जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव को देखते हुए इसकी चेतावनी भी वैज्ञानिकों ने जारी कर दी है। इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड मांउनटेन डेवलपमेंट (आइसीआइएमओडी) के महानिदेशक डेविड मोल्डेन ने कहा है कि अगर जलवायु परिवर्तन को रोके लिए प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो भविष्य में मानवजाति पर संकट मंडराना तय है।

पृथ्वी का 'तीसरा ध्रुव' कहे जाने वाले हिंदूकुश-हिमालयी क्षेत्र के ग्लेशियरों से निकलने वाली नदियों पर दक्षिण और दक्षिणपूर्वी एशिया के अरबों लोगों का जीवन निर्भर करता है। ब्रह्मपुत्र, सिंधु, यांगत्जे और मेकोंग जैसी प्रमुख नदियों का उद्गम इसी क्षेत्र से होता है। आने वाले समय में जब इन नदियों में पानी नहीं होगा तो भारत, चीन, पाकिस्तान समेत अन्य देश के लोगों का क्या हाल होगा, इसे आसानी से समझा जा सकता है।

लाओस में बहती मेकांग नदी, यह विश्व की 13वीं सबसे बड़ी नदी है। फाइल

अत्यधिक गर्म हवाएं, अनियमित मानसून और प्रदूषण के कारण पानी के उद्गमों पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ रहा है। यदि इससे निपटने के लिए प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो भविष्य में संभव है कि लोगों की पीने के पानी तक पहुंच तेल की कीमतों से भी अधिक हो जाए। यह इतना मूल्यवान बन गया है कि लोग इसके लिए लड़ने के लिए भी तैयार रहते हैं।

आइसीआइएमओडी के महानिदेशक ने कहा, ' 2015 में हुआ पेरिस समझौता ग्लोबल वार्मिंग के सबसे बुरे प्रभावों को रोकने के एक प्रभावी माध्यम हो सकता है। बशर्ते सभी देश मिलकर इस दिशा में काम करें।'

गहरा रहा है जल संकट : गरीबी और मानवाधिकार क्षेत्र में काम करने वाले संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के विशेष दूत फिलिप एल्सटन ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण साल-दर-साल पीने के पानी का संकट गहराता जा रहा है। भारत समेत पूरे एशिया में दुनिया की आधी से ज्यादा आबादी रहती है, लेकिन पीने योग्य पानी की कमी भयंकर रूप लेती जा रही है। एल्सटन ने कहा कि इससे सबसे ज्यादा गरीब लोग प्रभावित होंगे।

साल-दर-साल बढ़ रही है प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति

आइसीआइएमओडी के फिलिप वेस्टर ने कहा, ग्लेशियरों के पिघलने से ही बाढ़, सूखा, भूस्खलन और हिमस्खलन जैसी आपदाएं बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि एक ओर जहां एशिया के कई देशों को बीते वर्षों में भयावह आपदाओं का सामना कर पड़ा है। वर्ष 2019 में दक्षिण भारत का चेन्नई शहर भयंकर सूखे की चपेट में था। स्थानीय लोगों को पीने के पानी के लिए भी सरकारी टैंकों पर निर्भर होना पड़ा था। कई जगह पानी न मिलने के कारण डिप्रेशन में आने से लड़ाई झगड़े पर भी उतारू हो गए थे। वहीं दूसरी ओर उत्तर भारत में कई इलाके बाढ़ की चपेट में आ गए थे। जिसके कारण लोगों को भोजन के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ी थी। इससे निपटे के लिए सेना के जवानों को आगे आने पड़ा था। उन्होंने कहा यहां एक बात गौर करने वाली है कि प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति पिछले वर्षों में कई गुना बढ़ गई है।

इधर-उधर की

युगांडा में नकली बच्चे के जरिये तस्करी की कोशिश

कंपाला, एजेंसी : तस्करी करने वालों के पास अपने अनैतिक काम को अंजाम देने के हजारों तरीके हैं। हालांकि कुछ नया तरीका अपनाने के क्रम में कई बार वे बचकानी हरकत भी कर देते हैं। युगांडा में कुछ ऐसा ही हुआ। यहां एक महिला को तस्करी करते पकड़ा गया।

महिला ने जो तरीका अपनाया ऐसा कभी नहीं सुना गया। दरअसल महिला एक नकली बच्चे के जरिये देश में प्रतिबंधित सौंदर्य प्रसाधनों की तस्करी कर रही थी। राजस्व विभाग ने महिला और नकली बच्चे की तस्वीरें ट्विटर पर जारी की है। इसमें महिला ने नकली बच्चे को अपनी पीठ में बांध रखा है। महिला को गिरफ्तार कर लिया गया है। बता दें कि युगांडा में सबसे ज्यादा तस्करी स्किन को चमकदार बनाने वाली क्रीम की होती है। यह 2016 से देश में प्रतिबंधित है।

नासा ने खोजे ऑक्सीजन वाले ग्रह

रहस्यमय ब्रह्मांड ▸ वैज्ञानिक 'वेब' के जरिये एक्सोप्लेनेट में तलाश रहे हैं जीवन

ग्रहों से जुड़ी हर जानकारी का पता लगा सकती है दूरबीन

वाशिंगटन डीसी, एएनआइ : पृथ्वी से इतर ब्रह्मांड के अन्य ग्रहों में वैज्ञानिकों की जीवन की संभावनाओं की तलाश जारी है। इसी क्रम में अब वैज्ञानिकों ने एक खास तरह के टेलीस्कोप 'वेब' के जरिये एक एक्सोप्लेनेट के वायुमंडल में ऑक्सीजन की मौजूदगी का पता लगाया है। इससे दूसरे ग्रहों पर जीवन है या नहीं, इसका पता लगाने में मदद मिल सकती है। सौरमंडल से बाहर तारे की कक्षा की परिक्रमा करने वाला ग्रह एक्सोप्लेनेट कहलाता है। इनमें प्राणवायु के होने के संकेत शुरुआती हैं। यह खोज वैज्ञानिकों के सपनों को आकार देने में मदद कर सकती है।

इससे पहले शोधकर्ताओं ने पता लगाया है कि कैसे नासा के जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप (दूरबीन) की मदद से वैसे ग्रहों का पता लगाया जा सकता है, जिन पर जीवन की संभावनाएं हो सकती हैं। शोधकर्ताओं ने अपने इस अध्ययन में यह पाया कि कैसे इन ग्रहों पर मौजूद पानी के स्रोत या महासागरों के वाष्पीकृत होने की वजह से वे रहने योग्य नहीं रह पाए। अध्ययन के दौरान वैज्ञानिकों ने पाया कि ऑक्सीजन के अणुओं की टक्कर से जीवन का एक मजबूत संकेत मिलता है। उनके अनुसार, वेब टेलीस्कोप उस संकेत का एक्सोप्लेनेट के वायुमंडल में पता लगा सकता है।

प्रतीकात्मक

वरिष्ठ शोधकर्ता थॉमस फॉचेज ने बताया, 'हमारे अध्ययन से पहले यह माना जाता था कि वेब टेलीस्कोप की मदद से पृथ्वी पर उसी स्तर पर ऑक्सीजन का पता नहीं लगाया जा सकता है। लेकिन, हमने आसपास के ग्रहों की प्रणाली में उसका पता लगाने का ठोस तरीका निकाल लिया है।' उन्होंने कहा, 'पृथ्वी के वायुमंडल के अध्ययन के बाद 1980 के दशक के शुरुआत से ही इस ऑक्सीजन के होने के संकेत हैं। लेकिन, एक्सोप्लेनट के लिए इसका अध्ययन कभी नहीं किया गया।'

इस तरह किया गया अध्ययन : यह अध्ययन नेचर एस्ट्रोनॉमी में प्रकाशित हुआ है। वैज्ञानिकों ने इस ऑक्सीजन की नकल बनाने के लिए एक कंप्यूटर मॉडल का प्रयोग किया। इसके लिए उन्होंने एम-ड्वार्फ (ब्रह्मांड में सबसे अधिक इसी तरह के तारे मौजूद हैं) के पास मौजूद एक्सोप्लेनेट के वायुमंडल में मॉडलिंग की। शोधकर्ताओं की टीम ने वायुमंडलीय रसायन विज्ञान पर एम-ड्वार्फ तारों से उत्पन्न होने वाले विकिरण के प्रभाव वाला नमूना बनाया और आगे यह प्रयोग किया कि जब ग्रह उसके सामने से गुजरता है, तो किस तरह तारे के प्रकाश से उसके घटक का रंग बदल जाता है। जब तारों का प्रकाश एक्सोप्लेनेट के वायुमंडल से गुजरता है, तो ऑक्सीजन आमतौर पर प्रकाश के कुछ निश्चित तरंगदैर्ध्य को अवशोषित कर लेता है। इस मामले में ऑक्सीजन ने 6.4 माइक्रोमीटर के तरंगदैर्ध्य वाले प्रकाश को अवशोषित कर लिया। जब ऑक्सीजन के अणु एक-दूसरे से या एक्सोप्लेनेट के वायुमंडल में टकराते हैं, तो इस टक्कर की वजह से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा ऑक्सीजन के अणु को एक विशेष अवस्था में पहुंचा देती है। यह अवस्था उसे इंफ्रारेड प्रकाश को अवशोषित करने में सक्षम बनाती है।

मजबूत होता है ऑक्सीजन का सिग्नल : यह दिलचस्प है कि एक्सोप्लेनेट पर अभी जीवन नहीं है, लेकिन ऑक्सीजन की मौजूदगी से ऐसा लग सकता है कि उस पर जीवन हो सकता है। ऐसा इसलिए कि यह किसी भी जीवन संबंधी गतिविधि के बिना किसी ग्रह के वायुमंडल में जमा हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, अगर एक्सोप्लेनेट चक्कर लगाने वाले तारे के बेहद करीब है या उसे सीधे रोशनी मिलती है, तो उसका वायुमंडल बहुत गर्म हो सकता है और महासागर वाष्पीकृत हो सकते हैं। इस पानी को मजबूत अल्ट्रावायलेट विकिरण से हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के परमाणु में बदला जा सकता है।

नासा के चंद्र व मंगल मिशन का हिस्सा बनेंगे भारतवंशी राजा

ह्यूस्टन, प्रेट्र : अमेरिकी वायुसेना में भारतवंशी कर्नल राजा जॉन वरपुतूर चारी ने दो वर्ष की अवधि वाला नासा का बुनियादी अंतरिक्ष यात्री प्रशिक्षण पूरा कर लिया है। इस तरह उन्होंने नासा के चंद्रमा और मंगल पर जाने वाले भविष्य के मिशनों का हिस्सा बनने की योग्यता हासिल कर ली है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी ने प्रशिक्षण के लिए राजा सहित 11 उम्मीदवारों का चयन आर्टेमिस कार्यक्रम की घोषणा के बाद 2017 में 18,000 आवेदकों के बीच से किया था। बता दें कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से राजा के पिता श्रीनिवास चारी हैदराबाद से यहां आए थे। यहीं पर उन्होंने शादी की और वॉटरलू में अपना जीवन बिताया।

41 साल के राजा को नासा ने 2017 के एस्ट्रोनॉट कैंडिडेट क्लास में शामिल होने के लिए चुना था। अगस्त 2017 में उनका प्रशिक्षण शुरू हुआ और प्रारंभिक अंतरिक्ष यात्री प्रशिक्षण पूरा करने के बाद अब वह अंतरिक्ष अभियान में जाने के पात्र हो गए हैं। शुक्रवार को ह्यूस्टन में आयोजित समारोह में प्रत्येक नए अंतरिक्ष यात्री को एक चांदी की पिन दी गई। पहला अंतरिक्ष मिशन पूरा करने के बाद इन्हें सोने की पिन दी जाएगी। नासा 2024 तक चंद्रमा की सतह पर एक महिला और एक पुरुष अंतरिक्ष यात्री भेजने की योजना पर काम कर रहा है। इसके अलावा वह 2030 के मध्य तक मंगल ग्रह पर मानव को भेजने की योजना पर भी काम कर रहा है, जिसकी तैयारियां अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी जोरों से कर रही है। राजा एस्ट्रोनॉटिकल इंजीनियरिंग और इंजीनियरिंग साइंस में स्नातक हैं। इसके अलावा उन्होंने मैसाच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से एयरोनॉटिक्स में मास्टर डिग्री हासिल की और मैरीलैंड के यूएस नेवल टेस्ट पायलट स्कूल से स्नातक हैं।

राजा जॉन वरपुतूर चारी। फाइल

शोध अनुसंधान

डिमेंशिया में मदद कर सकती हैं एंटीबायोटिक दवाएं

शोधकर्ताओं को डिमेंशिया के उपचार की दिशा में बड़ी कामयाबी मिली है। उन्होंने पाया कि एक आम प्रकार के डिमेंशिया के इलाज में एंटीबायोटिक दवाएं मददगार हो सकती हैं। ह्यूमन मोलेक्यूलर जेनेटिक्स पत्रिका में छपे अध्ययन के अनुसार, इस प्रकार के डिमेंशिया को फ्रंटोटेंपरल डिमेंशिया कहा जाता है। यह समस्या 40 से 65 साल की उम्र में शुरू होती है और मस्तिष्क का अग्र और कनपटी वाला हिस्सा प्रभावित होता है। इससे स्मृति कमजोर होने के साथ लिखने व बोलने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इसके फ्रंटोटेंपरल डिमेंशिया पीड़ितों में एक खास तरह का आनुवांशिक बदलाव होता है, जो मस्तिष्क कोशिकाओं को प्रोग्रेंयुलिन नामक प्रोटीन की उत्पत्ति करने से रोक देता है। -प्रेट्र

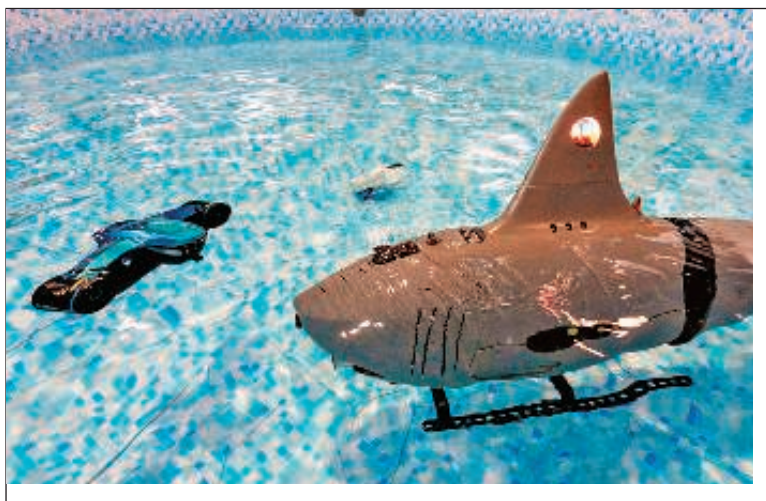

रोबोट शार्क

समुद्र की सभी तरह की हलचलों पर निगाह रखने के लिए शार्क रोबोट को तैयार किया गया है। यह शार्क रोबोट शक्तिशाली सेंसर प्रणाली से लैस है। अमेरिका के नेवादा राज्य के लास वेगास में चल रहे दुनिया के सबसे बड़े टेक शो कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स शो (सीईएस) में इसे प्रदर्शित किया गया। इसके साथ अंडरवाटर ड्रोन(बाएं) भी तैरता नजर आ रहा है। सीईएस में दुनियाभर से करीब 4500 कंपनियां नवीनतम तकनीक पर आधारित इलेक्ट्रॉनिक्स आइटम यहां प्रदर्शित करती हैं। एएफपी

2600 मीटर की ऊंचाई पर बजाया बर्फ का जाइलोफोन

इटली के प्रेसना ग्लेशियर में समुद्र तल से करीब 2600 मीटर की ऊंचाई पर माइनस तापमान के बीच आइसो म्यूजिक फेस्टिवल का आयोजन किया गया। इस समारोह की खासियत थी कि वाद्ययंत्रों को बर्फ से बनाया गया। समारोह के दौरान बर्फ से बने वाद्ययंत्र 'जाइलोफोन' को बजाता एक संगीतकार। यह अपने आप में बेहद अनूठा और रोमांचकारी महोत्सव है। रायटर

स्क्रीन शॉट

ब्लॉकबस्टर फिल्मों की लोकेशन पर बात करेंगी जरीन खान

'वीर', 'हाउसफुल 2', 'हेट स्टोरी 3', '1921' जैसी फिल्मों में अपने अभिनय का जलवा दिखा चुकीं जरीन खान ने अब छोटे पर्दे का रुख किया है। वह एएक्सएन पर आने वाले शो 'जीप बॉलीवुड ट्रेल्स' की मेजबानी करती नजर आएंगी। जरीन जीप से देश के कोने-कोने में उन जगहों पर जाएंगी, जहां 'थ्री इडियट्स', 'जब वी मेट', 'धड़क' और कई अन्य फिल्मों की शूटिंग हुई है। सीरीज का आगाज 25 जनवरी से होगा। पहले एपिसोड में वह लद्दाख पहुंचेंगी, जहां वह चैल पैलेस, ड्रूक स्कूल, पैगोंग लेक जैसी जगहों पर जाएंगी। यहीं पर सुपरहिट फिल्म 'थ्री इडिट्स' का काफी बड़ा हिस्सा फिल्माया गया था। इस एपिसोड में फिल्म के निर्देशक राजकुमार हिरानी से भी चर्चा की जाएगी, जो अपने बचपन और पहाड़ों के प्रति अपने लगाव के बारे में बात करेंगे। वह बताएंगे कि उन्हें किस बात ने प्रेरित किया था कि 'थ्री इडिट्स' की शूटिंग लद्दाख में की जाए। इस सीरीज में 'जब वी मेट', 'बैंग बैंग', 'रांझणा', 'धड़क' आदि फिल्मों की लोकेशन पर उनके फिल्मकारों से बातचीत होगी। जरीन ने कहा, 'जब भी मुझसे कोई पूछता कि तुम्हारा सपना क्या है? तो मेरा जवाब होता है कि मैं दुनिया का हर कोना देखना चाहती हूं। मैं एक ट्रैवलर भी हूं। मेरा शौक ट्रैवलिंग मेरे प्रोफेशन का अहम हिस्सा भी है। 'जीप बॉलीवुड ट्रेल्स' मेरे लिए सुनहरा मौका था, जो ट्रैवल और बॉलीवुड का परफेक्ट मिश्रण है। टीवी डेब्यू के लिए इससे बेहतर दूसरा शो नहीं हो सकता था। मैंने भारत को बॉलीवुड के नामचीन डायरेक्टर्स की नजरों से देखा। वहां की संस्कृति, खान-पान व खूबसूरत नजारों ने मुझे प्रेरित किया और काफी कुछ सिखाया। 'जीप बॉलीवुड ट्रेल्स' मेरे लिए शानदार अनुभव है, मैं उन कहानियों को अनदेखे अंदाज में पिरोकर पेश कर रही हूं।'

पहले दिन 'तान्हाजी' के मुकाबले फीकी रही 'छपाक'

इस शुक्रवार को रिलीज हुई फिल्म 'तान्हाजी : द अनसंग वॉरियर' और 'छपाक' का प्रमोशन जगजाहिर है। जेएनयू में दीपिका पादुकोण की मौजूदगी को कुछ लोगों ने प्रमोशनल स्टंट करार दिया था। 'छपाक' की तमाम चर्चाओं के बावजूद उसके मुकाबले 'तान्हाजी' को समीक्षकों ने अधिक सराहा है। राजनीतिक अखाड़े में दोनों फिल्मों के समर्थन को लेकर मची होड़ में बॉक्स ऑफिस पर तान्हाजी ने 'छपाक' को पीछे छोड़ दिया है। अजय देवगन अभिनीत 'तान्हाजी' ने 'छपाक' की तुलना में तीन गुना ज्यादा कमाई की। 'तान्हाजी' की ओपनिंग जहां करीब 15.1 करोड़ रुपये हुई, वहीं 'छपाक' की पहले दिन की कमाई 4.77 करोड़ रुपये रही। 'छपाक' जहां एसिड हमले की पीड़ित लक्ष्मी अग्रवाल की जिंदगी से प्रेरित है, वहीं 'तान्हाजी' छत्रपति शिवाजी महाराज के दाहिने हाथ माने जाने वाले मराठा योद्धा तान्हाजी मालुसरे के जीवन पर आधारित है। अच्छी ओपनिंग मिलने से सप्ताहांत में तान्हाजी की कमाई और ज्यादा बढ़ने के आसार नजर आ रहे हैं।

सुनील गावस्कर की भूमिका में ताहिर राज भसीन का पहला लुक जारी

फिल्म '83' में कपिल देव की भूमिका निभा रहे रणवीर सिंह के हाल में आए नटराज लुक के बाद अब निर्माताओं ने ताहिर राज भसीन का लुक साझा किया है। ताहिर फिल्म में सुनील गावस्कर की भूमिका निभा रहे हैं। कबीर खान निर्देशित '83' वर्ष 1983 में भारतीय क्रिकेट टीम के विश्व कप जीतने पर आधारित है। शनिवार को फिल्म निर्माताओं ने ताहिर का फर्स्ट लुक जारी किया। ताहिर ने लुक को साझा करते हुए लिखा, 'इनकी बैटिंग ने दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए। लिटिल मास्टर का किरदार निभाना शानदार अनुभव रहा। पेश हैं लेजेंड सुनील गवास्कर..। उनके अलावा फिल्म में मोहिंदर अमरनाथ के रूप में साकिब सलीम, संदीप पाटिल के रूप में चिराग पाटिल हैं, जबकि दीपिका पादुकोण फिल्म में कपिल देव की पत्नी रोमी की भूमिका में नजर आएंगी। फिल्म 10 अप्रैल को हिंदी, तमिल और तेलुगु भाषाओं में रिलीज होगी। यह रणवीर सिंह की पहली त्रिभाषी रिलीज होगी।

जॉन को अपनी प्रेरणा मानते हैं डैनी के बेटे रिनजिंग

अभिनेता डैनी डेन्जोंग्पा के बेटे रिनजिंग इस साल बॉलीवुड में किस्मत आजमाएंगे। नीलेश सहाय द्वारा निर्देशित व निर्मित फिल्म 'स्क्वाड' से वह फिल्मों में एंट्री करेंगे। रिनजिंग जॉन अब्राहम को अपनी प्रेरणा मानते हैं और शूटिंग शुरू करने से पहले उनसे मुलाकात की। रिनजिंग कहते हैं, 'जॉन सर ने मुझे कड़ी मेहनत करने को कहा। वह काफी अनुशासित हैं। एक्शन दृश्यों के लिए दो सौ प्रतिशत मेहनत करते हैं, और यही मुझे प्रेरित करता है। उनके जैसे बड़े स्टार का नम्र स्वभाव देखना काफी सुखद है।' अपनी पहली फिल्म को लेकर रिनजिंग कहते हैं, 'यह एक्शन फिल्म काफी बड़े स्केल पर बन रही है। हम लोगों ने फिल्म के क्लाइमैक्स की शूटिंग हाल ही में पूरी की है। इस सीन में 400 स्टंटमैन शामिल थे।'

अध्ययन

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता ने किया दावा, कहा- शरीर में पौष्टिक भोजन की कमी बढ़ा देती है संक्रमण का खतरा

कुपोषण भी बढ़ा सकता है जीका का जोखिम

लंदन, प्रेट्र : शिशुओं में जन्म से ही जीका वायरस के संक्रमण का एक कारण कुपोषण भी हो सकता है। एक नए अध्ययन में शोधकर्ताओं ने कांगेनिटल जीका सिंड्रोम (सीजेडएस) का संबंध गर्भवती महिलाओं के खराब खानपान से भी पाया है। शोधकर्ताओं ने कहा कि इस सिड्रोम का असर शिशु के शरीर में इतना गंभीर होता है कि उसे ताउम्र कई समस्याओं स जूझना पड़ता है। जर्नल साइंस एडवांस में प्रकाशित अध्ययन में बताया गया है कि इस वायरस के कारण शिशु के सिर का आकार बेडौल होने के साथ-साथ मस्तिष्क का विकास भी अवरुद्ध हो जाता है। इसके अलावा रेटीना असामान्य हो जाता है और दिल में रक्त वाहिकाएं बढ़ जाती हैं।

ब्रिटेन की ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता और इस अध्ययन के सह-लेखक जॉल्टन मोलनार ने कहा, 'हम जानते हैं कि ब्राजील के जिन इलाकों में सबसे कम सामाजिक-आर्थिक स्थिति देखी गई, वहां बच्चों में सीजेडएस के मामले सबसे ज्यादा देखे गए। इसलिए भी हमारा दावा और मजबूत होता है कि पोषण की कमी के कारण बच्चों में जीका वायरस का जोखिम बढ़ता है।'

प्रतीकात्मक

चूहों पर किया अध्ययन : अध्ययन के मुताबिक, जन्मजात जीका वायरस के संक्रमण को पर्यावरणीय सह-कारक जैसे- भोजन में प्रोटीन की कमी, और ज्यादा घातक बना देते हैं। प्रोटीन की कमी के कारण नवजातों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का आकलन करने के लिए शोधकर्ताओं ने जीका वायरस से संक्रमित ऐसे चूहों का अध्ययन किया, जिनके भोजन में प्रोटीन की कमी रहती थी। इस दौरान उन्होंने पाया कि कुपोषित चूहों पर कई ऐसे लक्षण दिखाई दिए गए जो मनुष्यों में भी पाए जाते हैं।

कम हो जाता है मस्तिष्क का आकार : मोलनार ने कहा, 'जब हमने चूहों को अपौष्टिक भोजन चूहों दिया और उसके प्रभावों का आकलन किया तो पाया कि मनुष्यों की तरह उनके भ्रूण में भी कई परिवर्तन दिखाई दिए। पोषक तत्वों से रहित भोजन से प्लेसेंटा डेमेज, भ्रूण का अनियमित विकास और नवजात शिशुओं के मस्तिष्क के आकार में कमी देखने को मिली।' उन्होंने कहा कि पोषक तत्वों की कमी का असर चूहों की मां पर भी देखा गया। वह स्वयं भी जीका वायरस से लड़ने में असक्षम हो गई थी।

और अध्ययन की है जरूरत : मोलनार ने कहा, 'इस अध्ययन के जरिये हम उस कोशिकीय तंत्र की पहचान करने में सक्षम हो गए हैं, जो अल-अलग मनुष्यों में जीका के संक्रमण के लिए जिम्मेदार होता है। हालांकि, शोधकर्ताओं ने कहा कि आहार में सुधार करने से जीका का संक्रमण से बचाव नहीं हो सकता है, यह केवल सिंड्रोम की गंभीरता को निर्धारित कर सकता है। मोलनार ने कहा, 'अभी हमें इन निष्कर्षों की तह तक पहुंचने के लिए और अध्ययन की जरूरत है। लेकिन यह बात सही है कि कुपोषण के कारण जीका का संक्रमण तेजी से फैलता है।